CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

4.4
CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिमाचल का लोक संगीत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिमाचल का लोक संगीत

लेखक
केशव आनन्द

संगीत नाटक अकादेमी
रवीन्द्र भवन, फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली-110001

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

© : लेखक

मूल्य : Rs. 70/-

प्रथम संस्करण : 1982

प्रकाशक : संगीत नाटक अकादेमी, रवीन्द्र भवन, फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली-110001

मुद्रक : वार्ष्णेय प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-110032

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

समर्पण

परमादरणीय गुरु महाराज
स्वर्गीय माताजी-पिताजी

पूजनीय बंधु-बांधव तथा प्रियजनों
व
अनाम लोक-संगीत रचयिताओं को

साद्र समर्पित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आमुख

प्रस्तुत प्रयास, हिमाचल के अथाह लोक-संगीत सागर में से चंद बूंदें हैं, जो लोक-संगीत के सच्चे, स्वाभाविक मूल रूप के संरक्षण व प्रयास में व्यक्तिगत तथा संस्थागत प्रयत्नों को शायद कुछ प्रेरणा दे सकें।

इस प्रयास के लिए, मुझे अनेक सहृदय वंधुओं का सहयोग मिला है, जिनका मैं हृदय से आभारी हूं। विशेषतया, स्व० नानी अयोध्यादेवी, बहिन श्रीमती लक्ष्मीदेवी, श्रीमती कमलादेवी, चित्रलेखा, मातातुल्य श्रीमती साहिबदेवी, बहिनतुल्य श्रीमती चम्पादेवी, श्रीमती सुभद्रादेवी, मित्रों व सहयोगियों विशेषतया श्री हीराज़ोर नेगी, श्री टशी लग्यल, स्व० रामदास राही, डॉ० चुन्नीलाल, श्री शौकियाराम, श्री हरिराम चौधरी व श्री भगतराम, गद्दी श्री उदमी, श्री बद्री व श्री मखौली का इसके लिए मुझ पर बहुत आभार है। धर्मपत्नी श्रीमती देवेन्द्रा शर्मा व परिवार के अन्य सदस्यों से मिली प्रेरणा व मदद भी इस प्रयास में बहुत सहायक रही है।

केशव आनन्द

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ
लोक-संगीत	१-४
उद्भव	१
अभिप्राय	२
हिमाचल का लोक-संगीत	४-५
(अ) लोक गीत प्रकरण	५-६
(i) क्षेत्रीय गीत—नाम, विषय, स्वरूप आदि विवेचन	५-७
(ii) शैलियां	७-६
(iii) प्रकार	६-६८
समय-विशेष के लोकगीत	६-२५
अवसर विशेष के लोकगीत	२५-७६
खेती विषयक लोकगीत	७६-७७
लोरी	७७-७८
देवी-देव स्तुति गीत	७८-८४
शौर्य गाथा गीत	८४-८५
राष्ट्रनायक गीत	८५-८६
देश रक्षा विषयक गीत	८६-८७
देश प्यार के गीत	८७-८६
विविध विषयक गीत	८६-६६
गिद्धा गीत	६६-६८
गंगी	६८
(iv) संगीत पक्ष	६८-१६८
स्वर-लय-संरचना	६८-६६
राग, स्वर-संरचना विवेचन तथा स्वरलिपि	६६-१०२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर-लिपि-खण्ड १०३-१६८

(क) किन्नरी गीत १०३-१०५
(बीश गीत, फुल्याच, पोर देवता, सांगीथङ, रेमा)

(ख) स्पीतियन गीत १०५-१०७
(देवस्तुति, गृहस्थ जीवन की स्तुति, देश प्यार का गीत, शिक्षा गीत)

(ग) पंगवाली गीत १०८
(नायिका गीत, विवाह गीत, नेहरू गीत)

(घ) लाहुली गीत १०९-११०
(गुरूघंटाल का गीत, दलाई लामा का गीत, शादी का राग, रात्रि का राग)

(ङ) कुल्लूई गीत १११-११३
दशहरा गीत, घुशालचंद ठाकरा, ब्यूहाई, बाबा त्रिलोकीनाथ, वक्षावा)

(च) महासुई गीत ११४-११८
(अंचली, महात्मा गांधी, हाड़े दुर्गे, विदाई गीत, जानकीमंगल, चुपुती, झामकुलो, चरणू का वार, बिंची, शिव स्वागत, शिव विदाई)

(छ) सिरमौरी गीत ११८-१२३
हिमाचल सौन्दर्य वर्णन, काब्लो होरे कौंदिए, गिद्धा, बिशु की नाटी, रेणुका की भेंट, हरुल—२, भर्तृहरि, झूरी)

(ज) बिलासपुर, लोअर महासू के गीत १२४-१५५
(महीने का गीत, चैत्र गीत, छिंज, लोरी, गूजरी, चमासा, पहिया—२, संध्या, धुप्पू, बरलाज, रली गीत, लोहड़ी, गुग्गा, ब्यूहाई, वधाई, नैणा देवी की भेंट, गंगी, गिद्धे, मांहगी रा पेवका, विवाह गीत)

(झ) मंड्याली गीत १५५-१५९
(भुइणी देवी की भेंट, चीना मीना चानणी, किस—२ मुलखाते, छिंज, नाचबढ़ो, भजन, धुप्पूदेहल, ब्यहाई)

(ञ) उना-हमीरपुर-कांगड़ा के गीत १६०-१६३
(भ्यागड़ा, छमाहड़ा, सुहाग, ब्यूहाई, सिठणी, बाबा बालकनाथ, गिद्धा, गराएं देआ लम्बरा)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(ट) चम्ब्याली गीत १६३-१६८
(वसोआ, कुंजड़ी, सिठणी, शिव स्तुति, घोड़ी, सुंदरू लोहारिए, सीकरिए धारे)

(ठ) गद्दी गीत १६५-१६७-१६८
(शिव, राम, शिव, कृष्ण)

लय-ताल विवेचन १६६-१७२

(ब) लोक नृत्य १७२-१९९
सामान्य परिचय १७२-१७३
क्षेत्रीय सर्वेक्षण १७३-१९९

(स) लोक वाद्य व ताल १९९-२०७
लोक वाद्य १९९-२००
वर्ग विशेषीय ताल २०१-२०७

(द) भविष्य २०७-२०८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोक संगीत

उद्भव

आदि मानव ने अपने आस-पास जब नदियों की कल-कल, हवा से झूमती पत्तियों की सरसराहट, पक्षियों का कलरव, जीव-जंतुओं की ध्वनियां, प्रचण्ड वेग से बहती वायु की सांए-सांए, मेघ की गर्जना, समुद्र-कल्लोल सुना होगा, तो उसका मन-मस्तिष्क अवश्य प्रतिध्वनित हुआ होगा, उसने इन ध्वनियों के सार्थक अभिप्राय अवश्य ढूंढे होंगे, और जीवन के अनेक पक्षों में संचार-संवाद की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये इनका उपयोग करने का प्रयत्न किया होगा, समार्थं, सम-प्रकृत ध्वनियाँ स्वयं उत्पन्न करने का अवश्य प्रयास किया होगा।

अपने अस्तित्व के लिये, प्रकृति के साथ संघर्ष-रत यहाँ-वहाँ छितरे संचार-संवाद की समस्या के समुचित समाधान के लिए मुख-हस्त जन्य ध्वनियों को दुर्बल पाया होगा तो कार्य-सिद्धि के लिए, उसने सबल विकल्प ढूंढने के प्रयास किए होंगे और फलतः घन-वाद्य सुषिर वाद्य का आरम्भिक रूप सामने आया होगा, जिसका प्रयोजन मात्र केवल विभिन्न आशय की सूचनाएँ देना रहा होगा।

प्रकृति की अनंत व अद्भुत शक्तियों से अचंभित आदि मानव जब सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को न समझ पाया होगा, तो रचयिता के विचार ने उसे गहन आश्चर्य में डाला होगा, रचयिता के प्रति भय-मिश्रित आश्चर्य-जनित आस्था से उसका मस्तक नत हुआ होगा, और सर्व-शक्तिमान के नाम पर दैवी-शक्तियाँ, देवी-देवता अस्तित्व में आये होंगे। सर्व-शक्तिमान के रूप में माने गए ये देवी-देवता पूर्ण रूपेण सक्षम तो होने ही हुए, अस्तु प्रत्येक कार्य में इनका हस्तक्षेप अनिवार्य माना गया, और चाहे किसी कार्य में सफलता हेतु, चाहे सफलता के उप-लक्ष में समारोह हेतु, चाहे सुख-संपदा के लिए, चाहे दैवी-प्रकोपों से रक्षा के लिये, हर स्थिति में इनकी सम्मति, इनकी आज्ञा, इनकी स्तुति, इनका पूजन, परमावश्यक समझा गया। ये कार्य सामूहिक रूप में संपन्न होने वाले थे, अस्तु सूचनार्थ प्रयोज्य घन-सुषिर वाद्य देवस्थल पर ही रख दिए गए होंगे। कालांतर में ये वाद्य देव-वाद्य कहलाए, इनमें सुधार हुआ, वृद्धि हुई।

कार्य-सिद्धि की अवस्था में हर्षोल्लास तो स्वाभाविक ही है। हर्षोल्लास में मन झूमने लगे, अंग-प्रत्यंग थिरकने लगें, तो कुछ भी आश्चर्य नहीं। देव-स्थल पर, सफलता के उपलक्ष में आयोजित समारोह के लिए एकत्रित जन-समूह की प्रसन्नता का पारावार न होता होगा। मन में हिलोरें लेती प्रसन्नता की अभिव्यक्ति में कभी आदि मानव के अंग-प्रत्यंग भी लहराए होंगे, हाथ झूमें होंगे, पाँव थिरके होंगे। देव वाद्यों ने इस उमंग में आदि मानव का साथ दिया होगा, और इस प्रकार नृत्य की अवतारना हुई होगी। कालान्तर में यह नृत्य निखरा, इसमें विविधता आई, विलक्षणता आई।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हर्ष-विषाद के क्षणों में मन: स्थिति को अंग-प्रत्यंग के अतिरिक्त वाणी ने भी व्यक्त करना चाहा होगा। परिणाम स्वरूप रसोचित ध्वनियाँ जन्मी होंगी। आदि मानव ने हर्ष-विषाद को व्यक्त करने के लिये एकाकी अथवा सामूहिक रूप में इन ध्वनियों को अधिक सार्थक बनाया होगा। कालान्तर में, जब शाब्दिक भाषा का प्रादुर्भाव हुआ होगा, तब ध्वनियाँ यथोचित शब्द-संयोग सहित उच्चरित हुई होंगी, और फिर शाब्दिक भाषा में सुव्यवस्था समृद्धि व परिपक्वता के साथ यथोचित शब्दाकार में पिरोई हुई संगीतोपयोगी ध्वनियाँ रसानुसार प्रभावोत्पादक हुई होंगी। फिर शब्द चित्र बने होंगे, उनमें ध्वनियों के रंग भरे गए होंगे, और इस प्रकार जन्मा होगा गीत-संगीत।

देव-स्थल के वाद्य, प्रसन्नता की अभिव्यक्ति में शारीरिक झूम व सस्वर देवी-देव स्तुति कालान्तर में देवस्थल से बाहर भी आनी आरम्भ हुई होंगी, बाहरी परिस्थितियों की माँग के अनुसार प्रयोग में परिवर्तन आए होंगे, कुछ नवीन रूप उभरे होंगे और इस प्रकार गीत-वाद्य-नृत्य में विविधता-सरसता आई होगी। हिमाचल के सन्दर्भ में देव-स्थल से बाहर आया संगीत, अधिकतर समारोहों में देवी-देवताओं को भी संग लाता रहा होगा, जिसके अनेक प्रमाण आज भी उपलब्ध हैं।

गीत-वाद्य-नृत्य के रूप समय की करवट के साथ विकसित होते गए। इनमें निखार आया, विविधता आई, विलक्षणता आई। इनमें विकास का यह क्रम अब भी जारी है, और यह भविष्य में भी जारी रहेगा। वाद्य व नृत्य की अपेक्षा, गीत पक्ष के विकास का क्रम अधिक गतिवान है।

अभिप्राय

लोक मानस की किसी भी अनुभूति की अभिव्यक्ति के लिये स्वर-ताल व नृत्य का आश्रय ही, लोक संगीत का जन्मदाता है। स्वर, ताल अथवा नृत्य में से किसी एक के अथवा दो के या सबके आश्रय से अभिव्यक्त लोक मानस की कोई भी अनुभूति लोक संगीत है, इसमें तनिक भी संशय नहीं।

परिभाषा के नाम पर काल, स्थिति, स्थानविशेष व कार्यरत व्यक्तिविशेष के अनुसार लोक संगीत को अनेक प्रकार से परिभाषित किया गया है। सन् १९५४ में, लोक संगीत की अंतर्राष्ट्रीय परिषद् ने, लोक संगीत की यह परिभाषा स्वीकार की :—

"लोक संगीत, साँगीतिक परम्परा का वह परिणाम है, जो वाणी के माध्यम से अस्तित्व में आया है। साँगीतिक परम्परा को लोक संगीत की दिशा में विकसित करने के लिए, ये तथ्य उत्तरदायी ठहराए जा सकते हैं :—

(अ) वैयक्तिक अंतर-भेद अथवा रूपान्तरण, जिसका उद्गम एक व्यक्ति अथवा समूह की रचनात्मक अंत: प्रेरणा है।

(ब) वर्तमान को भूत से जोड़ने वाला जन-समुदाय।

(स) साँगीतिक परम्परा में जन-समुदाय विशेष की पसंद के अनुसार किया गया चुनाव, जो संगीत के भावी रूप को निश्चित करता है।

लोक संगीत, उस संगीत को कहा जा सकता है, प्राकृत अवस्था से जिसका उद्भव, उस जन-समुदाय विशेष द्वारा हुआ है, जो लोकप्रिय व कलापूर्ण संगीत से अप्रभावित रहा हो। लोक संगीत उस संगीत को भी कहा जा सकता है, जो आरम्भ में तो एक व्यक्तिविशेष की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निजी रचना थी, लेकिन कालान्तर में वह एक जन-समुदाय-विशेष के जीवन में, अलिखित, अमर परमारा बन कर समा गई। रचा गया लोकप्रिय वह संगीत, जो मूल रूप में ही जन-समुदाय द्वारा ग्रहण कर लिया जाता है, और जो अपरिर्वतित रहता है, उसे लोक संगीत नहीं कहा जाएगा, क्योंकि जन समुदाय द्वारा, संगीत को प्राप्त होने वाला कतिपय परिर्वतित पुनर्जात रूप ही इसे लोक रंग प्रदान करता है।''

लोक संगीत की इस परिभाषा का आधार अधिकांश रूप में, ''सैसिल शार्प''का, सन् १९०७ का इस विषय-संबंधी निर्धारण है। इस परिभाषा के अनुसार लोकगीत अपनी प्राकृतिक अवस्था में वह पद्य व संगीत है, जिसका उद्गम व प्रसार वाणी के माध्यम से हुआ है, न कि लेखन व मुद्रण के माध्यम से। जन समुदाय में लोक-गीतों का स्थान संतोषजनक व चिरस्मरणीय बना रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि लोक-गीतों का आधार कतिपय दृढ़ नियम तो हों, लेकिन उनमें निरंतर वैयक्तिक भेद-अंतर आता रहे, रूपान्तरण होता रहे। लोक-संगीत की इस परिभाषा में लोक गीतों की रचना के लिए अनिवार्य उपभाषा, वैयक्तिक व सामूहिक के परस्पर संयोग और परम्परा व नवीनता में परस्पर संश्लेषण का चिरस्थायी संघर्ष अंतर्निहित है।

लोक संगीत के संबंध में १९वीं शताब्दी में प्रश्न उठाया गया था। प्रश्न था ''क्या लोक संगीत का उद्गम सामुदायिक है ? क्या लोक-संगीत की रचना, वैयक्तिक न होकर जन-समुदाय अथवा जन-समूह द्वारा की गई है ?''

लोक संगीत का उद्भव वास्तव में क्या है, इसका यह स्पष्टीकरण दिया गया :—

''भावावेश में अथवा नीरस कार्य से ध्यान हटाने के प्रयास में मानव गीत रचने को उद्यत होता है। इस गीत की रचना के लिए वह किसी प्राचीन धुन का आश्रय भी ले सकता है या फिर इस हेतु वह कोई नवीन धुन भी बना सकता है। इस धुन में फिर गीतकार तात्कालिक मनः स्थिति के अनुसार यथोचित शब्द पिरोता है और इस प्रकार लोक-गीत जन्म लेता है। जब इस लोक-गीत को दो व्यक्ति गाते हैं, तो धुन में कुछ परिवर्तन, कुछ अंतर प्रतीत होता है। जब यह लोक-गीत तीसरे व्यक्ति के पास पहुंचता है और वह इसे गाता है, तो धुन में पर्याप्त अन्तर भी आ सकता है, या फिर धुन का मूल रूप भी सुनने को मिल सकता है। इस प्रकार आगे से आगे, एक लोक-गीत की प्रसार क्रिया में, इसकी धुन में आने वाला अंतर विकासोन्मुख हो, इसे मांज भी सकता है, धुन को मधुर, लोकप्रिय भी बना सकता है, और इसके विपरीत ह्रास की दिशा में धुन का अंतर अथवा धुन की एकरसता लोक-गीत को लुप्त भी कर सकती है।''

'बेला बारतोक' को संगीत रचना के संदर्भ में कृषकों की योग्यता पर संदेह था। उन्होंने लिखा—''कृषक-वर्ग निजी रूम में सर्वथा नई धुनें बनाने में सक्षम है, यह संदेहास्पद है। इस सम्बन्ध में कोई तथ्यपूर्ण विवरण नहीं है। रहा प्रश्न कृषक वर्ग की साँगीतिक प्रवृति का, सो उससे भी किसी प्रकार पक्ष की पुष्टि नहीं होती।''

बारतोक के एक समदेशी कहते हैं—''लोक संगीत रूपान्तरण की एक अत्युत्तम कला है। रूपान्तरण का बोध, लोकगीत के जीवन, लोकगीत के विकास के सामर्थ्य-बल का विश्वास दिलाता है और इसकी अभिव्यक्ति तब तक विद्यमान रहती है, जब तक लोकगीतों में लचक रहती है, रूपान्तरण के गुण रहते हैं।''

लोक-संगीत के संबन्ध में कुछेक जर्मन पंडितों, विशेष रूप में 'हाँस नौमन' के अनुसार ''कला

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के प्रत्येक रूप की तरह गीत भी मूलत: शिक्षित वर्ग में विकसित होता है। शिक्षित वर्ग से, समाज के विभिन्न वर्गों में से होता हुआ यह गीत फिर निम्न वर्ग तक पहुँचता है, जहाँ उसकी क्षीणावस्था लोक-गीत के रूप में प्रचलित रहती है। समाज के शिक्षित वर्ग से निम्न वर्ग तक पहुँचते, गीत की यह क्षीणावस्था, लोकगीत, वास्तव में, सुन्दर साँगीतिक व काव्यमय इस मूल संस्कृति का अस्पष्ट अथवा कभी-कभी अपभ्रँशित रूप है। लोक-संगीत, इस प्रकार शिक्षित वर्ग से अशिक्षित निम्न वर्ग को प्राप्त होने वाली एक सांस्कृतिक धरोहर है।"

'पी० कोयरी' व अन्य फ्रांसिसी लोकसाहित्यकारों के मतानुसार, एक गीत कालान्तर में लोक-गीत भले ही बन जाए, लेकिन मूलत: वह लोक-गीत नहीं होता।

हिमाचल का लोक संगीत

हिमाचल का लोक-संगीत उतना ही प्राचीन है, जितना यहाँ का लोक जीवन। हिमाचल के आदि मानव ने भी ध्वनि का प्रयोग किसी न किसी रूप में तभी से किया होगा, जब से उसका अस्तित्व हुआ। ध्वनि, ध्वनि यन्त्रों व हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति में अंग-प्रत्यंग की थिरकन का अपरिष्कृत रूप, संगीत की शास्त्रोक्त परिभाषा को कदाचित चरितार्थ न कर पाया हो, परन्तु इतना निश्चित है कि संगीत के विकसित रूप की नींव वही है। यह सही है कि लोक-संगीत का प्रारम्भिक जो भी रूप बना, जीवन की अनिवार्य आवश्यकता ही उसकी जननी थी, न कि सुख-साधन की आकाँक्षा। तभी अविष्कारक अथवा रचयिता की अपेक्षा आविष्कार अथवा रचना का महत्त्व सर्वोपरि रहा, और अस्तित्व के संघर्ष की तीव्रता में आविष्कार व रचना अथवा इनका रूपान्तरण जीवित रहा, इनका प्रणेता नहीं। किसी समस्या के समाधान हेतु साधन रूप में क्या रचा गया, क्या अविष्कृत हुआ, यही महत्त्वपूर्ण था। जिज्ञासा यहीं तक सीमित थी। किसने रचा, कब रचा यह सर्वथा गौण था। यह जानने के लिए न तो अवकाश ही था, न ही इसकी आवश्यकता समझी गई। रचयिता अथवा आविष्कारक को भी इसकी चिन्ता नहीं थी। शायद ही उसके विचार में भी यह बात आई हो कि रचना के साथ उसका भी नाम रहे। परिणाम स्वरूप, वाद्ययन्त्र, नृत्य-रूप और गीत-संगीत, रक्षा, सफलता, स्तुति अथवा हर्षोल्लास की आवश्यकता ने जिसे भी जन्म दिया, वह अथवा उसका रूपान्तरण तो जीवित रहा, उसका विकास हुआ, परन्तु जन्मदाता सर्वथा विस्मृत रहा। सरल शब्दों में लोक-संगीत निरंतर रचा जाता रहा, विकसित होता रहा, प्रचलित होता रहा लेकिन लोक-संगीतकार सदैव विस्मृति के गाल में जाता रहा। अस्तु, लोक-संगीत रचना ने नाम पाया, लोक-संगीतकार अनाम रहा। अस्तित्व के लिए कटु-संघर्ष के आदि युग में ही ऐसा हुआ, यह बात नहीं है। यह, जितना तब सत्य था, उतना ही अब भी है। आज के उन्नत विकसित युग में, जबकि संघर्ष अस्तित्व के लिए नहीं, वरन् जीवन स्तर को ऊँचा करने, सुख-सुविधाओं के विस्तार के लिए है और लोक-संगीत का मुख्य प्रयोजन मनोरंजन है, तब भी इसका प्रणेता, लोक-संगीतकार अनाम ही है। कदाचित् लोक-संगीत रचना इतनी मधुर, इतनी आकर्षक, इतनी सम्मोहक होती है कि इसके समक्ष, इसके रचयिता का अस्तित्व ही निर्मूल हो जाता है। अपनी रचना की मोहिनी में लीन, लोक-संगीतकार भी कदाचित यही चाहता है कि वह नहीं, वरन् उसकी रचना लोकप्रिय बनें। अथवा किसी भी कारण वश, रचना के लिए प्रेरित लोक-संगीतकार की रुचि उस कारण की अपनी प्रतिक्रिया को शब्द, स्वर-लय का स्वरूप प्रदान कर देने तक ही सीमित है। जो भी हो, लोक-संगीतकार की विस्मृति उसकी रचना की लोकप्रियता के पक्ष में ही जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोक-गायक, लोक-वादक व लोक-नर्तक की स्थिति लोक-संगीतकार से कतिपय भिन्न है। यद्यपि इन लोक-कलाकारों की रुचि भी बहुधा कला प्रदर्शन तक ही सीमित रहती हैं, नाम की इन्हें भी अधिक चिंता नहीं, कला को भली-भाँति निभाने की लग्न होती है, उसमें एक अद्‌भुत आत्मतोष की प्राप्ति का स्वार्थ रहता है, नाम की उतनी लालसा नहीं। तथापि, लोक-गायक, लोक-वादक व लोक-नर्तक का कार्य क्योंकि प्रदर्शन से सम्बद्ध है और इस नाते दर्शक व श्रोता से उसका प्रत्यक्ष संपर्क है, इसलिए वह अनाम नहीं रह पाता। मंच, रेडियो, टेलीविज़न व विज्ञापन के अन्य साधनों की चमक-दमक आज के युग में इन लोक-कलाकारों में नाम की लालसा भी उत्पन्न कर दे, तो आश्चर्य नहीं।

गीत वाद्य तथा नृत्य त्रयं संगीतमुच्चते

शास्त्रोक्त संगीत शब्द में गीत, वाद्य व नृत्य, इन तीनों पक्षों का समावेश है। गायन, वादन व नृत्य, इन तीन कलाओं के सम्मिलित रूप से संगीत की परिभाषा पूर्ण होती है। हिमाचल के लोक-संगीत में भी, संगीत के ये तीनों पक्ष विशिष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। तीनों ही पर्याप्त समृद्ध हैं, तीनों में अलौकिक आकर्षण है, सम्मोहन है, विविधता है, सौंदर्य है, व्यापकता है, रोचकता है, रंजकता है। हिमाचल के लोक-संगीत की अत्यधिक लोकप्रियता इन तीन कला पक्षों के माधुर्य, वैचित्र्य व आकर्षण ही का परिणाम है।

लोक-गीत प्रकरण

हिमाचल के लोक-गीत रंजक होने के अतिरिक्त विविध हैं, व्यापक हैं। लोक-जीवन का कोई भी क्षेत्र इनसे अछूता नहीं रह पाया है। विषयानुरूप गीत के शब्द अलंकार सरल व लोक-रंगी होते हुए भी इतने समुचित, इतने सारगर्भित हैं कि रचयिता की सूझ का लोहा मानना पड़ता है। समय की गति से भी रचयिता पिछड़ा नहीं है और उसने अपने आस-पास की कोई भी घटना, कोई भी परिवर्तन अनदेखा नहीं किया है।

क्षेत्रीय गीत-नाम, विषय, स्वरूप आदि विवेचन

हिमाचलीय गीतों की संरचना सरल, स्वाभाविक, सार्थक व सार गर्भित है। गीत विषय प्रायः देवी-देवता, मंदिर, गण मान्य व्यक्ति, श्रृंगारिक नायक-नायिकाएँ, पर्व, मेले, स्थान, ॠतुएँ, घटनाएँ, पौराणिक तथा अन्य कथानक आदि हैं। गीतों में विषय-वर्णन, वर्णन में उपयुक्त शब्द, विभक्तियाँ, उपमाएँ अत्यन्त रोचक व अद्वितीय हैं।

प्रदेश के सीमावर्ती किन्नौर व लाहुल-स्पीति क्षेत्रीय गीतों में स्थान, नाम व कथानक आदि अनिवार्य भेदों के साथ, गीतों का विषय-स्वरूप, कथानक वर्णन, गीत रचना शैली एक-सी है। गीत संरचना व कथानक वर्णन का अपना एक विशेष ढंग है। किन्नौर में गीत को 'गीथङ' तथा स्पीति में 'लू' कहा जाता है। स्पीति व साथ लगते किन्नौर क्षेत्र के कुछ गीत तो साँझे भी हैं। गीत अधिकतर नृत्य गीत हैं।

लाहुल व पाँगी की गीत संरचना शैली, गीत स्वरूप व विषय एक से हैं। गीत संरचना शैली अपने ढंग की है। पाँगी में गीत को 'घीत्' व लाहुल में पुराने गीतों को 'घुरे' तथा नए गीतों को 'गीत' ही कहा जाता है। दोनों क्षेत्रों के कुछ गीत साँझे भी हैं।

कुल्लू के गीत, स्थूल विषयवस्तु की दृष्टि से तो चाहे प्रदेश के अन्य क्षेत्रीय गीतों से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साम्य रखते हैं, परन्तु गीत का स्वरूप, गीत-संरचना शैली, कुल्लूई गीतों की भी अपनी विशेष है। इस शैली का प्रभाव, साथ लगते महासू, मण्डी तथा काँगड़ा क्षेत्रीय गीतों में स्पष्ट दृष्टि-गोचर होता है। गीत अधिकतर नृत्य गीत हैं। गीत को 'राग' कहा जाता है। गीत के आरम्भ में लय-मुक्त गाए जाने वाले शृंगारिक कुछ बोल 'बाम्हणू' 'भौरु' आदि कहलाते हैं। कुल्लू नगर में गाए जाने वाले कुछ विशेष अवसरीय गीत, काँगड़ा के गीतों जैसे ही हैं बल्कि बहुत से गीत साँझे है। साथ लगते अन्य क्षेत्रों के भी कुछ गीत साँझे हैं।

ऊपरी महासू व सिरमौर के ऊँचे क्षेत्रों के गीतों में पर्याप्त साम्य है। अधिकतर गीत नृत्य गीत हैं, इसीलिए गीत को 'नाटी' की संज्ञा प्राप्त है। विषय के अतिरिक्त, न केवल गीत का स्वरूप, गीत संरचना शैली एक सी है, बल्कि पर्याप्त गीत ही साँझे हैं। ऊपरी महासू का प्रसिद्ध लय-मुक्त गीत प्रकार 'लामन' सिरमौर में तथा सिरमौर का प्रसिद्ध गीत प्रकार 'झूरी', महासू में भी गाया जाता है। ऊपरी महासू के कुछ गीतों की संरचना, कुल्लूई शैली से प्रभावित है। बल्कि ऐसा भी माना जाता है, कि 'नाटियों के क्षेत्र में कुल्लू, ऊपरी महासू का पथ-प्रदर्शक है, किसी सीमा तक यह धारणा सही भी है। इन क्षेत्रों में गीत-संरचना की एक विशेषता यह भी है कि कदाचित् ही कोई ऐसा प्रसंग, ऐसी घटना रहती हो, जिसे गीत रूप नहीं मिलता।

सोलन का जो क्षेत्र सिरमौर के ऊपरी क्षेत्र से लगता है, वहाँ का गीत-संगीत उस क्षेत्र के गीत-संगीत से मिलता जुलता है। कुछ गीत दोनों क्षेत्रों के साँझे हैं। अधिकतर गीत, नृत्य-गीत हैं और नाटी कहलाते हैं। सोलन के निचले क्षेत्र में निचला महासू व नालागढ़ क्षेत्र आते हैं। इन क्षेत्रों का गीत-संगीत, प्रदेश के निचले भाग के गीत-संगीत से मिलता है। निचले महासू क्षेत्र का जो भाग ऊपरी महासू से लगता है, वहाँ के गीत-संगीत पर उस क्षेत्र का प्रभाव स्वाभाविक है। वहाँ गीत को 'नाटी' कहा जाता है। परन्तु जो क्षेत्र बिलासपुर से लगते हैं, उनका गीत-संगीत प्रदेश के निचले क्षेत्रों के गीत-संगीत जैसा ही है। बल्कि अनेक नृत्य-गीत 'गिद्दे' तथा प्रसिद्ध लय-मुक्त 'मोहणा' 'बाम्हणा रा छोरु' आदि पर्याप्त गीत बिलासपुर, निचले महासू के साँझे गीत हैं।

सिरमौर का निचला क्षेत्र, निचला महासू, नालागढ़, बिलासपुर, हमीरपुर, ऊना, कुछेक ऊँचे स्थानों को छोड़कर शेष मण्डी व काँगड़ा क्षेत्र, तथा कुल्लू, चम्बा नगर क्षेत्रों में, विवाह आदि अवसर-विशेष का गीत-संगीत, शाब्दिक व धुन के थोड़े बहुत अन्तर के साथ एक जैसा ही है। बहुत से गीत साँझे हैं। जो थोड़ा-बहुत अन्तर है भी, उसका कारण वैयक्तिक तत्व है, जो अनिवार्य ही है। यह साम्य वैवाहिक, पुत्र-जन्म बधाई तथा अन्य महिला अधि-रोहित अवसर विशेष के गीत-संगीत में विशेषतया दृष्टिगोचर होता है। इसका एक कारण तो महिलाओं का निश्छल भाव, अनौपचारिकता, तथा सरल स्वभाव से आदान-प्रदान की भावना हो सकती है। दूसरा, इन क्षेत्रों में यातायात की व्यापक, सरल, सुलभ सुविधाओं के फलः स्वरूप मेल-जोल का बाहुल्य हो सकता है।

मंडी का जो भाग कुल्लू से लगता है, वहाँ का गीत-संगीत कुल्लू के गीत-संगीत से, तथा जो भाग ऊपरी महासू से लगता है; उसका गीत-संगीत ऊपरी महासू के गीत-सँगीत से प्रभावित है। इन भागों में गीत अधिकतर नृत्य-गीत ही हैं और 'नाटी' कहलाते हैं। गीत स्वरूप व संरचना शैली में पर्याप्त साम्य है तथा कुछेक गीत साँझे भी हैं।

काँगड़ा के जो ऊँचे क्षेत्र कुल्लू से लगते हैं उनका गीत-संगीत वहाँ के गीत-संगीत से

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रभावित है। गीत-संरचना शैली आदि में पर्याप्त साम्य है। गीत साँझे भी हैं। साथ लगते भागों के गीत-संगीत में साम्य अनिवार्य है।

निचला महासू, नालागढ़, बिलासपुर, मंडी, हमीरपुर, ऊना, काँगड़ा क्षेत्रों के विवाह पुत्र-जन्म आदि सामाजिक-पारिवारिक महत्ता के अतिरिक्त अन्य बहुधा अवसरों पर का गीत-संगीत एक जैसा है। नृत्य-गीत' गिद्दे' प्रातः-गीत 'भ्यागड़े', ऋतुगीत, झूले-पहिया 'रली' तथा 'लोहड़ी' आदि के गीत प्रायः एक जैसे ही हैं।

विवाह आदि सामाजिक महत्ता के अवसर पर का गीत-संगीत चाहे प्रदेश के अन्य निचले क्षेत्रों से मिलता जुलता हो, परन्तु अन्यथा, चम्बा का गीत-संगीत अपने ही ढंग का है। गीत का स्वरूप व संरचना शैली अवश्य कहीं-कहीं कुल्लू व काँगड़ा गीत-स्वरूप व गीत-संरचना शैली से मिलती-जुलती है। ऐसा होना स्वाभाविक ही है। चम्बा के, पाँगी-भरमौर आदि ऊँचे भागों का गीत-संगीत, चम्बा नगर तथा आस-पास के गीत-संगीत से थोड़ा भिन्न भी है और सरल भी। उन भागों का गीत-संगीत अधिकतर साथ लगते ऊँचे क्षेत्रों के गीत-संगीत जैसा है। चम्बा में 'धुरई' नामक एक विशेष गीत प्रकार गाया जाता है।

ये गीत त्योहारों, मेलों, अथवा अन्य विशेष अवसरों से संबद्ध होते हैं, जैसे सुई, मिंजर, के मेले आदि। इसके अतिरिक्त गीत का प्रणय प्रश्नोत्तरी प्रकार भी 'धुरई' कहलाता है।

चम्बा की गूजर जन-जाति का गीत संगीत अपनी तरह का है। इनके गीतों की संरचना शैली, स्वरूप व विषय वस्तु शेष चम्बा के गीतों से पर्याप्त भिन्न होती है।

चम्बा-काँगड़ा की गद्दी जन-जाति का, अपना ही गीत संगीत है। चम्बा-काँगड़ा के कुछ प्रचलित लोकप्रिय गीत भी गद्दियों द्वारा अपना लिए जाते हैं, परन्तु पौराणिक व अन्य कथानक गीत, घटना गीत आदि, स्वरूप तथा संरचना शैली की दृष्टि से इन भागों के गीतों से पर्याप्त-भिन्न होते हैं।

शैलियाँ

नायक-नायिका के रूप में मन की बात कहने के लिए, घटना का वर्णन करने के लिए, कथा-प्रसंग की व्याख्या के लिए, एक शैली में लोक-गीत रचयिता ने द्विपदी की पहली पंक्ति में वर्णित विषय वस्तु का दूसरी पंक्ति की विषय वस्तु से प्रायः कोई सम्बन्ध नहीं रखा। अथ :—

फुल्ल फुल्ली गया डाले तूनिए,
देख्या छोरी रोया करदी, असें आई जाणा ठारे-उनिएँ।
(गँगी-प्रेमी का प्रेयसी को ढाढ़स)

हो सोयणा, पीपली रा बूटो,
जाँगली आणो दुर्गा सिंधों, कुर्मो रे बूटो।
(सोयणा की नाटी-नायिका वर्णन)

घाटा गाशे सुरजा निकलो कौला रा फूलो,
ऐट मेरीया टिकरा, गाणे नवें सकूलो।
(लायकराम मास्टर की नाटी-घटना वर्णन)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक अन्य शैली में गीत की विषय वस्तु को लोक गीत रचयिता ने क्रम से, छन्दोवद्ध किया है। अथ :—

कठी तेरे घर बो गदिया,
कठी जो चल्लू रा ओ।
भटी-टिकरी घर बो गदणी
खरचा जो चल्लू रा ओ।
(सुन्नी-भूंखू-कथागीत)

निर्मंडा रीए ब्राह्मणिए, पया बरखा रा छाला भलिए,
ढाठू सग्या एसा बामणीरा, पया बरखा रा छाला भलिए।
(निर्मंडा ही ब्राह्मणी-नायिका वर्णन)

देई के नगारा ओ राजा हेड़े जो चलेया,
लोक तमासे जो आए, जिया ओ,
मेरया ओ हरिसिंधा राजेया।
(राजा हरिसिंह का गीत-प्रसंग वर्णन)

लोक-गीत रचयिता ने प्रायः इन्हीं शैलियों का आश्रय लिया है। छन्द तुकान्त भी हैं, अतुकान्त भी। शास्त्र की दृष्टि से पूरे गीत में एक छन्द नियम का पालन भले ही न हो पाया हो, लेकिन गीत की विषय वस्तु दक्षता से निभाई गई है और स्वर-लय की दृष्टि से पूरा गीत एक ही मानदण्ड पर खरा उतरता है।

गायन की दो शैलियाँ हैं, निवद्ध व अनिबद्ध। लोक-गीत के गायन की भी यही दो शैलियाँ हैं। अनिबद्ध गायन में लोक-गीतों के दो रूप आएँगे जिन्हें लोक-गायक कार्य करते समय, अथवा कार्य के बाद अवकाश के क्षणों में, अकेले, अथवा दो या दो से अधिक, साथ मिलकर, अथवा दो दलों में बट कर, प्रश्नोत्तर के रूप में गाते हैं। इनमें, विषय वस्तु, लम्बे स्वरों में, अनिबद्ध निभाई जाती है।

सिरमौर में 'झूरी' महासू में 'लामन' बिलासपुर-लोयर महासू में 'गंगी' 'लोका' 'बाहमणा रा छोरु' किन्नौर में 'उख्याँग' लाहुल-स्पीति में 'मंगल सूत्र' कुल्लू महासू में लय-बद्ध गीत के पहले गाया जाने वाला 'भौरु' या बामणू' चम्बा में गूजर गीत, व कुछ विवाह गीत अनिबद्ध शैली के ही गीत हैं। अथ :—

लाँवीए भौजीए पधरी मेरी सगेतै,
दाणा पाणियो रीजका माअरै कीलै आइतै इतै।
(लामन)

टाटे गे ठोगड़ी, ठोंगड़ी गे टाटी, उखलो दी शटी सातू जे बाटी,
जेतणी गौती म्होंनो री झूरिए, तेतणी भूखया हामे काटी।
तेतणी भूखया रे॥
(झूरी)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दँग बो लाई टाशी योंई रो गूँग ल देव सो,
मोई शे ला ला योंई शे गूँ ल देव सो।

(मंगलसूत्र)

ज़ोली फुल्याच हो,
बोण्डे नागासो,
ज़ोली फुल्याच ॥

(उख्याँग)

शेष लोक-गीत निवद्ध शैली में आएँगे। कतिपय ऐसे भी लोक-गीत हैं, जिनके कुछेक प्रकार निवद्ध व अनिबद्ध दोनों शैलियों में निभाए जाते हैं। 'गंगी' 'झूरी' 'उख्याँग' आदि अनिबद्ध लोक-गीतों के कुछ प्रकार निवद्ध शैली के भी हैं।

खेतों, चरागाहों में व यात्रा में वाद्य अप्राप्य होने के कारण बहुधा लोक-गीत अनिबद्ध शैली में निभाए जाते हैं, परन्तु वास्तव में ये लोक-गीत निवद्ध होते हैं। विवाह व अन्य अवसरों पर महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले बहुधा लोक-गीत भी यद्यपि अनिबद्ध निभाए जाते हैं, परन्तु वास्तव में ये गीत भी निबद्ध होते हैं।

लोक जीवन के परम्परागत व हर्षोल्लास के अन्य अवसरों पर आयोजित समारोहों में जहाँ लोक-वाद्य उपलब्ध होते हैं, अथवा लोकवाद्यों की संगति अनिवार्य होती है, वहाँ गायन विधिवत निवद्ध होता है। वाद्य के अप्राप्य होने की स्थिति में अथवा अन्यथा भी लय के लिए व हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति के लिए तालियों का आश्रय प्रायः लिया जाता है।

लोक जीवन के विवाह व हर्षोल्लास के अनेक समारोहों में अनेक स्थानों पर हारमोनियम-तबले आदि आधुनिक वाद्यों ने प्रवेश पा लिया है।

लोक-संगीत के मंच व रेडियाई कार्य-क्रमों में, लोक-गीतों व लोक-नृत्यों की संगति में अन्य कई परिष्कृत वाद्य भी प्रयुक्त होते हैं। लोक-संगीत के मंच व रेडियाई प्रदर्शनों का रूप भी, वाँछित-अवाँछित ढंग से, मंच की आवश्यकताओं के अनुसार व संयोजक अथवा प्रस्तुत कर्ता की वैयक्तिक पसन्द के अनुसार बहुधा, मूलरूप से भिन्न रहता है।

प्रकार

संगीत, लोक-जीवन का अभिन्न अंग है, अस्तु लोक-जीवन के अनेक पहलू लोक-गीतों की विषय वस्तु हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक उत्सवों, हर्षोस्लास के समारोहों, तथा समय व अवसर विशेष से सम्बद्ध लोक-गीत हैं।

समय-विशेष के लोकगीत

भारतीय संस्कृति में वर्ष का आरम्भ चैत्र मास से माना जाता है। वर्ष शुभ रहे, अच्छा बीते सुख-समृद्धि मिले कदाचित् इसी अभिप्राय से हिमाचल के अनेक स्थानों पर चत्र मास में विशेष गीत गाए जाते हैं, जिनकी विषय वस्तु प्रायः भगवत नाम महिमा, पूजा-अर्चना रहती है। चैत्र मास में वसंत पूरे यौवन पर होता है, इसलिए इन गीतों में ऋतु-वर्णन भी होता है। बिलासपुर-लोयर महासू में इन गीतों को 'महीने के गीत' चम्बा-काँगड़ा में 'ढोलरु' ऊपरी महासू में 'चत्रोल' कहा जाता है। यह गीत, वर्ग-विशेष (तूरियों) द्वारा गाए

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जाते हैं। गीत गाने के उपलक्ष में गायक-मंडली को आटा, चावल, घी, नमक, मिर्च व नकदी के रूप में पारिश्रमिक (नसरावाँ) दिया जाता है। बिलासपुर-लोयर महासू की ओर गाया जाने वाला एक गीत :—

चैत्र मासी गीत

हरे रामन जी, हरे राम का नाम,
रामे पाई रामकली और देओतों ने कंधार।
घड़ा जो पाया पाँजे पाँडवें,
गढ़ लंका प्रीतन काल।
सुख अम्बे सुख डालिये जो,
सुखे तुम्हारी सिया ॥
इक सुख नहीं रामा मिरगले जो,
जिनरे घाई सिया।
सठ घड़ा सौ बिनुए,
सिया चली पनिहार।
बिच काला, बिच कबरा,
आई मिरगण बाण।
चली जाँदी रामा तेरी धामकी,
और लछमन को पाँचों बाण।
जे लयावे रामा मिरगले,
सिया न खावे खाण,
सीता को होगा कँचुआ,
और लछमण टोपी-पाग।
हामे आए चैता रा नाँओ बे सुणाँदे।
(गीत में, रामचरित मानस प्रसंग है। प्रसंग विवरण अपने ढंग का है।)

मिरगला = मृग। कबरा = चितकबरा। पाग = पगड़ी। कँचुआ = केंचुकी। देओतें = देवते।

मण्डी क्षेत्र में, चैत्र मास के दौरान एक विशेष गायन प्रकार प्रचलित है, जिसे 'छिंज' कहते हैं। इन गीतों की विषय वस्तु बहुधा, ब्याहता महिलाओं की अंतर्वेदना, विरह, ससुराल की कठोरताएँ, स्नेहल पीहर का स्मरण आदि हैं। 'छिंज' का एक अंश :—

अम्बुए दे हेठ मेरी 'अम्आ' खड़ोती,
झड़ी-झड़ी पौंदा सुइने पातर,
चैतर सुहावणा।
जाओ-जाओ अम्मा घरे आपणे,
'बापू' गमानी नू भेज्याँ।

(अम्माँ के स्थान 'ताई', 'चाची' आदि, तथा 'बापू' के स्थान 'ताया' 'चाचा' आदि सम्बन्ध वाचक संज्ञाए जोड़ कर गीत बढ़ाया जाता है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अम्बुए दे हेठ=आम के नीचे। खड़ोती=खड़ी है। पोंदा—गिरता है। सुइने पातर = स्वर्णिम बौर। गुमानी=अभिमानी। नू=को।

महीने के गीत गाने वाला वर्ग-विशेष भी निचले महासु क्षेत्र (वर्तमान जिला-सोलन) में ऐसे गीत गाता है, जिनकी विषयवस्तु प्रायः ऋतु वर्णन रहता है। अथ :—

हाँ रे, रित बी ना मौली जो देवा वे सुहावणी,
रे ना, भइया ए आई बी रितु मेरे बाली न बसँता,
हरे ना। ए समुद्रा केरी जिगा जे हुँदा सबाल,
फूलो रे ना, भइया ए कँवल नरपति,
राजे लिया हाँ उतारा हरे ना।
हाँ रे पिपल बी ना मौल्या जो देवा बे सेहरे,
बणे वे हाँ, भइया ए पिपल ब्रम्हा विष्णुए लिया हाँ उतारा,
हरे ना। वड़ोटा वी ना मौल्या जो देवा वे सुहावणा।
रे हाँ, भइया बड़ोटा वी जाती रा,
महादेवे लिया हाँ उतारा, हरे ना।
हाँ रे केलो बी ना मौली जो देवा वे सुहावणी
रे ना, भइया ऐ केलो बी पाँजे तिने पाँडवे लिया हाँ उतारा हरे ना।
हाँ रे चिया केरे गोभू जे हुँदे वे सुहावणे,
रे ना, भइया ए चील वी जाती री सठें कौरवें लिया हाँ उतारा, हरे ना।
हाँ रे तुलसी बी ना मौली जो देवा बे सुहावणी
रे ना, भइया ए तुलसी वी जाती री बरागी ए लिया हाँ उतारा, हरे ना।

(गीत में वसन्त का चित्रण है वसन्त के चित्रण में खिलते विभिन्न फूलों तथा नवाँकुरित होते विभिन्न पेड़ पौधों को विभिन्न देवताओं, देव पुरुषों का प्रतीक दिखाया गया है।)

मौली=नवंकुरित होना। कँवल=कमल। उतारा=अवतार। बड़ोटा=वरगद। केलो=देवदार। चिया=चीड़। वरागी=वैरागी। गोभू=नवाँकुर।

चैत्र सांक्रान्ति की रात और उसके दूसरे दिन बिरशी (अँचली) लगती है, और ऊपरी महासू (वर्तमान जिला शिमला) के अनेक स्थानों पर भी चैत्र मास में गीत विशेष गाए जाते हैं। सम्बधित एक गीत :—

बिंची

राईऐ कोटे जौमी बेटड़ी हो—२॥
वेटियो आणो भाटा पौंडता हो—२॥
पौंडता ता होंदौ मेरो शेवरौ हो—२॥
गूँठी का खाई काले बिचुऐ हो—२॥
बेटियो आणो भाटा गारडी हो—२॥
गारडो ता होंदौ मेरो जोठियो हो—२॥
बिंची लै आए म्हारे पारगू हो—२॥
केऊ देशे आए बाबा पारगू हो—२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उबीयै आऐ बी सराजटै हो—२ ॥
तेऊ देशै लाई-खाई के बाबुआ हो—२ ॥
जौआ रे खाई बी जारीगड़ै हो—२ ॥
ऊना रे लाई बेटा ढ़ीगलै हो—२ ॥
तेऊ देशे जाँदी ना बाबुआ हो—२ ॥
बिंची लै आए म्हारे पारगू हो—२ ॥
केऊ देशे आए बाबा पारगू हो—२ ॥
भौजीयै आए भी भजालूटै हो—२ ॥
तेऊ देशे लाई-खाई कै बाबुआ हो—२ ॥
भाता रै खाई बेटा थालटै हो—२ ॥
छोटै-छोटै पैहनी बेटा कपड़ै हो—२ ॥
तेऊ देशे मेरे जाणा बे जाई हो—२ ॥

(गीत में बिंची नामक कन्या के विवाह-सम्बन्ध की चर्चा है। 'बिंची' के लिए सम्बन्ध आते हैं, तो वह पूछती है, कि जहाँ से सम्बन्ध आए हैं, वहाँ क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं। 'सिराज' (स्थान नाम) से आया सम्बन्ध 'बिंची' इसीलिए अस्वीकार कर देती है, क्योंकि उसे जौ के 'जारीगड़े' (पकवान विशेष) खाना तथा ऊन के ढीले-ढाले वस्त्र पहनना पसन्द नहीं। 'बिंची' को 'भज्जी' (स्थान नाम) का सम्बन्ध पसन्द आता है, क्योंकि वहाँ का खाना—भात (चावल) तथा पहनना —छोटे-छोटे चुस्त कपड़े, बिंची को पसन्द हैं।)

ग्रीष्म ऋतु में वर्षा के लिए सिरमौर में 'साधटू' गाए जाते हैं। ये गीत भक्तिरस के होते हैं। गीतांश :—

जागो रे जागो मेरी माई,
साधटू नाचदी आई ॥

काँगड़ा-बिलासपुर आदि निचले क्षेत्रों में वर्षा ऋतु को 'चमासा' नाम दिया गया है। इस दौरान, विशेष रूप से सावन में, इन क्षेत्रों में विशेष गीत गाए जाते हैं, जिन्हें 'चमासे दे गीत' कहा जाता है। इन गीतों की विषय वस्तु बहुधा व्याहता महिलाओं की विरह व्यथा रहती है। चमासे का एक गीत :—

चमासा गीत

बारहें बरसें कंत घर आया, आई रह्या ठंडे बाग,
मरुए दी छायाओ बारी, मेरी जान मरुए दी छाया ओबारी।
इक्की हत्थे लोटा दूए हत्थे झारी, जाई रही ठंड़े बाग,
मरुए दी छाया ओ बारी, मेरी जान मरुए दी छायाओ बारी।
पखुआ झुलाँदिया दा पलुआ जे गिरेया, नजरी पया गलहार,
गले माला किने दितड़ी मेरी जान, पंजलड़ी किने दितड़ी।
पलंग बहिठिए अम्मा नी मेरिए, नाजो दे गल बिच हार,
गले माला किने दितड़ी अम्मा जी पंजलड़ी किने दितड़ी ॥
हऊँ क्या जाणू बेटेया तू मेरेया, जाई अपनी भाभो नू पूच्छ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गले माला किने दितड़ी बेटेया कि पंजलड़ी किन्ने दितड़ी।
चरखे बहिठिए भाभो नी मोरिए, नाजो दे गल विच हार,
गले माला किने दितड़ी, भाभिए नी पंजलड़ी किन्ने दितड़ी।
हऊँ क्या जाणू द्योरा जी मेरेया, जाई अपनी भैणा नू पूच्छ,
गले माला किने दितड़ी द्योरा जी पंजलड़ी किने दितड़ी।
गुडिया खल्हांदिए बोबो नी मेरिए, नाजो दे गल बिच हार,
गले माला किने दितड़ी भैणे नी, पंजलड़ी किने दितड़ी।
हऊँ क्या जाणू भाई जी मेरेया, जाई अपनी नाजो नू पूछ,
गले माला किने दितड़ी, भैड़ा जी पंजलड़ी किने दितड़ी।
रोटियाँ पकाँदिए नाजो जी मेरिए, तेरे गले विच हार,
गले माला किने दितड़ी मेरी जान पंजलड़ी किने दितड़ी।
सच ओ गलाइए सुरगे नू जाइए, झूठयाँ दा बेड़ा वार ना पार,
गले माला द्योरे दितड़ी मेरी जान, पंजलड़ी द्योरे दितड़ी।
ल्यायाँ मेरी ढाल ल्यायाँ मेरी तलवार छोटा भाई बढी सटणा,
कि गले माला जिने दितड़ी मेरी जान, पंजलड़ी जिने दितड़ी।
छोटा भाई ना ही ओ बढणा, बढ़ी देणी घरा दी नार,
तुझ ब्याह ही होर करना, मेरी जान, तुझ ब्याह ही होर करना ॥

(धनोपार्जन के लिए परदेश गया पति जब बारह वर्ष बाद घर लौटता है, तो अपनी पत्नी के गले में एक सुन्दर हार को देखकर शंकित हो जाता है। हार किसने दिया, यह जानने के लिए वह पत्नी से पूछता है। पत्नी बात टालने के लिए कहती है, कि अपनी माँ से पूछो। वह माँ से पूछता है, भाभी से पूछता है, बहन से पूछता है, लेकिन सब एक-दूसरी से ही पूछने को कहती हैं। बहिन कहती है, हार तुम्हारी पत्नी को किसने दिया, यह अपनी पत्नी से ही पूछ। हार के बारे में पति के हठ को देखते हुए पत्नी सच्ची बात कह देती है कि हार उसे देवर ने भेंटा है। यह जान कर शंकित पति अपने छोटे भाई को जान से मार देने को तैयार हो जाता है, परन्तु पत्नी उसे रोक कर कहती है, कि यदि कोई ऐसा संदेह है, तो छोटे भाई को नहीं, मुझे जान से मार कर दूसरा ब्याह कर लो।)

छमाहड़ा

चढ़ेया महीना चैत वे अड़ेया,
मैं खिड़ रहियाँ चम्बे डालियाँ।
कुछ वार पईयाँ, कुछ पार पईयाँ,
सानू बोलियाँ लान बेहड़े वालियाँ।
चढ़ेया महीना बसाख वे अड़ेया,
बसाखी दे न्हौणें नू जानियाँ।
स्हाड़े हत्थ दे गडुआ मुँढे पर परना,
मैं जमना दे न्हौणे नूँ जानियाँ।
चढ़ेया महीना जेठ बे अड़ेया,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं जेठे ते घुंड कढैनियाँ ।
सानू हसणा-खेलणा बौहत पयारा,
मैं देहिया नूँ आँच न लानियाँ ।
चढ़ेया महीना हाड़ बे अड़ेया,
मैं मझियाँ ते दुध चोई ल्यौनियाँ ।
स्हाड़े चोमणे वालड़े दूर सहियो,
मैं ताँ आपे ही चोई लै आनियाँ ॥
चढ़ेया महीना सौण बे अड़ेया,
मैं कोरे कुज्जे दहियाँ जमानियाँ ।
स्हाड़े खानण वालड़े दूर सहियो,
मैं ताँ छिक्के नू हत्थ ना लानियाँ ।
चढ़ेया महीना भादों बे अड़ेया,
मैं पाधे नू पुच्छण जानियाँ ।
खोल-खोल पाधया पोथिया नु,
स्हाड़े रांझे ने कद घर आवणा ॥

(गीत में परदेस गए अपने पति की प्रतीक्षा में विरहन के घड़ी-पल गिनने का चित्रण हैं।)

सानू=हमें। बोलियाँ=कटाक्ष। लान=करती हैं। घुंड=घूँघट। मझियाँ= भैंसें। जानियाँ, लानियाँ=जाती हूँ, लगाती हूँ। पाधा=पंडित। राँझा=पति। कद=कब।

सावन में झूलों की बहार भी रहती है। प्रदेश के निचले क्षेत्रों में अनेक झूला गीत भी गाए जाते हैं। एक गीत का अंश :—

पींहग लड़ी

काहे दी मेरी पींहग लड़ी, काहे केहड़े, ए डाले,
सहियो काहे केहड़े ए डाले ।
रेसम दी मेरी पींहग लड़ी चनण केहड़े ए डाले,
सहियो चनण केहड़े, ए डाले ।
....

किस मुलखा ते आए परोहणे : गीत

किस-किस मुलखा ते आए परोहणे,
ढोल ताँ लगेया अम्बर बी वजणे ।
रिम झिम लगियाँ बरखाँ-झड़ियाँ,
खेत भरे पाणिए, करसाण लग्या हसणे ।
उच्चे-उच्चे पीपल पीहंगा पइयाँ,
द्राँणियाँ-जठाणिया लगी पहिंगाँ पर झुटणें ।
ठन्ड़े-ठन्ड़े पाणी कन्ने डाल-डाल नौंहदे,
खड्डा लगी रुण-झुण, रुण-झुण नचणे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छुट्टी गया दिलड़ू चढ़ेया समाणे,
उडी गया हवा कन्ने मुलख वगाने।

(ग्रीष्म से तप्त मन-प्राण सरस पावस ऋतु के आगमन से नाच उठे हैं। खेत पानी से भर गए हैं, कृषक की बाँछें खिल गई हैं। पीपल पर झूले पड़ गए हैं, देवरानी-जेठानी मस्ती में झूल रही हैं। पानी की ठन्डी फुहारों में नहाते पेड़-पौधे भी झूम रहे हैं।)

वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले गीतों में चम्बा का विशेष गीत प्रकार है "मल्हार"। 'मल्हार' की विषय वस्तु ऋतु अनुकूल रहती है। एक मल्हार गीतांश :—

ऐसी तो बिखमबाजी, जिया को उदासी लागी,
मेरे मन में ऐसी आई, लीजियो वनवास।
हरे को मैं काट डालूं,
सूखे को मैं जलाए डालूं,
उपजे ना बाँस, फिर बाजे ना वँसरिया।
ऐसो तो विखम बाजी, जिया को उदासी लागी,
मेरे मन में ऐसी आई, लीजियो वनवास।
....

'मल्हार' के अतिरिक्त चम्बा में 'पहाड़', 'झिझोटी' आदि भी अनेक विशेष गीत प्रकार गाए जाते हैं। एक झिझोटी :—

ढकियाँ चढ़ँदे सून्दरू, छम-छम रोई ओ।
अजी हो मेरिए सुन्दरू लुहारिए॥
होर ताँ धीयाँ वापुए नेड़े-तेड़े दितियाँ।
सुन्दरु ताँ दितो बापुए नदिया दे पार ए॥
अजी हो मेरिए सुन्दरु लुहारिए।
होरना जो दिते वापुऐ सूहे-पीले कपड़े॥
सुन्दरु जो दिते बापुए खदरा दे सादे।
अजी हो मेरिए सुन्दरु लुहारिए॥
होरना जो दिती बापुए तिल्लेदार जुतियाँ॥
सुन्दरु जो दिती बापुए काली-काली जुतियाँ॥
अजी हो मेरिए सुन्दरु लुहारिए॥
होर ताँ धीयाँ बापुए गभरु जो दितियाँ।
सुन्दरु लुहारी बापुए बुढ्या जो दितियाँ॥
अजी हो सारी रात जंगले गुजारी ओ॥

(गीत में 'सुन्दरु लुहारी' विवाहिता महिला की हृदय-वेदना का चित्रण है, जिसे उसके बापू ने एक तो अनुपयुक्त जोड़ से ब्याह दिया है, दूसरे विवाह सम्बन्धी लेन-देन में भी और कन्याओं की अपेक्षा भेद-भाव रखा है।)

ढकियाँ चढ़ँदे=चढ़ाई का रास्ता चढ़ते। नेड़े-तेड़े=समीप। गभरु=जवान।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रदेश के ऊँचे क्षेत्रों में, जहाँ भारी बर्फ पड़ती है, और तीन-चार अथवा इससे भी अधिक महीनों के लिए जीवन के बाह्य क्रिया-कलाप प्रायः रुक जाते हैं, घर के अन्दर ही रहना होता है, वहाँ समय व्यतीत करने के लिए रामायण, महाभारत की कथाएँ, व देवस्तुति गाई जाती है। विभिन्न क्षेत्रों में इन गीत प्रकारों के भिन्न नाम हैं। महासू में इन्हें 'अँचली' कहा जाता है। अँचली में प्रायः पहले ब्रह्मखाड़ा (भक्तिरस का गीत) गाया जाता है, फिर बहादुरी की गाथा 'भारथ' (वार) गाई जाती है।

एक 'अँचली' गीत का अंश

सिया राणी पाणी ले चाली ली राम जी,
सिया राणी पाणी ले चाली ली ॥
सिया राणी पाणी लै चाली ली राम जी, सिया राणी पाणी लै चाली ली।
पीठी पाई किली घड़ोली लै राणियै, पीठी पाई किली घड़ोली।
हातै पाओ पीतली लोटा लै राणियै, हातै पाओ पीतली लोटा।
सिया राणी चालदी हुई ली राम जी, सिया राणी चालदी हुई।
वैणै मौने सुँचदी लागी लै राम जी, वैणे मौने सुँचदी लागी।
जै ता होमु लै कोपटी राम जी, जै होमै रामा लै कोपटी।
मुई लोड़ी घौरा लै आई ला राम जी, मुई घौरा लै आई।
सिया राणी चालदी हुई ला राम जी, सिया राणी चालदी हुई।
जाये पौड़ी आधली वाटै लै राम जी, जाये पौड़ी आधली वाटै।
वैणै मौने सुँचदी लागी ली राम जी, वैणै मौने सुँचदी लागी।
जे ता डेऊ आगले वाटे ला राम जी, जै ता डेऊ आगले वाटे।
रीखै लोड़ी खाई वरागै लै राम जी, रीखै लोड़ी खाई बरागै।
जै ता डेऊ पाछली वाटै राम जी, जै ता डेऊ पाछली वाटै।
मुऐं लोड़ी खाई मशाणै ला राम जी, मुऐं लोड़ी खाई मशाणै।
माँजवी वाटै चालदी हुई राम जी, माँजवीं वाटै चालदी हुई।
जाए पौड़ी बाँई पण्हैरे ला राम जी, जाए पौड़ी बाँई पण्हैरे।
बाँई पणैरे नेहणा कौरा धोणा लै राणिए, बाँई पणैरे नेहणा-धोणा।
पार वौणे मीरगू चौरा ला राम जी, पार वौणे मीरगू चौरा।
एत नहीं ए कौसीयो डौरा ला राम जी, एत नहींए कौसीयो डौरा।
पाणी पींदे बाँई लै पौड़ा ला राम जी, पाणी पींदे बाँई लै पौड़ा।
सुने शींगा रुपैये पाँओं ला राम जी, सुने शींगारु रुपैये पाँयो।
ऐणो मीरागू कौदी ना शाओ ला राम जी, ऐणो मीरगू कौदी ना शाओ ॥

(गीतांश में, रामचरित मानस के 'सीता हरण' प्रकरण का प्रारम्भिक विवरण है सीता जी नहाने के लिए जलस्रोत की ओर बढ़ती है। राह में कई प्रकार के विचार उनके मन में आते हैं। जल-स्रोत पर पहुँचकर वह नहाती हैं, और तभी उन्हें सोने का मृग दिखाई देता है।)

किली = किल्टा। मौने = मन में। सुँचदी = सोचती। कौपटी = कपटी। रीखै = रीछने। बरागै = व्याघ्र ने। डेऊ = जाऊँ। मशाणा = मसान ने। माँजवी = बीचकी। पण्हैरे,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पणेंरे=जलश्रोत। नैहणा-धोणा=नहाना-धोना। मीरगू=मृग। सुने=सोने के। रुपैये= चाँदी के। शाओ=देखा।

शीतकाल में, 'भारथ' 'हरूल' (हार) 'भर्तृहरि' 'पँडवाणा' आदि नामों से अनेक पौराणिक, व अन्य शौर्य गाथाएँ सिरमौर में गाई जाती हैं। 'भर्तृहरि' (भारथ) का एक अँश :—

भर्तृहरि (भारथ)

आमे छोड़ियों पापिया कोसी देशो खे चाला ला,
राणी थाम्बों रो पींगालो बोले भगुए रा पाला ला।
आमे छोड़ियों पापिया, कौसी देशो खे चाला ला,
तूँ माँगे भिछिया आँ बोले, डाऊँबी पाला ला।
आमे छोडियो पापिया, कौसी देशो खे चाला ला,
तुमें छोडियो पापणी घौरी, पूरबो खे चाला ला।
तेरी गलौ बोले पापिया, आओणा साथो ला,
तू माँगे भिछिया आँ बोले, डाऊँबी हाथो ला।
केथी देखी बोलै राणिए साधो, री साधणी साथो ला,
औणा नई साथो बोलै ढाके, तापो डींगरो तापो ला।
नाइटो रा बालू बिना जोड़े चाला ना ज़ादा पड़ो पोयरो दे छालू।
तुम्बीड़े दे शाकी रे कौबे, थे तोड़ी के पाए ला,
सदा थे वारीए एनै कौऊ राणे रे खाए।
घौटे रे लोए पाटो रे, मुँदड़े घड़ाए ला,
मुँदडे बोलो घड़ाए-धोरे गीया, पुरीबो री जाए।
पुरीबोशेउ चले बोलै, पुरीबाया राए ला,
सोआ मोणे शंखिया थोआ, तोलेणा लाए।
पुरीबो शादो रेया बोले, दुखीणों री जाए ला,
दुखीणों शेउ-चले बोलै, दखीणिया राए।
दुखीणों शेउ चले बोलै, दखींणिया राए ला,
सौआ मौणे शंखिया एकी, ला डुंगों खे खाए।
....

वीच-बीच में :—
एथिए रौह गुरु मेरा, एथिए रोह ला,
साधो री ना चौंअरी दा गुरु एथिए रौह ला।

और

रामेई राम पुकारा पुरी ने, रामेई राम पुकारा ला,
रामेई राम पुकारा पुरी ने, रामेई राम पुकारा ला,

("भतृहरि" गाथा के प्रस्तुत अंश में राजा भर्तृहरि के संन्यास लेने के बाद साधुवेष में राजमहल में आकर राणी पिंगला से भिक्षा माँगते समय का प्रश्नोत्तर, चक्की के पाटों की मुंदियाँ कानों में डालना, तथा सवा मन शंखिया खाना वर्णित है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आमे=हमें। कौसी=किस। थाम्बो रो=पकड़ती है। आँ डाऊँबीपाला=मैं पल्ला पसारुँगी। घौटे रे=घराट के। पुरीबो री=पूरब की ओर। दुखीणो=दक्षिण को। मौणे=मन। एकी ला डँगो खे=एक ही बार में। चौंअरी=साधुओं के वैठने का स्थान।

चम्बा-काँगड़ा की 'गद्दी' जन जाति भी बहुधा 'ऐंचली' नाम से भक्ति गीत गाती है। इन गीतों का विषय प्रायः 'शिव', 'राम व कृष्ण' कथानक होते हैं। एक कथानक-गायन में एक से अधिक (प्रायः तीन) स्वर संरचनाओं का प्रयोग होता है। कथानकों के अंश :—

ऐंचंली (गद्दी गीत)

शिव :

(i) सिबा मेरे महादेवा, महादेवा वो
सिकरा माँ ताड़ी लगाई। सिबा मेरे महादेवा।
सिवा मेरे महादेवा, महादेवा वो,
मुँडखाँ खलारी नाचै, सिवा मेरे महादेवा।
हो राणी गौरजाँ, गौरजाँ वो,
मरना पेटे दो पीड़ा, राणी गौरजाँ।
सिबा मेरे महादेवा, महादेवा,
मुँडकाँ तै क्या लेऊदा, सिबा मेरे महादेवा।
सिवा मेरे महादेवा, महादेवा वो,
मुडकाँ मा ठाकर लेऊदा, सिबा मेरे महादेवा।

(ii) कच्ची वो क्वारी बापू दे घरा,
अद वो ब्याइयाँ मत छोड़दा।
तुसाँ भला खाँदियाँ झिझणी ताँ साला ना,
असाँ भला खाणे-धूणियाँ दीयाँ भँदूकरियाँ।
झिझण ला साला बोपू दे घरा,
असाँ भला खाणी-धूणियाँ भँदूकरियाँ।
तुसाँ भला सौणा ल्हेफा बली न्यहाला पर,
वसाँ भला सौणा मिरगा दे छाले।
ओ ल्हेफा न्यहालियाँ बापू दे घैरे,
स्हाड़ा भला मान मिरगा दे छाले।

(iii) नच्चै धूड़िया तूँ मुडकाँ दे भारे ओ,
नच्चै धूड़िया तुँ मुँडकाँ खलारी ॥

(गीतांश में, ब्याहने आए शिव व पार्वती का वार्तालाप तथा शिव के नृत्य करने का वर्णन है।)

[पार्वती जी कहती हैं। कुँवारी तो बापू के घर में ठीक थी, पर अब अध-ब्याही ही, न यहाँ छोड़ जाना।

शिवजी कहते हैं—तुम झिझण-साला (उत्तम चावल) खाने वाली हो, उत्तम लिहाफ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'सेज पर सोने वाली हो, और हम धूणिया-मँदूकरियाँ (धएँ की भभकार) पर जीते हैं, मृग-छाल पर सोते हैं, इसलिए हमारे साथ रहना कठिन होगा।

पार्वती जी कहती है—खाने के लिए उत्तम चावल, सोने के लिए बढ़िया सेज, रजा-इयाँ—ये सब बापू के घर के पदार्थ थे। आपके साथ धूणी-भँदूकरी तथा मृगछाला ही मेरे लिए सकल पदार्थ हैं।

भगवान् शिव दुर्गम पर्वत पर समाधि लगाए बैठे हैं। वे जटाएँ बखेर कर नाच रहे हैं।

राम

राजा चली गया हेड़े जो,
सिया कल्ली रही गी घरै।
खबराँ होई दस रावणा जो,
सिया कल्ली रही गी घरै।
मुच्छाँ मुन्नी तीयाँ, दाहड़ी रख्वाली ती,
सिया हरनै रे ताइएँ।
हत्था तुम्बा लया, झोली लई फेरी,
सिया टोलना चली पया।
कि सुण भिच्छा देयां जुजमानणी,
आया कुला दा परोहता।
इत्थी नहीं घरा राजा राम,
भिच्छिया कुस देणी।
आपे होंदा राजा राम घरै,
करदा घोड़े दा दान।
धनी-धनिया रामा दियाँ कारै,
सै तैं भनी दितियाँ।
तिना भनणी खसमा दीया कारा,
ओ ता नार बी बकारी।
लै बी परोहता भिच्छा लै,
सिंया भिच्छा लई के आई।
भिच्छा लगी देणा, गुठिया ते खिंजी,
ठप झोलिया च पाई।
ईयाँ भला बुझदी तू बुझरु हा मैं,
दस रावण बुला।
दस रावण हा आइदा तिज्जो नेंदा।
दस राबण बुला।
दस राबण बुला वो गढ़-लंका,
गढ़-लंका दा राजा ॥
बारा बरसाँ राजा बैटी ध्युओ तेरी;

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फेरी बणगी तेरी नार ।
तेरे बण-खंड़ी मेहला पुआए,
दस राबण ओ राजे ।
पाछीरन्दी दिती वो दवाला,
सिया नसणे दे ताइएँ ।
पाछीरन्दे राखे ओ धुआँकू,
सिया देखणे दे ताइएँ ।।
वो बणा ते ना घरा जो,
आया राजा राम ।
बणे गवाया हरण सकार,
घरै रामा पायी हकड़ी,
होणी घरै हारै ।
हो कठी लुकुरी सिया,
कठी छुपुरी नारै ।
कुण बो लई गया मेरी,
सियाभाँति नारै ।।
हो जाँदिया सिया जो,
सुध ना सम्हाल ।।
तेरे जंगाँ खेरे जामे,
लेई गया सिया नारै ।

(गीतांश में सीता-हरण प्रसंग व राम द्वारा सीताजी की खोज का वर्णन है ।)

हेड़े जो=शिकार के लिए । कल्ली=अकेली । मुच्छाँ मुन्नी लीयाँ=मूछें कटवा दी । दाहड़ी-रखवाली ती=दाढ़ी बढ़ा ली । भिच्छा=भिक्षा । धनी-धनिया=धन्य-धन्य । भनी दितियाँ=तोड़ दी, लाँघ ली । खसमा दीयाँ काराँ=पति की रेखा, कार । बुझरु=साधु । बकारी=बेकार । मेहला पुआए=महल बनवाए । पाछींरन्दी=पीछे से । धुआंकू=झरोखे । ग्वाया=खोया । हकड़ी=हाँक । कठी=कहाँ । लुकुरी=छिपी हुई ।

कृष्ण

नदी रे कनारे, नदी जमना कनारे,
कोण राजा हटड़ी पुआई हो ।
नदी रे कनारे नदी जमना कनारे,
गुजरिया नौहण सँजोया हो ।
नोही ता धोई मेरी हुई पछेड़,
धगरुआ पेहनण लगी हो ।
पाहणी फटकाँदी बाहीं झटकाँदी,
चाल छठी रा बो अलबेली ।
सिरा लइयाँ डलिया, पैराँ पइयाँ पाहणियाँ,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जोड़ बो जड़ोई कन्ने चल्लियाँ ।
नदी रे कनारे कोई कान्हा सणींदा,
कान्हा तेरे दरसण पाणे हो ।
नदी रे कनारे कोई मुरली बजाँदा,
बजणे सु वाला कुण बोला हो ।
बजणे वाला कोई कान्हा सुणींदा,
कान्हा तेरे दरसण पाणे हो ।
टकै ता टकै सेर दुध-दही लैणा,
होर डोवाई लैणा पाणी हो ।
अन्ना री जगात नाँई धन्ना री जगात,
दुधा सेरी जगात न होंदी हो ।
गढ़ा मथरा रीया गोजरियो ना,
तोंदा वो ना रूप सलोना हाँ ।
खटी ताँ मिठड़ी दही बिक्या नी जाँदी,
मिठड़ी दई बी जमेरनी हाँ ।

(गीतांश में पनघट से आती-जाती व दूध-दही ले जाती गोपियों से कान्ह की छेड़छाड़ का वर्णन है ।)

[गुजरी, नदी पर स्नान करने जाती हैं । वहाँ उसे मधुर मुरली सुनाई पड़ती हैं । मुरली कान्ह बजा रहे हैं । मधुर मुरली पर मोहित गूजरी कान्हा के दर्शन करना चाहती है ।

दूध-दही ले जा रही गूजरियों को कान्ह जगाती मिल जाते हैं, जो जगात माँगते हैं, छेड़-छाड़ करते हैं ।]

चम्बा में ही प्राय: सर्दियों में गाया जाने वाला एक गीत प्रकार है— 'मुसादा' । 'मुसादे' की विषयवस्तु रामायण, कृष्ण-लीला आदि पौराणिक गाथाएँ होती हैं । 'मुसादे' गाने वाला कलाकार विशेष होता है, जिसके पास एक वाद्यविशेष रहता है, जिसे भी 'मुसादा' कह दिया जाता है । यह एक तार-वाद्य होता है । गायक कलाकार, वाद्य की तारों को, अपने गायन स्वर में अनुकूल मिलाकर वाद्य को गले में टेढ़ा लटका लेता है दाएँ हाथ से वाद्य के तार छेड़कर, तथा बाएँ हाथ से खँजरी नुमाताल-वाद्य पर थाप दे-दे कर गायक 'मुसादा' गाता है । 'मुसादे' का आयोजन जहाँ होता है वहाँ एक खुले स्थान पर, अनाज की एक ढेरी सी लगा दी जाती है । जिस पर एक जला दीया और धूप रख दी जाती है । मुसादे का आयोजन किसी व्यक्ति विशेष की मनौती पूरी हो जाने पर, उसके घर में हो रहा हो, तो घर के खुले कमरे में, अनाज की ढेरी लगा दी जाएगी, और उस पर एक दीपक और धूप जलाकर रख दी जाएगी । 'मुसादे' घर-घर जाकर भी गाए जाते हैं । इन्हें दो व्यक्ति गाते हैं । एक जहाँ छोड़ता है, दूसरा गायक अगला चरण वहीं से पकड़ता है, 'हुंगारा' देने वाला व्यक्ति बीच-बीच में श्रोताओं को हँसाने के अभिप्राय से गायक पर कुछ मनोरंजक टिप्पणियाँ भी करता है ।

श्रोतागण चारों ओर बैठ कर मुसादे का आनन्द लेते हैं । एक 'मुसादे' का अंश :—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुसादा गीत

सरब सैराह् कोई गुजरी जरमी,
गोकुल नगरी कान्हा ।
जिस बो हथोड़ू गुजरी,
तिस बो हथोड़ू कान्हा ।
घड़ी बो मटोय, पले बो मटोय,
जौ-जौ जोत सुआय ।
बारा तां बरसे दी गुजरी होई,
बारा तां बरसे दा कान्हा ।।
अठ-दस गुजरी जोड़ कितोरा,
दुध-दही बेचणा चलियाँ हो ।
काणी देई गुजरी से कै लगी बोलणा,
हाखी भरी सुरमा दैणा भैंणे,
कान्ह् बखो मारना नजारा ।।
गुजरी निकली अंदरा दी,
बिजली लसकी अम्बरा दी ।
छोड़ कान्हा मेरी बई मत मरोड़े,
घरे मेरा बालक याणा हो ।
बालक जो तेरे देला घिलाह्रा,
बालका जो निंदरे सुलाला हों ।
गढ़ नगरा दीयो गुजरियों हे जी ।।

("मुसादा" गीत में दूध-दही ले जाती गूजरियों के मन में कान्ह् मिलन की अभिलाषा तथा कान्ह् की गूजरियों से छेड़छाड़ की चर्चा है ।)

सरब सैराह=बस्ती में । हथोड़ू=हाथ, ओर । मटोय=बढ़े । जौ-जौ जोत सुआय=जिस प्रकार बीज धीरे-धीरे फसल बन खेत में लहराती है । घिलाह्‌रा=पालना; झुलारा । देला, सुलाला=दूँगा, सुलाऊँगा ।

किन्नौर व स्पीति में भी देवस्तुति के रूप में व अध्यात्मज्ञान संबंधी अनेक गीत गाए जाते हैं ।

लाहुल में देवताओं व महापुरुषों से संबंधित गीत गाए जाते हैं, जिन्हें 'घुरे' कहा जाता है । एक 'घुरे' का अंश :—

ईपू सेरी ग्रांवों ग्वाड़ू पवालू राखे जी ओ,
ग्वाड़ू पवालू मैंगे री धारे जी ओ ।।
....

(त्रिलोकी नाथ का गीत)

प्रातः उठकर घर का काम-काज करती हुई महिलाएँ जो गीत-विशेष गाती हैं, प्रदेश के निचले क्षेत्रों में उन्हें 'भ्यागड़ा' कहा जाता है । प्रायः ईश्वर का नाम, इन गीतों का विषय रहता है । एक "भ्यागड़ा" गीत—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भ्यागड़ा : कृष्ण लीला महिमा

मदन मोहन सुन्दर वन में मुरली बजाते है ।
कभी गंगा, कभी जमना, कभी सरजू में न्हाते हैं ॥
कभी लट्ठा, कभी खासा, कभी काली कमली ओढ़ते हैं ।
कभी लड्डू कभी पेड़े, कभी माखन उड़ाते हैं ॥
कभी गऊँए, कभी बछड़े सभी बन में चराते हैं ।
कभी गोकुल कभी मथुरा कभी विन्द्रा में जाते हैं ॥
कभी गोपी, कभी ग्वाले, सभी के साथ जाते हैं ।
कभी खेलें, कभी दौडें, कभी रासें रचाते हैं ॥

लट्ठा=खासा : सूती कपड़ा विशेष ।

'गुजरी' : प्रातः नहाने के समय का भजन

चंदे दीया चानणीया तार्‌याँ दीया लोई,
गुजरियाँ नौह्‌ण संजोया जी, श्यामा हाँ जी कोई ।
गढ़ मथरा ते गुजरी उतरी,
अग्गे कान्ह जगाती जी, श्यामा हाँ जी कोई ।
छोड़-छोड़ श्यामा वहियाँ मेरियाँ,
मुझ घर सौहरा सायाणा जी, श्यामा हाँ जी कोई ।
सौहरे नू तेरे गढ़-मथरा बजीरी,
तुझ घर जाण ना देवाँ जी, मैहरिए हाँ जी कोई ।
छोड़-छोड़ श्यामा बहियाँ मेरियाँ,
मुझ घर सासु सयाणी जी, श्यामा हाँ जी कोई ॥
सासु नू तेरिया नू पीढ़े बहालां,
तुझ घर जाण न देवां जी, मैहरए हाँ जी कोई ।
छोड़-छोड़ श्यामा बहियाँ मेरियाँ,
मुझ घर बालक याणा जी, श्यामा हां जी कोई ॥
बालके नू तेरे नू दुधपल्यावाँ, गली गली फरयावाँ,
तुझ घर जाण ना देवाँ जी, मैहरिए हाँ जी कोई ।
छोड़-छोड़ श्यामा बहियाँ मेरियाँ,
मुझ घर कन्त रसीला जी, श्यामा हाँ जी कोई ।
कंते दा मेरे दा ब्याह करावाँ,
इक सांवली दुज्जीं गोरी जी, मेहरिए हाँ जी कोई ।
कंते दा मेरे दा ब्याह करादां,
अप्पूँ क्यों फिरदा कवारा जी, श्यामा हाँ जी कोई ।
तुझ जीयाँ गुजरियाँ हऊँ लड़ बी नी लांदा,
इस बिध रहया कवारा जी, श्यामा हाँ जी कोई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जे तू श्यामा खरा रसीला,
रखदा दो-दो नारां जी, श्यामा हाँ जी कोई ।
इक तां तेरियाँ तलियाँ झसदी,
दूजी तोड़दी तणीयां जी, श्यामा हाँ जी कोई ।
चंदे दीया चानणीया, तारयाँ दीया लोई,
दोनों झगड़े पइयाँ जी, श्यामा हाँ जी कोई ।।

(गीत में नहाने जाती गुजरी से कान्ह की छेड़-छेड़ का वर्णन है।)

लोई=प्रकाश में । चानणीया=चांदनी में । सासु-सौहरा=सास-ससुर । तुझ जीयाँ=तेरी तरह की । मेहरिए=गुजरिए । झसदी=सहलाती ।

भ्यागड़ा

जाग ब्रह्मा- जाग विष्णु, जागणे दी बेला होई जी ।
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी ।।
राधे खड़ी जी ।।
जाग ब्रह्मा जाग विष्णु, दातणे दी वेला होई जी ।
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी ।।
राधे खड़ी जी ।।
जाग ब्रह्मा जाग विष्णु, नौह्णे दी बेला होई जी, ।
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी ।।
राधे खड़ी जी ।।
जाग ब्रह्मा, जाग विष्णु, पूजा दी वेला होई जी ।
तुसें जागदे क्यों नी जी, मुखों बोलदे क्यों नी जी ।।
राधे खड़ी जी ।।

(गीत में राधिका के कृष्ण से जागने, दातुन करने, नहाने, पूजा-पाठ करने का आग्रह है।)

प्रदेश के ऊँचे क्षेत्रों में भी प्रातः ऐसे गीत प्रकार गाए जाते हैं। प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी प्रातः गाए जाने वाले विशेष गीत प्रकार हैं। किन्नौर में गाए जाने वाले ऐसे एक गीत का अंश :—

ओ सांग्यो खोयाँ हो,
ले ज़ी बाई च़् चुबाई,
च़्ली सांग्यो खोयाँ ।। (सांगीथंङ)

संध्या के समय, 'दीया-बाती' महिलाओं की दिनचर्या का अनिवार्य अंग है।

संध्या की इस 'दीया बाती' के समय अनेक आरती गीत गाए जाते हैं । प्रदेश के अधिकतर क्षेत्रों में गाई जाने वाली एक आरती :—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'संध्या' : शिव स्तुति

हरि संध्या सिमरो मंदर को जाती।
काहे दा दीवा राम जी काहे की वाती,
काहे दा तेल जले दिन-राती, जले दिन-राती। हरि संध्या···
माटी का दीवा राम जी, नरमे की वाती,
सरसों का तेल जले दिन-राती, जले दिन-राती। हरि संध्या···
वांई-वांई ते मैं जल लेऔंदी,
सिवजी को गडुआ ढलांदी, संभू जी को गडुआ ढलांदी। हरि संध्या···
बागाँ-वागां ते मैं चनण कटांदी,
सिबजी को तिलक लगांदी, संभू जी को तिलक लगाँदी। हरि संध्या···
हाटी-हाटी ते मैं अछत मुगांदी,
सिवजी को अछत चढ़ांदी, संभू जी को अछत चढ़ांदी। हरि संध्या···
वागां-बागां ते मैं फुल्ल मुगादी,
सिबजी को फुल्ल चढ़ांदी, संभू जी को दुब्ब चढ़ांदी। हरि संध्या···
बागां-वागां ते मैं बिल पतर मुगांदी,
सिबजी को बिलपतर चढ़ांदी, शंभू जी को भंग चढ़ंदी। हरि संध्या···
हाटी-हाटी ते मैं धूप मुगांदी,
सिबजी को आरती चढ़ांदी, संभू जी को नवेद चढ़ांदी। हरि संध्या···

(लेऔंदी=लाती हूँ। गडुआ ढलांदी=जल देती हूँ। अछत=अक्षत। मुगांदी=मँगवाती हूँ। बिलपतर=बिल्वपत्र। नवेद=नैवेद्य।)

प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी संध्या की पूजा-अर्चना के कई गीत प्रचलित हैं लाहुल में रात्रि के समय लोक वाद्यों पर बजाए जाने वाले 'राग'-विशेष (धुन-विशेष) को 'निद्राली कहते हैं।

अवसर-विशेष के गीत

परम्परागत प्रायः सभी धार्मिक एवं सामाजिक पर्व प्रदेश भर में कतिपय परिस्थिति जन्य अंतर के साथ मनाए जाते है। कुछेक उत्सव किन्ही स्थानों पर अपेक्षाकृत अधिक धूमधाम से मनाए जाते हैं। कुछेक पर्व ऐसे भी हैं, जो प्रदेश के कुछ ही भागों में प्रचलित हैं, जैसे लोहड़ी।

कतिपय पर्व ऐसे भी हैं, जिन्हें मनाने का समय अलग-अलग है, जैसे 'दिवाली'। कुछेक उत्सव, पूर्णतया स्थान विशेष से ही संबद्ध है, जैसे किन्नौर का 'फुल्याच'। इन उत्सवों से संबंधित अनेक गीत प्रकार प्रचलित हैं। अथ :—

'वैशाखी'

वैशाखी का उत्सव प्रदेश के बहुधा क्षेत्रों में मनाया जाता है। इस अवसर पर मेलों का आयोजन होता है। बड़ी धूमधाम रहती है। कुछ स्थानों पर केवल वैशाखी के दिन, और कुछ स्थानों पर मास-पर्यन्त मेलों का आयोजन होता है। प्रदेश के निचले क्षेत्रों में वैशाखी को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'बसोआ' और ऊँचे क्षेत्रों में 'विशु' 'बीश' कहा जाता है। इस अवसर से संबद्ध कुछ गीत प्रकारों के अंश :—

वैशाखीगीत

कुरले कुरले नदी गिरे हो, नदी गिरांदड़ेया मच्छा हो,
सारी ध्याड़ी मुइए अते-पते हो, दिल ना बोले घरी गच्छा हो।
आया बसोआ नी माए नेड़े-नेड़े,
भाऊआ तां तेरा नो कुड़िए निक्का याणा,
अते आपू ईणा तां अप्पू जाणा हो ।।
बिसुआ ताँ आया नी माए नेड़े-नेड़े,
मेरे बापू जो सादा भेजे हो।
बापू तां तेरा कुड़िए बिरध सयाणा,
आपू ईणा तां आप्पू जाणा हो ।।
पिंदड़ी तां पिंदड़ी माए अप्पू खाए हो,
अते पिंदड़ी दे पट्ठे मिजो भेजो हो ।।

(गीत में दूर-पार ब्याही कन्या वैशाखी के अवसर पर पीहर आने के लिए माँ से आग्रह कर रही है कि वह भैया को या बापू को बुलावा लेके, उसके ससुराल भेजे लेकिन माँ इसमें असमर्थता दिखाती है। इस पर कन्या अपने मन को सांत्वना देने के लिए माँ से उन पत्तों को ही भेज देने का आग्रह करती है, जिन पर इस अवसर का विशेष पकवान खाया जाता है।)

कुरले=भंवर। अते-पते हो=इधर-उधर घूमी हुई रही। घरी गच्छा हो=घर जाने के लिए। भाऊए जो=भाई को। सादा=बुला लाने को। निक्का याणा=बहुत छोटा। ईणा=आना। बिरध-सयाणा=वृद्ध। पिंदड़ी=पकवान विशेष। पट्ठे=पते। जिन पर पिंदड़ी खाई जाती है।

(चम्बा का गीत)

गोली गो हो, हो हाया बेले होना।
गोली गो हो ।।
साङा मा साङ, हो योद ले वेसारो।
साङा मा साङ ।।
ऊ वो मा ऊ, हो नारी कासङ ऊ ।।
ऊ वो मा ऊ ।।
ऊम ता ऊ ज्ञोश, हो हात थोच्या मी भाईच्।
ऊम ता ऊ ज्ञोश ।।
थोम ता थो ज्ञोश, हो काशो मोरेयो मीस।
थोम ता थो ज्ञोश ।।
थोम ता थो ज्ञोश, हो हात लान चीदया भी भाईच्।
थोम ता थो ज्ञोश ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लान चम लान चीश, हो परिगास नारसिंग माराच् ।
लान चम लान चीश ।।
ऊ वो मा ऊ, हो बोरासङ ऊ ।
ऊ वो मा ऊ ।।
ऊम ता ऊझोश, हो हात थोच्या मी माईच् ।
ऊम ता ऊझोश ।।
थोम ता थोझोश, हो काशी सोरेयो मीस ।
थोम ता थोझोश ।।
थोम ता थोझोश, हो हात लान चिदया मी माईच् ।
थोम ता थोझोश ।।

(किन्नौर में नरगिस के फूलों ('नारी कासङ ऊ' तथा 'बोरासङ ऊ') का फूलना, वैशाखी के आगमन का सूचक है। 'बीश' का किन्नौर में बड़ा महत्त्व है। यह पर्व 'बीश' इस क्षेत्र में वैशाख के पहले सप्ताह में मनाया जाता है। 'बीश' के दिन प्रकृति की पूजा की जाती है। कहीं-कहीं इस अवसर पर धरती-माँ की पूजा की जाती है, तथा इसी पूजा के साथ, खेतों में होनेवाले बोआई से लेकर फसल की कटाई तक के सभी आवश्यक कार्यों को रस्म के तौर पर निभाया जाता है। फिर 'बीश' के दूसरे दिन से ही सभी किसान फसलों की बीजाई आरम्भ कर देते हैं।) (किन्नौरी 'बीश' गीत)

लागे मेरे सजना,
म्हारे बोलो विशु रे मेले ।
घिरदी-फिरदी जातरा नाचो—२,
देवी रा रथटू सभी तो आगे।
आगे मेरया सजणा—२,
देवी रा रथटू सबी तो आगे ।
म्हारे बोलो विशु रे मेले,
लागे मेरे सजना, म्हारे बोलो···।

(गीत में, बैशाखी-मेले के अवसर पर, देवी की शोभा यात्रा की चर्चा है।)
जातरा=शोभा यात्रा। रथटू=रथ ।

(महासूई 'बीश' गीत)

दशहरा

प्रदेश में अधिकतर स्थानों पर दशहरा पर्व मनाया जाता है। कार्तिक नवरात्रों में बहुधा स्थानों पर रामलीला खेली जाती है। दशहरा कुल्लू में सर्वाधिक धूमधाम से मनाया जाता है। कुल्लू का दशहरा मेला विजयदशमी से प्रारम्भ होकर सप्ताह भर तक रहता है। कुल्लू के दशहरे को अब अंतराष्ट्रीय स्तर की ख्याति मिल चुकी है। मेले में कुल्लू भर के देवता पहुँचते हैं। मेले में पहुँचने वाले इन देवताओं की संख्या पहले की अपेक्षा अब बहुत कम है। मेला, मनाली की हिडिम्बा देवी की आज्ञा से आरम्भ होता है। मेले में पहुँचने वाले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्येक देवता के साथ देवता-वाद्य व लोक-गायक, नर्तक साथ आते हैं। ये लोक गायक-नर्तक दल आकर्षक नृत्य प्रस्तुत करते हैं और अनेक गीत प्रकार गाते है। इस अवसर से संबद्ध एक गीत का अंश :—

दशहरा गीत

कुलुए दशेहरे स्टेज लागा बौणदा,
चऊए चकूणिए चक।
चक भले माह्णुआ,
चऊए चकूणिए चक ॥
बीजा बोला दशमी लागी म्हारै कुलुए,
म्हारे जाचा बे जाणा।
जाणा भले माह्णुआँ,
म्हारै जाचा बे जाणा ॥
देशा-देशा रे आए म्हारे पाउणे,
भात लोड़ी जाटू रा खाणा।
खाणा भले माह्णुआ,
भात लोड़ी जाटू रा खाणा ॥

(कुल्लू में विजयदशमी समारोह मनाया जा रहा है। समारोह के लिए स्टेज बन रहा है। हम भी दशहरा-समारोह देखने जाएँगे। समारोह में दूर-पार के अनेक व्यक्ति पहुँचे हैं, अतिथि आए हैं, ऐसे अवसर पर 'जाटू' (स्थानीय चावल विशेष) का भात खाना है।)

दीवाली

दीपावली का समय व मनाने का ढंग अवश्य अलग-अलग है परन्तु यह पर्व प्रदेश में लगभग हर स्थान पर मनाया जाता है। इस अवसर से संबद्ध भी अनेक गीत प्रकार प्रचलित हैं। अथ :

धुप्पू

धुप्पू ता मेरा पंजरंगा भाई पंजरंगा,
सहियो धुप्पू लै।
भाभो तां जांदी कुम्हार हटड़े, कुम्हार हटड़े,
मैं बी गई गजरेड़े, सहियो......................
भाभो तां ल्यांदे कुजमलू, कुजमलू,
मैं बी ल्यांदा चंगा थाल, सहियो..........
भाभो दे आए पाँवनड़े, पांवनड़े,
मेरा बी आया सका भैड़, सहियो............
भाभो बी जांदी तेलियाँ दे, तेलियाँ दे,
मैं बी गई गजरेड़े, सहियो....................

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाभो ल्यांदी तेल पली, तेल पली,
मैं बी अंदा ध्यूए पेड़ा, सहियो..............
भाभो बी रिन्ही तिल-खिचड़ी, तिल खिचड़ी,
मैं बी रिन्ह्या भता ढेला, सहियो..........
भाभो तां कुट्टी मुंगरिए, मुंगरिए,
मैं बी चक्या बड़ा डींग, सहियो.............
भाभो तां सुती ओबरिया, ओबरिया,
मैं बी सुती चंगे पौड़े, सहियो.............

(गीत में भावज के प्रति ननद की स्पर्धा का चित्रण है।)

कुजमलू=मिट्टी का कसोरा। चंगा=उतम। पांवनड़े=अतिथि। सका भैड़=सका भाई। रिन्ही=पकाई। चक्या=उठाया। कुट्टी=पीटी। डींग=लट्ठ। सुती=सोई। ओबरिया=अंदर के बन्द कमरे में। पौड़े=खुले दालान में।

निरबोनिङ ता बाटा राज़ाओ—२,
निरबोनिङ ता बाटा वाटनी नाचो—२,
निरबोनिङ ता काली बुकरी बाज़ो—२,
निरबोनिङ ता ज़ौली घोंसी बाज़ो—२,
....

(किन्नरी 'द्विआल' गीत)

इस अवसर-विशेष पर लोयर महासू क्षेत्र में, रामायण को विशेष गीत-संगीत रूप दिया गया है, जिसे, 'बरलाज' कहते हैं। 'बरलाज' में रामायण के विभिन्न प्रकरण तीन भागों में बाँट कर सुनाए जाते हैं। इनके नाम हैं—'रमैण' 'रथौल' व 'छोकड़ा'। रामायण के वनवास प्रकरण में सीताहरण के बरलाज व्याख्यान के अंश :—

बरलाज

रमैण

एबे भाया रामा लखणा, नठे जाओ जंगला ओ,
पंजवटीए डेरा बे जमाओं, दशुओ खे,
होए लंका खबरो,
सिया रहि रे जंगलो दे आए।
एबे भाया सुईनुआ, मेरेया भाइया ओ,
मेरे संगे जंगलो खे चाले, सिया देओते,
आए रौहे बणो दे ओ,
म्हारे ए नारी लंका के ले आणे।
एबे भाया आगे-पीछे, नठो सुइनु दशुओ,
पंजवटी रे निऊड़े रे जाओ, सुइनुए,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की भाइयो अरजो,
पंजवटी रे निऊड़े रे जाओ।
एबे भाया सिया रा गो डेरा दशो, सुइनू हो,
तुमे दशुआ चौगस रौहे मेरे वणना,
सुइने रे मिरगो,
तौबे दशुआ सिया रे भगावे।
एबे भाया सुइने रा बणो सुइनू मिरगो,
सिया रे आंगणो दे घूमों, सिया देओते,
देखो भाइयो मिरगो,
तेस देखी रो मोहितो रे होए।
एबे भाया सुइने रा घाई देणा मिरगो,
मेरे नीणी रे जुधया नशाणी, रे हाथो दा,
लओ रामा धणशो,
चाले जाओ रे मिरगो रे धोरे।

(राम-लक्ष्मण, सीता सहित बन में चले जाते हैं। वहाँ पंचवटी में वे रहने लगते हैं। लंकेश को इस बात की सूचना मिल जाती है कि राम-लक्ष्मण के साथ सीता भी वन में आई है। रावण मारीच को वताता है कि सीता वन में आई है और हमने उसे लंका हर लाना है। रावण व मारीच पंचवटी के पास आ जाते हैं और राम-लक्ष्मण तथा सीता को देखते हैं। मारीच रावण को कहता है कि मैं सोने का मृग बनता हूँ, तुम होशियार रहना और सीता को भगा ले जाना। मारीच सोने का मृग बन कर पंचवटी के पास घूमने लगता है। सीता, सोने का मृग देख कर उस पर मोहित हो जाती है। यह मृग मारना है और यह निशानी मैंने अयोध्या ले जानी है, यह कह कर सीता, राम से धनुष उठाने व मृग को मार लाने का आग्रह करती है।)

दशुओ खे=रावण को। सुइनू=मारीच। निऊड़े=समीप। चौगस=होशियार। मिरगो=मृग। धाए देणा=मार देना। नीणी=ले जानी है। धोरे=पीछे।

रथौल

राम देखो जंगले चला जाओ,
भले जी।
आगे-आगे मिरग भागो,
भले जी।
पीछे जुध्या रे राम भागे,
भले जी।
ना देख डेरे दा जती बैठा होला,
भले जी।
ना देख सुइनु था अरज करो तो क्या बोलूं,
बोलो भला जी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ना देख राम बणी जाओ,
भले जी।
जती खे हाको देओ,
भले जी।
दौड़ी रो वणे औवी जाणो,
भले जी।
ना देख राम मिरगे घेरी पाया,
भले जी।
ना देख सीता हाक शुणो,
भले जी।
जती खे बोलो,
भले जी।
जंगले चलें जाणो,
भले जी।
स्वामी मिरगे घेरी पाए,
भले जी।
सिया जती रे झेड़ा लागो,
भले जी।
दूजी हाक तइएं आए,
भले जी।
ना देख जती था अरज करो तां क्या बोलूं,
बोलो भला जी।
ना देख धणश थागी देओ,
भले जी।
डेरे गिरदी धणशो री कार देओ,
भले जी।
ना देख सीता के अरज करो तो क्या वोलूं,
वोलो भला जी ।।
ना देख कारो को बाहर नई जाओ,
भले जी।
कार कोई अंदर लंघी पाला,
भले जी।
जाली रो भस्मी रा ढेर हुई जाला,
भले जी।
हाथो दे धणश लाओ,
भले जी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रामो रे धोरे चला जाओ,
भले जी।
ना देख लंका रा रावण था क्या काम कमाओ,
भले जी।
ना देख साधु रा भेष बणावी देओ,
भले जी।
लाम्बी शिरो दी जटा लाओ,
भले जी।
सीता रे डेरे आवी जाला,
भले जी।
माता करी रो भिक्षा माँगो,
भले जी।
भोली-भाली सीता होली,
भले जी।
भिक्षा लई रो बाहरे आओ,
भले जी।
ना देख रावण था बाहों को थामों, तुरत सुदी बठाली देओ।
भले जी।

(राम धनुष उठा, मृग के पीछे चले जाते हैं। आगे-आगे मृग व पीछे-पीछे राम भागते हैं। पंचवटी में सीता के साथ लक्ष्मण बैठा है। मारीच राम की आवाज़ में लक्ष्मण को पुकारता है कि हे लक्ष्मण, मुझे मृग ने घेर लिया है, इसलिए तू शीघ्र वन में आकर मेरी रक्षा कर। सीता को यह करुण पुकार सुनाई देती है। वह लक्ष्मण को, वन में जाकर राम की रक्षा करने का आदेश देती है। लक्ष्मण, सीता के बार-बार कहने पर वन में जाने के लिए विवश हो जाता है। धनुष उठा कर जाते हुए, वह धनुष से एक रेखा खींच देता है, और सीता से यह निवेदन करता है कि इस रेखा से बाहर न जाना। रेखा के अन्दर जो भी आएगा, वह भस्म हो जाएगा। यह निवेदन कर लक्ष्मण धनुष को संभाल, राम को ढूंढने चल देता है। उसके जाते ही रावण साधू का वेष बनाकर सिर पर लम्बी जटाएँ लगा कर सीता के आंगन में पहुँच जाता है और 'माता' पुकार कर भिक्षा माँगता है। भोली सीता भिक्षा लेकर लक्ष्मण रेख से बाहर आ जाती है और रावण उसे बाँह से पकड़ कर उठा लेता है।)

तइंए=फिर, और। थागी-देओ=उठा लेता है। गिरदी=चारों ओर।

छोकड़ा

बोले राणिए रोचना दे हाया—२।
खिशकी भाइयो रे जाओ—२।
रावणे रथो दी बठयाली—२।
बणो दा गरड़ो रे मिलो—२।
जुध बे गरड़े रे कीयाँ—२।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जुधो दा गरड़ो रे हारो—२।
रथ बे काशो दे लाया—२।
सिया रे लंका पझाई—२।
बागो दे सीतला रे राखे—२।
देओते हाटे रो आए—२।
डेरे दे सीतला रे ढूढ़ो—२।
डेरे बे सीतला ना मिटो—२।
राम जी आशुए रे रुणे—२।
जती रे बरजणे लागो—२।
रोए ना राम जी ना ए रोए—२।
जुणिए सीतला रे चोरी—२।
गालमे तेसरा रे बेजा—२।

(सीता रोती चिल्लाती है, छूटने का प्रयत्न करती है रावण उसे रथ में बिठाता है। वन में गरुण (जटायु) मिलता है। जटायु रावण से युद्ध करता है। युद्ध में जटायु हार जाता है। रावण रथ को आकाश में ले उड़ता है और सीता को लंका पहुँचाता है। लंका में सीता को बाग में रखता है।

राम लक्ष्मण वन से लौटते हैं, पंचवटी में सीता को ढूँढते हैं। वहाँ सीता नहीं मिलती है। राम विलाप करते हैं। लक्ष्मण ढाढ़स बंधाते हुए कहते हैं कि जिसने भी सीता को चुराया है, हम उसका बीज नाश कर देंगे।)

काशो दे=आकाश में। पझाई=पहुँचाई। ना मिह्टो=नहीं मिली। जुणिए=जिसने। गालमे=नाश कर देंगे। देओते=राम-लक्ष्मण।)

दीवाली के अवसर पर ऊपरी महासू क्षेत्र में भी 'काब' 'देयौली' आदि स्थानीयसंज्ञा से सीता हरण से रावण वध तक के राम-चरित मानस प्रसंग गाए जाते हैं। प्रसंग का अंश :—

ऊपरी महासू क्षेत्र

इन्द्रा कागणा चूटी—२।
डेवी लंका रे बाजारे—२।
सारी दामोदुवी लंका—२।
दशु दामोदुवा राई—२।
बासना कीदा का आई—२।

(स्वर्ग से इन्द्र का काक आया। वह लंका नगरी में गया। उसके कारण सारी लंका सुवासित हो गई। अपूर्व सुगन्धि से राजा रावण भी सुवासित हो गया। सब अचम्भित थे कि यह मोहक सुगन्धि कहाँ से आई।)

कागणा=काक। दामोदुवी=सुवासित हुई। दशु=रावण। राई=राजा। कीदा=कहाँ से।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिरमौर क्षेत्र में भी राम-चरित-मानस दीवाली और फिर सर्दियों में 'रासे' व 'हरुल' नाम से गाया जाता है। एक 'हरुल' अंश :—

एथा लागा बोलदा औरै का बौले,
जुधो लाया रे, रामो-रावणो रा।
कुणी जाला रामो, रे जुधो दा,
आपी जाला रे, रामो रा हणुआँ।
म्हीना आया षाढ़ो, सावणो रा।
पाणी लागो रे, नान्हों जुरबूरो।
लागी बरखा शौरू, पाथरो री,
ऊबों जाणा रे, धारा नंगरी खे।
....

(प्रस्तुत 'हरुल' अंश, रामचरित मानस में राम-रावण युद्ध प्रसंग से है।)

जुधो = युद्ध। हणुआँ = हनुमान। षाढ़ो = आषाढ़ का। नान्हो जुरबूरो = महीन फुहार, बूंदावाँदी। शौरू-पाथरो री = कंकड़-पत्थर की।

'वरलाज'-दयोठण रामनौमी आदि धार्मिक पर्वों पर भी गाया जाता है।

शिवरात्रि

शिगरात्रि उत्सव प्रदेश भर में मनाया जाता है। 'गद्दी' विशेष रूप से शिवभक्त होते हैं। अस्तु यह पर्व इनके लिए विशेष महत्त्व का है। इस पर्व पर 'गद्दी लोग वड़ी धूम-धाम करते हैं नाचते हैं व अनेक लोक गीत व 'ऐंचली' गाते हैं। ऊपरी महासू क्षेत्र में शिवरात्रि ३ दिन का उत्सव होता है। पहले दिन गणपति, दूसरे दिन पार्वती और तीसरे दिन (शिवरात्रि के दिन) शिवजी का पूजन होता है। इस अवसर पर इस क्षेत्र में विशेष गीत गाए जाते हैं। अथ :—

शिवरात्रि गीत

(i) सईं आओ पाज़े री डाली—२।
चोड़ो ना पाज़े री डाली—२।
लोगु तां बांडदे गाली—२।
सईं आओ ज़ौआ री वागै—२।
चोड़ो ना ज़ौआ री डाली—२।
लोगु तां बांडदे गाली—२।
सईं आओ बेला री पाची—२।
चोड़ो ना बेला री डाली—२।
लोगु तां बांडदे गाली—२।
सईं आओ आँगणे ताटी—२।
खाड़ू मोटै बाक़रे काटी—२।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(यह शिव-स्वागत गीत है। गीत में शिवजी को सावधानी के साथ आने के लिए कहा गया है, और उनके घर पहुँचने पर स्वागतार्थ 'खाडू-बकरे' काटने की चर्चा है।)

सईं=शिवजी। चोड़ो ना=तोड़ो ना। बांडदे=देते हैं।

(ii) सईं चालो आपणे घौरे—२।
ऋण पाओ लोगुऐ गौले—२।
ओडू का बाशुवी शेरी—२।
सईं लागी धौरा री तैंरी—२।
सूले डेवे आपणी काठी—२।
एरे सैंयां डेके ना लोटी—२।
सूले डेवी आपणे घौरे—२।
शीघे आवी आगुले शौरे—२।

(यह शिव-विदाई गीत है। गीत में शिवजी को सावधानी के साथ जाने के लिए कहा गया है।)

गौले=गले में। सूले=धीरे। ओडू=खेत का किनारा। तैंरी=तैयारी। डेके ना लोटी=ढाँक में ना लुढ़कना। शीघे=शीघ्र। शौरे=सर्दियों में।

शिवरात्रि पर्व की सर्वाधिक धूम-धाम मंडी क्षेत्र में होती है। मंडी में शिवरात्रि से आरम्भ होकर सप्ताह भर तक शिवरात्रि मेला लगता है। इस अवसर पर मंडी भर के देओ (देवता) मंडी पहुँचते हैं। देवी-देवताओं के साथ आठ व्यक्ति देवता वाद्यों के संग अनेक नृत्य व गीत प्रस्तुत करते हैं। गीतों की विषय-वस्तु विविध रहती है। शिव-महिमा गीत का अंश :—

हाथा लया लोटा, काछा लई धोती,
हो मेरे संभू, समुंदर न्हौण चली,
हो कैलासों के वासी, संकट सभी रे तू हरी लै।
....

लोहड़ी

प्रदेश के प्रायः निचले क्षेत्रों में माघ संक्रांति को मनाया जाने वाला, 'लोहड़ी' एक प्रसिद्ध त्योहार है। पर्व से लगभग ८ दिन पहले बालक-बालिकाएँ, 'लोहड़ी' मांगना आरम्भ कर देते हैं। बालक बालिकाओं के दो या दो से अधिक संख्यक दल घर-घर लोहड़ी गाते हैं। बदले में इन्हें नकदी या अन्य रूप में कुछ पारिश्रमिक मिलता है। बालक-बालिकाओं के ये दल अनेक गीत गाते हैं। अवसर से संबद्ध एक गीत का अंश :—

लोहड़ी :

लोहड़ी आई भाभी लोहड़ी आई।
क्या लेई आई भाभी क्या लेई आई।
भटूरे-भल्ले ल्याई भाभी भटूरे-भल्ले ल्याई॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लुंगी केह्ड़ा टोपा भाभी लुंगी केहड़ा टोपा ।
सौह्रड़ा घर खोटा, भाभी सौह्रड़ा घर खोटा ।।
ब्याह्इए घर मिट्ठा भाभी ब्याह्ईए घर मिट्ठा ।
उखलिए दो घाणे भाभी उखलिए दो घाणे ।
कूटेगी दराणी भाभी फड़ाकेगी जठाणी ।।
समटुए दो काजल भाभी, समटुए दो काजल ।
भाइया साडा हाजर भाभी भाइया साडा हाजर ।।

(गीत, लोह्ड़ी से पूर्व आठ दिन तक गाया जाता है । गीत में लोह्ड़ी के अवसर की धूमधाम, खान-पान, काम-काज व ससुराल के जीवन की झलक का चित्रण भाभी के माध्यम से किया गया है ।)

होली

होली का त्योहार प्रदेश में अधिकतर भागों में धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर होली के हुड़दंग में अनेक भजनों-कीर्तनों के अतिरिक्त संवद्ध विशेष रचनाएँ भी गाई जाती में। उदाहरणार्थ :—

होली : गीत

रंग दे, चुनरिया रंग दे ।
अज मोरे पिया से—२,
रंगाई मंगदे । रंग दे, चुनरिया
हमरी चुनरिया पिया की पगरिया,
दोनों बंसती रंग दे, हो मेरे रामा,
दोनों बंसती रंग दे ।
आज मोरे पिया से—२,
रंगाई मंगदे, रंग दे, चुनरिया
ओ मोरे पिया, रंगाई ना देवे—२ ।
दो मण गैह्णे धर दे, हो मेरे रामा,
दो मण गैह्णे धर दे ।
अज मोरे पिया से—२ ।
रंगाई मंगदे । रंग दे, चुनरिया

(चम्बा का एक होली गीत)

रली

प्रदेश के निचले क्षेत्रों में रली, चैत्र संक्रांति से वैशाखी तक खेला जाने वाला, शिव-पार्वती के विवाह का एक ऐसा मनोरंजक खेल है, जिसे विवाहित महिला आयोजित करती है, और कुंवारी कन्याएँ खेलती हैं । शिव पार्वती मिट्टी के बनाए जाते हैं, जिन्हें 'रलीशंकर कहते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं। चैत्र मास पर्यन्त खेले जाने वाले इस खेल में, प्रतिदिन के क्रिया-कलाप के साथ, अनेक गीत गाए जाते हैं। अथ :—

रली के गीत

(नहाने जाते समय का गीत)
हे वाही थी अमली, जम्या था अप्पू बारी,
अमली मंगदी वधाई रे।
हे छेयां महीन्यां अप्पू फुल्या बारी,
अमली मंगदी बधाई रे।
हे उठ मेरेया नाइया, नणदा देया भाइया बारी,
नणदा तू सद बुलाओ रे।
हे आओ मेरया भाइया बही जा पटड़े बारी,
दुख सुख गलाओ रे।
हे उठ मेरे घारो पिड़ मेरी पालकी बारी,
मैं बी पेंईएँ जाणा रे।
हे आओ मेरी नणदे बैठ पटड़े बारी,
दुध चरणा धुलाओ रे।
हे आओ मेरी नण्दे, बैठ पलंगे बारी,
दुख-सुख गलाओ रे।
हे औंदिया नणदा रुण झुण लाई बारी,
जांदिया भरे तलाओ रे।

(गीत में विवाहित ननद को भाभी द्वारा बुलाए जाने तथा उसका पूरा सत्कार किए जाने की चर्चा है। पीहर जाने की प्रसन्नता तथा पीहर से जाने पर की व्यथा का भी संकेत है।)

गलाओ=कहो। घारो=कहारो। पिड़=तैयार करो। पेंईएं=पीहर। रुणझुण=चहल-पहल, चहचहाना। भरे तलाओ=बिलख-बिलख कर रोई।

'आल-पाल' खेलने जाते समय का गीत

धोड़ी तेरी बे बीरा सोह्‌णी,
बणदी काठियां दे नाल,
मैं बलिहारी ओ मेर्‌या सुरजणा।
बागों वीचों-बीच ल्याओ,
चोट नगार्‌याँ घर ढुँढणाँ ॥
सेह्‌रा तेरा बे बीरा सोह्‌णा,
बणदा कलगियाँ दे नाल,
मैं बलिहारी ओ मेर्‌या सुरजणा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बागों बीचों-बीच ल्याओ,
चोट नगार्यां घर ढुँढणा ।

(तेरी घोड़ी सुंदर काठी से और तेरा सेह्‌रा आकर्षक कलगी से सोह रहा है। इस अनूठी सजधज में भइया की मैं बलिहारी। इस सजे-धजे भइया को उद्यान के बीचों-बीच लाओ। मंगल-बाद्यों से घर का पता लग जाएगा।)

रात्रि के समय का गीत

पारलिए धारे ओ डरावणिए, कि ओ डरावणिए,
कि घख मुइए न्हिठड़ी होयाँ ।।
तखत बहिठेया ओ सौह्‌रया जी, कि ओ सौह्‌रया जी,
कि घख जी ओ पेइंयड़े भेज ।
हऊँ क्या जाणू ओ मेरी कुलबहुए, कि ओ कुलबहुए,
कि जाई अपणिया सस्सू न पुच्छ ।।
नरमा कतैंदिया ओ सासु जी, कि ओ सासु जी,
कि घख जी ओ पेइंयड़े भेज ।
हऊँ क्या जाणू ओ मेरी कुलबहुए, कि ओ कुलबहुए,
कि जाई अपणे जेठे नूँ पुच्छ ।।
सरियाँ खलैंदयो ओ जेठा जी कि ओ जेठा जी,
कि घख जी ओ पेईयड़े भेज ।
हऊ क्या जाणू ओ मेरी कुल भाभिए, कि ओ कुल भाभिए,
कि जाई अपणिया जठाणिया नू पुच्छ ।।
कसीदा कढ़ैंदिए ओ जठाणिए जी, कि ओ जठाणिए जी,
कि घख जी ओ पेइंयड़े भेज ।
हऊँ क्या जाणू ओ मेरी कुलद्राणिए, ओ कुल द्राणिए,
कि जाई अपणे द्योरे नूँ पुच्छ ।।
खिनुआ खल्हैंदेया ओ द्योरा जी, कि ओ द्योरा जी,
कि घख जी ओ पेईंयड़े भेज ।
हऊँ क्या जाणू ओ मेरी कुल भाभिए ओ मेरी कुल भाभिए,
कि जाई अपणी नणदा नूँ पुच्छ ।।
गुडियाँ खल्हैंदिए नणदे जी, कि नणदे जी,
कि धख जी ओ पेईंयड़े भेज ।
हऊँ क्या जाणू ओ मेरी कुलभाभिए, ओ कुल भाभिए,
कि जाई अपणे कंते नूँ पुच्छ ।।
सुइना तुलैंदेया ओ कंता जी, कि ओ कंता जी,
कि घख जी ओ पेइंयड़े भेज ।
ल्यायां ग्वालुआ ओ तिरम छटी, कि ओ तिरम छटी,
कि नाजो दी मैं जाऊँ-जाऊँ चुकाऊँ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(गीत में विवाहिता के पीहर जाने की तीव्र इच्छा, इच्छा पूर्ती के लिए ससुराल के सदस्यों से विनती तथा विनती का अस्वीकार होना चित्रित है।)

नरमा = रूई। सरियाँ = चौपड़। चुकाऊँ = समाप्त करूँ।

सफाई करने, लीपने-पोतने के वक्त का गीत

बौह्‌टड़िये सूह्‌ण ल्यौ—२।
सूह्‌यां घर-घर चन्ना। बौह्‌टड़िए……
बौह्‌टड़िए गोहा ल्यौ—२।
लिप्यां घर-घर चन्ना। बौह्‌टड़िये……
बौह्‌टड़िए गोलू ल्यौ—२।
परोल्याँ घर-घर चन्ना। बौह्‌टड़िए……

बौह्‌टड़िए = बहुए। सूह्‌ण = झाड़ू। गोहा = गोबर। गोलू = सफ़ेद चिकनी मिट्टी। लिप्याँ-परोल्याँ = लीप-पोत। चन्ना = दाएँ-बाएँ की दीवार।

फूल चुनते समय का गीत

फुल चगंदिए दाड़बाड़लिए, महाराज जी,
अज न डँसी कल नागणुए, महाराज जी,
फेर ना आऊँ तेरे बाग में।

(सुगंधित फूलों की बगिया में साँपों का वास माना जाता है। इसलिए फूल चुनते हुए यह प्रार्थना की जा रही है, कि हे भगवान, आज सांप न डसे, तो फिर मैं बगिया में नहीं आऊंगी।)

'ऐत-सोम' खेलने जाते समय का गीत

झोलिया-झोलिया धूमाँ पइयाँ,
मेरी झोलणी मरदानिया।
अंदर बैठी सीण लगी, सीण लगी,
बाहर धूमाँ पइयाँ,
मेरी झोलणी मरदानिया।

धूमां पइयाँ = धूम-धाम हुई। सीण लगी = सीने लगी।

'गुग्गा' (भारथ)

भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की नवमीं तक प्रदेश के अधिकतर क्षेत्रों में 'गुग्गा'-मण्डलियाँ'' घर-घर में गाँव-गाँव घूम कर 'गुग्गा' गाती हैं। 'गुग्गा' जिसे 'भारथ' भी कहते हैं, 'मारुए' (मरू देश-राजस्थान) के एक क्षत्रीय ऐसे वीर की गाथा है, जो अलौकिक था। बहुधा, 'गुग्गा' सर्प-प्रकोप से अभय का प्रतिष्ठित प्रतीक है। सर्प-प्रकोप अभय के लिए ही 'गुग्गा' प्राय: गाया-सुना भी जाता है। 'गुग्गा' का प्रतीक (बहुधा सर्पमुखी लोहे की छड़ें) लिए 'मंडली'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दो भागों में बंट कर 'गुग्गा' गाती हैं। ताल के लिए मंडली के पास डमरू होते हैं, जो लय विशेष में 'गुग्गा' गायन के साथ अविराम बजते हैं। मंडली के दोनों दल बारी-बारी, एक के बाद दूसरा वीर-गाथा को क्रम से गाते हैं। 'गुग्गा' गाने के उपलक्ष में 'मंडली' को आटा, दाल, चावल, घी आदि एक थाल में सजाकर कुछ नकदी के साथ दिया जाता है। पूरे "भारथ" के लिए 'मंडली' विशेष को आमंत्रित करना पड़ता है, जिसे 'डेरा देना' कहा जाता है। इस अवस्था में आमंत्रण देने वाला परिवार आमंत्रित मंडली को भोजन के अतिरिक्त कुछ पूर्व-निर्धारित पारिश्रमिक देता है और मंडली रात्रि-पर्यन्त 'भारथ' सुनाती है।

'गुग्गा' गाने वाली इन मंडलियों का प्रस्तुतीकरण बोल लय-स्वर पर्याप्त भिन्न रहता है। दो भिन्न मंडलियों द्वारा प्रस्तुत 'गुग्गा-भारथ' के प्रसंगांश :—

'गुग्गा'

गुरू गोरखनाथ होर तिनांदा नौलख चेला डेरे च बैठे होय। 'काह्नी' नांवा चेला गुरू गोरखनाथ ते पुच्छदा :—

सत्या दे द्वारे बता दे, मैं जाणा सत्या दे द्वारे।
सत्या दे द्वारे जेगियाँ दा कम्म जेह्ड़ा होन्दा,
सैं गुरू जी हौंदा भीख मंगणे दा।
गुरू गोरखनाथ जी कैहंदे, कि बेटा
पहलीं सत्या जो है, ओ है धरती माता,
जेह्ड़ी देवे ज्यूंद्या-मूयाँ विश्राम।
दूजी सत्या वाली गंगा मइया,
जेहड़ी धोई जांदी हिन्दुआँ दे पाप।
तीजी सत्या वाली दुर्गा माता,
किले काँगड़े च जेह्ड़ी लई जाँदी मानषाँ दी, भेंट।
तिज्जी ही सत्या वाली बाछल माता बागड़ देस में,
जेह्ड़ी भुख्याँ नू भोजन देई जाँदी।
....

(गुग्गा जन्म प्रसंगांश)

सत्या=सत्यबल। बाछल='गुग्गा' राणा की माँ। बागढ़ देश=राजस्थान।

'गुग्गा' जन्म बधाई'

मारूए बाबा देसा राणेया,
पीरा हुण जन्मेया।
मारूए चानण होया।।
अज मारूए बाबा देसा पीरा हुण,
दुबां राज्या वंड्या।
अज तेरियाँ बधाइयाँ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अज मारूए बावा देसा पीरा हुण नौंह्दा,
अज सुइने दा टाका।
पाई ओ लया॥
अज मारूए बावा देसा जी ओ राणेया,
कपला ओ बछियाँ।
मिलदियाँ दाइया॥
अज घोड़ा वे दुसाला जीओ राणेया,
अज मिलदा मरयासियाँ।
अज मिलियाँ राजेया,
तेरीयाँ बधाइयाँ॥

'मरू' देश में 'गुग्गा' ने जन्म लिया है। सारे देश में अलौकिक प्रकाश हो गया है। 'गुग्गा' के जन्म पर राजा को बहुत-बहुत वधाई। 'गुग्गा' जन्म की अपार प्रसन्नता में 'दाई' को गाय-बछिया तथा वाद्य-वादकों को घोड़े-दुशाले उपहार में दिए जा रहे हैं।)

'गुग्गा' युद्ध प्रसंग

ओ दोनों भेड़ मसेरे अरजण-सुरजण,
दिलिया बाछेह् सदाए ओ।
ओ बोले बाछाह् राज दुआणा मेरे मारुआ,
कुण गल ते घबराए ओ।
ओ बोले अरजण-सुरजण भैड़ म्हारा तगड़ा,
सौ बल तिसदे सधाए ओ।
ओ बोले बाछाह सुण गल अरजण-सुरजण
मैं बड़े-बडड़े र्हाए ओ।
ओ बोले अरजण-सुरजण धन-धन बाछाह्,
तू जे मजदा आया ओ।
ओ बोले बाछाह् फिकर करो नी मेरे भादरो,
हऊँ बी तां केह्ड़ा पराया ओ।
ओ चले अरजण-सुरजण मुकता असला,
मारुए कूच कराया ओ।
ओ सणे फौजे तां फाणिए अरजण-सुरजण,
हुकम लड़ाइया सुणाया ओ।
जी गुग्गा मालका धन-धन तेरा जी बीरा,
तेरा अंत नी पाया ओ।
ओ निल्ला खोलदा स्वारी भरदा जी मालका,
बरछा-ढाल मुँगाया ओ।
ओ पिच्चे चलदे बांके बीर बहादर,
दुसमण बिच ललकार्‌या ओ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ओ बिन वैंरिए मुकाए जी पिचड़े नी हटणा,
मालका मन बिच धार्‌या ओ।
ओ धन मेरेया जी मालका जाह्‌रपीरा,
करतब खूब दखाए ओ।
ओ काल वैंरियाँ रा चऊँ खा तू मेरे मालका ताँ,
निल्ला नजरी आए ओ।
ओ हत्थे बारछा सारिया लड़ाइया जी मालका,
वैंरियाँ रे होस भुलाए ओ।
ओ लख दुस्मण कन्ने जी अरजण-सुरजण,
परले लोक पुजाए ओ।
ओ धन मेरेया जी मालका जाह्‌रपीरा,
दुस्मण फतेह् कराया ओ।
जी गुग्गा जाह्‌रपीरा जै-जै मालका,
जै जस परजे गाया ओ।
....

(गीत में 'गुग्गा' राणा के मसेर भाई 'अरजण-सुरजण' को दिल्ली के बादशाह द्वारा बुलाने, उन्हें 'मरु' देश का राज्य दिलाने के लालच में 'गुग्गा' के विरुद्ध युद्ध करने को कहने, बहुत बड़ी फौज के साथ 'मरु' देश पर आक्रमण करने तथा 'गुग्गा' राणा के हाथों उनकी पराजय व वध होने का वर्णन है।)

सदाए=बुलाए। र्हाए=हराए। मजदा=मदद के लिए। मुकता असला=बड़ी फौज। निल्ला='गुग्गा' का घोड़ा। जाह्‌रपीर='गुग्गा' राणा। जस=यश। परजे=प्रजा ने।

किन्नौर में भी गुग्गा' पाया जाता है :—

किन्नरी राजास 'गुग्गा' गीथङ :

गुग्गे रङ सिरमौर।
मोलयो ली मोसर गा॥
गुग्गे राजास लोतोश।
का रिङ मा वना॥
ग रिङ व ब आङु ठ केतोन।
केमा ली के तोक गूगेचू यरमा॥
सिरमौर राजास लोतो का शोङ ली जेरा॥
ग शोङ व ब कास ठ केतोन।
के मा ली के तोक नयोली पोट क॥
गुगे राज़ो रानी नामङ ठ दुज्ञो।
नामङ ता लोनमा छोस किदा नामङ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुगे राज़ो ठ दुज़ोश ।
नामङ ताली लोनीमा इनापोली ज़ालबी ।।
दो शोङ शोङ वनना ।
शाङ करास सोमो देन ।।
शाङ करास सोमो देन ।
ब्याङ खाचा छाया ज़ो ।।
ब्याङ खासा छाया ज़ो ।।
दो शोङ शोङ वनना ।
वरु खोल गान देन ।।
शोङ ली मा थार ज़ो ।
वरु खोल गान देन ।।
इत रुद ओट के चो ।
वरु खोल गान देन ।।
ई खोचब ओट केचो ।
व्रुस न क्राब ज़ो ।।
शोङ ली मा थार ज़ो ।
खूनू मुल्कू कोमो ।।
पर न पोल टेस-टेस ।
हाचिस चान थङो ।।

(गीत में 'गुग्गा' को सिरमौर से आया बताया गया है । 'गुग्गा' को नीचे किन्नौर में आने के लिए कहा जाता है, तो वह कहता है, मुझे क्या दोगे । कहा जाता है 'यरमा' देंगे । गुग्गे की रानी का नाम पूछा जाता है, तो गुग्गा नाम बताता है-'छोस किदा' 'गुग्गे का नाम पूछा जाता है, तो गुग्गा अपने को तिब्बत का राजा बताता है । गुग्गा जब नीचे किन्नौर की ओर बढ़ता है तो उसे भेड़ें-ही-भेड़ें दिखाई पड़ती हैं । सिरमौर में प्रवेश करने के लिए 'वरु' नामक स्थान पर एक द्वार में अटक जाता है । फिर उसकी एक टांग भी द्वार में अटक जाती तब 'गुग्गा' ज़ोर से रोने लगता है और पलक झपकते वापिस तिब्बत में लौट जाता है ।)

पहिया

श्राद्धों के पश्चात्, अश्विन मास के शुक्ल-पक्ष में अष्टमीं से पूर्णमासी तक प्रदेश के निचले इलाकों में कन्याएं पहिया खेलती हैं । 'पहिया' मिट्टी का अथवा चकोतरे के बाहरी खोल का बनाया जाता है । 'पहिए' के दो अर्धगोलाकार भाग एक-दूसरे पर ठीक बैठते हैं । ऊपरी भाग के गोलाकार किनारे में झरोखे-से बने रहते हैं । जिनमें पहिए के अंदर जले दीपक को जलाए रखने के लिए वायु का संचार होता है । मिट्टी का बना पहिया, अत्यन्त आकर्षक होता है । यह पहिया एक कन्या अपने सिर पर रख लेती है । उसका एक हाथ इस 'पहिए' को थामें रहता है । 'पहिए' वाली इस कन्या को, अत्यन्त आकर्षक घागरा पहनाया जाता है, इसका मोहक श्रृंगार किया जादा है, मुख मंडल सलमें-सितारों से सजाया जाता है । इस कन्या की कमर में एक रंगीन सुंदर पटका भी बंधा रहता है । इस पटके का एक किनारा 'पहिए' वाली कन्या,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अपने दूसरे हाथ में लेकर 'पहिया' गाते हुए बैठी हुई एक अन्य कन्या के चहुँ ओर घूमते हुए, उस पर धीरे झुलाती रहती है। बैठी हुई इस कन्या को 'घुरड़ी' कहते हैं। गाते हुए टोली की अन्य कन्याएँ 'पहिए' वाली कन्या का साथ देती हैं। घर के आँगन में 'पहिया' गाने वाली टोली 'पहिया' गाती है और घर के सदस्य, पहिया' बड़े चाव से सुनते हैं। इस प्रकार यह टोली घर-घर घूमती है, पहिया गाती है। बदले में इन्हें अन्न के रूप में या नगदी, अखरोट आदि के रूप में कुछ ना कुछ घर से प्राप्त हो जाता है, जिसे टोली की कन्याएँ 'पहिए' की समाप्ती पर आपस में बाँट लेती हैं। 'पहिया' गाने के लिए कन्याओं की यह टोली, सन्ध्योपरांत निकल पड़ती हैं और दो-तीन घंटों में घूम-घाम कर लौट आती हैं।'पहिया' गीत :—

पहिया

बड़े घरे राजे बेह्ड़े सलामियाँ,
भाभिया कांतो बेलणुए छाया, फुलणुए जड़त जड़ा,
ओ नाचर पहिया रे।
काहे दी ए ओबरी नी ओबरी वारी, काहे दे खम्ब गड़े,
ओ नाचर पहिया रे।
सुइने दी ओबरी, नी ओबरी, रुपे दे खम्ब गड़े,
ओ नाचर पहिया रे।
कौण सुता इसा ओबरी,नी ओबरी वारी, कौण झेले ठंडी बार,
ओ नाचर पहिया रे।
घरे औला सुता इसा ओवरी बारी, लाड़ी झोले ठंडी बार,
ओ नाचर पहिया रे।
बाल झोलेंदिया दी बांह दुखे, नी बांह दुखे, बारी,
नैणा नूँ आवे ठंडी निंद, ओ नाचर पहिया रे।
बाहियाँ नूँ तेरियाँ नू लाल चूड़ा, नी लाल चूड़ा, वारी,
नैणा नूँ सुरमे सलाई, ओ नाचर पहिया रे।
जागो-जागो घरे वालेयो, बेह्ड़े वालेयो, बारी,
पहिया खड़ा दरबार, ओ नाचर पहिया रे।
पहिया नाचे म्हारा इक घड़ी ओ दो घड़ी बारी,
घुरड़ी नाचे सारी रात, ओ नाचर पहिया रे।
पहिया खावे म्हारा घ्यूँ खिचड़ी, ओ घ्यू खिचड़ी बारी,
दीपक माँगे तेल, ओ नाचर पहिया रे।
होरसी दा पहिया गिठ्ठू पहिया ओ गिठ्ठू पहिया बारी,
म्हारा पहिया सरदार, ओ नाचर पहिया रे।
पैरें लागी म्हारे ठांडड़ी, ओ ठांडड़ी बारी,
सिरे लागे मोतीहार, ओ नाचर पहिया रे।
अम्बर छाया तारेयाँ, ओ तारेयाँ बारी,
छप्पर नागरबेल, ओ नाचर पहिया रे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पैसा टका असाँ ना लैणा ओ ना दैणा बारी,
पंज रपइए दो पान, ओ नाचर पहिया रे।

बेलणुइँ-फुलणुएँ=बेलों से-फूलों से। ओबरी=अंदर का कमरा। बार=हवा ओला=वाला। लाड़ी=पत्नी। घुरड़ी=जिसके चारों ओर पहिए वाली कन्या घूमती है। गिठ्डू=छोटा, भद्दा।

पहिए का गीत

चँदे दी चानणी, चँदे दी चानणी,
सरपर पहिया अम्मा, कुड़िया खेलण नू जांदिया।
अम्मा दे आँगणे अम्मा दे आँगणे,
बापू दीया देवली, वोह्त खेली ओ सावरे,
खेलण ना देंदी ओ।
चन्दे दी चानणी........ ....।
ताई दे आंगणे, ताई दे आँगणे,
ताऊ दीया देवली, बौहत् खेली ओ सावरे,
खेलण ना देंदी ओ।
चन्दे दी चानणी...................................।
चाची दे आँगणे चाची दे आँगणे,
चाचे दीया देवली, बौहत् खेली ओ सावरे,
खेलण ना देंदी ओ।
चन्दे दी चानणी.................................।
दिने नू बटदी, दिने नू बटदी,
दिने नू बटदी, पुणियाँ माँ रैंनी नू,
चरखे डाह्दियाँ।
चन्दे दी चानणी.................................।
चरखे आवंदी, चरखे आवंदी,
टुलणियाँ माँ नणदाँ टोके,
दे देंदियाँ।
टोके दे देंदिया, टोके दे देंदिया,
ओ नणदाँ ओ नणदा माँ टोके,
दे दें दियाँ
इतणे दुखड़े इतणे दुखड़ें,
सैंह्दियाँ माँ जितणे,
कीकर पती बे।
चन्दे दी चानणीं.................................।

कुड़ियाँ=कन्याएँ। देवली=देहरी। सावरे=ससुराल। टुलणी=झपकी।
श्राद्धों के बाद, अष्टमी से पूर्णमासी तक, मंडी क्षेत्र में 'नाच बढो' नामक एक विशेष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आयोजन होता है। 'नाच बढो' एक गीत विशेष है, जिसे युवक गाते हैं। गायक युवकों की टोली घर-घर जाकर 'नाच बढो' गाती हैं। युवकों के हाथों में एक-एक लाठी होती है। लाठी को भूमि पर सीधा-खड़ा ठोकते हुए ताल देकर 'नाच बढो' गाते हैं। टोली में एक 'राजा' या ग्वाला' बना होता है। अथ :—

नाच-बढ़ो

नाच बढो-नाच बढो।
गिदड़ी पो-गिदड़ी पो।
बुढ़ी की माता कुट्टे धान।
आधे पोपल आधे धान।
जले बे हरना तेरे कान।
हरना मामा डूरुआ।
तेरा पेट भटूरुआ।
हरने लाई डाकी।
हरन मूआ पटाकी।
ल्यावा लोको चाली खोड़,
ढव्बा, रोट, अछरुओ, मछरुओ,
क्या-क्या खेला पाई ओ।
आया हो राजे रा बाँठड़ा,
'रामे' रे घरा पुत्र वधाई॥

पोपल = थोथे। ल्यावा = लाओ। चाली = चालीस। खोड़ = अखरोट। ढव्बा = पैसा। बाँठड़ा = मंडी का लोक-नाटक आयोजन। 'रामे रे = जिसके घर गीत गाया जा रहा है, उसका नाम।

इसी अवसर पर युवतियों द्वारा गाया जाने वाला गीत-प्रकार, धूपू-देह्‌ल कहलाता है। युवतियाँ भी टोली बनाकर 'धूपू-देह्‌ल' गाती हैं। गायक युवतियाँ घर की देहरी पर प्रणाम कर पूजा करके देहरी को लाँघ कर घर में अंदर की ओर बैंठ जाती हैं और 'धूपू-देहल' गाती हैं। अथ :—

धूपू देह्‌ल मांदलियाँ,
ठूपू-ठेंय्याँ, तिल्ले-चौले,
मछेजड़ियाँ।
अता फुल चढ़ी के पाया,
तेता बैंठा 'कृष्णा' तू भाया।
'कृष्ण' तू चरज्यूणा होयाँ,
साते पुत्रे सौत्रा होयाँ।
भेरड़ खांह्‌या तू झिजण खायाँ,
'नीलिए' पाखिए तू बागर बाह्याँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेता=वहाँ। भाया=भाई। कृष्ण=जिस घर में गीत गाया जा रहा है, उस घर के किसी पुरुष का नाम। चरज्यूणा=चिरंजीवी।

भेरड़-झिजंण=मोटे-उत्तम, चावल। नीलिए=नीले रंग की। पाखिए=पंखे से (अलग-अलग रंग बोल कर गीत बढ़ाया जाता है) बागर=हवा।

(दोनों ही गीत घर वालों के लिए शुभकामनाओं से ओतप्रोत हैं)

सूही

प्राचीन काल में एक बार चम्बा नगरी में जब पानी का अकाल पड़ा, तो तत्कालीन चम्बा नरेश की धर्मपत्नी ने अपनी बलि देकर जल-संकट का निवारण किया। चम्बा की वह रानी 'सूही माता' के नाम से प्रतिष्ठित हुई और उनके बलि के स्थान पर उनकी समाधि बनाई गई जिसे 'सूही का मढ़' कहा जाता है। रानी चम्ब्याली की स्मृति में इस स्थान पर हर वर्ष मध्य वैशाख में महिलाओं का मेला लगता है। मेला चौदह दिन तक रहता है। मेले के दौरान महिलाएँ 'सुई के मढ़' पर एकत्रित होकर 'मढ़' की परिक्रमा करके 'सूई माता' की वंदना-पूजा करती है। इस अवसर पर गाये जाने वाले विशेष गीतों के अंश :—

(i) सुकरात कुड़ियो चिड़ियो,
सुकरात देवी दे देहरे ओ।
ठंडा पाणी कीयाँ करीपीणा हो,
तेरे नैणा हेरी-हेरी जीणा हो।
....

(ii) घुड़क चमक भाऊआ मेघा ओ,
वर्ह चम्ब्याली रे देसा ओ।
कीयाँ घुड़काँ कीयाँ चमका हो,
अम्बर भरौरा घणै तारे ओ।
....

मिंजर

श्रावण में चम्बा में 'मिंजर' मेले का आयोजन होता है। इन दिनों मक्की की फसल विकास की चरम सीमा पर होती है। मक्की के पौधों में 'मिंजर' (फूल) निकल रहे होते हैं। यह मेला श्रावण के दूसरे रविवार से प्रारम्भ होकर तीसरे रविवार तक आठ दिन चलता है। प्रथानुसार इस अवसर पर बहिन अपने भाई के कोट या कुरते में मिंजर का प्रतीक टांकती है। अंतिम दिन तीसरे रविवार को लक्ष्मी नारायण मंदिर से रघुनाथ जी की शोभा यात्रा अत्यंत सज-धज, धूम-धाम के साथ निकलती है, जो चम्बा के चौगान मैदान के चहूँ और घूमती हुई रावी के किनारे एक विशेष स्थान पर जा कर रुकती है। यात्रा में सहस्रों नर-नारी शामिल होते हैं। परम्परानुसार यहाँ नर-नारियों में पान-सुपारी, मिश्री आदि वितरित किए जाते हैं। व एक विशेष गीत 'कुजंड़ी' गाया जाता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'मिंजर के अवसर का गीत (कुंजड़ी)

उडा मेरी कुंजड़ियो, बरसाँ रे ध्याड़े हो,
बरसाँ रे ध्याड़े हो बे मना,
जीन्देयाँ रे मेले हो मेरे रामा जीन्देयाँ रे मेले हो वे मना,
याणी मेरी जान, सोह्णिए कुन्जे ।
उडी के बेमिलाँ, भाइयोकिहाँ उडी के बे मिलाँ,
भाइयो किहाँ उडी के वे मिलाँ,
पर मेरे सीजे हो, मेरे रामा, पर मेरे सीजे हो, बे मना,
सीजे मेरी जान, सोह्णिए कुँजे ।
रुपे मढ़ले पर तेरे रुपे मढ़ले, पर तेरे रुपे मढ़ले,
चुंज तेरी सोने हो, मेरे रामा चुंज तेरी सोने हो, वे मढ़ा
मढ़ाले मेरी जान, सोह्णिए कुँजे ।
पींह्गाँ तो पेंइयाँ, उच्चे पीपल पींह्गाँ तो पेइयाँ—
झुट्टे लाँदियाँ सेहियाँ हो, मेरे रामा झूटे लाँदियाँ सेहियां हो बे मना,
सेहियाँ मेरी जान, सोह्णिए कुँजे ।
फिरी ओ मिलांगे, जीन्दे रैंह्ले फिरी ओ मिलाँगे—
होया जुगाँ रा बछोड़ा हो, मेरे रामा, होया जुगाँ रा बछोड़ा हो, बे मना,
बछोड़ा मेरी जान, सोह्णिए कुँजे ।
हो राम भजो, रामा रामे राम ओ भजो रामे राम भजो, ओ भजो,
राम क्यों तैं बिसारेया, मेरे रामा, राम तैं क्यों बिसारेया, वे मना,
याणी मेरी जान, सोह्णिए कुँजे ।

कुँजे=पक्षी विशेष। ध्याड़े=दिन। सीजे=भीगे। रुपे मढ़ले=चाँदी से मढ़ेंगे। जीन्दे रैंह्ले=जीवित रहेंगे। जुगाँ रा=युगों का।

डखरेनी

आषाढ़ के अंत और श्रावण के आरम्भ में मनाया जाने वाला 'डखरेनी' किन्नौर का एक प्रसिद्ध उत्सव है। इस अवसर पर, किन्नौर के १३-१४ हज़ार फुट ऊँची चरागाहों में खिलने वाला 'जेबीजे' नामक पीले रंग का सुगन्धित फूल लाया जाकर देवताओं को भेंटा जाता है। नर-नारी हर्षोल्लास में नाचते-गाते हैं। माखन-लस्सी बाँटा-खाया जाता है। कहीं-कहीं इस अवसर पर गौ पूजा भी होती है। उत्सव से सम्बन्धित विशेष गीत का अंश :—

'डखरेनी' गीथङ

बन लोशीस बतो, होली रितङ सीं
बन लोशीस बतो ।।
आनू रितङ सी, होली आशारङ बियूले ।
आनू रितङ सी ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आशारङ वियूले, होली शोनङ गोल जुगे ।
आशारङ वियूले ।।
ऊ ज्ञो या ऊ, होली पीज्ञो जेवीजे ।
ऊ ज्ञो माऊ ।।
ऊ ची नी तो, होली आनू रितङ सी ।
ऊ ची नी तो ।।
उम ली ऊ ज्ञो, होली हात थोच्या मी माईच् ।
उम ली ऊ ज्ञो ।।

(गीतांश में त्योहार का समय आने, 'जेवीजे' फूलों के खिलने की चर्चा हैं। 'डखरेनी' त्योहार अपने लमय पर (आषाढ़ खत्म होने पर श्रावण आरम्भ होते ही, पहले प्रविष्टे को अपने ढंग से स्वयं आएगा। इस अवसर पर खिलने वाले 'जेवीजे,' फूल खिले भी हैं कि नहीं ? फूल अवश्य खिले होंगे। क्यों कि इनके खिलने का यही सही समय है। आ हा फूल तो खूब फूले हैं। इन्हें ले जाने के लिए तो आदमी कम हैं।)

सौमा हेयलङ

भाद्र मास से कार्तिक मास तक किन्नौर प्रदेश के प्रत्येक गाँव में 'सौमा-(मौसम) हेयलङ (धुन) पर्व, 'उख्यङ' 'देसे भादुरे' 'पींगे भादुरे' 'फुलायच' 'नीज़ा भादुरे', 'रूपी टेरास' 'चाङ माङ' आदि अनेक नामों से मनाया जाता है। इन दिनों पर्वत मालाओं से रंग-बिरंगे फूल लाए जाते हैं, उनकी मालाएँ गूँथी जाती हैं, देवताओं को भेंटो जाती हैं तथा लोगों में भी फूल बाँटे जाते हैं। विशेषतया उन लोगों को फूल मालाएँ पहना कर शोक दूर किया जाता है, जिनके सगे-सम्बन्धी बीते वर्ष में स्वर्ग सिधार गए हैं। 'सौमा हेयलङ' के अन्तर्गत मनाए जाने वाले अनेक संज्ञक ये त्योहार कहीं पाँच दिन तक, तो कहीं दो से तीन दिन तक चलते हैं। 'फुलायच' का एक गीत :—

ज़ोली फुल्याच हो,
वोण्डे नागासो ।
ज़ोली फुल्याच ।।
रूपी टेरासो हो ।
दोसी भादुरे ।
रूपी टेरासो ।।
ज़ोली फुल्याच हो,
टिकाम्वा उषा देओ ।
ज़ोली फुल्याच ।।
ज़ोली फुल्याच हो ।
चिकाम्वा नागीतो ।
ज़ोली फुल्याच ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज़ोली फुल्याच हो,
पींगे भादुरे।
ज़ोली फुल्याच ।।
सारशो लोदो हो,
बोतोगु थोरिङ सी ।
सारशो लोदो ।।
बोतोगु मालोन हो,
तेगीयू थोरङ सी ।
बोतोगु मालोन ।।
ज़ोली फुल्याच हो,
ग्रोसो शोङ क्रोसो ।
ज़ोली फुल्लाच ।।

(गीतांश में कतिपय ऐसे स्थानों की चर्चा है, जहाँ का फुलायच पर्व दर्शनीय होता है। इसके अतिरिक्त पर्व मनाए जाने में देवी-देवताओं के आदेश का भी संकेत है।)

ज़ोली = दर्शनीय, बहुत अच्छा। वोण्ड-नागास = महासू के 'वोण्ड' गाँव का नागदेवता। रूपी टेरासो = किन्नौर के रूपी गांव का टेरास (फुलायच)। कम्ब्रा-चिकम्वा = किन्नौर के गाँव। ग्रौसनम = 'सुंगरा' गाँव। क्रौसो = ग्रौसनम' में स्थान विशेष।

लोसर

प्रदेश के केलँग से ऊपर लाहुल-स्पीति तथा साथ लगते कुछ किन्नर क्षेत्र में 'लोसर' नए वर्ष का पर्व है। इस क्षेत्र में नए वर्ष का शुभारम्भ, नवम्वर के अंत में (मार्गशीर्ष के मध्य में, दर्श अमावस से) माना जाता है। नए वर्ष का पर्व 'लोसर' लगभग दीवाली की ही तरह मनाया जाता है। प्रदेश के किन्नौर, ऊपरी महासू आदि क्षेत्रों में भी इन दिनों "वूढ़ी दीवाली" नामक पर्व मनाया जाता है। स्पीति में यह पर्व 'लोसर' ३ से ७ दिन तक मनाया जाता है। इस अवसर पर विशेष गीत गाए जाते हैं, जिन्हें 'लोसर की लू' कहा जाता है। ये गीत सब मिल कर गाते हैं। गायक दो दलों में बंट कर 'लोसर' के गीत गाते हैं। इसी अवसर पर देवताओं व महापुरुषों की स्तुतियाँ भी गाई जाती हैं, जिन्हें 'ड्रल्लू' कहा जाता है। 'ड्रल्लू' बैठ कर गाए जाने वाले गीत होते हैं। 'लोसर में क्रम से कुछ गीत गाए जाते हैं जैसे :—

१. ऋशी फब्चे (मंगल सूत्र)
२. ज़ोम लू (एकत्र होने का गीत)
३. गुर फवचे (घर बनाने का गीत)
४. ठ्री ज़ाङ चे (आसन बिछाने का गीत)
५. नज़ा पुलचे (कपड़े पहनने का गीत)
६. उथोद पुलचे (पगड़ी बाँधने का गीत)
७. मैंतोक पुलचे (फूल भेंटने का गीत)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विवाह एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक आयोजन है। भले ही प्रदेश के भिन्न क्षेत्रों में विवाह भिन्न-भिन्न ढंग से, रीतियों से संपन्न होता हो, परन्तु इस अवसर पर लगभग समस्त प्रदेश में विशेष विवाह गीत अवश्य गाए जाते हैं। ये गीत किन्नौर, लाहौल-स्पीति, पाँगी-भरमौर तथा शिमला व सिरमौर के अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों को छोड़कर प्रदेश के शेष भागों में पर्याप्त साम्य रखते हैं। विवाह अवसर पर विवाह के भिन्न चरणों से संबद्ध अनेक गीत-विशेष गाए जाते हैं। उदाहरणार्थ वर-पक्ष की ओर गाया जाने वाला गीत-विशेष 'घोड़ी' :—

घोड़ी

किधर देसे ते घोड़ली आई मैं बारी जाँ,
भला किधर देसे नूँ जाणा मनेरिए कुँदनों।
दखण देसे ते घोड़ली आई, मैं वारी जाँ,
भला दखण देसे नूँ ज़ाणा मनेरिए कुँदनों।
कौ लख घोड़िया दा मुल्ल जे किया मैं बारी जां,
भला कौ लख वावले देणा मनेरिए कुँदनों।
अठ लख घोड़ी मुल जे किया मैं वारी जां,
भला नौ लख बाबले देणा मनेरिए कुँदनों।

('वाबुल' के स्थान पर दादा, चाचा, मामा, भाई इत्यादि सम्बन्ध-वाचक शब्द जोड़ कर गीत बढ़ाया जाता है।)

तेरिया तेजणी मत्थे विंदली मैं बारी जां,
लसकैंदड़ी तेजणी आई मनेरिए कुँदनों।
तेरिया तेजणी दे नक्के वेसर मैं वारी जाँ,
लटकैंदड़ी तेजणी आई मनेरिए कुँदनों।
तेरिया तेजणी दे पैरें कड़ियाँ मैं वारी जाँ,
छणकैंदड़ी तेजणी आई मनेरिए कुँदनों।
अंदरे-बाहरे जे फिरदी, मैं वारी जाँ,
नखरेलड़ी लाड़े दी सस, मनेरिए कुँदनों।
लाड़ा ताँ पुच्छदा जानिया मानिया, मैं बारी जाँ,
भला केहड़ा सौह्रा देस मनेरिए कुँदनों।
नगरे विच नगरोटड़ा, मैं बारी जाँ,
भला एह्ड़ा हुँदा सौह्रा देस मनेरिए कुँदनों।
लाड़ा तां पुच्छदा लाड़ला मैं बारी जाँ,
भला केह्ड़ी हुँदड़ी नार मनेरिए कुँदनों।
सालुआँ वालियाँ सालियां-मालियाँ मैं बारी जाँ,
भला रीढ़े वालड़ी हुँदी नार, मनेरिए कुँदनों।
लाड़ा ताँ पुच्छदा जानियाँ-मानिया बारी जाँ,
भला केह्ड़ी हुँदड़ी नार मनेरिए कुँदनों।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बालुआँ वालियाँ सालियाँ-मालियाँ मैं बारी जाँ,
भला बेसरी वालड़ी नार मनेरिए कुँदनों।
रोंदियाँ ता रही गइयाँ सालियाँ-मालियाँ मैं बारी जाँ,
भला डोले पाई लई नार, मनेरिए कुँदनों।
उच्चे ताँ चढ़ी के देखणे लगियाँ मैं बारी जाँ,
भला ओ गया भैणा दा डोला मनेरिए कुँदनों।

(गीत में वर के घोड़ी पर बैठ कर वधू के देश में आने, घोड़ी श्रृंगार, वर के ससुराल मालूम करने, सास, सालियों तथा वधू की पहचान पूछने और फिर वधू को घोड़ी पर बिठाकर ले जाने का वर्णन है।)

(बिलासपुर में सुनी गई)

घोड़ी

सेहरा तैनू मैं देयाँ वीरा,
'कलगी' तेरी सास ने भेजी।
बीरा मेरा पैंहन के निकले,
कि माली दे बाग जा उतरे।
कि माली ने प्रेम से रखेया,
पिला दिया भाँग का प्याला।
जपो श्री राम की माला,
जपो श्री राम की माला ।

('कलगी' शब्द के स्थान पर 'बाले' 'कवजे' आदि श्रृंगार संज्ञाएँ गाकर गीत वढ़ाया जाता है।)

(चम्बा में सुनी गई)

चाओ लगा ओ सहियो लोभ लगा,
ओ मेरे बनरे रे मना ओ बिच चाओ लगा।
गाँधी री हाटी ओ लाड़ा कीं वे ढीठा,
ओ एस लाड़े रे मना बिच चाओ लगा।
सन्यारा री हाटी ओ लाड़ा की वे ढीठा,
ओ ए ताँ गैंहणे बण्वांदा, ओ सहियो ताँ वे ढीठा,
ओ एस लाड़े.......................................।
प्रोह्ता रे घरा ओ लाड़ा की वे ढीठा,
ओ ए ताँ लगन लख्वाँदा ओ सहियो ताँ वे ढीठा,
ओ एस लाड़े.......................................।

(वर के मन में विवाह के चाव का पारावार नहीं। वह गाँधी की हाट पर सेहरा व सुनार की हाट पर बैठकर वर गहने व पुरोहित के घर बैठ लग्न की घड़ी निकलवा रहा है।)

(मंडी में सुनी गई)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वधू पक्ष की ओर गाया जाने वाला गीत-विशेष 'सुहाग' :—

सुहाग-पार्वती

सुण्या जी सयाण्या कंता, मेरी गौराँ याणी नू,
कोई चंगा वर चाहिए, हिंचला श्री भोले नाथ।
घर चंगा, बर चंगा, कुल सुच्चा चाहिए,
हिंचले दीया कन्या नू कोई चंगा बर चाहिए,
हिंचला श्री भोले नाथ।
अठ द्वीप नौ खंड, चारों वेद पढ़ँदा,
हिंचले दीया कन्या नूँ कोई चंगा बर चाहिए,
हिंचला श्री भोले नाथ।
अठ मुट्ठी भंगा पींदा, नौ वी ता धतूरा,
भूँता दा सहेला नी माए कल्हा उठी जाँदा,
हिंचला श्री भोले नाथ।
डिमक-डिमक डौरू बाजे, छोटे बड़े सब देखण आए,
आप चढ़े शंभू बैल सवारी, नाद वजाए के,
हिंचला श्री भोले नाथ।
एक मृगछाला हेठ बछाँदा, ऊपर ना लैंदा माए,
ज्यू तरसाँदा, हिंचला श्री भोले नाथ।
सुण्याँ जी सयाण्या कंता, मेरी गौराँ याणी नूँ,
कोई चंगा बर चाहिए, हिंचला श्री भोले नाथ।
किसे देवाँ अरघ में, किसे देंवाँ धूपाँ,
जानी जवाइंऐ दा इक्को जेहा रुपा,
हिंचले दीया कन्या नू कोई चंगा बर चाहिए,
हिंचला श्री भोले नाथ।
सुण्या जी सयाण्या कंता, मेरी गौराँ याणी नू,
कोई चंगा वर चाहिए, हिंचला श्री भोले नाथ।

(गीत में पार्वती की माँ द्वारा गिरिराज से कन्या के लिए उत्तम, पठित, पवित्र कुल वर ढूंढने व शिवजी के गणों सहित नंग-धड़ंग पहुँच कर वधू-पक्ष को अचम्भे में डालने का प्रसंग है।)

(बिलासपुर में सुना गया)

सुहाग

'बाओ' जी तुसीं बड़े गियानी, बड़े गियानी,
केहा बर अंदा रंग साँवला,
जी तुसीं केहा बर अंदा रंग साँवला।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'वीवी' नी कोई गाड़ियाँ दीया धमकाँ,
नी कोई गर्द उडे रंग साँवला ।
'जाओ' जी तुसीं अतर लगा देओ,
कस्तूरी पला देओ वर नू घोल के ।

('वाओ'-'बीबी' के स्थान 'ताया'-बीवी', 'चाचा' 'वीवी' 'भाई-भैण', 'मामा'-भानजी' आदि सम्बन्ध संज्ञाएँ जोड़ कर गीत बढ़ाया जाता है ।

कन्या कहती है कि आप बुद्धिमान मेरे लिए साँवले रँग का कैसा वर ढूंढ लाए। उसे कहा जाता है, कि वर साँवला नहीं है । वह दूर से आया है और राह की धूल से उसका रँग साँवला लग रहा है । कन्या कहती है—तो फिर वर को नहला-धुला कर अतर लगा कर, कस्तूरी पिला कर उसकी थकान मिटाओ ।)

(ऊना-हमीरपुर में सुना गया)

विवाह संपन्न हो जाने पर, वर-वधू दोनों पक्षों में गाए जाने वाले गीत विशेष 'वधावे' :—

बधावा

चारों वधावे सबद सुहावे,
चऊँ ही देसां ते होई आए, राम ।।
पैह्ला वधावा घर मंदाग्नि दे,
परसरामे रुपे होई आया, राम ।
असर सँधारे, दैंताँ मारे,
सँह्सर बाहुए दा सिर लिया, राम ।
धन बड़ी भागण माता ए रेणुका,
पुत अनोखा जाया राम ।।
तीया वधावा घर बसुदेवे दे,
जमना लँघी घर आया राम ।
असर सँघारे दैंता मारे,
कंसे दा सर लीया, राम ।
धन बड़ी भागण माता ए देवकी,
पुत अनोखा जाया राम ।।
दूआ वधावा घर जशरथे दे,
रामचंद्र रुपे होई आया राम ।
असर संघारे दैंता मारे,
रावणे दा सर लीया, राम ।
धन बड़ी भागण माता ए कौसल्या,
पुत्र अनोखा जाया, राम ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिया वहोड़ी गढ़ लंका जे तोड़ी,
राज वभीछणे नू दीया, राम ।।
चौथा वधावा घर नंद मैहरे दे,
जमना लंघी घरे आया राम ।
धन वड़ी भागण माता जसोदा,
जिसा रा दुध पल्याया, राम ।
सुणो भाइयो साधो, हर जी देओ भगतो,
हरि जस गुण गायो, राम

(गीत में चार बधाइयाँ हैं। पहली बधाई जमदग्नि-रेणुका को, जिन्होंने परशुराम को जन्म दिया। दूसरी बधाई दशरथ-कौसल्या को, जिन्होंने रामचन्द्र को जन्म दिया। तीसरी बधाई वसुदेव-देवकी को, जिन्होंने कृष्ण को जन्म दिया। और चौथी बधाई नंद-यशोदा को, जिन्होंने कृष्ण को पाला-पोसा। इन विलक्षण सपूतों ने अनेक दैत्यों का संहार किया तथा क्रमशः सहस्रबाहु, रावण व कंस संहारे।)

(बिलासपुर में सुना गया)

बधावा

ओ मेरी अम्बड़िए मेरी माए,
ए देस कीयां करी वसदे ।
इना देसां जमण धीयां,
अवण सरस जवाईं,
बैंहदे धोतियां लाई,
जाँदे रोटियां खाई,
ए देस ईयां करी वसदे ।
ओ मेरी अम्बड़िए मेरी माए,
ए देस कीयां करी वसदे ।
इना घरां जमण पुत्तर,
आवण नूहां सुहागणी,
ए देस ईयां करी बसदे ।

(मां ! ये घर, ये देश किस प्रकार बसते हैं ? इन घरों में कन्याएं पैदा होती हैं उनका ब्याह होता है, घर में जवाई आते हैं—इन घरों में पुत्र पैदा होते हैं, सुहागन बहुएं आती हैं। ये घर इस प्रकार बसते हैं।)

(कुल्लू-काँगड़ा में सुना गया)

विवाह जैसे प्रसन्नता के अवसर पर छेड़-छाड़, परिहास अनिवार्य है, जिससे संबंधित अनेक गीत गाए जाते है, जिन्हें 'सिठणी' 'गाल' आदि स्थानीय संज्ञाएं दी गई हैं। वैसे तो ये गीत विवाह के भिन्न, बहुधा चरणों में गाए जाते है, और हर चरण में गाए जाने वाले गीत विशेष होते हैं, परन्तु बधू-पक्ष की ओर से, बारातियों के भोजन करते समय गाए जाने वाले ये गीत विशेषतया मनोरंजक होते हैं। अथ :

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिठणियां

(बारातियों को भोजन परोसते समय)

पत्तल लै डुन्ना लै बे, नाले आ सजना ।
भत लै पत लै बे, नाले आ सजना ।
मांह् लै मां लै बे, नाले आ सजना ।
दाल लै गाल लै वे, नाले आ सजना ।
सक्कर लै लक्कड़ लै बे, नाले आ सजना ।
घ्यो लै प्यौ लै बे, नाले आ सजना ।

पत्तल-डुन्ना = भोजन परोसन के लिए पत्तों के बने पात्र विशेष । भत = चावल । पत = पत्ते । मांह् = मास । मां = मां । दाल = दाल । गाल = गाली, सिठणी । सक्कर = शक्कर । घ्यो = घी । प्यो = बाप ।

(ऊना-काँगड़ा में सुना गया)

बारातियों के भोजन करते समय

- पीली-पीली दाल छोलेयां दी वणी ।
"जन्ना" ने जोरू देण वणी,
होरना लैण बणी,
बोलयाँ हाय वो रब्बा,
एडी सैह्‌न ओ बणी,
जोरू दैण वणी ।
पीली-पीली दाल छोलेयां दी वणी ।

('जन्ना' (बारात) के साथ बारातियों के नाम वदल-वदल कर लेने, और 'जोरू' (पत्नि) के स्थान अन्य महिला संबंध वाचक शब्द जोड़ कर गीत वढ़ाया जाता है ।)

दैन-लैण = देनी-लेनी

(चम्बा में सुना गया)

3. सेर-क चणेयां दाल मुइए,
रिझी कोरिया ठीकरिया ।
'कुड़म' बैठया खाण मुइए,
जोरा चढ़ गई घुगलिया ।
भोंदू बैठया खाण मुइए,
जोरा चढ़ गई घुगलिया ।
हाड़े करदा, सदके करदा, मिन्नतां करदा,
वकरे सुखदा चार मुइए,
उतर नी परमेसरिए ।

('कुडम' के स्थान बारातियों के नाम लेकर गीत वढ़ाया जाता है)

चणेंयां दाल = चने की दाल । रिझी = पकी । खाण = खाने । जोरा = पति । घुग-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लिया=पीठ पर। हाड़े करदा=क्षमा मांगता, पांव पड़ता। सुखदा=मनौती मानता। परमेसरिए=पत्नि।

(बिलासपुर में सुना गया)

कुड़म झुड्डू चुली लगावे, चुली लगावे,
जोरा तमाचा मार्‌या, रे, आ रे।

('कुड़म' के स्थान वारामियों के नाम लेकर गीत बढ़ाया जाता है।)

(भोजन समाप्त करने के समय)

विवाह के विभिन्न चरणों में संबंधित विशेष अनेक गीत गाए जाते हैं। अथ :

बटणे दा गीत

कणक कचरूआ मैदा कि घीयू रलाइए,
कौण इस बटणे जोगा कि बटणा कीजिए।
हटडुआं बल गईए, हत्थे लई झोलणा,
बहुआ गोरिया बर मिलेया, कि सदा मिट्ठा बोलणा।
हटडुआं बल गइए, हत्थे लई सूत ए,
बहुआ गोरिया बर मिलेया कि भले दा पूत ए।
हटडुआं बल गइए, हत्थे लई आरसी,
बहुआ गोरिया बर मिलेया कि दूरों लिखदा फारसी।

(वधू पक्ष की ओर गाए जाने वाले गीत में 'बहुआ' के स्थान 'बेटी' शब्द गाया जाता है।)

(घी, मैदा, हल्दी आदि मिला कर उबटन बनाया है। आओ, अब यह उबटन वर-(वधू) को मलें। बहुरानी (बेटी) को सौभाग्य से मिष्टभाषी, कुलीन व विद्वान वर प्राप्त हुआ है।)

नहाने के समय का गीत

सेवा लाड़े दीए माए,
लाड़ा बाहर खडोता।
तांबे दी धरत मढ़ाओ,
लाड़ा बाहर खड़ोता।
लौंगा दी बाड़ दुआओ,
लाड़ा बाहर खड़ोता।
कंतू दा पटड़ा ढलाओ,
लाड़ा बाहर खड़ोता।
तेल-दहीं सिरे पाओ,
लाड़ा बाहर खड़ोता।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नगरे दी नैण बुलाओ,
लाड़ा बाहर खड़ोता ।

(वधू-पक्ष की ओर 'लाड़ा' के स्थान 'लाड़ी' शब्द गाया जाता है । वर (वधू) की मां, वर (वधू) नहाने के लिए बाहर खड़ा (खड़ी) है। उसके लिए भूमि को ताम्बे से मढ़ाओ, लवंग की बाड़ लगाओ, हाथी दांत की चौकी लगाओ, सिर में तेल-दही डालो, और मल-मल कर नहलाने के लिए नगर की नाइन को बुला भेजो ।)

तोरन का गीत

तोरन बनैका आओ म्हारे ।
इस तोरन बनैके नूं देओ कुंगू ।
इस तोरन बनैके नूं देओ फुल-दुव ।
इस तोरन बनैके नूं देओ धूप ।
इस तोरन बनैके नूं देओ नवेद ।

(पूजा की सामग्री क्रम से बोलकर गीत वढ़ाया जाता है। हमारे घर शुभ, पावन पूजनीय तोरन आया है। कुमकुम, फूल, दूब, धूप, नैवेद्य आदि से इसकी पूजा करो ।)

सांद का गीत

सांदी वहिठेया बाह्मणा,
तुझ क्या ही चहिदां ।
जी ओ मेरी जजमानणी.
मुझ कुंगु चाहिदां ।
कुँगु बथेरा म्हारे, सारफा न करेयां ।

('कुँगू' के स्थान, 'बटणा' 'मैंह्दी', 'मैदा', 'हल्दी', 'स्याही' आदि अपेक्षित सामग्री गिना कर गीत बढ़ाया जाता है ।)

(सांद कराने के लिए बैठे पंडित जी, आपको क्या चाहिए ? यजमानिन, मुझे कुंकुम, मेंहदी, उबटन, हल्दी आदि आवश्यक सामग्री चाहिए । यह सामग्री हमारे पास भरपूर है, इसलिए निःशंक प्रयोग करना ।)

'सेहरा' चढ़ने के समय का गीत

चुग ल्या री मालण चम्बे दींया कलिया,
बे बनाओ, बे बनायो,
अच्छी बनायो, अच्छी दोस्ती लगायो,
हीरे-लाल जड़ायो, सुच्चे वोह्त लगायो,
मेरे याणे वने दा सेहरा,
बे बनायो, बे बनायो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेरा बापू रहंसे तेरे मुकुट चढ़ाई के,
तेरिया माइया दे मन है बधाइयां,
बे बनायो, बे बनायो,
अच्छी बनायो, अच्छी दोस्ती लगायो,
हीरे लाल जड़ायो, सुच्चे वौह्‌त लगायो,
बे बनायो, बे बनायो ।

('बापू'-माइया के स्थान अन्य संबंध वाचक शब्द गाकर गीत बढ़ाया जाता है।
मालन, चम्बे की कलियां चुन कर वर के लिए सेहरा बनाओ। सेहरे में, हीरे-मोती जड़ो। वर को यह सेहरा लगा कर वर का बाप प्रसन्न है और वर की मां के मन में वर के लिए बधाई है।)

'मिलणी' के समय का गीत

मेरे रणबटुए दी डोर,
अच्छा मेरा रणबटुआ ।
कुड़मे लाड़ी म्हारे आई रे बाबा, अंदर बाड़ी रे बाबा।
कित्ता खड़का-दड़का रे बाबा, कि होया लड़का रे बाबा।
बज्जी थाली रे बाबा, कि जम्मे चाली रे बाबा।
अन्दा मट रे बाबा, कि जम्मे सठ रे बाबा।
बट्टी रस्सी रे बाबा, कि जम्मे अस्सी रे बाबा।
बाह्या जौ रे बाबा, कि जम्मे सौ रे बाबा।
दित्ता धूप रे बाबा, कि जम्या पूत रे बाबा।
मेरे रणबटुए दी डोर,
अच्छा मेरा वणबटुआ ।

('कुड़मे लाड़ी' के स्थान विपक्ष की भिन्न महिलाओं के नाम बारी-बारी से लिए जाते हैं।)

बाड़ी=कर ली, ले जाई गई। जम्मे=पैदा हुए।

'तेल तुलाई' का गीत' (सिठणी)

आंगण साडा कुंगुए लिखेया जी,
आई महाजन बैठे जी ।
क्या सजनो तुसें गरीयाँ-छुहारे, जी,
क्या मिसरी दे कुज्जे थे,
असें जे लैणी 'कुड़में' दी जोरा जी,
लई के चखंडिया सुत्ते थे ।

('कुड़म के स्थान 'तेल' के लिए आए विभिन्न पुरुषों के नाम लेकर गीत बढ़ाया जाता है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लई के=लेकर। चंखडिया=चौबारे पर। सुत्ते थे=सोए थे।

'तेल' का गीत

(i) तेलिया मेलिया तेल ल्यावे,
सात सोहागणी तेल पावे।
तेलिया मेलिया तेल ल्यावे,
'अम्मा' सोहागणी तेल पावे।

('अम्मा' के स्थान 'चाची' 'ताई' आदि अन्य सुहागिन महिला संवंधवाचक शब्द जोड़ कर गीत गाया जाता है। तेल आ गया हैं। अब वधू की मां, चाची, ताई आदि सुहागिन महिलाएं वधू के सिर में तेल डाल रही हैं।)

(ii) ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी,-२।
कणक कटोरड़िए परोह्‌ते पाया तेल जी,-२।
पैसा धेला सर्‌या नी परोह्‌तणी तेले पाई ए,-२।
ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी,-२।
ठणक कटोरड़िए अम्मा पाया तेल जी,-२।
पैसा धेला सर्‌या नी, दरूब तेलें पाई ए-२।
ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी,-२।
ठणक कटोरड़िए बूआ पाया तेल जी,-२।
पैसा-धेला सर्‌या नी अप्पू तेले पई ए-२।
ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी,-२।
ठणक कटोरड़िए मामिया पाया तेल जी,-२।
पैसा धेला सर्‌या नी मामा तेले पाया ए,-२।

(विभिन्न महिला संबंध वाचक शब्द गाकर गीत बढ़ाया जाता है।)

ठणक कटोरड़ी=धातु (कांसे) की कटोरी। कुनी=किसने। परोह्‌त-परोह्‌तणी= पुरोहित-पुरोहताइन। सरेया नी=देते नहीं बना। दरुब=दूब।

'वधु को लग्नों के लिए लाते समय का गीत

बाहर आयो मेरी स्याम सुंदरी,
कान्ह लंगना नू आएगा।
कीयां आऊं मेरे कान्ह रसिया,
बापू ते सरमावंदी।
बापू ते सरमवंदी ए हुण,
लगन वेला जावंदी।

('बापू' के स्थान अन्य संबंध-वाचक शब्द जोड़कर गीत गाया जाता है। गीत में वर, कन्या को लग्नों के लिए बाहर आने को कह रहा है। कन्या अपने संबंधियों से लजा कर बाहर आने में हिचक जता रही है। वर इस हिचक को दूर करने का आग्रह कर रहा है, क्योंकि लग्न वेला बीत रही है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

एक अन्य गीत

आए बेशे बापुआ, बेदी लगन कराए।
आई बेशी आमिए, बेदी लगन कराए।

(विभिन्न संबंधियों को गिना कर, गीत गाया जाता है।) बेशे-बेशी = बैठे-बैठी।

लाबाँ

बेदी पर लग्नों के समय

रंग रसलाम पैह्‌लड़ी ते मंगल गाएया,
गोकल तां गोपियां काह्न वाला, कृष्ण ब्याह्‌ण आएया।
सिर स्योन सेह्‌रा मुकुट बिराजे, अंग कंचन झोलणा,
रावी ते पूजो लांव पैह्‌ली, कृष्ण अमृत बोलणा।
रंग रसलाम दूसरी ते स्याम पयारेया,
मइयां ता रुकमणो राम धनुष संगारेया।
धनुष संगारने वाला राम रलेया, नाले साठ सहेलियां,
श्री कृष्ण नूं तुसीं अंदर लयाओ, ल्याओ राज गहेलियां।
श्री कृष्ण दे हत्थ कंगन सोहे, बूंद तिन बारी झोलणा,
रावी ते पूजो लांव दूजी, कृष्ण अमृत बोलणा।
रंग रसलाम ते तीसरी लगन गण्याएया,
इन्द्र ता ब्रह्मा जी ने लगन गिणेया, वेद पढ़ने नू आएया।
घर जन आई लैं वहाली, आंगणे रस लीजिए।
रावी तां पूजो लांव तीजी, हत्थें बी दान कीजिए।
रंग रसलाम चौथी ते खाड़ा गाडेया,
यूं चलत पकड़ बहार बीड़ा छाडेया।
यूं चलत पकड़ बहार तेरी धर्म बेला आइए,
कुछ देओ बावल दान करके धर्म बेला आइए।
छत्तीस घड़ी परदेस होए बारी, नाले बाबल चंगेया।
रावी ते पूजो लांव चौथी, रुकमणी बर पाएया।
रंग रसलाम पंजवी ते राधे रुकमणी,
ठुकम चाल चलंतिए बल रूणझुणी।
गले हार ढोल संगार सोहे, मुख ते राम जपतिए।
रावी ते पूजो लांव पंजवी, हत्थें बी दान करंतिए।
रंग रसलाम छेवीं ते हर बर पाएया,
सहँस्र बेदी रूप बाला, कृष्ण परसणे आएया।
तखत बैठी श्री राम जी रलेया, सखियां ने मंगल गाएया;
रावी ते पूजो लांव छेवीं, रुकमण ता कृष्ण बिहाएया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंग रसलाम सतुंवीं ता लावां पूरियां,
छणकणे बले लटक सुध बिध माता लिखियां जोड़ियां ।
छणकणे बले लटक सुध बिध माता लिखियां जोड़ियां,
रावी ते पूजो लांव सतुंवीं, लावां कृष्ण जी दीयां पूरियां ।

(गीत में श्रीकृष्ण-रुकमणी के माध्यम से विवाह के लिए वर के सजधज कर गणमान्य व्यक्तियों की बारात लेकर आने, कन्या के सजधज कर लग्नों के लिए वेदी में आने तथा शास्त्र सम्मत विवाह की सात परिक्रमाएं कर विधिवत विवाह सम्पन्न होने का वर्णन है।)

लग्नों के समय का भजन

काहे के तोरन, काहे की बेदी,
काहे के कलस, लगायो जी।
चलो सखि हरि का मुख देखो,
रंग भवन ।।
रंग भवन हरि आयो जी,
चलो सखि.................. ।
रूपे के तोरन, सुइने की वेदी,
मोतिएं कलस लगायो जी,
चलो सखि..................... ।
इक सांवले दूए गोरे मनोहर,
संग महामुनि आयो जी ।
चलो सखि..................... ।
धन-धन भाग सिया जी तुम्हारे,
रामचंद्र वर पायो जी ।
चलो सखि..................... ।
धन-धन भाग राजा जनक जी तेरे,
दशरथ सजन बुलायो जी ।
चलो सखि हरि का मुख देखो,
रंग भवन ।।
रंग भवन हरि आयो जी,
चलो सखि..................... ।

रुपे=चांदी से । सुइने=सोने से । मोतिएं=मोतियों से । सुचेयां=मोतियों से । भाग=भाग्य । अंगण=आंगन ।

वेदी पर का सुहाग-भजन

सच कहो सखि झूठ न बोलो, रंग भवन हरि आयो जी,
चलो सखि हर का मुख देखो, रंग भवन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काहे के तोरन काहे की वेदी, काहे के कलस लगायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
सुइने के तोरन, रुपे की वेदी, सुचेयां कलस लगायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
हरे-हरे गोबरे अंगण लपाया, गज सुचेयां चौक पुरायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
इक सांवरे दूए गोरे मनोहर, संग कहामुनि आयो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
धन-धन भाग राजा जनक के, जसरथ सजन बुलायो जी,
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।
धन-धन भाग सिया जी तुम्हारे, रामचन्द्र वर पायो जी
चलो सखि हरि का मुख देखो, रंग भवन।

जानकी मंगल

कन्या दान के समय का गीत—

प्रथमिए सुमरिए श्री गुरुदेव गणेश मनाइए,
शारद को शिर नाईं रामा गुण गाइए।
प्रभु गुण सिंधु समान कौन वरण न करे,
जैसी जाकी बुद्धि तैसें हृदय दया धरे।
तब बोले ऋषिराज अवधपुर जाइए,
रामा भए अवतार जगय कराइए।
करिए सरजू स्नान, नृपति गृह आइए,
बहुविधि पूजन करिए, सिंघासन बैठाइए।

शिर नाईं = नतमस्तक।

'सुतरात' का गीत

तण न्हावण चल्ली।
बीण रखी छटकारी जी,
तण न्हावण चल्ली।
कंगण घड़ सनयारा-२,
धरेया बजाजी दी हट्टी जी,
कंगण घड़ सनयारा।
ए घड़ावण मांगे-२,
देणी सै "लाड़े दी माई" जी,
ए घड़ावण मंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

('माई' के स्थान अन्य महिला संबंध वाचक शब्द ज़ोड़कर गीत गाया जाता है।)
तण=बधू। न्हावण=नहाने के लिए। सनयारा=सुनार। घड़ावण=घड़ाई।

सिरगुंदी के समय का गीत

जे तुसी चल्ले छैला नौकरिया,
सानू क्या ए ल्यौंह्‌गे जी।
जे मैं चल्लया नाजो नौकरिया,
जो कुछ चाहिए से ल्यौंह्‌गे जी।
जे तुसीं चल्ले छैला नौकरिया, सानू ल्यायो बड़ी दा फुल्ल जी।
हे मेरे भाइयो भतीजड़ेयो, इस नाजो दींयां पुठियां अड़ियां,
मंगदी वड़ी दा फुल्ल बे।
ज तुसें चल्ले छैला नौकरिया,
सानू क्या ही ले औंगे जी,
जे असे चल्ले नाजो नौकरिया,
जो चाहिए सो ले औंगे जी।
जे तुसी चल्ले छैला नोकरिया, सानू ल्यायो सिंह्‌णी दा दुध वे।
ए मेरे भाइयो भतीजड़यो, इसा नाजो दींया पुठियां अड़ियां,
मंगदी सिंहणी दा दुध बे।

(वधू कहती है—अगर आप नौकरी पर जा रहे हैं, तो मेरे लिए क्या लाओगे? वर कहता है—जो तुम कहोगी वही लाऊँगा।

इस पर वधू, वर को 'बरगद का दूध' शेरनी का दूध' आदि असम्भव वस्तुएं लाने को कहती है।)

बिरह्‌ड़ा

साओरियाँ दे गया जवाईं, वैठा तम्बू ताणी,
वे हर बोल मना।
चार घ्याड़े न्याह्‌ल जवाइयां, बग्गे ब्योरे देवां,
वे हर बोल मना।
बग्गे-ब्योरे घर रख सस्सू, मैं मुकल्वावा लैणा,
वे हर बोल मना।
साओरिया दे गया जवांई, वैठा तम्बू ताणी,
बे हर बोल मना।
चार घयाड़े न्यहाल जबाइयां, थाल कटोरे देवां,
वे हर वोल मना।
थाल कटोरे घर रख सौह्‌रया, मैं मुकल्वावा लैणा,
बे हर बोल मना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साओरियां दे गया जवाईं, बैंठा तम्बू ताणी,
बे हर बोल मना।
चार धयाडे न्यूहाल जवाइग्राँ, गाईं-म्हैसी देवां,
वे हर बोल मना।
गाईं-म्हैसीं घरे रख पतोह्‌रया, मैं मुकल्वावा लैंणा,
बे हर बोल मना।
साओरियां दे गया जवाईं बैंटा तम्बू ताणी,
वे हर बोल मना।
चार धयाड़े न्यूहाल जवाइयां, टोकणिया-बटलोहियां देवां,
वे हर बोल मना।
टोकणियां-बटलोहियां घरे रख साल्या, मैं मुकल्वावा लैणा,
वे हर बोल मना।
साओरियां दे गया जवाईं, बैंठा तम्बू ताणी,
वे हर बोल मना।
चार धयाड़े न्यूहाल जवाइयां, पलंग-पीढ़े देवां,
बे हर बोल मना।
पलंग-पीढ़े घरे रख ननौरेया, मैं मुकल्वावा लैणा,
वे हर बोल मना।
साओरियां दे गया जवाईं, बैंठा तम्बू ताणी,
बे हर बोल मना।
चार ध्याड़े न्यूहाल जवाइयां, खारू-पटारू देवां,
वे हर बोल मना।
खारियां-पटारियां घरे रख मलोह्‌रया, मैं मुकल्वावा लैणा,
बे हर वोल मना।

(जँवाई ससुराल में वधू को तुरंत साथ ले जाने का हठ किए बैठा है। कन्या के संबंधी वर को विभिन्न वस्तुओं का लालच देकर कन्या को कुछ दिन और रोक रखना चाह रहे हैं, लेकिन वर इसके लिए बिल्कुल नहीं मान रहा है।)

विदाई गीत

मेरा गुडिया पटारू बे, बापू तेरे कौण खेले।
तेरे डोले रखाई देउँगा, धीए घरे जा आपणे ॥
तेरे मैह्‌लां दे अंदर वे, बापू मेरा डोला अड़ेया।
मैं तो मैह्‌लां पटाई देउँगा, धीए घरे जा आपणे ॥
तेरे मैह्‌लां दे अंदर बे, बापू मेरी 'अम्मा' रोए।
तेरी अम्मा मनाई लऊँगा, धीए घरे जा आपणे ॥

('अम्मा' के स्थान अन्य सम्बन्ध-वाचक शब्द जोड़कर गीत गाया जाता है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विदा हो रही कन्या का मन अपने मां-बाप और घर को छोड़ कर जाने के लिए मान नहीं रहा। वह गुड़ियों, डोली के अटकने, मां आदि के रोने की ओर बापू का ध्यान दिलाकर विदा नहीं होना चाह रही। परन्तु बापू उसे सभी प्रकार से ढाढ़स बंधा कर विदा होने का आग्रह कर रहा है।)

महासूई विवाह गीत—विदाई गीत

खड़ी होए आमीए, आंगणे आपणे,
बेटी के मेंह्दी सज़ोए।
आज की संझे बेटिए बापू जीए मैह्ले,
कल जाणा सौहरिए घरै।
सौह्रिए घरै बापुआ, मैं नहीं जाणा,
मैं रहणा जनमा कौ घरै।
जनमा कुँआरी बेटिए, रही बी ना सकदी,
रही बी ना रामा री सिया।

('बापू' के स्थान 'चाचा', 'ताया', 'मामा' आदि संबंध सूचक शब्द जोड़कर गीत बढ़ाया जाएगा।)

आमीए=मां। संझे=सांझ। सौह्रिए=ससुराल। जनमा कौ=आजन्म।

'अंदरेरे' का गीत

आओ मेरिए बहुए, ए घर तेरा।
ए घर तेरा बहुए, ए घर तेरा॥
सासु सहिठड़ी बहुआ जे आई।
लाड़ सहिठड़ी बहुआ जे आई।
जठाणिया सहिठड़ी बहुआ जे आई।
नणदा सहिठड़ी बहुआ जे आई।

(इसी प्रकार दूसरे संबंध वाचक शब्द जोड़कर गीत बढ़ाया जाता है।

वधू का 'गृह-प्रदेश' कराते यह कहा जा रहा है कि यह घर तुम्हारा ही है। इसके अतिरिक्त वधू की प्रसंसा की जा रही है।)

रत्वाएँ फिरने के समय का गीत

(*i*) पीपल पुजणे गौरजाँ आई—२।
साठ सहेलियाँ संग ले आई—२।

(*ii*) कौण पुजे इना देवतयाँ, परमेसरेयाँ,
ब्बीहा बोले।
'लाड़ा' पुजे इना देवतयाँ, परमेसरेयाँ,
ब्बीहा बोले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

('लाड़ा' शब्द के स्थान वर के विभिन्न सम्बन्धी गिना कर गीत बढ़ाया जाता है। 'वधू पीपल पूजने आई है, संग साठ सहेलियाँ लाई है।' पीपल को ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है ब्रह्मादिक देवताओं की पूजा कौन कर रहा है? वर व वर के सभी सम्बन्धी देवताओं की पूजा कर रहे हैं।)

वधू घर में वर के प्रवेश और वर के घर में वधू-प्रवेश के समय का पूजा गीत :—

फो राजे धूपे-दीपे समेत हो।
फो राजे कुँगु-अछतें समेत हो।
फो राजे गंगा जले समेत हो।
फो राजे डुनड़ी-मुठड़ी समेत हो।
(यही पंक्तियाँ कई बार दोहराई जाती हैं।)

हेरे

डब्बी साड़ी पंजरंगी, ऊपर धरदी रपइया रोक।
'कुडमणियाँ' नू ब्याही के लेई चल्ले,
देओ नगारयाँ कुडमणिए प्यारिए चोट॥
चिकड़ा री टटीहरिए बारी, हँसा नूँ मंदा नी बोल।
हँस वैठे घरे अपणे,
जाई चिकड़ मेरिए प्यारिए रोल॥

(विवाह में सम्मिलित महिलाएँ विवाह संपन्न होने पर अपने घर लौटते हुए कहती हैं कि कुड़मणी (समधिन) को डंके की चोट पर व्याह कर ले जाया जा रहा है। इसके उत्तर में विवाह-घर की महिलाएँ कहती हैं, कि कीचड़ की टटीहरियों, हंसो को बुरा मत कहो। हँस (हम) अपने घर वैठे हैं, टटीह्रियाँ (तुम) जाकर कीचड़ में सनें।)

(विवाह में सम्मिलित अतिथि-सम्बन्धी वापिस जाते हुए गाते हैं)

बाओ, नित-नित करियो कारजाँ नी,
सानू सद्धी बुलाओ।
बर्ह्याँ-छमाहियां दे पावणे जी,
असाँ रोज नी औणा।

('बाओ' के स्थान पर 'चाचा', ताऊ', 'मामा', 'बुआ', 'नानी', आदि सम्बन्ध सूचक शब्द जोड़कर गीत बढ़ाया जाता है।)

(बापू, ऐसे सुअवसर बार-बार आएँ और हमें निमंत्रित किया जाए। ऐसे ही समारोहों में साल-छः महीने के बाद आने वाले अतिथि हैं हम। प्रतिदिन हम भी कहाँ आएँगे।)

'डोरड़ी'

थोड़ी मुइए थोड़ी, नींवड़ी होयाँ नी वे,
मेरिए डोरड़िए ओ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'शाशुए' नी मेरिए जाई औणा प्योकड़े नी व,
शाशुए नी मेरिए चावलिए ओ। थोड़ी मुइए.........।
'सौह्रा' नी मेरेया, जाई औणा प्यौकड़े नी वे,
सौह्रया नी मेरेया चावलेया ओ। थोड़ी मुइए......।

(इसी प्रकार 'जेठ', 'दयोर' आदि ससुराल की सम्बन्ध वाचक संज्ञाएँ जोड़ कर गीत गाया जाता है। गीत में, विवाहित महिला पीहर जाने के लिए, सास, ससुर, जेठ, देवर आदि से आग्रह कर रही है।)

दाड़नी दे बूटे

छाड़नी दे बूटे बापू पीह्गाँ पइयाँ,
सहियाँ-सहेलियाँ सब पींह्गण पइयाँ,
मैं बी पींह्गण जाणा।
पींह्गणे नी जाणा धीए, शावरे जाणा।
बिखड़े पहाड़े बापू जी,
माँह कल्हिया कीयाँ रैह्णा,
सहियाँ-सहेलियाँ पींह्गणे गइयाँ,
मैं बी पींह्गणे जाणा।
बागे जे देऊँगा धीए, ब्यौरा देखी रैह्णा।
बिखड़े पहाड़ै चाचा जी,
माँह कल्हिया कीयाँ रैह्णा।
टाकणे जे देऊँगा धीए, थालियाँ देखी रैह्णा।
बिखड़े पहाड़े ताया जी,
माँह कल्हिया कीयाँ रैह्णा।
गऊआँ जे देऊँगा धीए, बछिया देखी रैह्णा।

(गीत में विवाहिता के ससुराल जाने की अनिच्छा का चित्रण है।

विवाहिता अपने बापू, ताया, चाचा आदि से कहती है कि पेड़ पर झूले पड़ गए हैं, मेरी सब सखि-सहेलियाँ झूलने के लिए गई हुई हैं, मैंने भी झूला झूलने जाना है।

बापू कहता है—बेटी, झूला-झूलने नहीं जाना, ससुराल जाना है। कन्या कहती है—मैं उस विकट प्रदेश में अकेली कैसे रहूँगी ? बापू, ताया, चाचा आदि सम्बन्धी कहते हैं कि हम तुझे बहुत अच्छे कपड़े, वर्तन देंगे। तू उन्हें देखकर अकेला अनुभव नहीं करेगी।)

'बन्ना'

तुम्ही हो हमारे चाँद, बलमा।
तुम्ही हो हमारे चाँद बलमा।।
तुम बिना मैं तोरी भई है बावरी,
अटल रहे तोरा सुहाग, सलामत।
तुम्ही हो...........................।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुँद ल्याई मालन, फूलों का सेहरा,
वनरे के सिर सुहावा सजेगा।
तुम्ही हो........................।

प्रदेश के निचले क्षेत्रों में पनिहारा वर्ग विवाह के अवसर पर अतिरिक्त एक विशेष गीत प्रकार गाता है, जिसे 'छिंज' कहा जाता है। अथ :

पनिहारा वर्ग का विवाह गीत

वाँगा देया भगवाना, भगवाना,
भला ओ बागें क्या रस-मेवे।
मूली दा पत्त रसीला, ओ रसीला,
भला तू ता लयाँ गोरिए चखी ओ,
मूली दा पत्ता रसीला।
दाड़ू ताँ दाखाँ बजूरी, ओ बजूरी,
भला बागें ए रस मेवे।
ओ बागाँ........................।

(बागों के स्वामी, बागों में क्या-क्या फल-मेवे हैं? बागों में मूली, अनार, दाख-अंगूर आदि अनेक स्वादिष्ट फल मेवे हैं।)

पंगवाली विवाह गीत

विवाह रचंदे लाड़े-लाड़ी दा ओ,
परोहत सदे गँगे पारे दा ओ।
मिटिया माँगे गँगे पारे दा ओ,
गोहा माँगे गँगे पारे दा ओ।
के कम्मा दे गोहा के कम्मा दे,
मिटिया दा ओ चुल्ला-चौंका दा ए।
बेदी बैंठे दीया नौहणा ओ,
परोह्त बैंठे गंगे पारे दा ओ।
परोह्त बैठे बेदी शुभ लगे,
शादी लगे बेदी शुभ लगे।
शादी लगे बेदी कौण वैठे,
कौण बैंठे बेदी कौण बैंठे।
कौण बैठी धरती माताओ,
बेदी बैठी धरती माता ओ।

('वर-वधू का गठबंधन सम्पन्न हो रहा है। इसके लिए गंगा पार का पंडित पुरोहित बुलाया गया है। वेदी में लग्न मंडप भी गंगा पार की गोबर-मिट्टी से लीपा गया है। बेदी में विवाह को सम्पन्न कराने के लिए बैठा पुरोहित बहुत शुभ लग रहा है और बेदी में कौन बैठा है? धरती माता (जानकी) यानि बधू)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शादी का गीत (किन्नरी)

निङनु गुन, ज्ञाले ले,
निङनु गुन, ज्ञाले ले,
आसे दुसे, मा व ले,
आसे दुसे, मा ब।
आसे दुसे बनना ले,
आसे दुसे बनना ले।
फरुना याब याब जारीत्र ले,
फरुना याब याव जारीत्र।
फरुना याब याब जारीत्र ले,
फरुना याव याव जारीत्र ले।
कि न जाङचू भाईटया ले,
किन जाङचू भाइटया।
निङ जोई पङ कोचङ लोनमा ले,
निङ जोई पङ कोचङ लोनमा ले।
गुन ज्ञाल्यो मेटया कोचङ ले,
गुन ज्ञाले मेटया कोचङ।
गुन ज्ञाल्यो मेटया कोचङ ले,
गुन ज्ञाल्यो मेटया कोचङ ले।
सागङ फोल फोल, केतो ले,
सागङ फोल फोल केतो।
गुनयाम मा नेमा ले,
गुनयाम मा नेमा ले।
मलथाङू देन दवातोश ले,
मलथाङू देन दवातोश।
मलथाङू देन दवतोश ले,
मलथाङू देन दवतोश ले,
मलथाङू देन दवतोश ले।
याव याब ची बीतोश ले,
याब याब ची बीतोश।
याब याव ची बीतोश ले,
याब याब ची बीतोश ले।
आनेनू आमनीमू थुमचो ले,
आनेनू आमनीमू थुमचो।
गुनयामु नेरात्र ले,
गुनयामु नेरात्र ले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीग छाङ गुनयाच देसक ले,
तीग छाङ गुनायाच देसक ।
गुनायाम मा नेमा ले,
गुनायाम मा नेमा ले ।
याब याब चि़ बी तोश ले,
याब याब चि़ बी तोश ।
याब याब चि़ बीतोश ले,
याब याब चि़ बीतोश ले ।
आनेनू बापू थुमचो़ ले,
आनेनू बापू थुमचो़ ।
मेंटङ दवा-दवा गोरचाङ ले,
मेंटङ दवा-दवा गोरचाङ ले ।
आमनीमू ज़ागो युमे ले,
आम नीमू ज़ागो युमे ।
आमनीमू ज़ागो युमे ले,
आम नीमू ज़ागो युमे ले ।
बापू ज़ागो रुआ ले,
बापू ज़ागो रुआ ले ।

(प्रस्तुत किनारी विवाह गीत वधू पक्ष की ओर गाया जाने वाला एक गीत है । गीत में वर को सावधान किया जा रहा है कि यदि वधू को ठीक तरह से नहीं रखा गया, उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया गया, तो फिर वह तुम्हें छोड़कर अपने मायके लौट आएगी। साथ ही, वधू को भी ठीक ढंग से रहने की शिक्षा दी गई है ।)

स्पीतियन विवाह गीत

दुस् सुम दे रिङ चीग् ।।
नम ला कर मा छङ ।।
सा ला त्रि मा ड्रो ।।
तेन ड्रेल ट्र रु शीस् ।।
गो मे या थेम कुन ।।
चि दङ गङ ला जे ।।
गो मे या थेम कुन ।।
सेर् पोई सेर् ला जे ।।
गो मे या थेम कुन ।।
ङोन पोई यु ला जे ।।
गो मो खो रङ नी ।।
कर पोई दुङ ला जे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गो मे या छौग् नी ।।
यब छेन आ बा जुग ।।
गो मे योन छौग् नी ।।
युम छुङ आ मा जुग ।।

(यह विवाह गीत, विवाह अवसर पर अद्वितीय सजधज का वर्णन है। गीत में कहा गया है कि आज विवाह के इस अवसर पर त्रिकाल, एक काल हो गया है, त्रिकाल का सौंदर्य, सजधज है। आकाश सितारों से पूर्ण रूपेण भर गया है। पृथ्वी पर सूर्य की सुनहरी किरणों का उष्णीय प्रकाश उतर आया है। इस घर के द्वार के दोनों ओर ऊपर-नीचे जाने के लिए जो सीढ़ियाँ बनी हैं, वे समस्त सीढ़ियाँ हीरे-मोतियों से जड़ित स्वर्ण निर्मित हैं, और वे इस अद्वितीय दृश्य का सृजन कर रही हैं।

घर के भीतर दाईं ओर माननीय पिता जी तथा बाईं ओर पूजनीय माता जी विराजमान हैं।)

इसके अतिरिक्त विवाह अवसर पर प्रदेश के निचले प्रायः सभी क्षेत्रों में 'गिद्धा' गीत' तथा ऊपरी महासू-सिरमौर व कुल्लू क्षेत्रों में नाटियां भी गाई जाती हैं। ऊपरी महासू-सिरमौर के कतिपय स्थानों पर विवाह अवसर पर लामन भी गाई जाती है। अथ :

'लामन'

सांगौणी कइए साता नी बिसरी पाए,
जिंदैड़ी आवली सावरै तिए,
मेरी विश्टी लाए।

(अब हमारा संग-साथ समाप्त हुआ, तुम्हारी शादी हो गई। अब मेरा भी कहीं प्रबंध करो।)

(डोडरा-क्वार में सुनी गई)

विवाह अवसर पर रात को रतजगा भी होता है। रतजगे से संबद्ध भी अनेक गीत गाए जाते हैं। एक गीत :

रतजागे का गीत

ओ मोरी अखियां घुर रहियां नींदरिए।
ओ बांके नैणा ओ घुर रहे नींदरिए।
नींदरिए ओ बैरन नींदरिए, ओ मोरी अखियां..................... ।
आओ मोरे बलमा तू वही जा ओ अंगणे,
मैं पापण रही सोए नी, ओ मोरी अखियां......................... ।
धर-घर जांदी मैं गली-गली जांदी,
निंदा जो लैदी नी कोए नी, ओ मेरी अखियां..................... ।

कुल को जीवित रखने के लिए प्रत्येक विवाहित दम्पति पुत्र प्राप्ति की कामना करता है। अस्तु, घर में पुत्र जन्म परम सौभाग्य व प्रसन्नता का सूचक है। प्रसन्नता के इस अवसर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पर भी विशेष गीत गाए जाते हैं। यह विशेष गायन प्रकार 'वधाई' प्रदेश के बहुधा क्षेत्रों में 'ब्यूहाई' कहलाता है। अथ :

ब्यूहाई (बधाई)

मदन मोहन जी दी प्यारी,
नी सुणेयां वैंह्णे बंसरी।
भांदों म्हीने दीयां न्हेरियां रातीं,
जनमेया कृष्ण मुरारी। नी सुणेयां............................।
जां जमेयां ता दोपक बलेया,
छौवी छके हो रहियां लोईं। नी सुणेया.......................।
नौह्ता रे दौह्ता पाट पलेटेया,
कुछड़ लया गोरिए दाइएं। नी सुणेयां.......................।
गोल पतासा गुड़सल देंदी,
सोने दी ए कटोरी। नी सुणेयां.............................।
चनण कटी पलंघूड़ा घडांदी,
रेसमी लाइयां मैं डोरां। नी सुणेयां..........................।
औंदा तां जांदा वासुदेव झुटांदा,
झुटेयां देन खल्हाइयां। नी सुणेयां...........................।

(गीत में कृष्ण जन्म वधाई के माध्यम से पुत्र वधाई और पुत्र जन्म के अवसर की प्रसन्नता का चित्रण है।)

बैंह्णे=वहने। कुछड़=बगल। लोईं=प्रकाश।

(कुल्लू-कांगड़ा)

अच्छे नसीवां वाली आई कि आज मोरे वजियां वधाइयां।
वजियां बधाइयां, गुरदे नगारे—२,
अच्छे नसीवां.......................................।
काहे दा मैं गुलसत देवां, काहे दी कटोरी,।
कि आज मोरे..।
गोल पतासा में गुलसत देवां, सोने दी कटोरी,।
कि आज मोरे..।
काहे दा मैं झग्गू सयावां, काहे दी टोपी,।
कि आज मोरे..।
रेसमें दा मैं झग्गू सयावां, सिलमे-सतारे टोपी,।
कि आज मोरे..।
काहे दा मैं चौक परोवां, काहे दी बिहाई।
कि आज मोरे..।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोतियां दा मैं चौक परोवां, सोने दी बिहाई ।
कि आज मोरे.. ।

(गीत में पुत्र-जन्म पर पुत्र की मां को बधाई, पुत्र को उत्तमोत्तम उपहार तथा पुत्र-जन्म उपलक्ष पर अद्वितीय समारोह संपन्नता की चर्चा है ।)

गुलसत = पर्वोचित मिठाई । पतासा = मिठाई विशेष । झग्गू = कुरता । चौक = पूजन कार्य के लिए स्वच्छ, लीपी-पोती जगह, विचित्र आकर्षक मंडप । बिहाई = पुत्र जन्म प्रतीक ।
(मंडी)

ब्यहाई

सखि आज बधाई बाजी नन्द द्वार !
भर भादों की रैन अंधेरी, जन्म्या स्याम मुरार ।
भर भादों दी तिथ अष्टमी रोह्णी नछत्तर बुद्धवार । बधाई............... ।
साद बुलाओ जिसा नैण की बेटी नगरे सादा देओ,
चलो सताबी बिलम्ब न कीजे, नंद द्वार । सखि आज बधाई................. ।
पाह्र लई कांघियां, स्वार लई पटियां, सुच्च्यां पैह्ने हार,
बिंदी लाई संदूर की सजनी, बिछुअन की छनकार । बधाई.................. ।
बावा नन्द परौली ठाढ़े करे गऊआं दे दान,
काली-नीली धौली धुमरी, विप्रन को दलवाओ । बधाई बाजी................ ।
गावत-गावत देर भई जी, किनिए न पूछी बात,
एक सखि क्या जे उठ बोली, उल्टी घरां नूं चली जाओ । बधाई............ ।
दंद उजले ता होठ प्यूले, निकसी खोल द्वार,
गोद लयो स्यामा कृष्ण मुरारी बधाई नन्द द्वार । बधाई बाजी............... ।
सब सखियों ने मता मताया, दीन्दी आसीर्वाद,
जुग-जुग जीओ तेरा लाल, बधाई बाजी नन्द द्वार ।
सखि आज बधाई................................ ।

(गीत में कृष्ण जन्म अवसर पर अद्वितीय हर्षोल्लास, नन्द द्वारा दान-दक्षिणा दिए जाने तथा गोकुलवासियों द्वारा बधाइयां दिए जाने की चर्चा है ।)

सादा = निमंत्रण । सताबी = शीघ्र । पाह्र लई कांघियां, स्वार लई पटियां, सुच्च्यां पैहने हार = सज-धज कर, कंघी-पट्टी करके, हीरे-मोतियों के हार पहन कर । मता-मताया = विचार विनिमय किया । किनिए = किसी ने ।

भादों महीने दीयां न्हेरियां रातीं जी,
जरमेया कृष्ण मुरारी, हरी हर जी ।
चंगी बीण बजायो, जी खरी खरी जी,
लोरियां देग जसोदे माई ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काहे दा तेरा करुआ-कुनाली,
जी काहे दे कुण्ड नुल्हाये, जी हरी हर,
जी चंगी वीन.............................. ॥
चांदी दा मेरा करुआ-कुनाली,
जी नदिया दे कुण्ड नुल्हायो, जी हरी हर,
जी चंगी वीन.............................. ॥
काहे दा तेरा झग्गा रे टोपी,
काहे दी जड़त जड़ायो, जी हरी हर,
जी चंगी वीन.............................. ॥
रेसम दा तेरा झग्गा ते टोपा,
दुसुतिएं जड़त जड़ायो, जी हरी हर,
जी चंगी वीन.............................. ॥
काहे दे तेरे कड़िया-कड़ोलू,
काहे दी जड़त जड़ायो, जी हरी हर,
जी चंगी वीन.............................. ॥
सोने दे तेरे कड़िया-कड़ोलू,
सुचियां दी जड़त जड़ायो, जी हरी हर,
जी चंगी बीन.............................. ॥
काहे दा तेरा पीढ़ा-पंघूड़ा,
काहे दियां लासां लगाइयां, जी हरी हर,
जी चंगी बीन.............................. ॥
दंदू दा तेरा पीढ़ा-पंघूड़ा,
रेसमी लासां लगाइयां, जी हरी हर,
जी चंगी बीन.............................. ॥

(गीत में कृष्ण जन्म वधाई के माध्यम से पुत्र जन्म पर विशेष प्रसन्नता, पुत्र को उत्तमोत्तम ढंग से नहलाने, सजाने, शृंगारने की चर्चा है।)

करुआ-कुनाली=पुत्र जन्म अवसर के विशेष मिट्टी के बर्तन। कुण्ड=जलाशय। जड़त-जड़ायो=कढ़ाई-कसीदे का काम। दुसुतियें=विशेष धागे से। कड़िया-कड़ोलू=आभूषण। पीढ़ा-पंघूड़ा=पालना। लासां - डोरां। दंदू=हाथी दांत।

गृहस्थ जीवन की स्तुति (गूंलामा)

गूंलामा लम्ई युलदू,
सेरे शेन नीटाशी शोग् शे।
खों सेर् दोग़ ला सलवई,
दङ योई गुरु जी ज़ीम सो।
सेर दोग़ सलावई,
दङ बोई गुरु जी ज़ीम सो ॥—२
....

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(यह गीत पुत्र जन्म के अवसर पर लोग इकट्ठे हो कर गाते हैं।)

"रमणीक स्थल पर, पीले रंग का मकान किसका है ? वह नरपति का है। नगर पति कौन है ? वह वीर है। .... " —(स्पीति)

द्वारे नन्द के सिबजी ने नाद बजायो ।
सिबजी ने नाद बजायो—सिबजी ने नाद बजायो जी,
द्वारे नंद के सिबजी ने नाद बजायो ॥
ले भिच्छा निकली जी,
नंद राणी जी ।
सिब दरसण को आए,
मोतिए थाल भराए जी ।
द्वारे नंद के.................................... ॥
ना चाहिए तेरे जी,
हीरे-मोती जी ।
सिब दरसण को आए,
सिब दरसण को आए जी ।
द्वारे नंद के.................................... ॥
जा जोगी घरे आपणे,
तैं मेरा बालक डराया,
तैं मेरा बालक डराया,
तैं मैरा बालक डराया जी, ।
द्वारे नंद के.................................... ॥

(गीत में कृष्ण जन्म के अवसर पर शिवजी का कृष्ण-दर्शन के लिए नंद के द्वार पर आना, नाद बजाना, यशोदा का हीरे-मोती देना, शिवजी का इन्हें अस्वीकार करते हुए कृष्ण-दर्शन का आग्रह करना, बालक कृष्ण के शिव मिलन हेतु रुदन को यशोदा द्वारा, नाद से भय-भीत हो रोना समझना आदि वर्णित है।) (लोअर महासू)

खेती, लोकजीवन का अनिवार्य अंग है। प्रायः खेती के सभी कार्य मिल-जुल कर किए जाते हैं। मनोरंजन और काम की थकान को मिटाने के उद्देश्य से बोआई, रोपाई, कटाई आदि अवसरों पर भी गीत गाए जाते हैं। बहुधा ये प्रणय गीत होते हैं, जैसे निचले क्षेत्रों में 'गंगी' ऊपरी महासू में 'लामन' सिरमौर में 'झूरी'। परन्तु कुछेक क्षेत्रों में इन अवसरों पर गाए जाने वाले विशेष गीत भी हैं। जैसे स्पीति में खेती के कार्य करते समय 'यङ ल खो रे 'गीत गाया जाता है। गीत :

खेती के काम करते समय (स्पीति)

यङ ल खो रे ।
य यी को पो रो,
की तन पो न लुङ प ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasj

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ङी द ल ङी पो त्रे ने जुग़ स यिन।
ठुङ खोर ल ज़ोम पो त्रे ने जुग़ स यिन।
यङ ल खो रे।
युम छिन छो ङे रङ म ने रे ड्रुब्।
तन पाङे छोई दे ल नी क्यव् सु छि।
तन पाङे होङ दे रङ नी सुङ क्योब ज़ोद।
यङ ल खो रे।
य यी कङ दु कयी तन प ल लुङ ज़ोद।
दर सङ ल कर मो ङे ने जुग़ स यिन।
यु रल ल ला मो ङे ने ङो छर यिन।
यङ ल खो रे।
युम छिन छो ङे ने रङ म ने रे ड्रुव।
तन पा ङे छोई दे ल नी क्यव सु छी।
तन पा ङे होङ दे रङ नी सुङ क्योब् ज़ोद।
यङ ल खो रे।
य यी गुग जुग ग्यी ड्रा मो ल रू ज़ोद।
य न ड्रेन ल ला मा ङे नी ने जुग स यिन।
ड्रिव चोन ल ज़ोम पोड्रि मे ङो छर यिन।
यङ ल खो रे।
युम छेन छो दे मो दे रङ म नी ड्रुव।

(जिस प्रकार नीला अनंत आकाश सूर्य-चंद्रमा का घर है, उसी प्रकार सरोवर मछलियों का, हिमालय सिंहों का, गाँव में ऊंची जगह बने गोन्या लामाओं का तथा यह गांव हमारा घर है। भगवान सबको कुशल रखे, सुख समृद्धि व दीर्घायु प्रदान करे, हमारी यही प्रार्थना है।)

नन्हें-मुन्नों को गोदी में लिए, काम करना असुविधाजनक है, इसलिए कामकाजी महिलाओं को समय-असमय इन नन्हें-मुन्नों को सुलाना पड़ता है। नन्हों को नींद शीघ्र आए, इसके लिए लोरियां भी गाई जाती हैं। अथ :

लोरी

निंदे राणिए आई जा।
राजे नू सुलाई जा।
लड्डू-पेड़े खुलाई जा।
दुध-मलाइयाँ पल्याई जा।
झग्गू-टोपू पन्ह्याई जा।
हखीं कज्जल बाही जा।
कंगणू-संलगणू पाई जा।
पालणे च झुटाई जा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंगण-बेह्ड़े फर्याई जा।
बाग-बगीचे घुमाई जा।
हाथी-घोड़े, पौण खटोले,
चंदे दी सैल कराई जा।

(गीत में निंदिया रानी से राजे बेटे को अपनी मीठी गोद में लेकर अनेकानेक उत्तम पदार्थ खिलाने, उत्तम वस्त्र पहनाने, उत्तम श्रृंगार करने, घर-आंगन बाग-बगीचे में घुमाने, हाथी-घोड़े की सवारी कराने, तथा उड़न खटोले पर बैठा कर चंदा-मामा के देश की सैर कराने का आग्रह है।)

हिमाचल प्रदेश को देव भूमि कहा जाता है। यहां स्थान-स्थान पर देवी-देवता के मंदिर हैं, स्थापनाएं हैं, जिनकी पूजा-अर्चना भी लोक जीवन का एक अंग है। इन देवी-देवताओं की स्तुति-रूपेण अनेक गीत गाए जाते हैं। अथ :

किला कांगड़ा काली धार,
मइया जी तैं वैकुण्ठ बणाया।
....

(ज्वाला मइया की भेंट-कांगड़ा)

बाबा त्रिलोकी नाथ

तरलोकी नाथ बाबा रे, बिखड़ा लागा तेरा देस।
ऊंची-ऊंची चढ़ाइयां वै, नीची-नीची उतराइयां वै।
खाणे नूं काठू ते भरेस। तरलोकीनाथ बाबा रे...................।
बोला तू ही बाबा ब्रह्मा रे, होर तू ही विष्णु बोलणा वै।
होर तू ही बोलणा महेस। तरलोकीनाथ बाबा रे... ....।
जवै-जवै भीड़ पौई, द्वारे तेरे जाई पौए,
काटी सभी जानी रै कलसे। तरलोकीनाथ बाबा रे........... ......।

बिखड़ा=कठिन। नूंको। काठू, भरेस=स्थानीय अन्न। जवै-जवै भीड़ पौई= जब-जब विपदा पड़ी। क्लेस=क्लेश।

(कुल्लू)

भेंट—भुईंणी देवी

हाय देवी म्हारी भुईंयणिए।
उचेयां पहाड़ां ओ बसदिए,
हाय देवी म्हारी भुईंयणिए।
घणे जंगलां बसदिए,
हाय देवी म्हारी भुईंयणिए,
छेलू बी देणा बोलै बकरू बी देणा,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लाल देणी मां धजां,
धजां देवी म्हारी भुईंयणिए।
मना री मेरे तू पूरी करेयां,
रात की देणी जागां,
जागां देवी म्हारी भुईंयणिए।

('भुईंणी' देवी की इस स्तुति में मनोरथ पूरा करने की प्रार्थना की गई है और फिर मां के चरणों में भेंट चढ़ाने, रतजगा देने की मनौती मानी गई है।)

धजां = ध्वज। रात की जागां = रतजगा।

(मंडी)

भट—मां नैणा देवी

कि जानो नैणा ओ देविए,
माता ओ मेरी बसी ओ कल्हूरा रे हां।
कि जानो सब कुल नदियां रे,
माता ओ थल्ले सतलुज वगदी रे हां।
कि जानो भौण ता तेरे रे,
माता ओ ए विसकमा छिड़या रे हां।
कि जानो भवण ता बणया रे,
माता ता वणदे चार मनारे हां।
कि जानो चानण चौकी रे,
माता ओ उप्पर सोयना गडुआ रे हां।
कि जानो जित पर वैठी रे,
माता ओ मेरी करे ओ स्नान रे हां।
कि जानो पांजो कपड़े रे,
माता ओ उप्पर जिरीओ संजोया रे हां।
कि जानो दूरों संगतीं रे,
माता ओ आइयां चरण तुम्हारे रे हां।
कि जानो पांजो पांडव रे,
माता ओ करदे जै जै कार रे हां।
कि जानो पांन सपारी रे,
माता उप्पर धजा-नरेल रे हां।

(मां नैणा देवी कहलूर में बसी है। मंदिर के नीचे से सतलुज बह रही है। विश्वकर्मा ने मां का भवन बनाया है। चंदन की चौकी, जो सोने से मढ़ी है, उस पर मां स्नान करती हैं। पांचों वस्त्र और ऊपर अन्य सामग्री रख कर दूर-दूर से यात्री मां के चरणों में आए हैं। पांचों पांडव पान-सुपारी-ध्वज़-नारियल भेंट चढ़ा रहे हैं और मां का जयकारा बोल रहे हैं।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बिसकमा=विश्वकर्मा। भौण=भवन। संगती=यात्री, भक्त। नरेल=नारियल।
(बिलासपुर)

बाबा बालकनाथ

मारी ताड़ी बैठा उजाड़ी, बाबा दुधाधारिया।
हत्थ कटोरा दुधे दा, तेरी माई मनावण आई,
ओ मैं वारी दुधाधारिया।
घर जायाँ माई आपणे, वारी असें लया बनवास,
ओ मैं वारी दुधाधारिया।
हत्थ कटोरा दहिएं दा, तेरी नार मनावण आई,
ओ मैं वारी दुधाधारिया।
घर जायां गोरी आपणे, वारी डाढे ने कलम वगाही।
ओ मैं वारी दुधाधारिया।
हत्थे लई फुल्लां दी करनी, तेरी भैण मनावण आई,
ओ मैं वारी दुधाधारिया।
घर चल्लो बीरा आपणे, साडे बीरा ना कोई,
ओ मैं वारी दुधाधारिया।
घर जायां भैणे आपणे, असीं लया बनवास,
ओ मैं वारी दुधाधारिया।

(बाबा बालकनाथ सुनसान में आसन जमा कर बैठ गए हैं। इन्हें मनाने के लिए, घर वापिस ले जाने के लिए, इनकी मां, पत्नी, बहन आती हैं, लेकिन सफल नहीं होती हैं। बाबा कहते हैं मैंने वनवास ले लिया है। तुम घर लौटो।)

दुधाधारिया=दूध पर निर्वाह करने वाला। करनी=कमंडल, करंडी, बास्केट।
(ऊना)

भेंट—मां रेणुका

तेरी सरणै सौबी ए आओ,
जै जै देवी माता रेणुका।
मना री पूरी, सौबी रे कौरो,
जै जै देवी माता रेणुका।
तेरीं मानता सौबी ए कौरो,
जै जै देवी माता रेणुका।
तेरी सुखना सौबी ए कौरो,
जै जै देवी माता रेणुका।
तेरे मिलणे रे सौबी री इच्छा,
जै-जै देवी माता रेणुका।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बलि बतेरे सौवी ए कौरो,
इसा देवी माता रेणुका।

(मां रेणुका की शरण में सभी पहुंचते हैं। मां रेणुका को सभी मनौतियां मानते हैं, मनोकामना पूरा होने पर सभी भेंट चढ़ाते हैं। मां को प्रसन्न करने के लिए बलि भी चढ़ाई जाती है। रेणुका मां, तेरे दर्शनों की अभिलाषा सभी को है, क्योंकि तू सभी के मन की पूरी करती है।)

मानता=मान्यता। सुखना=मनौती। बतेरे=बहुत।

(सिरमौर)

मंदिर गुरु घंटाल का गीत

तांदी गुशाड़े री शालाना ग्वाई, ओ,
ऊपरू गुंटाले री डोशाना हुई ओ।
त्रीजी लंबूरा ए केलंगा कोठी ओ,
त्रीजी लंबूरा डुण चुण कीती ओ।
नेगी हरिचंदा पूछूणे लागी ओ,
त्रीजी लंबूरा ए कीजी कामे आई ओ।
सोनू लंबूरे जुबाबा दित्ती ओ,
रंगू लंबूरा ऐ जुबाबा दित्ती ओ।
....

(कभी घुशाली कोठी व तंदी कोठी में फसल खराब हुई। इस बारे में पूछताछ की गई। हरिचंद नामक हाकिम को पूछा गया, नम्बरदारों को पूछा गया, तो उन्होंने गुरु घंटाल का प्रकोप बताया जिसके कारण फसल नष्ट हुई थी। तब लद्दाख के 'टशी तंफिल' नामक लामा को आमंत्रित किया गया, जिन्होंने गुरु घंटाल का मंदिर बनवाया। तब इन क्षेत्रों में फिर से फसल अच्छी आने लगी।)

तांदी-गुशाड़े=तंदी घुशाल (स्थान नाम)। लंबूरा=नम्बरदार। रंगू, सोनू=व्यक्ति नाम। शालाना=फसल। डोशाना=प्रकोप।

(लाहुल)

देव-स्तुति (गूंस्तोद्)

योंई गूंस्तोद तोन्तू जू वई-२॥
ठीरू नीमा ते, ठीरू नीमा ते-२॥
योंई गूं मामतू जू वई-२॥
योए न ए ला मा संङ देव-२॥
योंई दे नी चिला नेस्पई दे नी-२॥
चिला नेस्पई तम्बई ला देन्,
ज्रोद तम्बई लछेने ज्रोद॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

("नील गगन में सिंहासन पर, सूर्य देव विराजमान है। आकाश के नीचे, देवता, मंदिर में स्थित है। ·· ························· ।"

गीत धार्मिक पर्वों व अन्य खुशी के अवसर पर गाया जाता है।) (स्पीति)

पोर देवता गीथङ

दुगोल्यो दङ शौङ डेलयोश पुवारे-२ ॥
डेलयोश पुवारे, ठ लोबङ दुझोश-२ ॥
ठ लोवङ मानी, सानतान माटीङू लोबङ-२ ॥
सानतान माटिङू लोबङ, प्रकाश डुम्बरू लोवङ-२ ॥
प्रकाश डुम्बरू लोवङ, चु रूङतीचू लोबङ-२ ॥
रूङ तीचू लोवङ, प्याला चु लोवङ-२ ॥
सात पाङ चू लोवङ, बज़ीरू लोबङ-२ ॥
बज़ीरू लोबङ, शुम नीज़ा पोर मे-२ ॥
शुम नीज़ा पोर मे, दुमसा ची़ लानो-२ ॥
दुमसा ची़ लानो, लाङ पीरङ सारशीस लोशो-२ ॥
लाङ पीरङ सारशीस लोशो, जू जैंता मानी-२ ॥
जू जैता मानी, डुम्बोरी ज़ानयाते-२ ॥
शुम नीज़ा पोर मे, डुम्वोरी ज़ानया ज्ञोश-२ ॥
डुम्बोरी ज़ानया ज्ञोश, माजङ सान तङो-२ ॥
माजङ सानतङो, गीसीब गीसीब याशो-२ ॥
गीसीब गीसीब याशो, डुम्बोरिस न्तोतोश-२ ॥
डुम्बोरिस लोतोश, आङ शुमनीज़ा पोरज़ा ॥
आङ शुम नीज़ा पोरज़ा, जू माजङ लागे-२ ॥
जू माजङ लागे, ठु ली ज़ानया चो-२ ॥
ठु ली ज़ानया चो, कान पादु शुग मानी-२ ॥
शुम नीज़ा पोरमे लोतो, ज़ीलयो ज़ी डुम्बर-२ ।
ज़ीलयो ज़ी डुम्वोर, की पादु शु मानी-२ ॥
की पादु शु मानी, की ता सोतीङू डुम्बर-२ ॥
की ता सोतीङू डुम्बर, फोई ज़ानया चीस मानी-२ ॥
फोई ज़ानया चीस मानी, पीरङ ज़ो ले दा-२ ॥
पीरङ ज़ो ले दा, लाङ पीरङ सारशीस-२ ॥

(प्रस्तुत गीत 'पुवारी देवते का है। 'पोर' किन्नौर का एक गाँव हैं। वहाँ का देवता 'पुवारी' कहलाता है। ऐसा कहते हैं कि एक बार 'पोर' गाँव में एक ऐसी महामारी फैली, जिससे सब पशु मरने लगे। गाँव के लोगों में इसका बड़ा आतंक फैल गया। सब लोग इकट्ठे हो गए और महामारी को शांत करने के उपाय सोचने लगे। अंततः सब लोग 'पोर' देवता की शरण गए और उससे महामारी के अंत की प्रार्थना करने लगे। कहते हैं 'पोर' देवता की

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कृपा से वह महामारी लुप्त हो गई और गांव के पशुओं की रक्षा हुई। अब भी लोगों का यह विश्वास है कि पोर देवता सबकी रक्षा करता है।) (किन्नौर)

हाड़े-दुरगे

मूले मौलाइए केरे मलाय, हाड़े-दुरगे केरे मलाय ।।
देवे नानुआ तेरे बधाए, हाड़े-दुरगे तेरे बधाए।
गाणी दुरगा बाशदै लाए, हाड़े-दुरगे बाशदे लाए।।
तेरे दुरगे धूपे दनैह्‌रे, हाड़े-दुरगे धूपे दनैह्‌रे।
बांडी गाढ़ा आफी देओ पर्ज़ैरैं, हाड़े-दुरगे देओ पर्ज़ैरैं ।।
देवे नानुआ चांदिया ढोला, हाड़े-दुरगे चांदिया ढोला ।
चाले द्यौली लै दुनियौ लोगा, हाड़े-दुरगे दुनियौ लोगा ।।
लागा वोलदा शरमा बेली, हाड़े-दुरगे शरमा बेली ।
एकी घड़ी जाणा जुबड़ै खेली, हाड़े-दुरगे जुवड़ै खेली ।।
श्यामलाला लांदी कोलगै ज़ंज़ीरी, हाड़े-दुरगे कोलगै ज़ंज़ीरी ।
वांड नीणौ म्हारे पांजुईं फेरी, हाड़े-दूरगे पांजुईं फेरी ।।
चाले देशिऐ वटाड़िए वाटा, हाड़े-दुरगे बटाड़िए बाटा ।
लांदा आलमुआं बांडा दे फाटा, हाड़े-दुरगे बांडा दे फाटा ।।
तेरे दुरगे झालरू बाह्‌ण, हाड़े-दुरगे झालरू बाह्‌ण ।
चलौ देशिऐ द्यौली खे ज़ाणा, हाड़े दुरगे द्यौली खे-ज़ाणा ।।

(गीत में दुर्गा माता की पूजा हेतु दीवाली के अवसर पर के एक विशेष समारोह का वर्णन है। यह समारोह तीसरे वर्ष मनाया जाता है। इसमें घास का एक सांप बनाया जाता है, जिसको लेकर सम्मिलित जनसमूह, पहले मैदान में (अहाते में) ढाई चक्कर नाचते हुए काटता है, फिर एक चक्कर गांव का लगाया जाता है, फिर दोबारा ढाई चक्कर मैदान में नाच कर इस घास के सांप की पूजा की जाती है। तदोपरांत इस सांप का सिर काटा जाता है और ऊपर उछाला जाता है। इस सिर के लिए जन-समूह में छीना-झपटी होती है। यह सिर जिसके हाथ लगता है, वह इसे अपने मंदिर में ले जाकर रखता है।)

देवे नानुआ=छत्रमुख देवता। दनैह्‌रे=पूजा की थाली। वांडी=घास का सांप। बेली शरमा, आलमुआ=व्यक्ति नाम। जुबड़े=मैदान में। वटाड़ियै=वटाड़ी नामक गांव में।

(ऊपरी महासू-शिमला)

शिवस्तुति

सामी बसदे तां उचियां धारां, सिबा ओ मेरे सामियाँ।
सामी पींदे तां भंग धतूरा, सिबा ओ मेरे सामियां।
सामी चलदे तां नंदी सवारी, सिबा ओ मेरे सामियां।
सामी कन्ने चलदी तां गौरॉ बो राणी, सिबा ओ मेरे सामियां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सामी बसदे तो उच्चे कलासा, सिबा ओ मेरे सामियां।
सामी धन-धन तेरी ए माया, सिबा ओ मेरे सामियां।
अंगे भस्म बो सिबजी रमाया, सिबा ओ मेरे सामियां।

(चम्बा)

सामी=स्वामी

शौर्य गाथाएँ प्रदेश के बहुधा भागों में 'भारथ' नाम से गाई जाती है, जैसे 'गुग्गा राणां' की गाथा 'भारथ' के नाम से गाई जाती है। प्रदेश में ऐसी गाथाओं के अन्य स्थानीय नाम भी है, जैसे सिरमौर में ऐसी गाथाओं को 'हार', ऊपरी महासू में 'वार' 'डोडरा' क्वार में 'छोड़े' और बिलासपुर में 'झेड़े' कहा जाता है। अथ :

चरणु (बार)

माऊली तेरै सोमादासी बोला बाताई।
हौटियो गेऔ चौरणुआ, घौरा लै आई॥
देवरी धारे सियां हांडा, बौंची बारैली।
आगुए लांदो तोंगा का, चरणुआं टैली॥
जैहसू पारीम सुखै, चालदै हुऐ।
डेंवदा लागै डेंवदा रांडे, डैणीएं मुंहैं॥
हार्थ पाओ तोसतानों, दारुआ रो पीपौ।
सिहां सौंगे लौड़नो, कामाईंये लीखौ॥
जैसुऐ मैंहीरामे, मौंतारी चाणी।
विष्टा पुआरीआ रे, रैफला आणी।
घौणों गेऔ जाँगला बै, लौड़ना लै घाटौ।
सिहां सौंगै भाईयो, लागा बी ना वाटौ॥
ढीलौ तेरो तोस्तानो, ढीली कौमाणी॥
सिहां सौंगै लौड़नै रे, सार बी ना जाणी॥
सिहैं मारी बैरियै, ऐकी टाणूंणा।
सौगी साथी चौरणुआं, कैली का शूणा॥

('देवरी' धार में जब एक सिंह ने भेड़-बकरियां बड़ी संख्या में खानी आरम्भ कर दी, तो 'चरणु' ने सिंह को मारने की ठानी। वह वंदूक लेकर सिंह को मारने के लिए वन में गया, लेकिन सिंह की झपट में आकर स्वयं मर गया प्रस्तुत गीत 'चरणु' की इस गाथा का एक अंश है।)

माऊली=मां। सिया, सिंहां=सिंह। पारीम सुखै, मैहीरामे=प्रेम सुख, महीराम नामक व्यक्तियों ने। रैफला=राईफल, बन्दूक।

(ऊपरी महासू—शिमला)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरुल (सामा-दौलतू की हार)

थोआ फांटणा लाए रे तौवैं, टौका-टौका चाम्वे रा ।
ढोली लोई घड़ाए रे तौवैं, टौके टौके चाम्वे री ।
ए नाम्वेदो गुराई रे तौवैं, ढोलो री घड़ाई ओ ।
राज़ा नौहेणी शुणो तौवैं, टिकरी री नौम्वेदो ।
बौड़िया गुणो तौवैं, एतैं जुगा खौशिया ।
सोयणो रा सामा तौवैं, सिद्धू बौड़िया टिकरी ।
सामा वौड़िऐ दौलतू तौवैं, भाइए भाए ।
....

(प्रस्तुत 'हरुल़' सामा दौलतू व नाहन के राजा में सशस्त्र संघर्ष गाथा का अंश है। 'सोयण' गांव के ये दो भाई सामा व दौलतू वल-पराक्रम में, सामर्थ्य-समृद्धि में इतने बढ़ गए कि नाहन के राजा की आंखों में खटकने लगे । उनकी समृद्धि व लोकप्रियता राजा को अपने लिए एक चुनौती लगी । बस संघर्ष हो गया ।)

फांटणा=कूटना । टौका=टका । चाम्दे रा=ताम्बे का । ढोली=ढोलक । नाम्वेदो गुराई=वजाया । नौहे्णो=नाहन का । वौड़िया=बड़ा । खौशिया=राजपूत ।

(सिरमौर)

'छोड़े'

तेरी कोटूलै केरी साइवा,
सिम्वोरिया बुकैंलो छाओ ।
एती जिछाणियो मोदों कोरो,
केरी रौह्ती लौ घाओ ॥
....

राष्ट्र नायकों संबंधी भी अनेक लोक गीत प्रचलित हैं । अथ :

म्हातमा ओ लो गांधिया कत्थरे वीणा,
गुज़राते शहरो दा ज़नमो दीणा ।
चोऊ कनारे बोलो सूने रे दीवे,
ज़नमो दीणा गांधिया कृष्णे देवे ।
म्हातमा ओ लो गांधिया, आम'रो रसो,
सारे कीए दुनिया अपणे वसो ।
नाथूरामे गोडसो रा मौरोला भाई,
गांधी री छातिया दे गोलिया लाई ।
एक लाई गोलिया भौज़ लै रामो,
दूज़े लाई गोलिया, छोड़े पराणो ।
साथी तेरा नेहरूए, भरी होली आखी,
कांगरसो लीडरो, बादे झुरे लो ताखी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गोलिया लाई गांधी दे, भौज़ ला रामो,
थोड़े छूटे कौरने खी, देसो री कामो।
गांधी रो निऊं जुबटू ज़ोमना कनारे,
भीड़ लागे मांछू रे, रोह्यो न लारे।
गांधी रो निऊं जुबटू, ज़ोमना घाटो,
भीड़ लागे मांछू रे, मिलो ना बाटो।

(गीत में महात्मा गांधी के जन्म, उनके असामान्य व्यक्तित्व तथा उनकी हत्या, हत्या पर देश के नेताओं व जनता के अपार दुःख की चर्चा है।)

कत्थरे बीणा=कस्तूरा मृग की कस्तूरी-पोटली। जुबटू=अर्थी। मांछू=मनुष्य।

(ऊपरी महासू-शिमला)

ए गीया नैहरू लाला साह्‌ब भलिए।
नैहरू लाला जै हिंदा बोल भलिए।
ए गीया नैहरू लाला फौज भलिए।
पब्लिका जै हिंदा बोल भलिए।
आई गीया बड़ी नाल फौज भलिए।
बाबू जो जे हिंदा बोल भलिए।
भाई साह्‌वा जै हिंदा बोल भलिए।

(गीत में भ्रमणार्थ आए स्व० जवाहर लाल नेहरू के स्वागत की सरल अभिव्यक्ति है। "जवाहर लाल नेहरू आ गए हैं, इन्हें 'जय हिन्द' कहो। स्वागतार्थ एकत्र हुए अपार जनसमूह तथा साथ आए सभी व्यक्तियों को 'जय हिन्द' कहो।")

(पंगवाली)

देश रक्षा विषयक भी अनेक लोक गीत प्रचलित हैं। अथ :

फौज़ा वै जाणा फौज़ा वै ज़ाणा हे।
देशा रे जवानो लड़दे ज़ाणा हे।
जहाज़ न ज़ाणा गाड़ी ज़ाणा हे,
देशा रे.............................. ।
ट्रेनिंग केरदे रंगरूट ज़ाणा हे,
देशा रे.............................. ।
लदाख ज़ाणा, हद्दा पांदे वे जाणा हे,
देशा रे.............................. ।
पौढ़ी बोला लिखिऐ मेहनत केरनी हे,
देशा रे जवाना देश बचाणा हे।
देशा रे.............................. ।

(गीत में देश रक्षा हेतु सेना में भर्ती होने तथा पढ़-लिख कर परिश्रम करने का आवाहन है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पौढ़ी बोला लिखिए=पढ़-लिख कर । केरनी=करनी ।

(कुल्लू)

ठंडे नालुए रा पाणी भरना,
देसा पर आइयां विपता,
लो पैह्ले इना रा नबेड़ा करना ।
....

(गंगी का बोल)

देश-प्रदेश प्यार भी लोक गीतों का विषय रहता है । अथ :

देश प्यार का गीत

दे रिङ गी जग् ल टशी पे जग् यिन,
छङ म ल टशी दे लेग् जु जु—२ ।
दे रिङ गी जग् ल गङ ग दङ यमुना,
ङर मेद पे ब लव् सो मा योल पिन—२ ॥
दे रिङ गी जग् ल हिमालय री ना,
ङर मेद् पे गङ क्यिर थोद् कर गिङ पिन—२ ।
दे रिङ गी जग् ल हिमालयर नग् न,
चंदन ग्यी ड्री ज़ङ सो म क्ये पिन—२ ॥
दे रिङ गी जग् ल कश्मीर बम बुङ,
गुर कुम ग्यी मे तौग् सो म बर पिन—२ ।
दे रिङ गी जग् ल छो दङ ज़िङ बु रू,
ङर मेद् ते मे तौग् तौङ दन बर पिन—२ ॥
दे रिङ गी जग् ल म ज दङ जौल मो,
ङर म च़ प यी कुर चे़ चे़ पिन-२ ।
दे रिङ गी जग् ल गन दी दङ नेरूई,
ङर म ड्रु्ब प यी थुग् सेम सौ मा ड्रु्ब पिन—२ ।
दे रिङ गी जग् ल गन दी दङ नेरूई,
ङर म ड्रु्ब प यी थुग् सेम सौ मा ड्रु्ब पिन—२ ॥
रङ शौग् दङ गो स युल दोन ल तङ वई,
ड्रोङ खन छङ मे थुग् जे मौन् लम ड्रु्ब पिन—२ ॥
देरि ङ गी जग् ल ग्य गर ग्यी मी मङ,
मङ लुग् क्यी जुङ लम छेन पोर क्योद् पिन—२ ।
दे रिङ गी जग् ल सेर यिग् ल ड्री पे,
ङ तङ गी च ठ्रिम सो मा दन पिन —२ ॥

(आज का दिन समस्त देशवासियों के लिए मंगल दिन है । इस शुभ दिन पर सबको बधाई हो । आज के दिन गगा-यमुना में एक नई लहर उठी है । आज के दिन हिमालय में एक नया हिमगिरि दृष्टिगोचर हुआ है, जो ऐसा लगता है, जैसे हिमालय को पगड़ी बंधी हो । आज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के दिन हिमालय के वनों में नए-नए चंदन के पौधे उगे हैं। कश्मीर में आज केसर के नए-नए पौधे उगे हैं। हमारे तालों-झीलों में आज के दिन सहस्त्रों पंखुड़ियों वाले पद्म खिले हैं। आज के दिन वन में सुंदर आंख वाला पक्षी विशेष व मयुर ने भी नए-नए नृत्य किये हैं। आज के ही दिन देश के नेता महात्मा गांधी व नेहरू के विचार सिद्ध हो पाए थे। आज के ही दिन हमारे देश के अनेक स्वतंत्रता संग्रामियों का वलिदान सार्थक हुआ। आज भारत की जनता समाजवाद के मार्ग पर अग्रसर है। आज के ही दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा हमारा संविधान भी लागु हुआ है। आज से हम संविधान के अनुसार ही चलेंगे। गीत गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष में रचा गया है।)

(स्पीति)

औसो वाँक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।
तेरी शोभो के चींवटी चानणो केल्यो पलाशो,
चांदो जेया रोआ चमकी चोटी ऊपरे कैलाशो,
देशा हिमाचला रे, औसो बाँक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।
वानो, मोहरू, शिशमो, खोयरो, रहशो, देवदारो,
खानि लोहे लूणो पाथिरो री हिओं री भरी राइयो धारो,
देशा हिमाचला रे, औसो बांक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।
डूंगे-डूंगे नोदी नालो, वोडी-वोडी धारो,
भोले-भोले औसो आदमी, वांकी-वांकी औसो नारो,
देशा हिमाचला रे, औसो बांक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।
कामो टोह्‌ली रा फोरज़ो, सतो धर्मो री आशा,
रिशी मुनि री साधना, देवी देवते रा वासा,
देशा हिमाचला रे, औसो बांक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।
धानो कुकड़ी री फसलो, कौणको चावलो रा खाजा,
पहाड़ी नाटी म्हारे गाणे के ढोलकी खांजरी रा बाजा,
देशा हिमाचला रे, औसो बांक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।
बामणे खे लोइए सूथणो, ओढ़ने के खारचे गलीचे,
खेची उमदी आलु री उमदे, सेवा रे लाओ बगीचे,
देशा हिमाचला रे, औसो बांक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।
भैड़ो बाकरी, मोहशी, गौ पालणो कोरना राजो,
देशा बांका औसो बांक्या, सारे भारतो रात ताजो,
देशो हिमाचला रे, औसो बांक्या मेर्‌या तू बांका देशा हिमाचला रे।

("मेरा हिमाचल बहुत सुंदर है। हिमाच्छादित गगनचुम्बी पर्वत मालाएँ, बान, मोहरू, शीशम, खैर, देवदार, चीड़, कायल, रई-तोष के हरे-ऊंचे पेड़, गहरे अनेक नदी-नाले, तथा भोले-भाले सुन्दर नर-नारी इसका श्रृंगार है, संपदा है। देवस्थल हिमाचल ऋषि मुनियों की तपो-भूमि तथा कर्तव्य, सत्यनिष्ठा व धर्म की आशा है। बहुमुखी खेती, फलोद्यान, पशु-पालन, तथा गीत-नृत्य हिमाचल के जन जीवन का अभिन्न अंग है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हिओं=हिम। बोड़ो-बोड़ो=बड़ी-बड़ी। बामणे खे=पहनने के लिए। खेची=खेती। मांह्‌शी=भैंसें। कामो-टोह्‌ली=काम-टहल।

(सिरमौर)

इसके अतिरिक्त नायक-नायिका-गीत, घटना-गीत, कथा-गीत, प्रगति तथा विकास आदि विषयक अनेक गीत प्रचलित हैं। अथ :

सीकरिए धारे

ओ मेरिए सीकरिए ओ धारे,
धारे जित्ते मरुआ (मंडुआ) फुल्ले ओ, फुल्ले ओ।
ओ मेरिए नगरा दीयो कुड़ियो,
चिड़ियो फुल चुगणे जो ईए ओ।
ओ मेरिए धारा दीए तरेली,
तरेली मेरे मोचड़ू ओ सीजे ओ।
भलिए सीजण दे पुराणे,
नवें तिज्जो होर ओ लेई, लेई देला ओ।

(" 'सीकरी' धार पर मरुआ फूला है। नगर की कन्याओ चलो फूल चुनने के लिए धार पर चलें। ओह्‌, धार पर की ओस से मेरे जूते भीग गए हैं। कोई बात नहीं, भीग गए हैं, तो भीगने दे। तुम्हें नए और ले दूंगा।")

तरेली=ओस। मोचड़ू=महिलाओं का जूता विशेष। सीजणा दे=भीगने दे। लेई देला ओ=ले दूंगा।"

(चम्बा)

सुभानड़ ए

म्हारा ओ सुभानड़ुए, ना रूसे ओ प्यारिए।
जिसे नारे री चाला छैल, ना रूसे ओ प्यारिए।
जिसे नारे री शौंका छैल, ना रूसे ओ प्यारिए।
जिसे नारे री कजला छैल, ना रूसे ओ प्यारिए।
जिसे नारे री नखरा छैल, ना रूसे ओ प्यारिए।
जिसे नारे री यारा छैल, ना रूसे ओ प्यारिए।
जिसे नारे री नाटा छैल, ना रूसे ओ त्यारिए।
जिसे नारे री कंगणा छैल, ना रूसे ओ प्यारिए।
जिसे नारे री गाणा छैल, ना रूसे ओ प्यारिए।

(गीत में 'सुभानड़ु' नामक महिला की प्रशंसा है। "मेरी सुभानड़ुए, तू रूठ मत। तेरी चाल, शौक, कजरारी आंखें, नखरा, प्रेमी, नृत्य, गीत, कंगन सभी कुछ सुंदर हैं।

ना रूसे=मत रूठ। जिसे नारे री=जिस महिला की।)

(पांगी)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

काज़ली होरे कौंदिए

शीलो शिलाओणी लाए छेड़ुवे पींह्गो रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
सौरी रा सुंदरो मांगो टेली रा सिघो रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
भीती पाछे मौदना लोके ज़ाणू म्याणो रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
लाणा औसो मुजरा ओरे हिम्मतू क्यालो रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
सौरी रा सुंदरो जपो भौइती खोटो रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
तेरे नी औणे गाने पातले होगे रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
ओरे बोले औड़े पोरा बीकमा जोटो रे, काजली होरे कौंदिए ।
बातो लाए सायमा शुणो सुंदरा होरो रे काज़ली होरे कौंदिए ।
तेरे चन्हारगो सूने-चांदी रे मोरो रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
मोरो नी राजेया तेरी नौइणी दी आणे रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
टाटड़े छोह्टू तोएं खेलणे के चाणे रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
तू चाली शाओरे, हामो लागणा बुरा रे, काज़ली होरे कौंदिए ।
छोड़णा मुलको, देणा गलो दा छुरा रे, काज़ली होरे कौंदिए ।

(गीत में 'काज़लो' व 'कौंदी' नामक दो महिलाओ के प्रणय की चर्चा है।)

शीलो=जहां धूप नहीं आती। छेड़ुवे=बच्चे। टाटड़=छोटे। शिलाओणी, सौरी, टेली, चन्हारग=गांवों के नाम। हिम्मतु, सुंदर, सिंघ, मौदना, सायमा=व्यक्ति नाम। भीती=दीवार। भौइती=बहुत। गाने=मोटे। म्याणो=व्राघ, क्यालो=बुलाओ।

(सिरमौर)

बाबुआ जयरामा

बोलो बाजी कोरी गे बाजी गो, बाजो गोयरा न बाणा रे,
बाबुआ जयरामा, गोयरा बाणा रे ।
बीशू गो लागा ठैण्होगो रा, पड़ो बिशू खे ना जाणा,
बाबुआ जयरामा, बीशू खे जाणा ।
बोलो बुढ़ेया बोलूगे बापुआ, भौरी बुगो दी न शौरी,
बाबुआ जयरामा, बुगो दी न शौरी ।
बीशू खे जाणी ठैण्होगो रे, तेते खेलना ना पौड़ी,
बाबुआ जयरामा, खेलणा न पौंड़ी ।
गाओ होली बोलूगे थेओटी, होला दामटा कूजे,
बाबुआ जयरामा, होला दामटा कूजे ।
ठारो बीशो बोलो कढारणू, गोई जुबड़ी पुज्जे,
बाबुआ जयरामा गोई जुबड़ी पुज्जे ।

(विशेष कलात्मक वाद्य ध्वनि सुनाई पड़ रही है, जो 'विशु' मेले के समारम्भ की सूचना दे रही है। 'ठण्होग' गाँव का विशु-मेला शुरू हो गया है, वहाँ तो जाना ही पड़ेगा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीत का नायक 'बाबू जयराम' अपने बूढ़े बापू से कहता है कि तरकश विशेष में तीर विशेष भर दो, क्योंकि मेले में 'ठोडा' (खेल विशेष) खेलना है।)

(सिरमौर-ऊपरी महासू)

कांगड़ी गीत

इस ग्रांएं देया लम्बरा हो, इना छोरुआं जो लै समझाई,
ओ इना छोरुआं जो लै समझाई, कि बाटा जांदे सीटी मारदे।
पाणिए जो असां आणना घड़ोलू—२।
कींया करी नालू टपणा ओ—२।
कि बाटा जांदे सीटी मारदे।
घाए जो जाणा असां, आणना गडका—२।
तू ही दस कीयां लंघणा ओ—२
कि बाटा जांदे सीटी मारदे।
डंगर चारण असां खेतां जो जाणा—२
लुकी-छिपी कितणा-क चलणा ओ—२
कि बाटा जांदे सीटी मारदे।

(गीत में गाँव की युवतियाँ गाँव के मुखिया से अनुरोध करती हैं कि वह उन मनचले युवकों को समझा ले, जो राह चलते छेड़-छाड़ करते हैं।)

छोरू=मनचले युवक। घाए जो=घास के लिए। आणना=लाना। नालू=जल स्रोत। दस=बता। डंगर=पशु।

(कांगड़ी)

घुशाल चंद ठाकरा

तौबे भी बोलूलो घुशाल चंद ठाकरा,
झूले री ढीलुई तारा डैह् लो।
एंडे नईं ती मौरना, घुशाल चंद ठाकरा,
झूले री ढीलुई तारा डै लो।
की लिखू, तेसे बिध-मातै,
तेरे माथे न ए धियाड़ा डै लो। ए धियाड़ा घुशाल चंद ठाकरा,
तेरे माथे न ए धियाड़ा डै लो।
आपू नी पुजू घौरा तू,
घौरा पुजू फियाड़ा डै लो। पुजू फियाड़ा घुशाल चंद ठाकरा,
घौरा पुजू फियाड़ा डै लो।
एंडे नईं.. ।।
आमा बे भेजी, चिट्ठी-पतरा,
भाई बे भेजणी तारा डै लो। भेजणी तारा घुशाल चंद ठाकरा,
भाई बे भेजणी तारा डै लो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जान नाठी घुशाले रे खांदेरी,
जेंडी भीड़ुई धारा डै लो ।
भीड़ुई धारा घुशाल चंद ठाकरा,
जेंडी भीड़ुई धारा डै लो ।
एंडे नई·· ।

(गीत में पी० डब्ल्यु० डी० कर्मचारी घुशाल चंद ठाकुर के झूला पुल से गिर कर मरने और इस दुर्घटना का दुखद समाचार पाकर परिवार के शोकग्रस्त होने की चर्चा है ।)

एंडे=वैसे । नईं ती मौरना=नहीं मरना था । ढीलुई=ढीली हो गईं । फियाड़ा=संदेश, समाचार । खां दे री =बेचारे की । जेंडी =जैसे । भीड़ुई=टकराई हो ।)

(कुल्लू)

रेमा

रेमा गोली गो होना रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा दुगोल्यो दङ शौङ रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा माइदानु सांगला रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा माजङ सानतङो रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा माजङ सानतङचो रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा शुम कुलडङ कायङ रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।
रेमा थङ कोचङ ख्यामा रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा ई तेगीयू कोठी रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा दो कोठीयू कोमो रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा शुमलयो डुम्बरो रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा येन कोचङ ख्यामा रे ।
रेमार राङ कुटा रे ।।
रेमा ई तेगीयू लाबरङ रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रमा कुमो ख्यामा रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा ई तेगीयू दुङ्गयूर रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।
रेमा ह्ायसी बोनया ज्ञोश रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा वोनयाम बोनया ज्ञोश रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा धौसाड डुब करीगर रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा थुचा ला शौङ रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।
रेमा औटङ दाम गीयू छाङ्गा रे ।
रेमा राङ की कुटा रे ।।

(आइए आपको सांगला ले चलें । किन्नर प्रदेश में सांगला घाटी बहुत संपन्न है और प्रकृति की कृपा से अत्यन्त सुंदर भी । आप जब सांगला गांव में पहुंच जाएँगे, तो वहाँ आपको एक विशाल मंदिर और एक बौद्ध मठ के दर्शन होंगे । बौद्ध मठ के दो भाग हैं। एक भाग में विशाल 'दुङ्ज़ूर' (गोल, ड्रमनुआ चक्र, जिस पर बौद्ध शिक्षा खुदी हुई होती है) है । यह तांबा, पीतल, सोना, चांदी आदि पंच धातु का बना हुआ है । इसके अंदर भोजपत्र पर लिखे हुए मंत्र मढ़ दिए गए हैं । इसे मठों के बीच इस प्रकार टिकाया गया है कि एक जंजीर के हल्के से झटके के साथ यह घूमता रहता है । मठ के दूसरे भाग में बौद्ध ग्रंथ और विशाल-मूर्तियां हैं । इस बौद्ध-मठ में, 'दुङ्ज़ूर' को सांगला गांव के ही एक कारीगर ने बनाया है । यह 'दुङ्ज़ूर' देखने योग्य है । इसकी परिक्रमा से सब पाप नष्ट हो जाते हैं ।)

(किन्नौर)

स्पीतियन गीत

क यी रङ सेम ठ्र मो,
फम सुम रिग पे न ङ ।—२ ।
दग् चग् रिग् पे लम ल,
क्युलिङ यी यतो चु पो —२ ।
छल छो ले मङ न,
छे छुङ ज व योल योङ । —२
ज व ङोन ल म जेद् ले,
अम लेन ज व छोल योङ ।—२
ञे मो जिद् ल त न,
थ म रङ स्रोग् योल योङ ।—२
अम छुङ मीछे चिग् ल,
न चोग् चम ग्यी अन सोङ ।—२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर सुम मर वई सेर् छेन,
फु सुम फु रू जुग् योद् ।—२
बु मोइ लुई सु म क्ये,
मोन लम सेम ल थोब शिग् ।—२
दग् च सेम ल मौन न,
मोन लम लुई ल जुग् योङ ।—२
ज छौग् रिंग् पे न ङ,
वो लिङ य तो दे जुङ ।—२
ज छोग् सेम ल जुग न,
सेम ल ओ ङर दन जुङ ।- २
अ यी तन थौग् रिग् प,
यङ दग् ज़ीग् पे सङ ग्ये ।—२
सन ग्ये गोन वोइ ञम लेन,
रङ लुग् खोर युग् मी दुग् ।

(गीत में विद्या प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा वर्णित है ।)

"मन-बुद्धि मेरी अवश्य छोटी है, लेकिन मैं ब्रह्माण्ड की सारी विद्याएँ सीखूंगा । विद्या प्राप्ति की अभिलाषा वाले हम 'क्युलिंग' गाँव के दस साथी हैं। कार्य, चाहे छोटे हों चाहे वड़े एक-एक करके किए जाने चाहिए, एक साथ नहीं । इनकी ओर (विवाहित महिलाओं की ओर) मत देखो, क्योंकि इसमें प्राणों का भय है । हमें इस जीवन मे सही ज्ञान के शास्त्र का अध्ययन करना चाहिए । जिस प्रकार अनेकानेक फूल प्राप्त करने के लिए हमें ऊँचे-ऊँचेपर्वतों पर जाना पड़ता है, उसी प्रकार हमें शिक्षा ग्रहण में कई प्रकार की कठिनाइयाँ झेलनी पड़ेंगी । हमें भगवान् से यह प्रार्थना भी करनी चाहिए कि इस जन्म में महिलाएँ हैं, तो अगले जन्म में हम पुरुष वनें । अगर इस जन्म में पुरुष जन्म प्राप्ति की प्रार्थना की जाएगी, तो यह अभिप्राय सिद्ध होगा । जब हम पुरुष रूप में जन्म लेंगी, तो विद्याध्ययन से हम गौतम बुद्ध जैसे महान् व्यक्तिभी बन सकती हैं । इसके लिए हमें उनके उपदेश के अनुसार कार्य करना चाहिए और उनके बताए मार्ग पर चलना चाहिए ।" (स्पीति)

दलाई लामा का गीत

सारी लोका जाणा ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
क्या ओ चीजा देणा ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
हीरा-मोती देणा ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
सोना-चाँदी देणा ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
आपणे देशा छोड़ा ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
सारी तिब्बती रोई ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
पोलीसा रा फेरा ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
रेला-मोटरा सेला ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।
माने-माने खुशी ओ, दलाई लामा दरशण ओ ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(सब लोगदलाई लामा के दर्शन करने जाएँगे। दलाई लामा को हीरे-मोती, सोना-चाँदी भेंट चढ़ाएंगे। दलाई लामा को अपना देश छोड़ना पड़ा, तो सारी तिब्बत रो पड़ी। तिब्बत में पुलिस (फौज) घूमने लगी।)

सेला = सैर। माने-माने = मन ही मन।

(लाहुल)

झाम कुलो-झाम कुलो

शील्ही सेरे ए चीणी बोई, झाम कुलो-झाम कुलो।
बोई चीणी जामनी आए, झाम कुलो-झाम कुलो।
जामे चीणी गोडनी आए, झाम कुलो-झाम कुलो।
गोडे चीणी पाकनी आए, झाम कुलो-झाम कुलो।
पाके चीणी चड़ुए खाए, झाम कुलो-झाम कुलो।
तू जा बुढ़ा जगोवाला, झाम कुलो-झाम कुलो।
बुढा ने डेय बुढी ने भाज, झाम कुलो-झाम कुलो।
बुढे बुढी का झगड़ा होई, झाम कुलो-झाम कुलो।
बुढिए बुढे ही चिम्मटे लोई, झाम कुलो-झाम कुलो।
चोटी शरी लाई फिंजेटी केरी, झाम कुलो-झाम कुलो।
चोटी वे फिज्या डंठडी तेरी, झाम कुलो-झाम कुलो।
तंईये खाईला चीणी मेरी, झाम कुलो-झाम कुलो।

(गीत में चीणी (चीना-स्थानीय वारीक अनाज) के बोने, उगने, गोड़ने, पकने, तथा पकने पर चिड़ियों द्वारा खाए जाने, बुढ़िया का बुढ़े को राखी के लिए भेजने, बुढ़े के न जाने, बुढ़िया-बुढ़े का झगड़ा होने और चिड़ियों को सजा देने की चर्चा है।)

शील्ही सेरे ए = जिधर धूप नहीं आती है, ऐसे खेत में।

(ऊपरी महासू-शिमला)

चुपुती

पुरुष : दात्रिया की सालाका, ।—२
चाऊ शूदो दीशेली,
तोपी मूकै ना लाका ॥
महिला : दूधै को गिलासा ।—२
चुपुती लौंदा रो,
हाथो दै मिलासा ॥
पुरुष : धौंवंल्यां गाईं को कोईरा ।—२
तेरे न्यूते कौरो,
हुंदे घौरे वोइरा ॥
महिला : सूली पेको दोमा ।—२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तेरे न्यूते खाई,
मुइँ आधी रोटी कोमा ।।

(इस प्रणय प्रश्नोत्तरी में प्रेमी, प्रेयसी की प्रशंसा करते हुए कहता है कि चाहो तो मेरी दृष्टि से देखो, तुम कितनी अच्छी हो । प्रेयसी इस बात पर हाथ मिलाने को कहती है । प्रेमी कहता है कि तेरे लिए मैंने अच्छे घर में शत्रुता मोल ले ली । प्रेयसी कहती है कि तेरे लिए मैंने भी आधी रोटी कम खाई ।)

(डोडरा क्वार)

मांह्‌गी रा पेऊका

मांह्‌गी रा पेऊका—२ ।
मांहंगी रा पेवका, उच्ची धारो रे गांवें । मांह्‌गी रा............।
मांह्‌गिए दाड़िए बड़े घरो रीए धीए,
पाखले पावणे लो, पाखले पावणे,
आपी सौंगे तोएं नीएं । मांह्‌गी रा............।
जाई लैणा मेले खे, कशे घोड़े री लगामो,
होरी खे बंदगी लो, होरी खे बंदगी,
म्हारे खे हो सलामो । मांह्‌गी रा..........।

(गीत में मांह्‌गी' नामक महिला के प्रणय की चर्चा है ।)

पेऊका, पेवका = पीहर । पाखले = अपरिचित । पावणे = अतिथि । आपी सौंगे तोएं नीएं = तुम अपने साथ ले गईं । कशे = कसना ।

(लोअर महासू-शिमला)

चीना-मीना चानणिए राती,
ओ तारे भरीरी पुराती—२ ।
इक फुल मिंजो बी देयाँ—२
बीरे दीया पगड़िया लाणा—२ ।
अज मेरी सोरमा ग्वाची—२ ।
भाइए टोली के ल्यांदी—२ ।
भाबो खुण्डलिया बन्ही—२ ।
प्यूली-प्यूली सरूंआं फुल्ली—२ ।

(गीत में वसंत के आगमन पर मन के उल्लास का चित्रण है ।)

चीना-मीना = झिल मिल । ग्वाची = खो गई । टोली = ढूंढी । प्यूली = पीली । सरूंआं = सरसो ।

(मंडी)

'गिध्दा' जिसे' भड़ूआं' भी कहा जाता है बिलासपुर, लोअर महासू, सिरमौर, मंडी, कांगड़ा आदि क्षेत्रों में प्रसन्नता के अवसर का प्रसिद्ध नृत्य-गीत है । कुछ प्रकार:—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गिध्दा

गल्लां लाई लो मेरे साजना,
असां केह्ड़े रोज मिलणा ।
तेरे-तेरे खातर पाणी भराया—२
पाणी पी लो मेरे साजना । असां केह्ड़े............।
तेरे-तेरे खातर खाणा बणाया,—२
खाणा खाई लौ मेरे साजना । असां केह्ड़े... .... ।
चुन-चुन कलियां मैं सेज बणाई—२,
सेजा सोई लौ मेरे साजना । असां केह्ड़े..............।
चुन-चुन फुल्ल मैं हार परोया—२,
हार पैंह्नी लौ मेरे साजना । असां केह्ड़े..................।

(हम कहां रोज मिलेंगे। इसलिए प्रिय, मुझसे बातें कर लो और जो कुछ सेवार्थं मुझसे बन पाया है, उसे स्वीकार करो।)

(बिलासपुर)

गिध्दा

तू वे जानी मेरे गलेरा हार।
तेरी-तेरी खातर खाणा बणाया—२,
खाई के खलाई के तू लंघी जाणा पार । तू वे जानी............।
सोने की गड़बी, गंगा जल पानी,
पी के पलाई के तू लंघी जाणा पार । तू वे जानी............।
चुन-चुन कलियां, मैं सेज बछाई,
सई के सुलाई कै तू लंघी जाणा पार। तू वे जानी .... ।

(तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो। तुम्हारे लिए स्वादिष्ट भोजन मैंने तैयार किया है, शुद्ध-शीतल जल मंगवाया है, फूलों की सेज बिछाई है। इनका उपभोग कर चले जाना।)

(लोअर महासू)

सिरमौरी गिद्धा

दुनिए रा बेई मान, दिलडू ना लाणा रे।
फुल्ली करो फुलटू, डाले फूलो केला रे,
ऊँदे जाणा राजगढ़ो खे, तेती देखणा मेला रे।
फुल्ली करो फुलटू, डाले फूलो तूणी रे,
तू तो चाला घरा खे, मेरी बातो ना शूणी रे ।
फुल्ली करो फुलटू, डाले फूलो धतूरा रे,
तू तो चाला घरा खे, हमें लागणा बुरा रे।

(प्रिय, चलो नीचे राजगढ़ चल कर मेला देखें। लेकिन तुम तो मेरी बात को सुनी-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनसुनी करके घर की ओर जा रहे हो। यह मुझे बहुत बुरा लगेगा। तब तो मैंने तुमसे दिल लगा कर भूल की।)

लोअर महासू-बिलासपुर का प्रसिद्ध प्रणय प्रश्नोन्तरी गायन प्रकार है 'गंगी' अथ:

गंगी

चिट्टे चादरुए लाल किंगरी,
तूह कन्ने मिली बो लैणा,
चाहे चली जाए मेरी जिंदड़ी।
हरी डालिए तू हिल्या बे कर्‌या,
इतणा परेम छोह्‌रुआ,
राती सुफने च मिल्या बे कर्‌यां।
हरी सरुआं रा साग लगीरा,
कट्टी के कलेजा देखी लै,
तेरी ममता रा दाग लगीरा।
ठंडे नालुए रा पाणी भरना,
तू ता बेइमान छोरुआ,
कीयां तेरा लो तवार करना।

(इस प्रणयं प्रशेनोत्तरी में प्रेमी, प्रेयसी को कहता है कि तुझसे मिलना अवश्य है, चाहे जान चली जाए। प्रेयसी उत्तर देती है कि यदि ऐसा ही प्रेम है, तो साक्षात न सही स्वप्न में तो मिलन हो ही सकता है। प्रेमी कहता है—मेरे प्रेम का उपहास मत कर। चाहे कलेजा काट कर देख ले। वहां भी तुझे तेरे प्रेम का चिन्ह अंकित मिलेगा। प्रेयसी कहती है—तेरा भरोसा कोई कैसे करे? तू बेईमान है।)

संगीत पक्ष

स्वर-लय संरचना—न्यूनतम में अधिकतम का अद्‌भुत गुण, हिमाचल प्रदेश के लोक-गीतों की अद्वितीय विशेषता है। अवसर विशेष पर गाए जाने वाले तथा अर्वाचीन कुछ लोक गीतों को छोड़ कर, हिमाचल के लोक गीतों की स्वर-लय संरचना अत्यन्त सरल है। इतनी सरल कि बच्चे भी एक ही दो बार में गीत को सुन कर गीत गुनगुनाने लगते हैं। स्वर संरचना की सरलता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि अधिकतर लोक गीत एक छोटी सी धुन में गा दिए जाते हैं। अर्थात शास्त्रीय गीत स्वर संरचना की दृष्टि से हिमाचल के अधिकतर लोकगीतों में 'अंतरा' नहीं होता, केवल स्थायी ही होती है। यह बात किन्नर, लाहुल स्पीति, पांगी, भरमौर, ऊपरी महासू, ऊपरी सिरमौर, कांगड़ा और मंडी, कुल्लू के कुछ ऊंचे इलाकों के गीत संगीत के लिए तो शत-प्रतिशत सही है। शेष प्रदेश में भी कुछ विशेष गीत प्रकारों, कुछ प्राचीन तथा कुछ अर्वाचीन गीतों को छोड़ कर गीत संगीत में 'स्थाई' ही दृष्टिगोचर होती है। इन गीतों की लय संरचना भी त्रिमात्रिक सरल लय-विभागीय होती है। वास्तव में लोक-मानस की अनुभूति की गीत रूपेण अभिव्यक्ति में स्वर-लय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की अपेक्षा शब्दों और इससे भी अधिक सहज विषय वर्णन का महत्व रहता है। लोक गीत रचयिता को इस बात की विशेष चिंता नहीं होती कि विषय वर्णन शब्द सौंदर्य परिपूर्ण हो। हां, वियष-वर्णन सहज निभ रहा हो, उसके लिए इतना पर्याप्त है। अपने इस सरल विषय वर्णन के लिए फिर लोक गीत रचयिता सरल सी स्वर लय संरचना कर लेता है। वल्कि लय की आवश्यकता भी उसे तब पड़ती है; जब लोकगीत को सामूहिक रूप में अथवा नृत्य के साथ गाया जाना हो। नहीं तो अकेले-दुकेले गाने के लिए तो उसे लय की आवश्यकता भी प्राय: नहीं रहती। बस, वह सरल-सी स्वर संरचना से ही काम चला लेता है। लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि लोकगीतों की शब्द-स्वर संरचना किसी भी प्रकार से नीरस, असुंदर अथवा शिथिल होती है वल्कि कई वार तो लोकगीतों में ऐसी उक्तियां, ऐसी उपमाएं भी होती हैं, जिन्हें सुनकर प्रकाण्ड पंड़ित भी स्तम्भित रह जाएं। रही स्वर-संरचना की वात तो इसके लिए इतना ही कह देना पर्याप्त है कि लोक-गीत की स्वर संरचना सरल अवश्य होती है, लेकिन होती है पूर्णतया भाषानुकूल मन को छूने वाली, पूर्ण रूपेण प्रभावोत्पादक, अत्यन्त मधुर। कदाचित लोकगीतों की स्वर-संरचना इतनी उपयुक्त, इतनी प्रभावोत्पादक इसलिए होती है, क्योंकि यह मन से जन्मती है, पूर्णतया स्वाभाविक होती है।

राग, स्वर-संरचना विवेचन तथा स्वर लिपि

हिमाचल के लोकगीतों की स्वर-संरचना, प्राय: औड़व है और विस्तार प्राय: एक मप्तकीय। अधिकतर लोकगीत पांच स्वरों में निवद्ध मिलते हैं और मध्यसप्तक में ही सीमित होते है। वल्कि कुछेक गीत तो चार स्वरों में भी निवद्ध मिलते हैं। कुछेक गीतों की स्वर-संरचना षाडव भी है। संपूर्ण स्वर-संरचना नगण्य प्राय है। स्वर-संरचना विस्तार द्विसप्तकीय भी है और कहीं-कहीं तीसरा सप्तक भी छुआ हुआ है।

राग, स्वर व जाति की दृष्टि से प्राय: समान सी ये सरल स्वर-संरचनाएं वास्तव में विविध है, एक दूसरी से भिन्न हैं, अपनी एक अलग विशेषता लिए हुए हैं। स्वर विशेष पर ठहराव, ठहराव का समय, न्यास, स्वर संगति, मींड आदि प्रयोग, इन स्वर संरचनाओं को एक दूसरी से अलग रखते हैं, एक अलग माधुर्य प्रदान करते हैं।

स्वर संरचनाओं का न्यास स्वर प्राय: मध्य सप्तकीय. मध्यम है, या फिर मध्य षड़ज। स्वर-संरचनाएं, गीत के भाव तथा अवसर व समय की अपेक्षा को पूर्णतया निभाती हैं।

किन्नौर तथा स्पीति के गीतों की स्वर-संरचनाएं अधिकतर दूसरे सप्तक तक पहुचने वाली हैं। अधिकतर स्वर-संरचना विस्तार मध्य-तार अथवा मध्य मंद्र है। कोई-कोई स्वर संरचना तीसरा सप्तक भी छूती है। इन क्षेत्रों के गीतों की स्वर-संरचना में एक अद्भुत विशेषता, जो विशेषतया किन्नर गीतों की स्वर-संरचनाओं में सुनने को मिलती है—वह है-मध्य मध्यम-मंद्र धैवत, मध्य षड़ज-मंद्र धैवत, मध्य रिषभ-मंद्र धैवत, तथा मध्य षड़ज-मंद्र पंचम आदि युगल-स्वर न्यास। सरल, स्वाभाविक व मधुर स्वर-संरचना में इस न्यास की रंजकता अवर्णनीय है।

किन्नौर तथा स्पीति के गीतों की स्वर-संरचनाओं में स्थूल साम्यता तो है, लेकिन संरचनाओं की शैली, चलन, इनमें स्वर प्रयोग आदि में पर्याप्त भिन्नता है। स्पीति के अधिकतर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गीतों की स्वर-संरचनाओं में एक विशेष चंचलता रहती है, जो किन्नरी अधिकतर गीतों की स्वर-संरचनाओं में प्राय: नहीं मिलती। स्पीति के साथ लगते किन्नरी क्षेत्रों के गीतों की स्वर-संरचनाओं में वह शैली, वह चंचलता अवश्य सुनाई पड़ती है।

लाहुल, पाँगी के गीतों की स्वर-संरचनाओं में पर्याप्त साम्य है। स्वर-संरचना शैली, स्वर-प्रयोग, चलन, प्राय: एक जैसा है। स्वर-संरचनाएं प्राय: ओड़व या इससे भी कम स्वरों की है तथा इनका विस्तार प्राय: मध्य सप्तकीय है।

कुल्लू के गीतों की स्वर-संरचना भी प्राय: औड़व है, एक सप्तकीय है, और सरल है। स्वर-संरचनाओं का विस्तार प्राय: मध्य सप्तक में है, लेकिन कुछेक स्वर संरचनाएं, दूसरे सप्तक में भी पहुंची हैं। कुछेक प्राचीन विशेष-विषयक गीतों की स्वर-संरचना अवश्य टेड़ी है। कुछेक गीतों में स्वर-संरचना के शास्त्र सम्मत दोनों भाग, स्थाई व अंतरा भी सुनने को मिलते हैं। प्राय: मध्य मध्यम, मध्य षडज, मध्य रिषभ, स्वर संरचनाओं के न्यास स्वर हैं। स्वर-संरचनाओं की प्रकृति प्राय: चंचल नहीं है। कुल्लू नगर के विवाह आदि विशेष अवसरीय गीतों की स्वर-संरचनाएं शैली, स्वर प्रयोग आदि की दृष्टि से कांगड़ा के गीतों जैसी हैं। बल्कि कहना चाहिए कि इन गीतों की स्वर-संरचनाएं लगभग वही हैं।

ऊपरी महासू तथा सिरमौर के ऊंचे क्षेत्रों की स्वर-संरचनाएं भी प्राय: औड़व हैं और मध्य सप्तक तक सीमित हैं। कुछेक संरचनाएं तो चार स्वरों की भी हैं। अर्वाचीन कतिपय स्वर-संरचनाओं को छोड़, शेष स्वर-संरचनाएं सरल हैं। ऊपरी महासू के कुछेक गीतों की स्वर-संरचनाओं पर कुल्लूई तथा सिरमौर के ऊंचे क्षेत्रों की स्वर-संरचनाओं पर महासूई स्वर-संरचनाओं का प्रभाव होते हुए भी सांझे गीतों को छोड़ इनमें अपनी अलग विशेषता है।

स्वर-संरचना शैली, स्वर प्रयोग व चलन में पर्याप्त अंतर है। सिरमौरी अधिकतर स्वर-संरचनाओं में चंचलता व स्वर लालित्य, महासूई अधिकतर स्वर-संरचनाओं से अधिक है। महासूई स्वर-संरचनाओं की प्रकृति, सिरमौरी स्वर-संरचनाओं से गंभीर है। ऊपरी महासू की स्वर-संरचनाओं का न्यास प्राय: मध्य मध्यम, और मध्य षड़ज पर है। प्रसिद्ध लय-मुक्त प्रणय-प्रश्नोत्तरी "लामन" की स्वर-संरचना प्राय: षाडव व मध्य सप्तकीय है। "लामन" का प्रारम्भिक भाग आरोही होता है, जो कोमल निषद तक जाता है। मध्य भाग फिर वहीं निषाद, धैवत, पंचम स्वरों में निभता हुआ, अवरोही होकर प्राय: मध्य रिषम पर ठहरता है। अंतिम भाग फिर सप्तक के उत्तरार्थ में कोमल निषाद तक पहुंच कर फिर मध्य मध्यम पर आकर न्यास करता है। सिरमौरी स्वर-संरचनाओं के न्यास स्वर प्राय: मध्य षड़ज, मध्य पंचम, मध्य रिषभ व मध्य मध्यम हैं। सिरमौर के निचले भाग की स्वर-संरचनाएं, प्रदेश के निचले क्षेत्रों की स्वर-संरचनाओं जैसी हैं। सिरमौर के प्रसिद्ध प्रणय विषयक लय-मुक्त, मुक्त-बद्ध गायन प्रकार "झूरी" की स्वर संरचना भी प्राय: मध्य सप्तकीय है। 'झूरी' का प्रारम्भिक भाग भी आरोही है। सप्तक के उत्तरार्ध में जाकर, फिर पंचम पर इसका न्यास होता है। मध्य भाग सप्तक के मध्य में निभता हुआ प्राय: मध्य रिषम पर ठहरता है। अंतिम भाग पहले आरोही होकर सप्तक के पूर्वार्ध में निभता है और फिर अवरोही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होकर मध्य षड़ज पर न्यास करता है। मुक्त-वद्ध प्रकार मध्य षड़ज पर ठहर कर मंद्र कोमल निषाद को छूता हुआ मंद्र धैवत पर न्यास करता है।

सोलन के जो भाग सिरमौर के ऊंचे क्षेत्रों से लगते है, वहां की स्वर-संरचनाएं उस क्षेत्र से तथा जो भाग ऊपरी महासू से लगते हैं, वहां की स्वर-संरचनाएं उस क्षेत्र से मिलती जुलती हैं। इस प्रकार मंडी कांगड़ा का जो भाग कुल्लू से लगता है, वहाँ की स्वर-संरचनाएँ, उस क्षेत्र से, तथा मंडी का जो भाग ऊपरी महासू से लगता है, वहाँ की स्वर-संरचनाएँ, उस क्षेत्र की स्वर-संरचनाओं से मिलती हैं। कुछ तो सांझी ही हैं। शेष मंडी क्षेत्र, कांगड़ा का अधिकतर भाग, ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, निचला महासू, नालागढ़ तथा सिरमौर के निचले भागों के गीतों की स्वर-संरचनाओं में पर्याप्त साम्य है। वहुत-सी स्वर-संरचनाएँ तो साँझी हैं। क्षेत्र विशेष की जो स्वर-संरचनाएँ अपनी-अपनी भी हैं, उनकी शैली, स्वर प्रयोग, आदि एक जैसा है। स्वर-संरचनाएँ बहुधा औड़व हैं। षाड़व स्वर-संरचनाएँ, तथा कुछेक चतुः स्वर संरचनाएँ भी हैं। स्वर संरचना क्षेत्र प्रायः मध्य सप्तक है। अवसर विशेष तथा अर्वाचीन कुछेक गीतों की स्वर-संरचनाएँ द्विसप्तकीय हैं, व कुछ टेढ़ी भी है। कुछ गीत प्रकारों तथा अर्वाचीन गीतों में स्वर-संरचना के शास्त्र सम्मत दो भाग, स्थाई व अंतरा दृष्टिगोचर होते हैं। स्वर-संरचनाओं में न्यास स्वर प्रायः मध्य मध्यम, मध्य षड़ज व मध्य रिषभ है।

निचले महासू तथा बिलासपुर के साँझे, लयमुक्त प्रसिद्ध गीत 'मोह्णा' व 'लोका' की स्वर-संरचनाएँ कई दृष्टियों से एक-सी हैं, मध्य सप्तकीय हैं। दोनों के स्वर वही हैं। (शुद्ध सा रे म प ध) दोनों का न्यास स्वर मध्य रिषभ है। लेकिन स्वर-प्रयोग, स्वरों पर ठहराव तथा स्वर संगति में और चलन आदि में अंतर होने से दोनों स्वर-संरचनाएँ एक दूसरी से भिन्न हैं ओर अपना अलग स्वरूप तथा माधुर्य लिए हुए हैं। इसी अंतर के कारण लयमुक्त गंगी का भी अपना अलग स्वरूप है। 'मोह्णा' में मध्य-मध्यम का महत्व 'लोका' से अधिक है, जबकि लोका में मध्य पंचम का महत्व 'मोह्णा' से अधिक है। इसी प्रकार 'गंगी' में मध्य धैवत का महत्व मोह्णा व लोका दोनों से अधिक है। लयमुक्त 'ब्राह्मणा रा बोरु' की स्वर-संरचना षाड़व-संपूर्ण है। स्वर शुद्ध हैं। अवरोह में कोमल निषाद भी लगता है। आरोह में गांधार नहीं लगता। न्यास स्वर मध्य षडज है।

कांगड़ा व चम्बा की स्वर-संरचनाओं में भी कुछ साम्य है। कुछ स्वर-संरचनाएँ साँझी भी हैं। परन्तु अधिकतर स्वर-संरचनाएँ भिन्न हैं। भिन्नता का एक बड़ा कारण, संरचना का चलन व स्वर-प्रयोग है। चम्बा की अधिकतर स्वर-संरचनाएँ, चंचल व अधिक रंजक हैं। कुछेक विशेष अवसरीय, प्राचीन गीतों की स्वर-संरचना अवश्य टेढ़ी, द्विसप्तकीय तथा स्थाई अंतरे वाली है। परन्तु अधिकतर स्वर-संरचनाएँ मध्य सप्तकीय, व औड़व हैं। स्वर-संरचनाओं का न्यास स्वर बहुधा मध्य-मध्यम है। कुछेक स्वर-संरचनाएँ मध्य पंचम व मध्य षड़ज पर भी न्यास करती हैं। विवाह आदि कुछ विशेष अवसर के गीतों की स्वर-संरचना तो प्रदेश के निचले क्षेत्र की सी ही हैं।

चम्बा के गद्दी तथा गूजर जन-जातीय गीतों की स्वर-संरचनाएँ प्रायः चार-पाँच स्वरों की हैं, और अत्यंत सरल हैं। गद्दी अधिकतर गीतों की स्वर-संरचनाओं का क्षेत्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मध्य पंचम और मंद्र धैवत के बीच है। गूजर गीतों की स्वर-संरचनाएँ प्रायः मध्य सप्तक की ही हैं।

स्वर-संरचनाओं में अधिकतर दुर्गा, भूपाली, पहाड़ी इन औड़व जातिय रागों के दर्शन होते हैं। इसके अतिरिक्त पीलू, मालकौंस, देस, भैरवी तथा भीम पलासी रागों आदि की झलक भी स्वर संरचनाओं में मिलती है। विशेष अवसरीय स्वर-संरचनाओं में मुख्यता देस राग का स्वरूप मिलता है। कुछेक स्वर-संरचनाओं में नवीन रागों के दर्शन भी होते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्वर-लिपि-खण्ड

(किन्नरी गीत)

१. 'बीश' गीत : गोली गो हो, हो हाया वे ले होना ।
गोली गो हो ॥

– – – – – – –

प – सां ध – प ध – सां – ,
गो ऽ ली ऽ ऽ ऽ गो ऽ हो ऽ

प ग प – सां – प – – – – – ध – ग – प – – – – ध ग
हो ऽ ऽ ऽ हा ऽ या ऽ ऽ ऽ ऽ वे ऽ ले ऽ हो ऽ ऽ ऽ ना ऽ,

ध – प – – – – – – प सा |
गो ऽ ली ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ गो हो |

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

२. फुल्याच : ज़ोली फुल्याच हो,
बोण्डे नागासो ।
ज़ोली फुल्याच ॥ —२

प – ध – ध म प – म – म – – – –
ज़ो ऽ ऽ ऽ ली ऽ फु ऽ ल्या ऽ च ऽ ऽ ऽ ऽ

सा रे सा – – –
हो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ,

म प म – – म सा रे – रे सा – – – –
बों ऽ डे ऽ ऽ ना ऽ गा ऽ सो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

म प म – म – म – ध़ – – ध़ |
ज़ो ऽ ला ऽ ली ऽ फु ऽ ल्या ऽ ऽ च |

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३. पोर देवता : दु गोल्यो दङ शङ डेलयोश पुवारे।
दु गोल्यो दङ शङ डेलयोश पुवारे ।।

सां	—	सां	ध	म	—	म	प	ध	—	सां	—	—	—	प	ध
दु	ऽ	गो	ऽ	ल्यो	ऽ	ऽ	ऽ	दङ	ऽ	शङ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सां	—	मं	रें	सां	प	सां	ध	म	—	सा	—	—	—	—	—
डे	ऽ	ल्यो	ऽ	श्पु	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	—	सां	ऽ	सां	प	ध	—	म	—	म	रे	सा	म	—	—
दु	ऽ	गो	ऽ	ल्यो	ऽ	ऽ	ऽ	दङ	ऽ	शङ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	प	सां	ध	म	—	—	—	म	—	म	—	—	—	—	—
डे	ऽ	ल्यो	ऽ	श्पु	ऽ	ऽ	ऽ	वा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

४. सांगीथङ : ओ सांग्यो खोयां हो,
लेज़ी बाई चे़ चु़ वाई।
चे़ली सांग्यो खोयां ।।

सां	—	—	सां	—	नि	प	प	—	सा	—	—
ओ	ऽ	ऽ	सां	ऽ	ग्यो	खो	यां	ऽ	हो	ऽ	ऽ
—	—	सांनि	रेंसां	निप	—	रे	—	प	सां	—	नि
ऽ	ऽ	लेऽ	ज़ीऽ	बाई	ऽ	चे़	ऽ	चु़	वाई	ऽ	ऽ
रें	सां	सां	सां	—	सां	सां	रें	—	—	—	—
चे	ऽ	ली	सां	ऽ	ग्यो	खो	यां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. रेमा :

रेमा गोली गो ह्रो ना रे,
रेमा राङ की कुटा रे ।।

म	–	सा	सा	–	–	रे	म	प	प	ध	–
रे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ	गो	ली	गो	ह्रो	ना	ऽ
प	–	–	–	–	–	ध	–	म	म	–	सा
रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	मा	ऽ	ऽ
रे	–	म	प	प	म	म	–	–	–	–	–
राङ	–	ऽ	कु	टा	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

(स्पीतियन गीत)

६. देवस्तुति :

यों ई गूंस्तोद तोंतू जू वई,
गूं स्तोद तोंतू जू वई ।
ठीरू नीमा ज़ी ठीरू नीमा ते ।।

रे म प परे म – – – म रेसा रेसा साप़ – सा –

यों ईं गूं स्तोऽ ऽ ऽ ऽ ऽ द तोंऽ ऽऽ तूऽ ऽ जू ऽ

– सा
ऽ वई,

सा
रे म – – म पम – रेसा – रेसा – – रे – मरे

गूं स्तो ऽ ऽ द तोंऽ ऽ तूऽ ऽ जूऽ ऽ ऽ वई ऽ ठीऽ

– म सा – साप़ – रेसा – – रे – म रे म सा

ऽ रू ऽ ऽ नीऽ ऽ माऽ ऽ ऽ ज़ी ऽ ठी ऽ रू ऽ

– रे नि़ – – नि़ |
ऽ नी मा ऽ ऽ ते |

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७. गृहस्थ जीवन की स्तुति (गूं लामा)

गूं लामा लमई यूल्दू सेरे शेन नी
टाशी शोग् शे –, – –

सा प़
म – – – सा – सा – गरे – – ध़ ध़ ध़ रे म – – –
गूं ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ला ऽ माऽ ऽ ऽ ऽ ल ऽ म ई ऽ ऽ ऽ

सा गरे –सा गरे सा गरे – – सा धप़ ध़ रे सा
यू ल्दूऽ ऽऽ सेऽ रे शेन ऽ ऽ नी टाऽ ऽ शी ऽ

गरे – – – – रे रे
शोऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ग् शे '

ग – – – सा गसा – – ध़ रे – – रे रेध़ सा
खों ऽ ऽ ऽ सेर् दोऽ ऽ ऽ ग् ला ऽ ऽ स लऽ वई '

ग सा ग सा सा – – – सा सा प़ – – प़ प़ –
दंग ऽऽ ऽ वई ऽ ऽ ऽ गु रु ज़ी ऽ ऽ ज़ोम सो ऽ

सा –ध़ गरे – – गरे रेध़ सा – ग सा ग सा
सेर् ऽऽ दोग्ऽ ऽ ऽ सऽ लऽ वई ऽ दङऽऽ ऽ

सा – – ध़ सा सा प़ – प़ प़ – |
वई ऽ ऽ ऽ गु रू ज़ी ऽ ज़ोम् सो ऽ |

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८. देश प्यार का गीत : दे रिङ गी जग् ल टशी पे जग् यिन,
छङ म ल टशी दे लेग् जु जु –२!

प	प	–	प	–	ध	–	सा	सा	–	सा	–	सा	–
दे	रिङ	ऽ	ऽ	ऽ	गी	ऽ	जग्	ग	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
सा	ग	रे	ग	–	सा	सा	ध़	–	प	ध़	ध	नि	ध
ट	शी	प	ऽ	ऽ	जग्	ग	यिन	ऽ	छङ	म	ल	ऽ	ऽ
प	–	ग	रे	सा	–	रेग	पग	–	रे	सा	सा	सा	सा
टा	ऽ	शी	ऽ	ऽ	ऽ	देऽ	लेग्	ऽ	ऽ	जु	ऽ	जु	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

९. शिक्षा गीत : क यी रङ सेम ठ़ू मो,
फम सुम रिग् पे न ङ।
दग् चग् रिग् पे लम ल,
क्युलिङ यी यतो चु पो। — २

सा	–	रे	म	म	प	प	–	–	–	–	–
क	ऽ	यी	रङ	सेम	ठ़ू	मो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध	–	सां	ध	म	प	प	–	–	–	–	–
फम	ऽ	सुम	रिग्	पे	न	ङ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	ध	प	म	–	ग	–	सा	रे	प	–
दग्	ऽ	चग्	रिग्	पे	ऽ	ल	ऽ	म	ऽ	ल	ऽ
म	प	म	ग	रे	सा	सा	–	–	–	–	–
क्यु	लिङ	यो	य	तो	चु	पो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०. पंगवाली गीत ('नायिका' गीत) :

म्हारा ओ सुभानड़ुए ना रुसे ओ प्यारिए।

म	रेसा	सा	सारे	म	रेसा	नि	–प	नि	–सा	रे	म	(म) रे	–सा	सा	–
म्हा	राऽ	ओ	सुऽ	भा	नड़ु	ए	ऽऽ	ना	ऽरु	सो	ओ	प्या	ऽरि	ए	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

११. 'विवाह' गीत :

ब्याह रचंदे लाड़े-लाड़ी दा ओ,
परोह्त सदे गांगे पारे दा ओ।

रे	–	म	रे	–	सा	नि	नि	–	–	रे	–	सा	–
ब्याह	ऽ	ऽ	र	ऽ	चं	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ड़	ऽ
– रे	–	म	रे	–	सा	–	सा	–	–	–	–	–	–
ला	ऽ	ऽ	ड़ी	ऽ	दा	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

१२. 'नेहरू' गीत :

ए गीया नेहरू लाला साह्ब भलिए।

–	सारे	प	म	प	ध	प	म
ऽ	एऽ	गी	या	नेह्	रू	ला	ला
–	प	–	म	(म) रे	रे	सा	–
ऽ	साह्	ऽ	ब	भ	लि	ए	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१३. लाहुलीगीत : (मंदिर 'गुरु घंटाल' का गीत)

तांदी गुशाड़े री शालाना ग्वाई ओ,
ऊपरू गुंटाले री डोशाना हुई ओ।

					म			ध नि
–	–	–	म	ग	ग	सा		साग ग – मम – ध ध
ऽ	ऽ	ऽ	तां	ऽ	दी	ऽ		गुऽ शा ऽ ड़े ऽ ऽ री ऽ
ध	म	–	म	ग	(ग)	सा		ग – – म ध नि ध म –
शा	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ना	ऽ		ग्वा ऽ ऽ ईऽ ऽऽ ऽ ऽ
					म			
म	–	–	म	ग	ग	सा		
ओ	ऽ	ऽ	ऊ	प	रू	ऽ		– – – –

—शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

१४. 'दलाई लामा' गीत : सारी लोका जाणा ओ,
दलाई लामा दर्शण ओ।

रे	मप	धप	मरे		रेम	पध	प	–
सा	रीऽ	लोऽ	काऽ		जाऽ	ऽणा	ओ	ऽ
						ध		
मरे	मप	धप	मरे		मप	पम	म	–
दऽ	लाई	लाऽ	माऽ		दर	सण	ओ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५. शादी का राग : [लोक वाद्यों पर विवाह अवसर की धुन]

–	–	–	–	–	–	सांध	प	ग	सांध	प	ग	रे	–
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	~	~	~	~	~	~	~	ऽ
सा	रे	–	ग	रे	ग	–	सांध						
~	~	ऽ	~	~	~	ऽ							

—पर्याप्त समय तक यह धुन कई बार दोहराई जाती है।

१६. 'रात्रि' का राग : [लोकवाद्यों पर एक अन्य धुन]

									–	सांध	धप
									ऽ	~	~
पग	मप	–	प	धसां	–	सांसां	पध	धप	–	–	–
~	~	ऽ	~	~	ऽ	~	~	~	ऽ	ऽ	ऽ
प	ध	सां	सां	ध	प	पध	प	ग	–	सां	ध
~	~	~	~	~	~	~	~	~	ऽ	~	~
ग पप	ध	प	रे	रे	सा	ग सा रे	रे	–	–	सां	ध
~	~	~	~	~	~	~	~	ऽ	ऽ	~	~
ग पप	ध	प	रे	रे	सा	ग सा रे	रे	–	–	रे	सा
~	~	~	~	~	~	~	~	ऽ	ऽ	~	~
ग सा रे	रे	–	मप	म	प	सां ध	म	–	–	–	–
~	~	ऽ	~	~	~	~	~	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—पर्याप्त समय तक धुन कई बार दोहराई जाती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुल्लूई गीत :

१७. 'दशहरे से संबद्ध गीत' : कुलुए दशहरे स्टेज लागा बोणदा,
चऊए चकुणिए चक्र ।
चक भले माहणुआ,
चऊए चकुणिए चक ॥

						ध									
म	म	म	म	म	प	प	म	ग	–ग	ग	सा	ग	म	प	सांनि
कु	लु	ए	द	शैह्	ऽ	रे	ऽ	स्टे	ऽज	ला	गा	बो	ण	दा	ऽऽ
						ध									
प	प	–	गम	प	मप	प	म	ग	ग	–	ग	ग	गसा	सा	सा
चऊ	ए	ऽ	चऽ	कू	णिऽ	ए	ऽ	च	क	ऽ	ओ	च	कऽ	भ	ले
										ध					
ग	म	प	सांनि	प	प	–	गम	प	मप	प	म	ग	ग	–	–
माह्	णु	आं	ऽऽ	चऊ	ए	ऽ	चऽ	कू	णिऽ	ए	ऽ	च	क	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

१८. 'घुशालचंद ठाकुर' का गीत : तोबे बी बोलू लो,
घुशाल चंद ठाकरा ।
झूलै री ढीलुई तारा डै लो ॥

सारे	सारे	मप	मप	धप	मप	म	रे	मप	निध	पम	मप	रे	रेसा	सा	–
तोऽ	बेऽ	बीऽ	बोऽ	लूऽ	ऽऽ	लो	घु	शाऽ	लऽ	चऽ	दऽ	ठा	कऽ	रा	ऽ
										प					
सारे	सारे	मप	मप	निध	पध	म	रे	मप	निध	म	रेम	म	–	–	–
झूऽ	लैऽ	रीऽ	ढीऽ	लुऽ	ऽऽ	ई	ऽ	ताऽ	राऽ	डै	ऽऽ	लो	ऽ	ऽ	ऽ

शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१९. ब्यूहाई : (पुत्र जन्म के अवसर का गीत)

मदन मोहन जी दी प्यारी,
नी सुणेयां वैह्णे बंसरी।

स्थाई :

								ग							
–	सारे	रे	रे	सा	सा	रेग	गरे	रेरे	सानि़	ध़	प़	धसा	सा	रेग	गसा
ऽ	मद	न	मो	ह	न	जीऽ	दीऽ	प्याऽ	रीऽ	ऽ	नी	सुणे	यां	वैह्ऽ	णेऽ
ग															
रेरे	–सा	सा	–	–	–	–	–								
बंऽ	ऽस	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ								

(अन्तरा)

			ग								ग				
–	सारे	रे	रे	सा	–	रेग	सा	–	रे	रे	रे	सा	–	रेग	सा
ऽ	भाऽ	दों	म	ही	ऽ	नेऽ	दी	ऽ	न्हे	रि	यां	रा	ऽ	तीऽ	ऽ
			ग					ग							
–	सारे	रे	रे	सा	सा	रेग	गरे	रेरे	सानि़	ध़	प़				
ऽ	जन	मे	यां	कृ	श	नऽ	मुऽ	राऽ	रीऽ	ऽ	नी	सुणेयां वैह्णे......			

—पूर्ववत गाइए। शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

२०. 'बाबा त्रिलोकीनाथ' का गीत :

तरलोकीनाथ बाबा रे,
बिखड़ा लागा तेरा देस।

स्थाई :

–	–	सा	सा	रे	म	–	प	प	नि	–	नि	सां	–	–	रें
ऽ	ऽ	त	र	लो	की	ऽ	ना	थ	बा	ऽ	बा	रे	ऽ	ऽ	ऽ
												×			
		ध					सा					सा			
रें	नि॒	प	मम	ग	–	रे	म	प	पध	म	म	ग	रे	–	रे
ऽ	ऽ	ऽ	बिख	ड़ा	ऽ	ऽ	ला	गा	तेऽ	ऽ	रा	दे	ऽ	ऽ	स
२				०				३				४			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा :

–	–	रें	रें	रेंसां	सां	–	रें	नि	–	निनि	नि	सां	–	प	प
ऽ	ऽ	ऊं	ची	ऊंऽ	ची	ऽ	च	ऽ	ऽ	ढाई	यां	वे ×	ऽ	नी	ची
म	म	–	प	नि	सांरें	–	सां	रें	–	नि	–	ध	–	ध	नि̱
नी	ची	ऽ	उ	त	राई	ऽ	यां	वे	ऽ	खा	ऽ	णे	ऽ	नू	का
(रें) सां	नि̱	–	नि̱	(प) ध	प	–	प								
ठू	ते	ऽ	भ	रे	ऽ	ऽ	स								

'काठू ते भरेस ...को 'लागा तेरा देस'...की तरह दोहरा कर स्थाई पूर्ववत गाइए ।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

२१. बधावा : (विवाहोपरांत का गीत)

ओ मेरी अम्वड़िए मेरी माए,

.. ..

स्थाई :

नि़	सा	रे	रे	सा	रे	रे	म	ग	रे	ग	रे	सा	–	नि़	–
ओ	ऽ	मे	री	अँ	ऽ	व	ड़ि	ए	ऽ	मे	री	मा	ऽ	ए	ऽ
नि़	सा	रे	रे	सा	रे	रे	म	ग	सा	सा	रे	(ग) रे	सा	सा	–
ए	ऽ	ध	र	की	ऽ	यां	ऽ	क	ऽ	री	ऽ	ब	स	दे	ऽ
–	–	–	–												
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ												

अंतरा ·

नि़	सा	रे	रे	सा	रे	रे	म	ग	रे	ग	रे	सा	–	नि़	–
इ	ना	दे	सां	ज	ऽ	ऽ	ऽ	म	ऽ	ण	ऽ	धी	ऽ	यां	ऽ

आवण सरस जवाईं,
बैहं्‌दे धोतियां लाई,
जांदे रोटियां खाई,

} ये पंक्तियां इसी प्रकार गाइए ।

'ए देस ईयां करी बसदे'...दूसरी पंक्ति की तरह गाइए ।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२. महासूई गीत

'अंचली' गीत (सिया राणी) : सिया राणी पाणी लै चाली राम जी,
सिया राणी पाणी लै चाली ली !

सा	रे	म	–	ग	–	ग	रे	रे	ग	रे	सा
सि	या	रा	ऽ	णी	ऽ	पा	णी	लै	चा	ली	ली
										ग	
सा	सा	सा	–	–	–	रे	सा	सा	रे	रे	सा
रा	म	जी	ऽ	ऽ	ऽ	सि	या	रा	ऽ	णी	ऽ
सा	सा	सा	सा	–	सा	सा	–	–	–	–	–
पा	णी	लै	चा	ऽ	ली	ली	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएगे।

२३. 'महात्मा गांधी' गीत :

म्हात्मा लो गांधिया तू कत्थरे वीणा,
गुजराते शैहरो दा जलमो दीणा !

ग॒	रे	ग॒	सा	सा	नि़॒	सा	म	ग॒	रे	सा	नि़
म्हा	त	मा	ऽ	लो	ऽ	गां	धि	या	ऽ	तू	ऽ
सा	सा	सा	–	सा	–	सा	सा	गा	–	–	–
क	त्थ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	वी	णा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएगे।

२४. हाड़े दुर्गे :

मूलै मौलाइए केरे मलाए,
हाड़े दुर्गे केरे मलाय !

ग	म	गम	रे	रेग	मग	सारे	सानि़	ध़	नि़	सा	–
मू	लै	मऽ	ला	ईऽ	एऽ	केऽ	रेऽ	म	ला़	य	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२५. विवाह गीत : (विदाई गीत) खड़ी होए आमीए आंगणे आपणे,
वेटी के मैंहदी सज़ोए !

सा ग – म प – प ग – म प म – – – – – – ग
ख ड़ी ऽ हो ए ऽ आ ऽ ऽ मी ऽ ए ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ,
ध
प म प म – प म म – – – – – ग
आं ग ऽ णे ऽ आ प ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ णे,
ध ध ध
सा ग – म प – पप ग – म प म – – – – – – – – प म

वे टी ऽ के ऽ ऽ मैंह ऽ ऽ ऽ दी ऽ स ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ,

म – – म – म – – – –
ज़ो ऽ ऽ ए ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ!

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

२६. जानकी मंगल : (विवाह अवसर पर कन्यादान के समय का गीत)

सा सा सा सा सा सा सा सा – – सा सा सा सा नि – नि ध

प्र थ मि ए सु म रि ए ऽ ऽ सि री गु रु दे ऽ व ग

निध पप धसा रेम पध नि धप ध – प –
णेऽ ऽश मऽ नाऽ ऽऽ ऽ ईऽ ए ऽ ऽ ऽ,

प – प ध पध नि ध प पध निध – मरे
शा ऽ र द कोऽ ऽ शि र नाऽ ऽऽ ऽ ईंऽ,

सा – ग – – म पध नि धप (ध) – मग म – – –
रा ऽ मा ऽ ऽ गु णऽ ऽ ऽऽ गा ऽ ईऽ ए ऽ ऽ ऽ!

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२७. चुपुती :

दात्रिया की सालाका—२
चाऊ शूदो दी शेली,
तौपी मूकै ना लाका ।।

म – ग सा – ग म – म – म – म – म – ग सा

दा ऽ त्रि या ऽ की ऽ ऽ सा ऽ ला ऽ का ऽ दा ऽ त्रि या,

ग म म – सा – सा –

की ऽ सा ऽ ला ऽ का ऽ !

—अगली दो पंक्तियां भी एक के बाद दूसरी इसी प्रकार गाई जाएंगी।

२८. 'झामकुलो' गीत :

झामकुलो झामकुलो,
शीली सेरेए चीणी बोई।

म	–	म	प	प	ऽ	प	म	रेसा	रे	–	–
झा	ऽ	म	कु	लो	ऽ	झा	ऽम	कुऽ	लो	ऽ	ऽ
सा	–	नि	रे	रे	रे	सारे	ग – रे	सा	सा	सा	सा
शी	ऽ	ली	से	रे	ए	चीऽ	णी	ऽ	बो	ऽ	ई

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

२९. 'चरणू' का बार : माऊली तेरैं सोमादासी बोला बाताई।

म म म – – –	(सा) ग ग रे – सा ध	सा सा सा – सा सा	सा सा सा – सा –
मा ऊ ली ऽ ऽ ऽ	ते रैं सो ऽ मा ऽ	दा सी बो ऽ ला ऽ	बा ता ई ऽ ऽ ऽ
(सा) रे रे रे रे रे सा	सा रे रे सा सा सा	सा सा सा सा – –	सा सा – – – –
हो टी यो गे औं ऽ	चौ र णु ऽ आ ऽ	घी रा ऽ लै ऽ ऽ	आ ई ऽ ऽ ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३०. बिंचो : ओ राइंऐ कोटे जौमी
बेटड़ी होए रे !

										ग				
					सा	रेम	|	ग	ग	रेर	सा	–	–	,रे
					ओ	ऽऽ	|	रा	ईं	ऽऽ	ये	ऽ	ऽ	,ऽ
								म						ग
नि़	नि़प़	–	सा	–	–	रेम	|	ग	गसा	–	रेसा	–	रेसा	रेरे
को	टेंऽ	ऽ	ज़ौ	ऽ	ऽ	मीऽ	|	बे	टऽ	ऽ	ड़ीऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ
								ग						
सा	–	–	–	–	पम	प	|	म	म	ग	ग	रे	सा	–
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	एऽ	रे	|	बे	दी	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ
								म			ग		ग	
नि़प़	प़	–	सा	–	–	रेप	|	ग	ग	सा	सारे	रेसा	नि़सा	रेसा
आऽ	णो	ऽ	भा	ऽ	ऽ	टाऽ	|	पौं	ड	ऽ	ताऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ
सा	–	–	–	–	–	–	|						
हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	|						

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

३१. शिवरात्रि के अवसर के गीत :

शिव स्वागत : सईं आओ पाज़े री डाली—२
चोड़ो ना पाज़े री डाली—२

										ध		
सा	सा	म	म	–	–	|	प	म	प	प	म	–
सईं	आ	ओ	पा	ऽ	ऽ	|	ज़े	री	ऽ	डा	ली	ऽ
प	म	प	म	–	–	|	ग	ग	रे	सा	सा	–
सईं	आ	ओ	पा	ऽ	ऽ	|	ज़े	री	ऽ	डा	ली	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३२. शिव विदाई : सईं चलो आपणे घौरे—२
रिण पाओ लोगुऐ गौले—२

सा	सा	म	म	–	ग	प	म	पध	म	म	–
सईं	च	लो	आ	ऽ	ऽ	प	णे	ऽऽ	घौ	रे	ऽ
ग	म	पध	म	–	प	ग	ग	रे	सा	सा	–
सईं	च	लोऽ	आ	ऽ	ऽ	प	णे	ऽ	घौ	रे	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

३३. हिमाचल सौंदर्य वर्णन गीत : औसो बाँका मेर्‌या तू बाँका,
देशा हिमाचला रे ।

स्थाई :

–	–	प	–	ध	सां	–	–	निसां	रें	गं	साँ	–	–	निध	प
ऽ	ऽ	औ	ऽ	सो	बां	ऽ	ऽ	क्या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ
प	–	–	–	–	–	ध	–	× पम	–	प	–	–	–	(ग)	–
र्‌या	–	–	–	ऽ	ऽ	तू	ऽ	बां	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	दे	ऽ
रे	सा	–	–	सा	रे	म	(प)	× –	–	–	निध	प	प	रे	रे
शा	ऽ	ऽ	ऽ	हि	मा	च	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अंतरा

– – – –	प ध सां रें	गं – – –	– – – रें
ऽ ऽ ऽ ऽ	ते री शो भो	के ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ चीं
		×	
गं रें – (सां)	– – रें –	नि सां – –	– – – –
ऽ व ऽ टी	ऽ ऽ चां ऽ	न णो ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
रें गं (सां) –	– – – ध	(प) – म प	– – (ग) –
के ऽ ल्यो ऽ	ऽ ऽ ऽ प	ला ऽ ऽ शो	ऽ ऽ दे ऽ
रे सा – –	सा रे म (प)	– – – नि ध	प प – –
शा ऽ ऽ ऽ	हि मा च ला	ऽ ऽ ऽ ऽऽ	ऽ रे ऽ ऽ

—स्थाई पूर्ववत गाकर शेष चरण भी इसी प्रकार गाइए।

सिरमौरी गीत

३४. 'काज़लो होरे कौंदिए' गीत :

शीलो शिलाऔणी लाए छेड़वे,
पीहं्गो रे काज़ली होरे कौंदिए।

		नि	
– सा रे ग	म म ग म	ध – प ग	– रे सा –
ऽ शी लो शि	ला ऽ ओ णी	ला ऽ ए छै	ऽ ड़् ए ऽ
		नि	
– सा रे ग	म म ग म	ध प प ग	– रे सा –
ऽ पीहं् गो रे	का ज़ ली ऽ	हो रे ऽ कौं	ऽ दि ए ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३५. 'गिद्धा' गीत : दुनिए रा बेईमान, दिलड़ू ना लाणा रे।

स्थाई :

गरे –ग – ग	रेसा –ध़ – सा	रेग –ग – रे	गप प(ध)प म –
दुनि ऽए ऽ रा	बेई ऽमा ऽ न	दिल ऽड़ू ऽ ना	लाऽ णाऽ रे ऽ

अंतरा

सासा –ग – म	प पम ध(नि)ध प	मम –ग – रे	गम म म (ग) –
फुली ऽक ऽ रो	फु लऽ टूऽ ऽ	डाले ऽफू ऽ लो	केऽ लाऽ रे ऽ

—अगली पंक्ति स्थाई की भांति गाकर शेष चरण भी ऐसे ही गाइए।

३६. 'बिशु' संबधी नाटी (जयरामा) :

बोलो बाजी कोरी बाजी गोयरा बाणा,
बाबुआ जयरामा गोयरा बाणा !

प प प ध ध प प ग ग रे रे – रे साग – ग रे रे – स स

बोलो बा जी को री बा जी ऽ ऽ गो ए ऽ ऽ ऽऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ ऽ बा

रे साग –

णा ऽऽ ऽ

– ग ग ग रे – रे ग	ग रे रे – सा सा रे –	साग
ऽ बा बु आ जय ऽ रा मा	गो ए रा – ऽ बा णा ऽ	ऽऽ

—यह पंक्ति दो चार बार दोहराई जाती हैं। शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३७. रेणुका माई की भेंट : तेरी सरणँ सौंवी ए आओ,
जैं जैं देवी माता रेणुका !

।	।		। ।
ग ग म	पध प म	ग ग रे	गम प म
ते री स	रऽ णँ ऽ	सौं वी ए	आऽ ओ ऽ
गरे ग रे	सा रे सा	रेग – रे	ग – –
जैं जैं दे	वी मा ता	रेऽ ऽ णु	का ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

३८. 'हुरुल' : (राम-रावण युद्ध प्रसंगांश)

	सा				रे
ग – ग	ग – रे	– सा	सा –	– सा	सा – नि –
ए ऽ था	ला ऽ गा	ऽ ऽ	बो ऽ	ऽ ल	दा ऽ ऽ ऽ
रे	ग				रे
ग – ग	ग – रे	– सा	सा –	– –	सा – – –
ओ ऽ रे	का ऽ ऽ	ऽ ऽ	बो ऽ	ऽ ऽ	लैं ऽ ऽ ऽ
सा – –	– – –	– –	– –	– –	– – – –
आ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
ग		सा		सा	प
रे – सा	नि – नि	रे –	– –	रे म	म – ग –
जु ऽ धो	ला ऽ या	रे ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	रा ऽ मो ऽ
म	सा				
ग – रे	रे सा –	सा –	– –	– –	– – – –
रा ऽ व	णो ऽ ऽ	रा ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३९. 'हरुल' : (सामा-दौलतू की हार)

थोआ फांटणा लाए रे तौबे,
टोका टोका चाम्बे रा !

								प							
सा	ग	—	म	—	म	म	—	म	ग	ग	··	मप	—	प	—
थो	आ	ऽ	फां	ऽ	टा	णा	ऽ	ला	ए	रे	ऽ	तौऽ	ऽ	बै	ऽ
प	म	—	म	ग	—	ग	—	ग	सा	सा	—	सा	—	—	—
टो	का	ऽ	टो	ऽ	ऽ	का	ऽ	चा	ऽ	म्बे	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ऽ
×			२			३		०		४		५			

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

४०. भर्तृहरि : (भारथ) ओ आमी छोड़ियो पापिया,
कौसी देशो खे चालो ला !

								सां							
सां	सां	—	सां	सां	—	सां	सां	—	नि	नि	ध	प	प	प	—
ओ	आ	ऽ	मे	छो	ऽ	ड़ि	यो	ऽ	पा	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	ऽ
—	प	—	ध	प	—	म	—	प	ग	—	रे	सा	—	नि	—
ऽ	कौ	ऽ	सी	दे	ऽ	शो	ऽ	खे	चा	ऽ	लो	ला	ऽ	ऽ	ऽ
—	म	—	म	म	—	ग	—	प	ग	—	ग	सारे	ग	ग	ग
ऽ	रा	ऽ	णी	थां	ऽ	बो	ऽ	रो	पीं	ऽ	ग	लाऽ	ऽ	बो	ऽ
									ग						
ग	रे	—	ग	रे	—	सा	सा	—	रे	—	सा	सा	—	—	—
लै	भ	ऽ	गु	ए	ऽ	ऽ	रा	ऽ	पा	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
—	नि	—	सारे	म	—	म	—	प	ग	ग	ग	सारे	ग	ग	—
ऽ	ए	ऽ	तिऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	रौह्	ऽ	मे	ऽ	रेऽ	ऽ	गु	ऽ
									ग						
ग	रे	—	ग	रे	—	—	सा	—	रे	सा	सा	नि	—	—	—
रू	ए	ऽ	ति	ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रौह्	ऽ	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ
×			२			३		०		४		५			

('एतिए रौह्...' को फिर 'राणी थाम्बो रो... 'की तरह गाइए।)
शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४१. 'झूरी' : झूरी री आखुटी रे, जिशी चानणा री लोई।

सां
सा सा सा − − − ग म प ध − − ध प −
झू री री ऽ ऽ ऽ आ खु टी रे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ,

सां
प ध सा नि ध प ध − − − प धध प ध प − −

हो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

म म
प ध प − प ध प − − − म गग रे गग रे − −

जि शी ऽ ऽ चा न णा ऽ ऽ ऽ री लोऽ ई ऽऽ ऽ ऽ ऽ

रे ग म प − − − म ग (रे) सा − − (नि़) ध़

इ ने बो लो ऽ ऽ ऽ आ खु टी ए ऽऽ ऽ ऽ

	प		ग
सासा रे ग	मम ग रेसा	सा रे ग ग	रे रे सा नि़
हामा बो लो	घऽ रा घाऽ	टा दी ऽऽ	खोऽ ई ऽ
	प		
सासा रे ग	म म ग सारे	सा सा −	सा सा −
हामा बो लो	घऽ रा घाऽ	टा दी ऽ	खो ई ऽ
	ध		ग
धध ध ध	प प म मग	रे प म	ग रे रे सानि़
हामा बो लो	घऽ रा घाऽ	टा दी ऽ	खो ईऽ ऽऽ

('हामा बोलो...' दूसरी बार की तरह गाइए।)

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निचले क्षेत्रों के गीत

४२. महीने (चैत्र मास) का गीत : हरे रामन जी, हरे राम का नाम।

नि़ नि़ नि़ – सा सा सा – – – रे ग रे – सा नि़ नि़ – – प़
ह रे रा ऽ म न जी ऽ ऽ ऽ, ह रे रा ऽ म का ना ऽ ऽ म

प़ – प़ – नि़ – नि़ – सा – सा सा सा – सा – सा – सा – सा –
रा ऽ में ऽ पा ऽ ई ऽ रा ऽ म क ली ऽ जी ऽ द्यो ऽ तों ऽ ने ऽ

सा – सा – – – – सा
कं ऽ घा ऽ ऽ ऽ ऽ र

सा सा – सा रे – म – प – प – प – प प –
ध ड़ा ऽ जो पा ऽ या ऽ पां ऽ जे ऽ पां ऽ ड में ऽ

प प प – प – प – प प प ध प म – – – ग रे रे
ग ढ़ ल़ ऽ का ऽ प्री ऽ त न का ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ल

रे रे ग – म – ग रे सा – – सा सा – सा –
सु ख अं ऽ बे ऽ सु ख डा ऽ ऽ लि ए ऽ जो ऽ

नि़ सा – सा रे ग म – ग रे सा नि़ – – – – प़
सु खे ऽ तुम्हा ऽ ऽ ऽ री ऽ सि या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

—शेष चरण भी ऐसे गाए जाएंगे।

अंतिम पंक्ति इस प्रकार गाई जाएगी—

नि म़

प़ प़ – – प़ – ध़ ध़ प़ – म़ प़ नि़ – नि़ सा – रे गरे सानि़

हा मे ऽ ऽ आ ऽ ए ऽ ऽ ऽ चै ता रा ऽ ना ओं ऽ बे ऽऽ ऽऽ

नि़ नि़ सा – – –
सु णां दे ऽ ऽ ऽ!

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४३. 'चैत्र' गीत : (ऋतु पूजन) हां रे, रित बी ना मौली,
जो देवा बे सुहावणी !

नि नि नि नि नि सां – – नि निध धप म – ग रे – –
हां रे रि त बी ना ऽ ऽऽ मोऽ लोऽ जो ऽ दे वा ऽ ऽ

म म
गम गग रे सा नि़ – – प़ – नि़ | सा – रे गगरे
ऽऽ वेऽ ऽ सु हा ऽ ऽ ऽ ऽ व | णी ऽ रे ऽऽऽ

सा – – रेम –ग रे म | प नि –नि निसां – सांसां –नि
ना ऽ ऽ भाइया ऽऽ ऽ ए | आ ई ऽबां रित ऽ मेरे ऽऽ

प म
निध मगरे ग – गम प धनिं | धध – –नि प –मग रेसा रेग
बाऽ लीऽऽ ऽ ऽ नाऽ हां ऽब | संता ऽ ऽऽ ऽ ऽऽऽ ऽऽ हरे

सा – – निनि निनि – नि, सां | –निध धप– पम– मग रे –गम मगरे,सा
ना ऽ ऽ हेस मुद्रा ऽ के, री | ऽजिऽ गाऽऽ देऽऽ हुंदा ऽ ऽऽऽ सेऽऽ,स

नि़ –प़ नि़ नि़सा – रे मगरे | सा – – रेम –ग रे –म
बा ऽऽ ल फुलो ऽ रे ऽऽऽ | ना ऽ ऽ भाइया ऽऽ ऽ ऽए

'कमल...' को 'आई रित बी...' की भांति गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४४. पनिहारा वर्ग की 'छिंज' :   बागां देया भगवाना भगवाना,
भला ओ बागें क्या रस मेवे।

	रे
प़ – नि॒ नि॒ – नि॒ –	सा – म म – ग॒ सा
बा ऽ ऽ गां ऽ दे ऽ	या ऽ ओ भ ऽ ग ऽ
	रे
रे – सा सा – – –	– – म म – ग॒ सा
वा ऽ ऽ ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ भ ऽ ग ऽ
ग	सा
रे – सा सा – रे –	नि॒ – रे रे – रे –
वा ऽ ऽ ना ऽ भ ऽ	ला ऽ ओ बा ऽ गें ऽ
	ग सा ग
ग॒ – – रे – नि॒ –	सा रे – ग॒ रे रे रे रे
क्या ऽ ऽ र ऽ स ऽ	मे वे ऽ ओ ऽऽ ऽ ऽ
सा	
नि॒ – – ध़ – नि॒ सा	
बा ऽ ऽ गां ऽ दे ऽ	या……………(पूर्ववत)

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

४५. लोरी :   निदे राणिए आई जा,
राजे नू सुलाई जा।

सा		सा
सा ग॒ रे सा सा सा	नि़ सा ग॒ रे रे – –	सा ग रे सा नि़ नि़
निं दे ऽ रा णि ए	आ ई ऽऽ जा ऽ ऽ	रा जे ऽ नू ऽ सु
सा ग॒ रे सा – –		
ला़ ई ऽ जा ऽ ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४६. गूजरी' : (प्रातःकालीन एक भजन)

चंदे दीया चानणिया,
तार्‍यां दीया लोई ।

— — — सा — सा —	सा सा — रे — म —	प प — प — प —
ऽ ऽ ऽ चं ऽ दे ऽ	दी या ऽ चा ऽ न ऽ	णि या ऽ ता ऽ र्‍यां ऽ
प		
प प — म — नि —	नि ध — प — नि —	ध प — म — — —
दी या ऽ लो ऽ ऽ ऽ	ई ऽ ऽ गु ऽ ज ऽ	रि या ऽ नौ ऽ ह्‌ ऽ
सा	सा	ग
रे — रे म — ग —	रे सा — सा — — —	सा रे — सा — — —
ण ऽ सं जो ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ श्या ऽ ऽ ऽ
		ध
नि ध़ — प़ — ध़ सा	सा सा म म — म —	म प — म — ग —
मा ऽ ऽ हां ऽ जी ऽ	को ई ऽ गु ऽ ज ऽ	री या ऽ नौ ऽ ह्‌ ऽ
सा रे	सा ग	
रे — रे म — ग —	रे सा — सा — रे —	
ण ऽ सं नो ऽ ऽ ऽ	या ऽ ऽ जी ऽ ऽ ऽ	श्यामा हां जी कोई...

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

४७. चमासा गीत : बार्‍हें बरसें कंत घर आया...।

सा म ग म	प प प प	प ध म म	प ध नि ध
बा ऽ र्‍हें ऽ	ब र सें ऽ	कं त घ र	आ ऽ या ऽ
प ध म म	ग ग सा रे	म — — प	ग मग रेसा रे
आ ऽ ई र	ह्‌या ऽ ठ डे	बा ऽ ऽ ग	म रुऽ एऽ दी
	सा	ध	
ग मग रे सा	ध़ — सा रे	म — — प	ग मग रेसा रे
छा यांऽ ओ बा	री ऽ मे री	जा ऽ ऽ न	म रुऽ एऽ दी
	सा		
ग मग रे सा	ध़ — — —		
छा यांऽ ओ बा	री ऽ ऽ ऽ		

— शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४८. 'पहिया' गीत : (पहिया खेलते समय)

बड़े घरे राजे बेह्ड़े सलामियां...।

सा – रेध़ सा – रेध़	सा – रेध़ सा – रे	साध़ सा – रेग ग रे
ब ऽ डेऽ घ ऽ रेऽ	रा ऽ जेऽ बेह् ऽ ड़े	सऽ ला ऽ मिऽ यां ऽ
रेग ग रे रेग ग रे	गग रे ग म ग –	गग रे ग मम ग रे
भाभि या ऽ कांऽ तो ऽ	बेल णु ए छा या ऽ	फुल णु ए जड़ त ज
ग – – म ग रेरे	सा नि़ –रे रे – –	
ड़ा ऽ ऽ ओ ना चर	पहि या ऽऽ रे ऽ ऽ	
सा नि़ –सा म ग	म ग रे ग – प	म ग रे रेग ग सा
का हे ऽ दी ए ऽ	ओ ऽ ब री ऽ नी	ओ ऽ ब रीऽ बा री
रे रे ग म ग रे	ग – – म ग रेरे	
का हे दे ख़ ब ग	डे ऽ ऽ ओ ना चर	पहिया रे...पूर्ववत गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

४९. पहिया गीत : (ससुराल में खेल की याद के समय)

चंदे दी चानणी, चंदे दी चानणी।

स्थाई :

	म ध	
– – – रे म म प	ध – प म – प –	मरे – – रे म म प
ऽ ऽ ऽ चं ऽ दे ऽ	दी ऽ ऽ चा ऽ न ऽ	णीऽ ऽ ऽ स र प र
ध – – प – मग –	नि – सां ध – प –	मरे – – रे म म प
पहि ऽ ऽ या ऽ आऽ ऽ	मां ऽ ऽ कु ऽ ड़ि ऽ	याऽ ऽ ऽ खे ऽ ल ण
नि ध		
ध – – प म प म	म – – – – – –	
नूं ऽ ऽ जां ऽ दि ऽ	यां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा :

	म ध म	
– – – रे म म प	ध प – म – प प	मरे – – रे म म प
ऽ ऽ ऽ आ ऽ म्मा ऽ	दे ऽ ऽ आं ऽ ग ऽ	णेऽ ऽ ऽ बा ऽ पू ऽ
म ध	म सा	प
ध – प म – प –	ग – – रे – सा –	ध – – प – मप –
दी ऽ ऽ दे ऽ व ऽ	ली ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	बौह् ऽ ऽ त ऽ खेऽ ऽ
म		नि ध
नि – सां ध – प –	मरे – – रे म म प	ध – – प म प म
ली ऽ ओ सा ऽ व ऽ	रेऽ ऽ ऽ खे ऽ ल ण	ना ऽ ऽ दें ऽ दि ऽ
म – – – – – –		
या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

५०. 'संध्या' गीत (आरती) : हरि संध्या सिमरो मंदर को मैं जाती।

स्थाई :

	म			सा	
रे रे –	प –	म –	रे रे सा	नि –	– नि
ह रि ऽ	सं ऽ	ध्या ऽ	सि म ऽ	रो ऽ	ऽ मं
			ध		
सा सा –	रे म	– प	प – म	म –	– –
द र ऽ	को ऽ	ऽ मैं	जा ऽ ऽ	ती ऽ	ऽ ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा

{रे}म	–	–	म	–	प	नि	नि	नि	–	{नि}सांनि	नि	नि	ध
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	दा	ऽ	दी	वा	ऽ	राऽ	म	जी	ऽ
(प)	–	म	म	–	–	प	{ध}प	–	म	म	–	–	–
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	ऽ	दी	बा	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	ऽ
{प}नि	–	–	{नि}सां	नि	नि	ध	(प)	–	म	म	–	–	मरे
का	ऽ	ऽ	हे	ऽ	दा	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	जऽ
रे	म	–	म	–	{रे}म	प	{ध}प	–	म	म	–	–	मरे
ले	ऽ	ऽ	दि	ऽ	न	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ती	ऽ	ऽ	जऽ

—ले दिन राती...' को इसी प्रकार दोहरा क र स्थाई पूर्ववत गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

५१. 'धुप्पू' : धुप्पू तां मेरा पंजरंगा, भाई पंजरंगा...।

सा	रे	सा	सा	–	सा	प	प	–	–	प	–	प	म	प	ध	प	प	म	म	ग
भा	ऽ	ऽ	बो	ऽ	जो	ऽ	जां	ऽ	ऽ	दी	ऽ	कु	ऽ	म्हा	ऽ	,र	ह	ऽ	ट	ऽ
ग	–	–	प	–	प	पम	प	ध	प	प	म	म	ग	ग	–	–	–	–	–	–
ड़े	ऽ	ऽ	भा	ऽ	ई	कुऽ	म्हा	ऽ	,र	ह	ऽ	ट	ऽ	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	प	–	प	म	प	ध	प	प	–	{ध}प	म	{प}म	ग	–	ग	–	सा	–
मैं	ऽ	ऽ	बी	ऽ	ग	ई	ओ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ज	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ड़े	ऽ	कि	ऽ
ग	प	–	प	–	–	म	प	ध	प	म	–	म	ग	ग	–	–	प	–	प	म
स	हि	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	धु	ऽ	ऽ	प्पू	ऽ	ऽ	ऽ	लै	ऽ	ऽ	भा	ऽ	ई	ऽ

'धुप्पू लै...पूर्ववत दोहरा कर शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५२. बरलाज :

(i) रमैण : एवे भाया रामा लखणा, नठे जाओ जंयला ओ।

सा सा सा सा – – रे ग रे सा नि ध़ प़ – – – सा सा सा सा
ए वे भा या ऽ ऽ ऽ ऽ रा म ल ख णा ऽ ऽ ऽ न ठे जा औ

नि़ ग
– – – सा रे रे सा सा सा – – –
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ जं ग ल़े ओ ऽ ऽ ऽ,

सा नि़ नि़
रे रे रे रे ग रे सा सा रे सा – – – सा सा – – – सा रे
पं ज व टी ऽ डे रा वे ऽ ज ऽ ऽ ऽ मा ओ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

रे रे सा – नि़ –
द शु औ ऽ खे ऽ,

नि़
रे रे ग सा – सा – – सा रे रे सा – – – सा –
हो ए ऽ लं ऽ का ऽ ऽ ऽ ऽ ख ब ऽ ऽ ऽ रो ऽ,
नि़ सा रे – सारे ग सारे ग रे सा सा – रे सा – – सा सा – – – –

सि या रैंह् ऽ रेऽ ऽ ऽऽ ऽ जं ग लो ऽ ऽ दे ऽ ऽ आ ए ऽ ऽ ऽ ऽ,

—दूसरा दल दोहराता है। शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाते हैं।

(ii) छोकड़ा : बोले राणिए रोचना दे हाया—२।

– – सा ऽ ऽ बोले	नि़ सा रे रा णि ए	रे रे सा रोच ना ऽ	सा रे ग दे ऽ ऽ
ग रे रे सा हा या ऽ	नि़ नि़ सा रा णि ए	ग रे रे सा रोच ना ऽ	सा – – दे ऽ ऽ
सा सा – हा या ऽ			

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(iii) रथौल : राम देखो जंगले चला जाओ
भले जी।

ध़
सा – सा सा, सा सा, सा सा, सा सा
रा ऽ म दे खो जंग लो़ च ला जा ओ।

सा सा – सा
भ ले ऽ जी,

—अगली पंक्तियां भी इसी प्रकार और फिर…

सा – – सा सा नि़ नि़ नि़ नि़ नि़ ध़ ध़ ध़ प़ प़ प़
ना ऽ ऽ दे ,ख सुई नू था अर ज क रो तो क्या बो लूं,

ध़ ध़ प़ प़ –प़
बो लो म्हा रा ऽज।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाते हैं।

५३. 'रली़' के गीत : (नहाने जाते समय का गीत)
हे बाही थी अमली जम्या था अप्पू बारी,
अमली मंगदी बधाई रे।

–	–	–	–	–	–	रेध	धम	मध	धप	म	मग	रेग	रेसा
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हेऽ	बाऽ	हीऽ	थीऽ	अ	मऽ	लीऽ	ऽऽ
सा	सा	सारे	रे	–	रे	रेसा	धम	मध	धप	म	मग	रेग	रेसा
ज	म्या	थाऽ	अ	ऽ	प्पू	बारी	अऽ	मऽ	लीऽ	मं	गऽ	दीऽ	बऽ
म	–	ध प	म रे	–	–	रेध							
धा	ऽ	ई	रे	ऽ	ऽ	ऽऽ							

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाइए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५४. 'लोहड़ी' गीत : लोहड़ी आई भाभी लोहड़ी आई।

रे	–सा	नि	–	सा	सा	सा	ग	रे	–सा	नि	–	सा	–	–	–
लोह्	ऽऽ	ड़ी	ऽ	आई	ऽ	भा	भी	लोह्	ऽऽ	ड़ी	ऽ	आई	ऽ	ऽ	ऽ

—अगली पंक्तियां इसी प्रकार गाकर, अंत में...

–	–	नि	नि	सा	नि	ध	प	म
ऽ	ऽ	भा	भी	छण	मण	कर	दी	आई।

५५. सफाई के समय का गीत : बौह् टड़िए सूह्ण ल्यो—२ !

सा	सा	ग	–रे	सा	रे	सा	ध		
बौह्	टड़ि	ए	ऽऽ	सू	ह्ण	ल्यो	बौह्	टड़िए...इसी प्रकार	दोहराइए।
म	म	ग	रे	सा	सा	सा	ध		
सूह्	यां	घर	घर	च	न्ना	ओ	बौह्	टड़िए – – – –	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

५६. फूल चुनते समय का गीत :
फुल चगंदिए दाड़ बाड़लिए महाराज जी,

				सा	सा	–	रे	मम	मग	रे	रेसा	सा	रे	–	सा
				फु	ल्ल	ऽ	च	गंदि	एऽ	ते	रेऽ	दा	ड़	ऽ	बा
सा	रे	रेग	–	रे	–	–	–	रे	रेसा	सा	–रे	रेग	रे	–	–
ड़	लि	एऽ	ऽ	ए	ऽ	ऽ	ऽ	म	हाऽ	रा	ऽज	जीऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	रे	रेसा	सा	रे	रे	रेग	मग	रे	–रे	सा	–	–	–	–	–
ऽ	फे	रऽ	ना	आ	ऊं	तेऽ	रेऽ	बा	ऽग	में	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

५७. 'ऐत-सोम' खेलने जाते समय का गीत :

झोलिया झोलिया धूमां पइयां।

− − सा सा	सारे रेध़ ध़ सा	रेग गसा −ग गग	रे −सा रेग गग
ऽ ऽ झोलि या	झोलि याऽ धू मा	पइ यांऽ ऽऽ मेरी	झो ऽह्वा णीऽ मर
रे −सा सा −	सा सासा सारे रेध़	सा −सा सारे रेध़	
दा ऽनि या ऽ	अं दर बैंऽ ठीऽ	सी ऽण लऽ गीऽ	सीण लगीं— दोहराइए।
सा रेरे ध़ सा			
बा हू़र धू मा	पइयां···पूर्ववत गाइए।		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

५८. 'आल-पाल' खेलने जाते समय का गीत :

घोड़ी तेरी बे वीरा, सोह्णी बणदी।

− − − ग − म −	प − प ध प म ग	(ग) रे − ग म − नि ध	प − म म − ग म
ऽ ऽ ऽ घो ऽ ड़ी ऽ	ते ऽ री बे ऽ बी रा	सो ऽ ह् णी ऽ ऽ ऽ	ब ऽ ण दी ऽ ऽ ऽ
प − प ध प म ग	(म) रे − म म − ग म	प − प ध प म ग	(म) रे रे ग म − नि ध
का ऽ ठि यां ऽ दे ऽ	ना ऽ ल मैं ऽ ब लि	हा ऽ री ओ ऽ मे रा	सु र ज णा ऽ ऽ ऽ
प − म म − ग म	प − प ध प म ग	(म) रे − ग म − नि ध	प − प ध प म ग
बा ऽ गों बी ऽ चों ऽ	बी ऽ च ल्या ऽ ओ ऽ	चो ऽ ऽ ट ऽ न ऽ	गा ऽ रें यां ऽ घ र
(म) रे − ग म − नि ध	प − प प − म गप	प − − प − प −	ध − प म − म ग
ढूं ऽ ढ णा ऽ ऽ ऽ	ढूं ऽ ढ णा ऽ जी ऽऽ	चो ऽ ऽ ट ऽ न ऽ	गा ऽ रे यां ऽ घ र
(म) रे − ग म − − −			
ढूं ऽ ढ णा ऽ ऽ ऽ			

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५९. रात के समय का गीत :

पारलिए धारे ओ डरावणिए,

रे	–	रे	रेग	रेग	–सा	सा	–म	म	–ग	रे	मग	म	–ग	रे	सा
पा	ऽ	र	लिया	धाऽ	ऽऽ	रे	ऽऽ	ओ	ऽऽ	ऽ	डऽ	रा	ऽऽ	व	णि
नि़	–	–	सा	म	रे	–	मग	म	–ग	रे	सा	नि़	–	–	प़
ए	ऽ	ऽ	कि	ओ	ऽ	ऽ	डऽ	रा	ऽऽ	व	णि	ए	ऽ	ऽ	कि
नि़	सा	रेम	मग	रे	सा	सारे	(ग) रेसा	सा	–	–	रेसा	(सा) नि़	–	प़	प़
ध	ख	जीऽ	ओऽ	पेंइँ	ऽ	ऽऽ	यऽ	डे	ऽ	ऽ	ऽऽ	भे	ऽ	ऽ	ज

—दो बार गाइए। शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

६०. 'गुग्गा' (भारथ) : ओ दोनो भैंड़ मसेरे अरजण-सुरजण,
दिलिया बाछे सदाए ओ।

–	ग	ग	ग	रे	ग	ग	ग	ग	–	ग	–	सा	(सा) रे	रे	ग
ऽ	ओ	दो	नो	भैं	ऽ	ड़	म	से	ऽ	रे	ऽ	अ	र	ज	ण
सा	सा	सा	नि़	सा	रे	रे	रे	(सा) रे	ग	ग	सा	सारे	ग	ग	–
सु	र	ज	ण	दि	लि	या	ऽ	बा	ऽ	छे	स	दाऽ	ऽ	ए	ऽ
सा	–	ग	ग												
ओ	ऽ	बो	ले	बाछा		–	–	–	–						

दूसरा दल पूर्ववत गाता है।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६१. ब्यूहाई (पुत्र जन्म के अवसर का गीत) :

सखि आज बधाई बाजी नंद द्वार।

स्थाई :

सा	–	म	–	ग	रे	ग	–	(रे)सा	–	नि़	–	सा	रे	रे	सा
स	ऽ	खि	ऽ	आ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	व	ऽ	धा	ऽ	ई	ऽ
सा	–	म	–	ग	रे	ग	ऽ	सा	–	नि़	–	सा	–	–	सा
बा	ऽ	जी	ऽ	नं	ऽ	ऽ	ऽ	द	ऽ	द	ऽ	वा	ऽ	ऽ	र

अंतरा :

प़	प़	प़	नि़	नि़	–	नि़	–	सा	–	सा	सा	सा	–	रे	म	
भ	र	भा	ऽ	दों	ऽ	दी	ऽ	रै	ऽ	न	अं	धे	ऽ	री	ऽ	
ग	रे	रे	–	ग	रे	सा	नि़	सा	–	–	सा					
ज	न	म्या	ऽ	कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	ऽ	ऽ	र					भर भादों · दोहराए।
रे	रे	रे	–	ग	रे	सा	नि़	सा	–	सा	सा	–	सा	रे	म	
भ	र	मा	ऽ	दों	ऽ	दी	ऽ	ति	ऽ	त्थ	अ	ऽ	ष्ट	मी	ऽ	
ग	रे	ग	रे	सा	–	नि़	–	सा	रे	रे	सा	सा	–	रे	म	
रो	ह्	ऽ	ऽ	णी	ऽ	न	ऽ	छ	ऽ	त्त	र	बु	ऽ	ध	ऽ	
ग	रे	ग	रे	सा	–	नि़	–	सा	रे	रे	सा	सा	–	म	–	
वा	ऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	ब	ऽ	धा	ऽ	ई	ऽ	बा	ऽ	जी	ऽ	
ग	रे	ग	–रे	सा	–	नि़	–	सा	रे	–	सा					
नं	ऽ	ऽ	ऽऽ	द	ऽ	द	ऽ	वा	ऽ	ऽ	र					

—सखि आज बधाई · पूर्ववत गाकर, शेष चरण भी इसी प्रकार गाइए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६२. वधाई :

द्वारे नंद के सिवजी ने नाद बजायो।

— — — नि॒	सा (ग॒) — मप	प — — —	मम ग॒ — पप
ऽ ऽ ऽ द्वा	रे नं ऽ दऽ	के ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ सिव
प प — मं मं	ग रेग॒ सा सा	नि॒ — — —	सा सामग॒ नि॒
जी ने ऽ नाऽ	ऽ दऽ ऽ ब	जा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽऽ ऽ यो

—द्वारे नंद के...पूर्ववत गाइए।

— पप
सि ब

पनि —नि — नि	सांनि धप — प	मं — — प	— — मंध (प)
जीऽ ऽने ऽ ना	ऽऽ दऽ ऽ ब	जा ऽ ऽ यो	(दोहरा कर) ओऽ जी
— — धप ग॒	ग॒ मं — पध	(प) — — —	
ऽ ऽ ऽऽ द्वा	रे न ऽ दऽ	के ऽ ऽ ऽ	...पूर्ववत गाइए

अन्तरा :

मं
प
ले

ग॒ ग॒ म प	प नि — नि	सां — — —	— प — प
भि च्छा ऽ नि	क ली ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ. ऽ नं
नि — — नि	सांनि धप — —	मं — — प	— — — धप
द ऽ ऽ रा	ऽऽ नीऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ लेऽ

भिच्छा...पूर्ववत दोहराइए। फिर 'सिब दरसण को...' को दूसरे ढंग से गाई गई पंक्ति—'सिवजी ने नाद...' की भांति गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६३. नैणा देवी की भेंट :

कि जानो नैणा ओ देविए,

					नि		सा								
—	—	—	सा	सा	सारे	(रे)	—, नि	नि	—	नि	—	रे	—	(रे)	सारे
ऽ	ऽ	ऽ	कि	जा	ऽऽ	नो	ऽ,ऽ	नै	ऽ	णा	ऽ	दे	ऽ	रि	ऽऽ
					नि	ग									
रे	—	—	गसा	सा	सारे	रे	रेसा	नि	—	नि	—	सा	सा	सा	गसा
ए	ऽ	ऽ	ऽऽ	मा	ऽऽ	ता	ओऽ	मे	ऽ	री	ऽ	ब	सी	ओ	कऽ
		ग													
रेसा	रे	रेसा	सा	सा	—	—	सा								
ल्हूऽ	ऽ	रऽ	रे	हां	ऽ	ऽ	कि								

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

६४. 'गंगी' :

रंग देई लैणा हरा मुंगिया,

ध़   रे   ध   ध
सा — सा — — सा — रे म — म — म — प ध — पम प
रं ऽ ग ऽ ऽ, दे ऽ ई लै ऽ णा ऽ ह ऽ रा मूं ऽ गिऽ ऽ

प   ग
ध — — — — म — म — प म — रे —
याऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ओ ऽ ऽ रं ऽ ग ऽ,

—देई लैणा...दोहराइए।

ध   म
म — प म — म —, मप ध ध म — (प) — रे
पा ऽ र ना ऽ ते ऽ वाऽ ऽ र आ ऽ ई ऽ जा,

'नेड़े आई कन्ने...' को पहली पंक्ति की भाँति गाइए।
—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६५. गिद्धे : (नृत्य गीत)

तू बे जानी मेरे गलो रा हार।

स्थाई :

			ध	म	सा					ध	म		नि		
–	म	मप	प	मरे	–रे	रे	ध	ध	–	प	प	ध	–,ध	(प)	पम
ऽ	तू	बेजा	नी	मेऽ	ऽरे	ऽ	ग	लों	ऽ	रा	ऽ	हा	ऽ,ऽ	ऽ	रऽ

—तू बे...पूर्ववत दोहराइए।

अन्तरा :

		प								सां				सां	
–	म	–ध	धनि	सां	सां	–सां	सां	–	नि	निध	प	धनि	सांनि	धप	ध
ऽ	तेरी	ऽते	रीऽ	ऽ	खा	ऽति	र	ऽ	खा	ऽना	ब	नाऽ	ऽऽ	याऽ	ऽ
ग															
ऽ	...इसी प्रकार			दोहराइए।								–		(ध)	–
														या	ऽ
ध	(प)	–	प	प	–(प)	–	प	ध	ध	–प	(प)	ध	–	(प)	पम
खाई	के	ऽ	ख	लाई	ऽके	ऽ	तू	लं	घी	ऽजा	णा	पा	ऽ	ऽ	रऽ

...तू बे जानी...पूर्ववत गाइए। शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

६६.

गल्लां लाई लौ मेरे साजना,

स्थायी :

–	–	नि़	सा	रे	–रे	–	प	मरे	–रे	–	सानि़	सा	–	–	–
ऽ	ऽ	ग	ल्लां	लाई	ऽलो	ऽ	मे	रेऽ	ऽसा	ऽ	जऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
				नि़		म									
प़सा	सा	सा	सा	सा	–रे	रे	सा	नि़प़	–	नि़	सा				
अऽ	सां	केह़	ड़े	रो	ऽज	मि	ल	णाऽ	ऽ	ग	ल्लां	लाई लो···दोहराइए।			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा :

–	मरे	–म	म	प	–	प	प	–	प	प	प	प	पधप	(म)	गरे
ऽ	तेरी	ऽते	री	खा	ऽ	त	र	ऽ	खा	णा	ब	णा	ऽऽऽ	या	ऽऽ

—दोहराइए। फिर अगली पंक्ति को स्थाई की भांति गाइए।
—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएगे।

माहंगी रा पेऊका :

मांगी रा पेवका, उच्ची धारा रे गार्वे,

स्थाई :

					म										
–	नि	रे	रे	–	ग	(रे)	सा	–	–	–	रे	नि	(ध)	–	–
ऽ	मां	गी	रा	ऽ	पे	व	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हां	ऽ	ऽ	ऽ
					म										
–	नि	रे	रे	–	ग	(रे)	सा	–	–	–	–	–	सा	सा	सा
ऽ	मां	गी	रा	ऽ	पे	व	का	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मां	गी	रा
गम	पध	निसां	(सां)	–	नि	धप	मग	ग	–	(म)	–	ग रे	सा नि	ध	–
पेऽ	वऽ	काऽ	ऽ	ऽ	उ	चीऽ	धाऽ	रा	ऽ	रे	ऽ	गाऽ	वेऽ	ऽ	ऽ

—मांगी रा पेऊका...पूर्ववत गाइए।

अन्तरा :

						नि				नि		म			
–	पध	–ध	,पम	–	पध	–(सां)	सां	नि	धप	धध	प	मगम	सा	–ग	म
ऽ	मांगि	ऽए	,ऽऽ	ऽ	दाड़ि	ऽए	ऽ	ऽ	बऽ	ड़ेऽ	घ	राऽऽ	ऽ	ऽरी	ए
प	प	–	–												
धी	ए	ऽ	ऽ	दोहरा कर, फिर···								मग	(रे)	–	सा
												होऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—'पाखले पावणे...' स्थाई की भांति गाइए।
—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६७. विवाह गीत : 'उबटन' मलने के समय का गीत :

कणक कचरुआ मंदा कि घ्यू रलाइए

प़ प़ – प़ ध़ ध़ सा	सा सा – सा ग रे म	ग सा ,सा ध़ नि प़ प़	ध़ सा – रे म म ग
क ण ऽ क ऽ क ऽ	च रू ऽ आ ऽ ऽ ऽ	मैं ऽ ऽ,ऽ दा ऽ की ऽ	घी ऽ ऽ यू ऽ र ऽ
			रे
म रे – ग प म ग	म रे – – – – –	रे – रे रे – रे –	रे म रे रे ग रे म
ला ऽ ऽ ई ऽ ए ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	कौ ऽ ण इ ऽ स ऽ	ब ट ऽ णे ऽ ऽ ऽ
	रे		
ग सा –,सा ध़ नि ध़ प़	ध़ सा सा ग रे म –	ग सा नि़सा सा – – –	
जो ऽ ऽ,ऽ गा ऽ कि ऽ	ब ट ऽ णा ऽ ऽ ऽ	की ऽ जिऽ ए ऽ ऽ ऽ	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

६८. घोड़ी :

किधर देसे ते घोड़ली आई, मैं बारी जां,

– – – रे – रे –	रे ग सा सा – रे म	म – ग रे म म ग	रे – सा नि़ – सा –
ऽ ऽ ऽ कि ऽ ध ऽ	र ऽ ऽ दे ऽ से ऽ	ते ऽ ऽ घो ऽ ड़ ऽ	ली ऽ ऽ आ ऽ ई ऽ
रे म ग रे – सा –	नि़ – – – – रे –	रे म ग रे – सा –	नि़ प़ – नि़ – सा –
मैं ऽ ऽ बा ऽ री ऽ	जां ऽ ऽ ऽ ऽ भ ऽ	ला ऽ ऽ कि ऽ ध ऽ	र ऽ ऽ दे ऽ से ऽ
		ग	
रे – सा रे म म ग	रे – सा नि़ – सा रे	रे म ग रेग रे रे सा	सा – – रे – रे रे
नूं ऽ ऽ जा ऽ णा ऽ	म ऽ ऽ ने ऽ रि ऽ	ए ऽ ऽ कुंऽ ऽ द ऽ	नो ऽ ऽ द ऽ ख ण

देसे ते...पूर्ववत गाइए । शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे !

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६९. सुहाग :

सुण्या जी सयाण्या कंता,

ग रे सा साग सा सा –	रेम म – म ध पध म	प म – म ध पध म
सु ण्या ऽ जीऽ ऽ स ऽ	याऽ ण्या ऽ कं ऽ ताऽ ऽ	मे री ऽ गौ ऽ रांऽ ऽ
म ग रेसा ग रे (सा) नि ध़	नि सा – म –,प ग रे ग सा	सारे सा ग रे नि प़ नि
या णी ऽऽ नूं ऽ को ई	चं गा ऽ ब ऽ,ऽ रऽ ऽऽ	चाऽ हि ऽ ए ऽ ऽ ऽ
नि सारे नि नि – प़ नि	नि सारे नि नि – – नि	रे रे (म) ग सा – रे रेम
हिं चऽ ऽ ला ऽ सि री	भो लेऽ ऽ ना ऽ ऽ थ	घ र ऽ चं ऽ गा ऽऽ
म पध म म – म –	म मप म प नि (ध) –ध प प म	म मध म मरे – – –
व रऽ ऽ चं ऽ गा ऽ	कु लऽ ऽ सुऽ ऽऽ च्चाऽ ऽ	चा हिऽ ऽ एऽ ऽ ऽ ऽ
रे रे – (सा) ग रे (नि) ध़	नि सा – म – ग साम	म मध म म – ग रे ग स
हिं च ऽ ले ऽ दी या	क न्या ऽ नूं ऽ को ईऽ	सं भूऽ ऽ ब ऽ रऽ ऽऽ
सारे सा ग रे नि प़ नि		
चाऽ हि ऽ ए ऽ ऽ ऽ		

...हिंचला श्री भोलेनाथ'''पूर्ववत गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७०. 'बधावा' : चारों बधावे सबद सुहावे

नि़	धसा	सा	ग रे	गसा	सा	साम	मम	ग	रेम	म	पम	गसा	ग रे
चा	रोंऽ	ब	धाऽ	ऽऽ	वे	ऽऽ	सब	द	सुऽ	हा	ऽऽ	वेऽ	ऽऽ
(सा) ग	रे	निसा	सा	–	सा	ग रे	ग	सा	ग रे	गसा	ग	रे	–
चऊं	ही	देऽ	सां	ऽ	ते	ऽऽ	आ	ऽ	एऽ	राऽ	ऽ	म	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

७१. 'सिठणियां' :

सेर क चणेयां दाल मुइए

सा	रे	रे	ध़	ध़	सा	सा	–	रेग	–	ग	सारे	ग	–	–	सा
से	ऽ	र	क	च	णे	यां	ऽ	दाऽ	ऽ	ल	मुई	ए	ऽ	ऽ	ऽ
(ग) रे	सा	सा	सा	(ग) रे	ग	(रे) ग	सा	सा	रे	(ग) रे	सा	सा	–	–	–
रि	ऽ	झी	ऽ	को	ऽ	रि	या	ठी	ऽ	क	रि	या	ऽ	ऽ	ऽ

हाड़े करदा
सदके करदा } 'सेर क चणेयां' की तरह गाइए।
भिन्नता करदा

—शेष भाग स्थायी की भांति गाइए। शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

७२.

कुड़म झुड्डू चुली लगावे,

सा	सा	नि़	रे	रे	–रे	रे	सारे	रे	–रे	रे	सारे	म	मम	ग	रे
कुड़	म	झु	ड्डू	चुली	ऽल	गा	वेऽ	चुली	ऽल	ग	वेऽ	जो	रात	मा	चा
सा	नि़रे	रे	(ग) रे	सा	सा	सा	(ग) रे	सा	सा	–	–				
मा	ऱ्याऽ	रे	ऽ	आ	रे	ऽ	ऽ	आ	रे	ऽ	ऽ				

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७३. 'तोरन' का गीत :

तोरन बनैका आओ म्हारे,

रे			
ग रे सा सा – रे	रेग सा सा सा – रे	रेग रे सा सा – रे	रे –ग सा – – –
तो ऽ र ऽ ऽ ऽ	नऽ ऽ ब ऽ ऽ ऽ	नाऽ ऽ य ऽ ऽ ऽ	का ऽऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
रे			
ग रे सा – – रे	रे ग सा – रे रे	रे – रे – – –	
आ ऽ ओ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	म्हा ऽ रे ऽ ऽ ऽ	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

७४. नहाने के समय का गीत :

सेवा लाड़े दीए माए,

		सा	
प़ नि प़ प़ – प़ –	नि़ – – सा – रे –	ग – – रे – नि़ –	– – – सा – ग रे
से ऽ ऽ वा ऽ ला ऽ	ड़े ऽ ऽ दी ऽ ए ऽ	मा ऽ ऽ ए ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ला ऽ ड़ा ऽ
	ग		
ग – – रे – सा नि़	सारे – सा सा – – –		
बाह् ऽ ऽ र ऽ ख ऽ	ड़ोऽ ऽ ऽ ता ऽ ऽ ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

७५. 'सांद' का गीत :

सांदी बहिठेया बाह्मणा,

सा – – रे – रे ध़	ध़ – सा सा – – ग	ग सा – – – ग रे
सां ऽ ऽ दी ऽ ब ऽ	हि ऽ ऽ ठ्या ऽ ऽ ऽ	बाह् ऽ ऽ ऽ ऽ म ऽ
	सा	प़
नि – – सा – रे –	नि – – ध़ – प़ –	ध़ ध़ सा सा – – –
णा ऽ ऽ तु ऽ झ ऽ	क्या ऽ ऽ ही ऽ चा ऽ	ई ऽ ऽ दा ऽ ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७६. 'सेहरा' चढ़ने का गीत : चुग ल्या री मालण चम्बे दीयां कलियां

	ध		
– गम रे ग	म प,प म मग	मरे रे रे रेसा	साग रेसा सा –
ऽ चुग ल्या री	मा ऽ,ऽ ल णऽ	ऽऽ च म्बे दीऽ	कऽ लिऽ यां ऽ
– – नि ध	निप प पध धसा	सा सा – –	धसा सा – रेम
ऽ ऽ बे व	णाऽ यो बेऽ बऽ	णा यो ऽ ऽ	अऽ च्छी ऽ बऽ
प			
मम मग रेग रेसा	सा – सा रेम		
णाऽ योऽ अऽ च्छीऽ	दो ऽ स्ती लऽ		

गायो...'बणायों' की तरह गाकर,
अगली पंक्ति भी इसी प्रकार गाई जाएगी। फिर—

प			
म म मग रेसा सा	– रेग रे सा	नि –ध ध निप	– प – धसा
गाऽ योऽ मेऽ रे	ऽ याऽ णे ब	ने ऽऽ दा ऽऽ	ऽ से ऽ हुऽ
सा रेसा नि ध			
रा ऽऽ बे व			

णायो वे बणायां···पूर्ववत गाइए।
—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

७७. 'तेल-तुलाई' के अवसर का गीत :

अंगण साडा कंगुग लिखेया जी

			म रे
सा – – सा ग रे सा	सा – – सा – – –	सा म – ग – म रे	रे रे – ग ग ग प
अं ऽ ऽ ग ऽ ण ऽ	सा ऽ ऽ डा ऽ ऽ ऽ	कुं ऽ ऽ गु ऽ ए ऽ	लि खे ऽ या ऽ जी ऽ
प – – म – ग –	रे – नि सा – रे म	म – रे रे ग नि सा	सा – – – – – –
आ ऽ ऽ ई ऽ म ऽ	हा ऽ ऽ ज ऽ न ऽ	बै ऽ ऽ ठे ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७८. 'मिलणी' के समय का गीत : मेरे रण बटुए दी डोर

– – नि़ सा	– रेरे रेम म	ग सारे ग –रे	सा – गरे रेनि़
ऽ ऽ मे रे	ऽ रण बऽ टु	ए ऽऽ दी ऽऽ	डो ऽ ऽऽ रऽ
नि़ नि़रे रे रे	ग सारे सा सा	नि़ –प़ नि़ सा	
अ च्छाऽ मे रा	र णऽ ब टु	आ ऽऽ मे रे	रण बटुए·· पूर्ववत गाइए।
सा सा सा सा	(नि़) सा (ग) रे रे सा	नि़प़ –,सा सा सा	
ज्यू णी म्हारे	आ ई रे बा	बाऽ ऽ कि अँ दर	बाड़ी रे बाबा 'आई'

—'रे बाबा'···अंत तक इसी प्रकार गाया जाकर, स्थाई पूर्ववत दोहराई जाएगी।

७९. 'तेल' का गीत : तेलिया मेलिया तेल ल्यावे,

म ग
सा – सा – –रे रे, ग – गरे रे – रेसा सा – नि़ –
ते ऽ लि ऽ ऽऽ या मे ऽ ऽऽ लि ऽ ऽऽ या ऽ ऽ ऽ,

म ग
नि़सा – सारे – रेग गरे रे – – –रेसा
तेऽ ऽ लऽ ऽ ल्याऽ ऽऽ वे ऽ ऽ ऽऽऽ,

नि़ ग रे
सा – सा – ,सारे रे – रेग – –रे रे – रेसा सा – सानि़ –
सा ऽ त ऽ ,ऽऽ सो ऽ, हाऽ ऽ ऽऽ ग ऽ ऽऽ णी ऽ ऽऽ ऽ,

ग
नि़सा – सारे – रेसा – नि़सा –
तेऽ ऽ लऽ ऽ पाऽ ऽ वेऽ ऽ!

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८०. 'लग्नो' के समय का गीत :

बाह्‌र आओ मेरी स्याम सुंदरी,

												म	
म	–	पम	पध	धम	पम	म	म	धप	पम	म	म	रे	–
बाह्‌ऽ	ऽ	रऽ	आऽ	ओऽ	मेऽ	री	स्या	ऽऽ	मऽ	सुं	द	री	ऽ
			प										
म	–	पम	ध	धम	पम	म	म	धप	पम	म	–	–	–
का	ऽ	ऽह्लु	ल	गऽ	नाऽ	नूं	आ	ऽऽ	एऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएँगे।

८१. लग्नो के समय का भजन (सुहाग) :

काहे के तोरन, काहे की बेदी

										ध					
–	सा	सा	रेग	ग	–	ग	मरे	ग	गप	प	प	म	–	गरे	ग
ऽ	का	हे	केऽ	तो	ऽ	र	नऽ	ऽ	काऽ	हे	की	बे	ऽ	दीऽ	ऽ
—इसी प्रकार				दोहराइए।											
						ध									
–	गप	प	प	पध	धनि	धप	प	(म)	–ग	रे	प	प	–	–	ग
ऽ	काऽ	हे	के	कऽ	लऽ	सऽ	ल	गा	ऽऽ	यो	ऽ	जी	ऽ	ऽ	ऽ
									ग	ध					
–	म	म	म	ग	म	रे	ग	मं	मप	प	म	म	–	गरे	ग
ऽ	च	लो	स	खी	ऽ	ह	रि	का	ऽऽ	मु	ख	दे	ऽ	खोऽ	ऽ
सा	सा	सा	रेग	ग	ग	–	–	–	गप	प	प				
ऽ	रं	ग	भऽ	व	न	ऽ	ऽ	ऽ	रंऽ	ग	भ				

वन हरि···को 'काहे के कलस···' की भांति गाकर, फिर 'रंग भवन पर समाप्त करिए। —शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

८२. 'लावों' (सप्तपदी) के समय का गीत :

रंग रसलाम पैंह्‌लड़ी ते मंगल गाएया

— — — म म म म	म — म म — — पम	ग — गरे रेम म ग रे
ऽ ऽ ऽ रं ग र स	ला ऽ म पैंह् ऽ ऽ लऽ	ड़ी ऽ तेऽ मंऽ ऽ ग ल
ग रे		
सा — रे रे रे — ग रे	रे रे रेप प ध प म	ग — रे सा — सा —
गा ऽ एऽ या ऽ गो ऽ	क ल तेऽ गो ऽ पि यां	का ऽ ह्न वा ऽ ला ऽ
ग ग ग रे ग पम म	ग — रेसा सा — सा म	म — म म म म रे
कृ श न ब्या ऽ हुऽ णे	आ ऽ एऽ या ऽ सि र	स्यू ऽ न सेह् ऽ रा ऽ
रे ग		ग
म म म म — म पग	ग — ग रे म ग रेसा	सा — रे रे रे — रे गरे
मु कु ट सा ऽ जे ऽऽ	अं ऽ ग कं ऽ च नऽ	झो ऽ लऽ णा ऽ रा ऽऽ
म		
रे — प प ध प म	ग — रेसा सा — सा —	ग ग गरे रे ग गप म
वी ऽ ते पू ऽ जो ऽ	लां ऽ वऽ पैंह् ऽ ली ऽ	कृ श नऽ अ म रिऽ त
ग —रे रेसा सा — — —		
बो ऽऽ लऽ णा ऽ ऽ ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

८३. 'सिरगुंदो' के समय का गीत :

जे तुसी चल्ले छैला नोकरिया

— — — ग — रे म	म — — सा — ग रे	— — — म — ग —
ऽ ऽ ऽ जे ऽ तु सी	च ऽ ऽ ल्ले ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ छै ऽ ला ऽ
म — — ध — प म	म प म ग — रे म	म — — सा — ग रे
नो ऽ ऽ क ऽ रि ऽ	या ऽ ऽ सा ऽ नू ऽ	क्या ऽ ऽ ही ऽ ऽ ऽ
म ग — — — — —	म — — ध — प म	म — — ग — रे म
ले ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	औं ऽ ऽ गे ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ जे ऽ मैं ऽ

—'चल्या नाजो....' पूर्ववत गाइए। शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८४. 'सुतराात' नहाने के समय का गीत :

तण न्हावण चल्ली

— — — साग रे नि़ —	सा — — रे — ग —	सारे सा — सा — — —
ऽ ऽ ऽ तऽ ऽ ण ऽ	न्हा ऽ ऽ ऽ व ण ऽ	चऽ ऽ ऽ ल्ली ऽ ऽ ऽ

- —इसी प्रकार दोहराइए।

म — — म — म ग	म प म ग — रे —	सा — — सा रे रे म
बी ऽ ऽ ण ऽ र ऽ	खी ऽ ऽ छ ऽ ट ऽ	का ऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ
म प म ग — रे —		
जी ऽ ऽ त ऽ ण ऽ	न्हावण चल्ली…पूर्ववत गाइए।	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाइए।

८५. विदाई गीत : मेरा गुडिया पटारू वे

(प over रे)		(म over मप; नि over 6th ध)
— — — म — म रे	रे रे म म — — म	मप प ध ध — ध प
ऽ ऽ ऽ मे ऽ रा ऽ	गु डि ऽ या ऽ ऽ प	टाऽ ऽ ऽ रू ऽ ऽ ऽ
(ध over पम)	(म over 2nd प; नि over 6th ध)	(म over 1st प; ध over 4th प)
प — — पम — म —	प प ध ध — ध प	प — — प — म —
वे ऽ ऽ ऽऽ ऽ बा ऽ	पू ऽ ऽ तेऽ रे ऽ	को ऽ ऽ ण ऽ खे ऽ
(प over रे)		
म — — म — म रे		
ले ऽ ऽ मे ऽ रा ऽ	…पूर्ववत दोहराइए !	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८६. 'रत्वाएं फिरने' के समय का गीत :

पीपल पुजणे गौरजां आई—२

०		३				×		२			०		३		
–	–	सा	–	ग॒	रे	ध़	नि़॒	ध़	प़	ध़सा	ध़	सा	सा	–	र
ऽ	ऽ	पी	ऽ		पऽ	ल	ऽ	पु	ऽ	जऽ	णे	ऽ	गौ	ऽ	र
						ध़	सा	रे	म	ग	सा	ध़सा			
						जां	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ	ऽऽ	...पूर्ववत दोहराकर		

इस प्रकार समाप्त किया जाता है—

सा	–	रे	ध़	सा	रे	सा	सा	सा	–
गौ	ऽ	र	जां	ऽ	आ	ऽ	ई	ऽ	ऽ

—अगली पंक्ति भी इसी प्रकार गाई जाएगी।

८७. 'रत्वाएं' फिरने के समय का गीत :

कौण पुजे इना देवतेयां

ध़	–	–	प़	–	ध़	–	नि़	–	–	सा	–	सा	म
कौ	ऽ	ऽ	ण	ऽ	पु	ऽ	जे	ऽ	ऽ	इ	ऽ	ना	ऽ
(म)ग॒	–	–	रेसा	–	सा	रे	रे	नि़	–	सा	–	सा	म
दे	ऽ	ऽ	वऽ	ऽ	ते	ऽ	यां	ऽ	ऽ	प	ऽ	र	ऽ
(म)ग॒	–	–	(रे)सा	–	सा	रे	रे	नि़	–	सा	–	म	–
मे	ऽ	ऽ	स	ऽ	रे	ऽ	यां	ऽ	ऽ	बँ	ऽ	ऽ	ऽ
(म)ग॒	–	–	रे	–	नि़	–	सारे	–	सा	सा	–	–	–
बी	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	बोऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८८. 'अंदरेरे' का गीत : आओ मेरिए बहुए,

प म – प नि ध प	म – – रे – प –	म – – ग – रे म
आ ओ ऽ मे ऽ रि ए	बहु ऽ ऽ ए ऽ ऽ ऽ	ए ऽ ऽ घ ऽ र ऽ
म – – ग रे – – –		
ते ऽ ऽ राऽ ऽ ऽ ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

८९. 'तोता' : बाओ, नित नित करियो कारजां

– – –	– म म	सा सा सा	म म मग
ऽ ऽ ऽ	ऽ बा ओ	नित नि त	क रि योऽ
म प ^ध^पम	पध धप मप	ग म प	^ध^पम म –
का र जांऽ	नीऽ साऽ नूऽ	स द्दी बु	लाऽ यो ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

९०. 'हेरे' : डब्बी साडी पंजरंगी

प़ प़ सा सा – नि़ प़ सा सा – रेसा सा – नि़ ध़ प़ सा सा प़

ड ब्बी ऽ सा ऽ डी ऽ ऽ पँ ऽ जऽ रं ऽ ऽ गी ऽ ऊ प र,

प़ सा सा सा नि़ रे सा नि़ ध़ प़

धर दी र पइ ऽ या ऽ रो ऽ क,

प़ प़सा सा सा सा सा साग रे सा सा नि़ग रे सा

कु ड़ऽ म णि या नू, ब्याही के ल ई ऽऽ च ल्ले,

साग रे गसा सारे सा प़ प़प़ सा सा सा नि़ रेसा सा सा

देऽ ओ नऽ गाऽ रे यां कुड़ मणि ए व्यारि ए ऽऽ चो ट !

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९१. 'डोगड़ी' : थोड़ी मुइए थोड़ी, नींवड़ी होयां नी बे,

	ग	
– – प़ – प़ नि़ – सा	रे – रे – रे रे नि़ –	– – सा ग – ग ग –
ऽ ऽ थो ऽ ड़ी मुई ऽ ए	थो ऽ ड़ी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ नीं ऽ ऽ व ड़ी ऽ
म	ग म	ध़
– – – ग म प प म	रे – – – – – – ग ग रे	सानि़ नि़ – नि़ सा रे प –
ऽ ऽ ऽ हो ऽ यां ऽ नी	बे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽ ऽ	ऽऽ ऽ ऽ मे रि ए ऽ ऽ
म	सा प़	
रे म रे सा रे सा नि़ नि़	नि़ – – ध़ सा नि़ नि़ म़ प़	
ऽ ऽ ऽ डो ऽ र ऽ ड़ि	ए ऽ ऽ ओ ऽ ऽऽ ऽ ऽ	

थोड़ी मुइए थोड़ी···पूर्ववत गाइए।

अन्तरा :

	।	
– – – नि़ नि़ नि़ – सा	रे – (म) – प – – –	– – म ग ग ग – –
ऽ ऽ ऽ शा शु ए ऽ नी	मे ऽ रि ऽ ए ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जा ई ओं णा ऽ ऽ
म	ग म	ध
– – ग – म प प म	रे – – – – – – – गगरे	सानि़ नि़ – नि़ नि़ नि़ – सा
ऽ ऽ प्यो ऽ क ड़े ऽ नी	बे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽऽऽ	ऽऽ ऽ ऽ शा शु ए ऽ नी

···'मेरिए···' पूर्ववत दोहरा कर, फिर इस प्रकार गाइए—

। ।	। म	
– – रे म – म – प	म प प म ग रे ग ग	रे – – नि़ – सा – रे
ऽ ऽ शा शु ऽ ए ऽ नी	मे ऽ रि ऽ ए ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ चा ऽ व ऽ लि
सा		
रे ग सा – नि ध़ नि नि	ध़ प़ प़ प़ – नि़ – सा	
ए ऽ ऽ ऽ हो ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ थो ड़ी ऽ मुइ ऽ ए	थोड़ी···पूर्ववत गाइए!

– शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९२. 'पींह्ग' : दाड़नी दे बूटे, बापू पींह्गां पइयां।

पध़ सा – गरेग गसा – – सारेगरे गसा सा – – . नि ध़

दाऽ ड़ ऽ ऽऽऽ नीऽ ऽ ऽ देऽऽऽ ऽऽ बू ऽ ऽ टेऽ,

ग ग ग
सा रे रेसा सा – – – रे रेसा रे रेसा सा – – – रेसा (नि) नि

अ ऽऽऽ म्मा ऽ ऽ ऽ जीऽऽ, पींहऽऽ ग ऽ ऽ ऽ ड़ीऽ ऽ या,

सा ग
पध़ सा – – सारे रे रे सा – – सा – – – – – – –

ओऽ ऽ ऽ ऽ पईऽऽऽ ऽ ऽ ऽ या ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ,

ग
धसा रे रेग गसा – – सारेगरे गमा सा – – नि ध़

गींह्ऽ गऽऽ णेऽ ऽ ऽ नीऽऽऽ ऽऽ जा ऽ ऽ णाऽ,

ग ग ग ग रे
सा रे रेसा सा – – मा रे रेसा रे रेसा सा – – रे रेसा सा

धी ऽऽऽ ए ऽ ऽ ओ ऽऽऽ, सोऽऽ ह ऽ ऽ रेऽऽऽ

प़ सा ग
(नि) नि पध़ धसा – रे रे रेसा – सा – – – – – – –

ऽ जो, ऽऽ ऽऽ ऽ जाऽ ऽऽ ऽ णा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ!

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९३. गृह प्रवेश के समय का गीत :

फो राजे धूपे दीपे समेत हो।

सा – – – रे ग रे – गं – रे – ग सा सा – रे – –

फो ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ रा ऽ ऽ ऽ जे ऽ ऽ ऽ धू ऽ पे ऽ ऽ

ग रे – रे – ग सा सा – सा – – – सा – – – –

ऽ दी ऽ ते ऽ ऽ ऽ स ऽ मे ऽ ऽ ऽ त ऽ ऽ ऽ ऽ

– – – – –

ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ!

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

९४. 'बन्ना' : तुम्ही तो हमारे चांद बलमा

–	–	–	नि	ध	नि	प	प	प	–	–	–	(ध) पम	–	म	प
ऽ	ऽ	ऽ	तु	म्ही	तो	ऽ	ह	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
प	–	–	–	पध	प	सां	–	–	(ध) नि ध	मग	–	–	–	–	ग
रे	ऽ	ऽ	ऽ	चांऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	दऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब
म	(ध) प प	–म	ग	(ग सा) रे रे रे	–	–	ग	म	रे	–सा	नि़	सा	–ग	रे	ग
ल	माऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	ऽ	तु	म्ही	तो	ऽऽ	ह	मा	ऽऽ	ऽ	ऽ
नि़सा	नि़	सा	–	गम	–	–	–	–	–	(ग)	–	–	–	–	ग
ऽऽ	ऽ	रे	ऽ	चांऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ब
म	(ध) प प	(म) प	सांनि	धप	–	–	ध	नि	ध नि	प	प	प···			
ल	माऽ	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	तु	म्ही	तोऽ	ऽ	ह	मारे···पूर्ववत गाइए।			

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा :

												रें			
–	–	–	म	प	नि	सां	–	–	–	–	रें	सांनि	सां	सां	–
ऽ	ऽ	ऽ	तु	म	वि	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽऽ	तो	री	ऽ
					सां					नि				म	
–	–	–	सां	नि नि	सांरें	–	–	–	–	–	सां	नि	ध	प	प
ऽ	ऽ	ऽ	भ	ईऽ	हैऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बां	व	री	ऽ	ऽ
म ध															
पप	म	–	म												
ऽऽ	ऽ	ऽ	तु	म बिना…………				पूर्ववत दोहराइए।							
												ध			
–	–	–	सां	नि	ध	प	प	प	–	–	ध	पम	–	प	प
ऽ	ऽ	ऽ	अ	ट	ल	ऽ	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	तो	रा
									ध						
–	–	–	प	पध	प	सां	–	–	नि	प	म	(ग)	–	–	ग
ऽ ऽ	ऽ	ऽ	सु	हाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	स
		सां													
गम	पध	नि	धप	गम	(ग)	सारे	–	–	–	–	ग	म			
लाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽऽ	मऽ	त	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तु	म्ही हो…पूर्ववत गाइए।			

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

९५. मंड्याली गीत : भुइणी देवी की भेंट :

ओ देवी म्हारी भुइणिए।

स्थाई :

ध़	सा	रे	म	पध	सां	ध	म	रेम	म	रे	सा
हा	य	दे	वी	म्हाऽ	री	भुइ	अ	णिऽ	ए	ऽ	ऽ
ध़	सा	रे	म	पध	सां	ध	म	रेम	म	–	–
हा	य	दे	वी	म्हाऽ	री	भुइ	य	णिऽ	ए	ऽ	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अन्तरा :

सांसां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	—सां	ध	—	—
उचे	यां	प	हा	ड़ा	ओ	ब	स	ऽदि	ए	ऽ	ऽ
प	ध	(प) म	रे	मप	धसां	(सां) ध	धप	मरे	म	—	—
हा	य	दे	वी	म्हाऽ	रीऽ	भुइ	यऽ	णिऽ	ए	ऽ	ऽ

'छेल् बी देणा....' को 'उचेयां पहाड़ा....' की भांति गाइए।

ध	धप	म	रे	म	पध	पम	म	—
ला	लऽ	दे	णी	मां	ऽऽ	धऽ	जां	ऽ

'धजां देवी...को स्थाई की भांति गाइए। शेष चरण भी ऐसे ही गाइए।

९६. 'छिंज' : बागां देया भगवाना,

प़	—	नि॒	नि॒	—	नि॒	—	सा	—	म	म	—	(रे) ग॒	सा	रे	—	सा	सा	—	—	—
बा	ऽ	ऽ	गां	ऽ	दे	ऽ	या	ऽ	ओ	भ	ऽ	ग	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ
—	—	म	म	—	(रे) ग॒	सा	रे	—	सा	सा	—	(ग॒) रे	—	नि॒	—	रे	रे	—	(सा) रे	—
ऽ	ऽ	ओ	भ	ऽ	ग	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ना	ऽ	भ	ऽ	ला	ऽ	ओ	बा	ऽ	गें	ऽ
ग॒	—	—	रे	—	नि॒	—	सा	रे	—	ग॒	(ग॒ सा) रेरे	रे	(ग॒) रे	नि॒	—	—	ध़	—	नि॒	सा
क्या	ऽ	ऽ	र	ऽ	स	ऽ	मे	वे	ऽ	ओ	ऽऽ	ऽ	ऽ	बा	ऽ	ऽ	गां		दे	ऽ

—'या भगवाना'...पूर्ववत गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

९७. चीना-मीना चानणिए राती ।

		प
सा रे सा रे	धं – प ध म – – –	ध – पध धप म – रे –
ची ना मी ना	चा ऽ न णि ए ऽ ऽ ऽ	रा ऽ तीऽ ओऽ ता ऽ रे ऽ
म ध		
प – प ध म – प प	म – म – सा रे सा रे	
भ ऽ री ऽ री ऽ पु ऽ	रा ऽ ती ऽ ची ना मी ना	…पूर्ववत दोहराइए !

—शेष चरण भी ऐसे ही गाए जाएंगे ।

९८. किस-किस मुलखा ते आए परौहणे

स्थाई :

		मं
म प – नि – – नि	सां सां – सां – सां –	नि सां – निसां रें – रें
कि स ऽ कि ऽ ऽ स	मु ल ऽ खा ऽ ते ऽ	आ ऽ ऽ एऽ ऽ ऽ प
(नि) ध प प – ध पम	—दोहराइए ।	
रौ ह् ऽ णे ऽ ऽ ऽऽ		
सां मं	ध	प
रें रें – रें – रें रें	(नि) ध प प प प मग	ग – – म ग – म
ढो ल ऽ तां ऽ ऽ न	गा रे ऽ ल गे या ऽऽ	अं ऽ ऽ ब र ऽ बी
म म सा		
ग ग ग (रे) – रे सा		
ब ज ऽ णे ऽ ऽ ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

९९. छिंज : अम्बुए दे हेठ मेरी अम्मा खड़ोती ।

सारे	रे	सा	सारे	रेसा	रेम	मग	रे	रे	सा	रे	−सा	सा	−
अंबु	ए	दे	हेऽ	ठऽ	मेऽ	रीऽ	अ	म्मा	ख	ड़ो	ऽऽ	ती	ऽ
सासा	रे	रेसा	सा	रेसा	रेम	मग	रे	रे	सानि़	सारे	−सा	रेम	मग
झड़ी	झ	ड़ीऽ	पौं	दाऽ	सुइ	नेऽ	पा	त	रऽ	चैऽ	ऽऽ	त्रऽ	सुऽ
रे	−	सानि़	सा	−	−	−							
हा	ऽ	वऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ							

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाइए ।

१००. नाच बढो : नाच बढो, नाच बढो,

म	म	प	−	म	म	सा	−
ना	चब	ढो	ऽ	ना	चब	ढो	ऽ

दूसरी पंक्ति भी इसी प्रकार गाइए ।

म	−म	प	ध	प	प	ध	−ध	म	म	प	ध	म	म	सा	−सा
बुढी	ऽकी	मा	ता	कु	ट्टे	धा	ऽन	आ	धे	पो	ले	आ	घे	धा	ऽन
ग	−म	प	ध	म	म	सा	−सा								
जले	ऽबे	हर	ना	ते	रे	का	ऽन								

छठी-सातवीं व आठवीं-नवीं पंक्तियां क्रमशः तीसरी व चौथी पंक्तियों की तरह गाई जाएंगी ।

म	म	प	ध	प	प	ध	−ध	प	प	ध	−ध	प	प	ध	−
ल्या	वा	लो	को	चा	ली	खो	ऽड़	ढ	ब्बा	रो	ट	अ	छरु	ओ	ऽ
प	प	ध	−	प	प	ध	ध	प	प	ध	−				
म	छरु	ओ	ऽ	क्या	क्या	खे	ला	पा	ई	हो	ऽ				
म	−म	प	ध	प	−प	ध	−	म	−म	पध	−	म	मम	सा	−
आया	ऽहो	रा	जेरा	बां	ऽठ	ड़ा	ऽ	गढ़ू	ऽरे	घरा	ऽ	पु	त्रव	धाई	ऽ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०१. प्रात:कालीन भजन :

मदन मोहन सुंदर बन में, खड़े मुरली बजाते हैं

— — — सा	सा सा ग म	प — — ध	सां सांनि ध धप
ऽ ऽ ऽ म	द न मो ऽ	हन ऽ ऽ सुं	द रऽ व नऽ
प — — प	ध — प म	ग — — म	ग सा रे ग
में ऽ ऽ ख	ड़े ऽ मु र	ली ऽ ऽ ब	जा ऽ ते ऽ
सा — — सा			
हैं ऽ ऽ क			

भी···इसी प्रकार गाइए।

—शेष चरण भी ऐसे ही गाए जाएंगे।

१०२ धुप्पू-देह्ल :

		रे	ग
सा सा नि़ सारे रे रे	सा साम ग रे रे रे	सा सानि़ नि़ध़ ध़ धरे रे	रे रेसा सा सा – –
अ ता ऽ फुऽ ल्ल च	ढ़ी केऽ ऽ पा या ऽ	ते ताऽ बैंऽ ठा ऽऽ क्र	ष्णा तूऽ भा या ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

१०३. ब्यूहाई : अच्छे नसीबां वाली आई

			ग
— ग ग म	गरे —रे गप म	गरे ग — सा	सारे —रे सानि़ नि़
ऽ अ च्छे न	सींऽ ऽब वाऽ ली	आऽ ई ऽ कि	आऽ ऽज मोऽ रे
नि़	म		
— सासा रे रे	ग ग रेसा सा —		
ऽ बज दी ब	धाऽ इऽ यां ऽ		
			प
— सासा ग म	प मधप प —	— मम ग रे	ग म —ग ग —
ऽ बजि यां ब	धा इऽऽ यां ऽ	ऽ गुर दे न	गाऽ ऽऽ रे ऽ

"काहे दा···" को "बजियां बधाइयां " की भांति और 'काहे दी कटोरी ' को 'अच्छे नसीब···' की भांति गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

ऊना हमीरपुर कांगड़ा के गीत :

१०४. भ्यागड़ा : जाग ब्रह्मा, जाग विष्णु,

सा – रे म – रे सा	म – प म म ग रे	रे रे म म – म म
जा ऽ ग ब्र ऽ म्हा ऽ	जा ऽ ग वि ष णु ऽ	जा ग णे दी ऽ बे ला
	ध म	
ध प नि ध – ध पध	म – प म – रे म	ध प नि ध – ध पध
हो ई ऽ जी ऽ तु सेंऽ	जा ऽ ग दे ऽ क्यों ऽ	न हीं ऽ जी ऽ मु खोंऽ
ध म		ध
म – प म – रे म	ध प नि ध – ध पध	म म प म – – –
बो ऽ ल दे ऽ क्यों ऽ	न हीं ऽ जी ऽ रा धेऽ	ख ड़ी ऽ जी ऽ ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

१०५. छमाह्ड़ा :

		सा
नि रे – रे – रे –	रे – – रे – रे –	रे – – रे – रे –
च ढ़े ऽ या ऽ म ऽ	ही ऽ ऽ ना ऽ ऽ ऽ	चै ऽ ऽ त ऽ बे ऽ
रे म – ग – रे –	रे म – ग – रे –	सा – – सा – ग रे
अ ड़े ऽ या ऽ मैं ऽ	खि ड़ ऽ रहि ऽ यां ऽ	चं ऽ ऽ बे ऽ ऽ ऽ
ग सा – – – सा –	ध़ – – ध़ – ध़ –	ध़ सा – सा – रे –
डा ऽ ऽ ऽ ऽ लि ऽ	यां ऽ ऽ कु ऽ छ ऽ	वा ऽ ऽ र ऽ पइ ऽ
ग – – रे सा सा –	सा ग – रे – सा ध़	ध़ – – ध़ – ध़ –
यां ऽ ऽ कु ऽ छ ऽ	पा ऽ ऽ न ऽ पइ ऽ	यां ऽ ऽ सा ऽ नू ऽ
		रे
ध़ सा – सा – रे –	ग ग – रे सा सा –	सा ग – रे ग सा –
वो ऽ ऽ लि ऽ यां ऽ	ला न ऽ बेह् ऽ ड़े ऽ	वा ऽ ऽ ऽ ऽ लि ऽ
सा – – – – – –		
यां ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०६. विवाह गीत :

सुहाग : वाओ जी तुसीं बडे गियानी,

— — — ध़ सा रेग सा	रेग ग ग रे — रेग सा
ऽ ऽ ऽ वा ओ जीऽ तुसीं	बऽ ड्डे गि या ऽ नीऽ ऽ
	नि
रेग ग ग रे — रेग रे	सा सा ध़ध़ ध़सा सा रे गसारे
बऽ ड्डे गि या ऽ नीऽ ऽ	केह् ड़ा बर अंऽ दा रं 'गऽऽ
ग रे	
रे —,रे रेसा सा — ग ग रे	
सां ऽ,ऽ. बऽ ला ऽ जी कोई	केह्ड़ा वर···पूर्ववत गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

१०७. ब्युहाई :

भादों महीने दीयां न्हेरियां रातीं जी,

ग		
सा — — रे रे रे सा	सा — — सा — सा सा	सा म -- ग — म ग
भा ऽ ऽ दों ऽ म ऽ	ही ऽ ऽ ने ऽ दि यां	न्हे ऽ ऽ रि ऽ यां ऽ
म रे		प
रे — — ग ग ग प	प प — म — ग —	रे ग — म म ग सा
रा ऽ ऽ तीं ऽ जी ऽ	ज र ऽ मे ऽ या ऽ	कृ ऽ ऽ ष्ण ऽ मु ऽ
सा ऽ ऽ सा — सा —	रे म ग रे — रे —	रे म — म — म ग
रा ऽ ऽ री ऽ ह़ ऽ	रि ऽ ऽ ह ऽ र ऽ	जी ऽ ऽ डाह् ऽ डी ऽ
रे म — म — ग सा	सा — — सा — सा —	रे म ग रे — रे —
बी ऽ ऽ ण ऽ ब ऽ	जा ऽ ऽ यो ऽ ख ऽ	री ऽ ऽ ख ऽ री ऽ
रे म — म — म ग	रे नि़ — नि़ — सा —	रे म — ग — रे —
जी ऽ ऽ लो ऽ रि यां	दे ऽ ऽ ग ऽ ज ऽ	सो ऽ ऽ दे ऽ ऽ ऽ
सा नि़ — सा — — —	— — — — — — —	
मा ऽ ऽ ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाइए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०८. 'तेल' गीत (सिठणी) : ठणक कटोरड़िए कुनी पाया तेल जी,

म	म	म	म	प	पम	ग	–	रे	सा	रेम	म	म	–प	सां	–नि
ठ	ण	क	क	टो	रड़ि	ए	ऽ	कु	नी	पाऽ	या	ते	ऽल	जी	ऽऽ
प	म	म	म	(म) प	पम	ग	–	रे	रेसा	रेम	म	प	–म	म	–
ठ	ण	क	क	टो	रड़ि	ए	ऽ	कु	नीऽ	पाऽ	या	ते	ऽल	जी	ऽ

—शेष चरण भी ऐसे ही गाइए ।

१०९. 'बाबा' (बावा बालक नाथ का गीत) :

लाई ताड़ी, बैठा उजाड़ी,

–	ध़	सा	रेग	सा	सा	–,ध़	ध़	ध़सा	सा	सारे	ग	ग	रेगसा
ऽ	ला	ई	ताऽ	ऽ	ड़ी	ऽ,ऽ	बै	ठाऽ	उ	जाऽ	ऽ	ड़ी	ऽऽऽ
सा	सा	ध़	सा	रेग	ग	(ग) रे रे	सा	सा	–	–	–	–	–
डाह्	डं	ने	क	लऽ	म	लऽ	गा	ई	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
–	ध़	सा	सारे	रेग	ग	(ग) रे रे	साध़	–	रे	रेग	सा	–	–
ऽ	ओ	मैं	वाऽ	रीऽ	दु	धाऽ	धाऽ	ऽ	रि	याऽ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे ।

११०. 'गिद्धा' (गद्दी-गद्दण) :

सानू चढ़ेया पैंह्ला माह मेरे गदिया,

–	–	ध़	ध़	ध़	सा	सा	–	रे	ग	ग	सा	सा	रे	रे	ग
ऽ	ऽ	सा	नू	च	ढ़े	या	ऽ	पैंह्	ऽ	ला	ऽ	मा	ह्	मे	रं
रे	सा	(सा) ध़	–	ध़	सा	सा	–	रे	ग	रे	ग	सा	–	–	–
ग	दि	या	ऽ	च	ढ़े	या	ऽ	पैंह्	ऽ	ला	ऽ	माह्	ऽ	ऽ	ऽ
–	–	सा	ध़	झूठें-झूठ…' इसी प्रकार गाइए ।											
ऽ	ऽ	तू	ऽ												

—शेष चरण भी ऐसे ही गाइए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१११. इस ञो गराएं देया लम्बराओ,

			ध म
सा – रे – ग –	सा रे सा सा सा –	रे – म म – –	प प ध ध ध प
इ ऽ स ऽ ग ऽ	रा ऽ एं दे या ऽ	लं ऽ ब रा ऽ ऽ	ओ ऽ ऽ इ ना ऽ
म	म		
प – प प प –	प ध – ध ध प	म – ग रे – –	– – ध ध ध प
छो ऽ रू आं जो ऽ	लै ऽ ऽ स म ऽ	झा ऽ ई ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ओ इ ना ऽ
			म म
छं.रुआं…दोहराकरें,	सा	रे म – प ध –	प ध – प म म
	कि	बा टा ऽ जां दे ऽ	सी टी ऽ मा ऽ र
म – – – – –	– – – – – –		
दे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ		

अन्तरा :

			म
– – सां सां सां सां	नि रें सां नि ध –	– – प ध म म	प प ध ध – –
ऽ ऽ पा णि ए नूं	जा णा ऽ अ सां ऽ	ऽ ऽ आ ण ना घ	ड़ो ऽ ऽ लू ऽ ऽ
	प प		ध म सां
– – प प प प	ध ध सां ध म –	म – – – – –	प प ध ध प –
ऽ ऽ की यां क री	ना लू ऽ ट प ऽ	णा ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	ओ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

—'कीयां करी…' पूर्ववत दोहराइए।
—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

चम्ब्याली गीत :

११२. बसोआ : आया बसोआ नी माए माए नेड़े-तेड़े,

ध़	प
सा सा रे मप धसां सांनि ध	प धम मरे रे – ध ध
आ या ब सोऽ आनी माऽ ए	ने ड़ेऽ तेऽ ड़े ऽ मे रे
म	म सा
प धप मरे रे ग ग रेसा ध़	सा रे रे रेम म – – –
भाऊ वेऽ जोऽ सा ऽऽ दाऽ ऽ	भे जेऽ ऽऽ ओ ऽ ऽ ऽ

—'मेरे भाऊ जो…' पूर्ववत दोहराइए।
—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११३. 'कुंजड़ी' : उडो मेरी कुंजड़ियो,

ध	–	ध	–	ध	–	ध	–	नि	ध	प	म	–	म	–	म
उ	ऽ	डो	ऽ	मे	ऽ	री	ऽ	कुं	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ड़ि
											प				
म	–	–	–	प	–	प	–	–	–	ध	ध	सां	सां	–	–
यो	ऽ	ऽ	ऽ	ब	ऽ	र	ऽ	ऽ	ऽ	सां	ऽ	ऽ	रं	ऽ	ऽ
सां	–	–	–	सां	–	–	–	नि	ध	प	म	–	नि	नि	–
ध्यां	ऽ	ऽ	ऽ	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	व	र	ऽ
			ध												
नि	ध	प	प	म	ग	रे	ग	सा	–	रे	–	–	ग	–	–
सां	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ
म	–	म	–	–	–	–	–	ग	–	–	–	–	प	म	–
ध्या	ऽ	ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध्या	ऽ	ऽ
म	ग	रे	–	प	–	प	–	–	–	म	–	–	ग	–	रे
ड़े	ऽ	ऽ	ऽ	जिं	ऽ	दे	ऽ	ऽ	ऽ	यां	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
				रे											
रे	–	–	सा	ग	–	–	–	सा	–	–	–	–	म	–	म
मे	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मे	ऽ	रे
								सां			नि				
ग	–	म	–	–	–	प	ध	नि	–	ध	ध	प	म	–	ग
रा	ऽ	मा	ऽ	ऽ	ऽ	जिं	ऽ	दे	ऽ	यां	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
रे	–	–	सा	रे	ग	–	–	सा	नि़	ध़	नि़	–	प़	ध़	सा
मे	ऽ	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बे	ऽ	म
रे	–	–	–	–	ध	ध	–	–	नि	–	–	–	ध	–	पम
ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	बे	म	ऽ	ऽ	ना	ऽ	ना	ऽ	मे	ऽ	रीऽ
म	प	ध	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	–	(नि़)	–	–	ध़प़	–
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ
–	–	प़	–	ध़	सा	–	–	रे	–	रे	–	–	ध	–	ध
ऽ	ऽ	सोह़	ऽ	णि	ए	ऽ	ऽ	कुं	ऽ	जे	ऽ	ऽ	उ	ऽ	ड़ी

—'के मिलां···' इसी प्रकार गाइए ।

—शेष चरण भी ऐसे ही गाए जाएंगे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११४. 'सिठणी' : पीली—२ दाल छोलेयां दी बणी,

म म – म – म –	म – – म – म –	म – ग रे – ग प
पी ली ऽ पी ऽ ली ऽ	दा ऽ ऽ ल ऽ छो ऽ	ल्यां ऽ ऽ री ऽ ब ऽ
प – – म ग रे –	रे ग रे सा – नि़ –	सा – – रे – रे –
णी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	पी ली ऽ पी ऽ ली ऽ	दा ऽ ऽ ल ऽ छो ऽ
ग		
ग – – रे – सा –	सा – – – – – –	
ल्यां ऽ ऽ दी ऽ ब ऽ	णी ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

११५. शिव स्तुति : स्वामी वसदे तां उचियां धारां,

		सां
– – – प प प म	म म – प – प म	म म – प – प म
ऽ ऽ ऽ सा ऽ मी ऽ	व स ऽ दे ऽ तां ऽ	उ चि ऽ यां ऽ ऽ ऽ
		सां
(ग) – सा सा – – सा	सा ग म प – म –	प – – – – प म
धा ऽ ऽ रा ऽ ऽ सिं	बा ओ ऽ मे ऽ रे ऽ	सा ऽ ऽ ऽ ऽ मि ऽ
म – – प – प म		
या ऽ ऽ सा ऽ मी ऽ	…इसी प्रकार दोहराइए।	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

गद्दी गीत :

११६. शिव स्तुति : सिवा मेरे महादेवा,

ध़ ध़ सा रे	साध़ ध़ सा रे	सा – – सा	ग गरे ग रे
सि बा मे रे	मऽ हा दे ऽ	वा ऽ ऽ ओ	सि कऽ रा मा
सा – रे सा	सा – सा –		
ता ऽ ड़ी ल	गा ऽ ई ऽ		

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११७. विवाह गीत :

घोड़ी : सेह्‌रा तैनूं मैं देयां,

सा ध़	ध़ सा – सा – रे म	म – – – – प –
सेह् ऽ	रा ऽ ऽ तैं ऽ नूं ऽ	मैं ऽ ऽ ऽ ऽ दे ऽ
ग – रे (सा) रे – ग –	रे सा – – – नि़ सा	रे ग̱ – रे – सा –
यां ऽ ऽ बी ऽ ऽ ऽ	रा ऽ ऽ ऽ ऽ क ल	गी ऽ ऽ ते ऽ री ऽ
नि़ – – – – सा –	रे ग̱ – रे – सा –	सा – – – – नि़ सा
सा ऽ ऽ ऽ ऽ स ऽ	ने ऽ ऽ भे ऽ ऽ ऽ	जी ऽ ऽ ऽ ऽ क ल

—गी तेरी ···' पूर्ववत गाइए।
—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

११८. 'सुंदरू लोहारिए : ढकियां चढ़ैंदे सुंदरू छम-छम रोई ओ,

ध़ सा – सा – – ध	ध ध – प धप मग सारे	म प –म पध – धम मरे
ढ कि ऽ यां ऽ ऽ च	ढ़ैं दे ऽ सुं दऽ रूऽ ऽऽ	छ म ऽऽ छऽ ऽ ऽऽ मऽ

रे रेसा (म) रेसा सा – सा सां	सां सांनि (रें) सांध प धप मग सारे
रो ईऽ ऽऽ ओ ऽ ऽ अनी	हो ऽऽ ऽऽ मे रिऽ एऽ ऽऽ
म प –म पध – धम मरे	रे रेसा (म) रेसा सा – – –
सुं द ऽऽ रूऽ ऽ ऽऽ लुऽ	हा रिऽ ऽऽ ए ऽ ऽ ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

११९. 'राम : राम चली गया हेड़े जो,

− − ध़ सा	रे ग गरे सा	गरे गसा साध़ −	ध़ सा रे रे
ऽ ऽ रा म	च ली ग्या ऽ	हेऽ ड़ेऽ जोऽ ऽ	सि या क ल्ली
गरे रेसा सा म			
रई गई घ रैं			

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

१२०. 'शिव' : कच्ची वो क्वारी,

ग (above रे)			
ग रे रे ग	सा रे ध़ −	ध़ सा रेग गरे	सारे रे सा −
क च्चीं वो क	वा री ऽ ऽ	बा पू देऽ ऽऽ	घऽ रा ऽ ऽ

—शेष पंक्तियां भी इसी प्रकार गाइए।

नच्चे धूड़िया तू मुंडकां खलारी,

− − − सा − सा −	सा सा − ध़ − ध़ −	सा सा − रे − सा −
ऽ ऽ ऽ न ऽ च्चे ऽ	धू ड़ि ऽ या ऽ तू ऽ	मुं ड ऽ कां ऽ ख ऽ
नि़ सा − रे − − −	− − − रे − रे −	रे रे ग ग र सा −
ला ऽ ऽ री ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ न ऽ च्चे ऽ	धू ड़ि ऽ या ऽ तू ऽ
नि़ नि़ − प़ − रे −	रे सा − सा − − −	
मुं ड ऽ कां.ऽ ख ऽ	ला री ऽ ओ ऽ ऽ ऽ	

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाइए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२१. 'कृष्ण' : नदी रे कनारे नदी जमना कनारे

रे	रे	रे	सा	रे	रेप	प	परे	रे	रेम	ग	रे	सा	–	नि़	–
न	दी	रे	क	ना	रेऽ	न	दीऽ	ज	मऽ	ना	क	ना	ऽ	रें	ऽ
रे	रे	रे	सा	रे	रेप	प	रे	रे	म	ग	रे	सा	–	–	–
कौ	ण	रा	जा	ह	टऽ	ड़ी	प	वा	ऽ	ई	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

१२२. 'सीकरिए घारे' : ओ मेरिए सीकरिए ओ धारे

–	–	–	प	प	प	प	–	म	–	ग	रे	म	–	ग	रे
ऽ	ऽ	ऽ	ओ	मे	रि	ए	ऽ	सी	ऽ	ऽ	ऽ	क	ऽ	रि	ऽ
		रे				ग									
सा	–	–	सा	नि़	–	रे	र	सा	नि़	–	प़	प़	–	–	–
ए	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	धा	ऽ	ऽ	ऽ	रें	ऽ	ऽ	ऽ
प़															
रे	–	रे	सा	रे	प	प	–	म	–	ग	रे	म	–	ग	रे
धा	ऽ	रे	ऽ	जि	ऽ	त्ते	ऽ	म	ऽ	रू	ऽ	आ	ऽ	फु	ऽ
		रे				सा									
म़ा	–	–	सा	नि़	–	रे	रे	ग	रे	सा	नि़	सा	–	–	प
ल्ले	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	फु	ऽ	ल्ले	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ओ

—'मेरिए नगरा…' इसी प्रकार गाइए।

—शेष चरण भी इसी प्रकार गाए जाएंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लय-ताल विवेचन

स्वर संरचना की भांति ही हिमाचल के लोक गीतों की लय संरचना भी बहुधा सरल, स्वाभाविक व मोहक है। विशेषतया नृत्य गीतों की लय में तन-मन को तरंगित करने की अद्‌भुत क्षमता है। कदाचित् नृत्य गीतों की लय में समरूप, सतत प्रवाह इसका कारण है। विशिष्ट लक्ष्य-लक्षित-लय-संरचना की सार्थकता में ये लोक गीत (नाटियां) अद्वितीय उदाहरण हैं। अन्य लोक गीतों की लय-संरचना भी पूर्णतया अपेक्षित प्रभावोत्पादक हैं। गीतों की लय-संरचना चार मात्रिक, तीन मात्रिक व सात मात्रिक लय खण्डों में निभने वाली है।

प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्र किन्नौर व स्पीति के अधिकतर गीत नृत्य-गीत हैं, इसलिए इनकी लय में मन को तरंगित करने वाला समरूप, सतत प्रवाह है। इन क्षेत्रों के गीतों की लय-संरचना बहुधा द्रुत त्रिमात्रिक लय खण्डों में निभती है। कुछ लय संरचनाएँ चार मात्रिक लय खण्डों में भी निभती हैं और सात मात्रिक लय खण्ड में निभने वाली लय-संरचनाएँ नगण्य हैं। किन्नरी, द्रुत त्रिमात्रिक लय खण्डीय लय-संरचना की बोल-बाँट को इस प्रकार अंकित किया जा सकता है :

×		२		३		०	४		५		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धा	ति	ना	धा	गि	ना	ता	ति	ना	धा	गि	ना

मध्य लय

×		२		३		०	४		५		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धी	धी	ना	धी	ना	ऽ	ती	ऽ	ना	धी	ना	ऽ

—तथा स्पीति के गीतों की लय संरचना को इस प्रकार अंकित किया जा सकता है।

×			२			०			३				४			५		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	या	१	२	३	४	५	६
धा	ऽ	ग	धा	गि	ना	ता	ऽ	ग	धिन्	ऽ	ना		धागे	धागे	ना	तागे	धागे	ना

ऊपरी महासू व सिरमौर के ऊँचे क्षेत्रों के गीतों की लय-संरचना भी अधिकतर त्रिमात्रिक व चार मात्रिक लय खण्डों में निभती है। कुछ लय-संरचनाएँ सात मात्रिक लय खण्डों में निभती है। ऊपरी महासू की 'नाटियाँ' प्रायः विलम्बित त्रिमात्रिक लय-खण्डीय लय संरचना में निभती हैं, जिसका अंकन इसी प्रकार होगा।

×		२		३		०	४		५		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
धाधा	धिं	न्ना	धाधा	धिं	न्ना	ताता	तिं	न्ना	धाधा	धिं	न्ना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिरमीरी 'नाटियाँ' प्रायः चार मात्रिक लय खण्डीय लय-संरचना में निभती हैं। इस लय संरचना को इस प्रकार अंकित किया जा सकता है :

×			२			३		०		४		५			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धी	ना	ना	धी	ना	ना	धी	ना	ती	ती	ना	ना	धी	धी	ना	ना
या धि	नक	धि	ना	धिं	ना	तिं	ना	तिं	नक	धिं	ना	धिं	ना	तिन	गिन

कुछ महासूई 'नाटियाँ' चार मात्रिक, लय खण्डीय लय-संरचना में निभती हैं। इन क्षेत्रों के अन्य कुछ गीत चार मात्रिक लय खण्डों में कहरवा तथा त्रिमात्रिक लय खण्डों में दादरा की बोल-बांट में भी निभते हैं।

कुल्लूई गीतों में लय संरचना भी प्रायः त्रिमात्रिक व चार मात्रिक लय-खण्डीय है। इनमें त्रिमात्रिक लय खण्डीय, लय-संरचनाएँ कुछ तो विलम्बित-मध्य चलन की हैं, परन्तु कुछेक लय-संरचनाएँ द्रुत त्रिमात्रिक मात्रिक लय खण्डीय भी हैं, जिनका चलन 'खेमटा' जैसा हो जाता है। चार मात्रिक लय-खण्डीय लय संरचनाएँ बहुधा मध्य लय की हैं। इन लय संरचनाओं को इस प्रकार अंकित किया जा सकता है :

(त्रिमात्रिक विलम्बित-मध्य)-(मध्य-द्रुत)

×			२			०			३			×			०		
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६
धी	ना	ना	धी	ऽ	ना	ती	ऽ	ना	धी	ना	ना	धा	धी	ना	धा	ऽ	ना

द्रुत लय का चलन 'खेमटा' जैसा है। बोल कुछ इस प्रकार सुनाई पड़ते हैं :

	×						०					
	धा	ऽ	ति	ना	धिं	ऽ	त	ऽ	क	ना	ना	ऽ
(व)	धिं	ऽ	ता	धिं	ता	ऽ	तिं	ता	ऽ	धिं	ऽ	तक

चार मात्रिक मध्य

×				२				०				३			
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
धा	धि	तिरकिट	धि	धा	तिरकिट	तिन	गिन	ता	तिरकिट	नक	तिं	धा	धा	गिन	धा

(अथवा)

धा	धिं	ऽ	धा	ऽ	धा	धिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	धा	ऽ	धिं	ऽ

कुछ एक लय संरचनाएँ चार मात्रिक लय खण्डों में 'अद्धाताल' जैसी बोल-बाँट में भी निभती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाँगी के गीतों की लय-संरचना प्राय: चार मात्रिक मध्य लय खण्डों में निभती है। लय संरचना त्रिमात्रिक (खेमटे जैसे चलन वाले) द्रुत लय खण्डों में भी मिलती है। कुछेक लय संरचनाएँ सात मात्रिक लय खण्डों में निभने वाली भी हैं। चार-मात्रिक मध्य लय खण्डीय लय-संरचना में यह बोल सुनाई पड़ते हैं—

×				०			
धा	गे	न	क	तिन्	ऽ	न	क

त्रिमात्रिक द्रुत लय खण्डीय लय-संरचना इस प्रकार अंकित की जा सकती है :

×			२			०			३		
धा	ऽ	धि	ना	धि	न	ता	ऽ	ति	ना	ति	न

लाहुली गीतों की लय-संरचना चार मात्रिक, त्रिमात्रिक व सात मात्रिक मध्य लय खण्डों में निभती है। चार मात्रिक मध्य लय खण्डीय लय-संरचना में यह बोल सुनाई पड़ते हैं :

	×				०			
	धा	गिन	धा	धिं	ता	गिन	ता	तिं
(या)	धा	गि	ता	तिन्	धा	नक	धिन्	ना

वाद्यों पर वजने वाले 'रागों' की लय-संरचना में ताल के बोल 'राग' के साथ बदलने लगते हैं। 'निद्राली' राग की त्रिमात्रिक मध्य लय खण्डीय लय-संरचना की बोल-बाट इस प्रकार अंकित की जा सकती है :

×			२			०			३		
नागे	धा	धा	तागें	धा	धा	तागे	ना	ना	ऽ	ना	ना

एक शादी के राग की (जो दिया गया है) सात मात्रिक मध्य लय खण्डीय लय-संरचना की बोल-बांट इस प्रकार अंकित की जा सकती है :

×			२		३	
धि	नक	ऽ	धिं	धिं	नक	ऽ

मंडी-कांगड़ा के जो क्षेत्र कुल्लू के साथ लगते हैं, वहाँ के कुछ गीतों की लय-संरचना, कुल्लू के गीतों की लय संरचना की भाँति ही है। मंडी का जो भाग (क्षेत्र) ऊपरी महासू के साथ लगता है, वहाँ के गीतों की लय संरचना, महासू के गीतों की सी है। सोलन का जो भाग सिरमौर के ऊँचे क्षेत्र से लगता है, वहाँ के गीतों की लय-संरचना सिरमौर के गीतों की भाँति है तथा निचले महासू क्षेत्र का जो भाग ऊपरी महासू क्षेत्र से लगता है, वहाँ के गीतों की लय संरचना, ऊपरी महासू की लय-संरचना जैसी है। प्रदेश के शेष भागों में (निचला सिरमौर, निचला महासू, नालागढ़, बिलासपुर, मंडी, हमीरपुर, ऊना, कांगड़ा व

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चम्बा क्षेत्रों के) गीत प्रायः त्रिमात्रिक, चार मात्रिक, व सात मात्रिक लय-खण्डीय लय-संरचना में निभते हैं। त्रिमात्रिक लय-खण्डीय संरचना, द्रुत, 'खेमटा' जैसे चलन की भी हैं और मध्य, दादरा जैसे चलन की भी। खेमटा जैसे चलन की त्रिमात्रिक लय-संरचना चम्बा में अधिकतर लोक गीतों में सुनाई पढ़ती हैं, जो उन गीतों के रंजक और मधुर होने का एक बड़ा कारण है। यह लय-संरचना कांगड़ा के गीतों में भी सुनाई पड़ती है, तथा मंडी-बिलासपुर के भी कुछ गीत इस लय संरचना में निभते हैं। काँगड़ा, मंडी, ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, निचला महासू, नालागढ़, निचला सिरमौर के गीतों में अधिकतर चार मात्रिक लय खण्डीय लय-संरचना सुनाई पड़ती है। यह लय-संरचना प्रायः मध्य 'कहरवा' के चलन की है। इन क्षेत्रों का नृत्य गीत 'गिद्धा' (भड़ूआँ) अन्य बहुधा गीत तथा शादी के बहुत से गीत इसी लय-संरचना में निभते हैं। चम्बा के विवाह गीत भी बहुधा इसी लय-संरचना में निभते हैं।

सात मात्रिक लय खण्डीय लय-संरचना भी इन क्षेत्रों के अनेक गीतों में सुनाई पड़ती है, जिनमें चम्बा के 'मलहार' ऊना, काँगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर के वर्षा ऋतु गीत, मंडी की व बिलासपुर के पनिहारा वर्ग की अनेक 'छिजें', चैत्र के वर्ग-विशेष द्वारा गाये जाने वाले महीने के गीत, अनेक भ्यागड़े तथा भजन प्रमुख हैं। यह लय-संरचना 'दीप चंदी' के से चलन की है।

दादरा के चलन की त्रिमात्रिक लय-खण्डीय-लय-संरचना भी इन क्षेत्रों के गीतों में सुनाई पड़ती है। वर्ग-विशेष द्वारा गाई जाने वाली रचनाएँ, जैसे 'बन्ना' है, इनकी लय संरचना 'अद्धा-ताल' के चलन की है।

गद्दी गीतों व 'गुग्गा' (भारथ) को चार मात्रिक लय खण्डीय, लय-संरचना को इस प्रकार अंकित किया जा सकता है :

धा गि न धा	ऽ ग धा ऽ
×	०

लोक नृत्य

सामान्य परिचय—हिमाचल के लोक नृत्य भी सरल, स्वाभाविक, विविध व मनोहारी हैं। अधिकतर लोग नृत्य सामूहिक हैं। इन नृत्यों में कहीं-कहीं केवल महिलाएँ ही सम्मिलित होती हैं, परन्तु अधिकतर सामूहिक नृत्यों में महिला-पुरुष दोनों सम्मिलित होते हैं। इन नृत्यों में आकर्षक लय के अतिरिक्त, नर्तक दल का 'माला' में बन्धने का एक विशेष ढंग तथा पग व अन्य अंग संचलन का निश्चित क्रम अद्भुत आकर्षण पैदा करता है। इन नृत्यों में सम्मिलित नर्तकों के लिए विशेष वेशभूषा बन्धन भी है, लेकिन अब यह बन्धन इतना कठिन नहीं है। अब इन नृत्यों में सामान्य वेशभूषा पहने भी सम्मिलित हुआ जा सकता है। वैसे, नर्तक दल की एक विशेष वेशभूषा नृत्य को और अधिक आकर्षक बनाती है, यह निर्विवाद सत्य है।

सामूहिक नृत्य, एक तो 'माला' में बंधकर, एक विशेष ढंग से एक दूसरे के हाथ थाम कर होते हैं, दूसरे, हाथों को खुले ही रख कर हाथ-पाँव व अन्य अंग संचालन के एक विशेष

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ढंग व क्रम के साथ होते हैं। 'माला' में बंधकर होने वाले सामूहिक नृत्य में लोक-नर्तक, बाएं से दाएं वाद्य-वादकों की ओर मुँह करके गोलाकार नाचते हैं। लय के लिए लोकवाद्य-वादक बीच में बैठते हैं। गीत, नर्तक दल प्रायः स्वयं गाता है।

'माला' में बिना हाथ वांधे जो सामूहिक नृत्य होता है, उसमें भी लोक नर्तक गोल अथवा अंडाकार गोले में प्रायः एक निश्चित क्रम से घूमकर, हाथ-कमर आदि हिलाकर, पांव बढ़ा कर नाचते हैं। ऐसे कुछ सामूहिक नृत्य दो दलों में बंट कर भी होते हैं। लोक नर्तकों के दोनों दल अण्डाकार घेरे में एक दूसरे के सामने खड़े हो जाते हैं और फिर उस अण्डाकार घेरे में, एक दूसरे की ओर मुँह किए हुए ही बाएँ से दाएँ निश्चित अंग संचालन के साथ गोलाकार घूमते हैं। कुछ सामूहिक नृत्यों में केवल पुरुष ही नाचते हैं। कुछेक सामूहिक लोक नृत्य दो-दो के युग्म में भी होते हैं। लोक नृत्यों में फिर एक प्रकार ऐसा है, जिसमें केवल एक या दो व्यक्ति नाचते हैं और शेष व्यक्ति चारों ओर बैठकर गीत गाते हैं, तालियों से लय देते हैं। बैठे हुए व्यक्तियों में से इच्छुक व्यक्ति बारी-बारी उठ कर नृत्य करते हैं। यह नृत्य प्रायः महिलाएँ करती हैं, लेकिन विशेष परिस्थितियों में पुरुष भी इस नृत्य में भाग लेते हैं।

क्षेत्रीय सर्वेक्षण

किन्नौर के मुख्य दो नृत्य हैं। दोनों ही नृत्य सामूहिक हैं। एक नृत्य 'कायङ' और दूसरा 'चाशमिक' कहलाता है। 'कायङ' 'चाशमिक' की अपेक्षा अधिक सामूहिक है।

कायङ में महिला-पुरुष सब एक-दूसरे के हाथ थामकर नाचते हैं। 'माला' में बंधने के लिए हाथ तीसरे व्यक्ति का आगे की ओर थामा जाता है। नृत्य गोल दायरे में होता है। कायङ में महिला-पुरुष संग-संग तो नाचते हैं, लेकिन एक दूसरे के बीच खड़े होकर नहीं नाचते।

कायङ के लिए बंधी माला में महिला-पुरुष अलग-अलग होंगे। पुरुष प्रायः आगे व महिलाएँ पीछे होती हैं। यों जानिये कि पुरुषों की पंक्ति माला में आगे व महिलाओं की पंक्ति पीछे बंधी होती है। लेकिन कभी-कभी महिलाओं वाली पंक्ति में, महिलाओं के बीच-बीच पुरुष भी बंध जाते हैं। कायङ की इस माला में नृत्य ही के समय नए महिला-पुरुष सम्मिलित भी होते रहते हैं, तथा पहले नाच रहे व्यक्ति काम-धाम के लिए माला में से निकलते भी रहते हैं।

कायङ की माला में सबसे आगे का व्यक्ति 'दूरिङ' कहलाता है। यह व्यक्ति प्रायः उस क्षेत्र का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। 'दूरिङ' के हाथ में, दिन के कायङ में, चौरु-मुट्ठा (सुरा गाय की पूंछ के बालों का, चाँदी के हत्थे में बंधा मुट्ठा जो मन्दिरों या घर में भी भगवान् की मूर्ति पर झोला जाता है) रात के कायङ में दूरिङ के हाथ में प्रायः लाठी रहती है। दिन के 'कायङ' में क्योंकि व्यक्ति अधिक होते हैं इसलिए नृत्य के साथ एक गीत नहीं चलता बल्कि एक साथ कई गीत चलते हैं। परन्तु इन गीतों की लय-संरचना एक-सी होती है। गीत लय के समरूप, लोकवाद्यों पर लय देने वाले 'बजंतरी' (वाद्य-वादक) गोल घेरे के बीच बैठे हुए होते हैं।

रात के 'कायङ' में नृत्य के साथ एक बार में प्रायः एक ही गीत गाया जाता है। कायङ के घेरे में आग जली हुई होती है। इस आग के पास ही वाद्य लय के लिए नगाड़े वाला भी बैठा रहता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'कायङ की अवधि निश्चित नहीं होती। बीच-बीच में थोड़े समय का विश्राम देकर 'कायङ' दिन रात चलता है। 'कायङ' के साथ एक-एक गीत डेढ़-डेढ़, दो-दो घण्टों तक भी गाया जाता है और 'कायङ' में सम्मिलित लोग इस गीत की लय में इतने समय के लिए अविराम नाचते हैं।

'कायङ' में प्रयुक्त होने वाले लोक वाद्य हैं :

(१) बाम (नगारा)
(२) ढोल
(३) बान (थाली जैसा वाद्य जिसको लकड़ी के छोटे-पतले डंडे से बजाते हैं)
(४) बुबजाल (झाँझ)
(५) शौन नाल (शहनाई)
(६) रणशीक (रणसिंगा)
(७) कौरनाल (करनाल)
(८) काली—बुखरी-शहनाई की तरह का वाद्य क्रमशः छोटा व लम्बा।

'कायङ' प्रायः मेलों तथा धार्मिक व सामाजिक पर्वों पर नाचा जाता है।
जैसे—
'बीश' (बैशाख में)
'डखरेनी' (श्रावन में)
'फुलायच' (भादों-कार्तिक में)
'फारुल' (फागुन में)
'फागुल'
'द्विआल' (नवम्बर में)
'साज़ो' (संक्रान्ति)
'तथा विवाह आदि अवसर पर।

'कायङ' के लिए वेश-भूषा निश्चित है। कायङ में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति, त्योहारों के लिए बनवाई गई विशेष वेश-भूषा में सजते हैं। लेकिन अब सामान्य वेश-भूषा, कुरता, पायजामा, कोट आदि पहनकर भी 'कायङ' में सम्मिलित हुआ जाता है।

त्योहार की वेश-भूषा, जिसमें एक पुरुष नाचने के लिए आता है, वह है—

(१) पैदथैपिङ—यह सिर के लिए विशेष टोपी है। यह टोपी गोल होती है। इसके किनारे पर एक डोर होती है। टोपी के निचले भाग में मखमल की बहुरंगी गोल पट्टी भी लगी हुई होती है। टोपी के एक किनारे फूल लटका होता है। वह टोपी अब बहुत कम दिखाई पड़ती है। अब प्रायः बुशहरी टोपी ही पहनी जाती है।

(२) 'छुबा'—यह बन्द गले की अचकन-सी होती है। स्वेत अथवा भूरे, सलेटी जैसे रंग की ऊन की बनी हुई होती है। इस पर कशीदे का काम भी कई स्थानों पर किया होता है। गले के ऊपर बाँधने के लिये 'छुबा' में एक आकर्षक डोर भी होती है। इसके अतिरिक्त नीचे कमर वाले भाग में भी कई डोरें लगी हुई होती हैं। अब सामान्य ऊनी कोट भी पहना जाता है।

(३) 'बुरागाछङ' – गाची (कमर में बाँधने का पटका)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(४) **'टौपरु'**—यह तंग मोहरी का पायजामा होता है। ऊन का बना हुआ होता है, और रंग इसका काला होता है। 'टौपरु' में भी घुटने से पाँव तक के भाग में कशीदे का काम हुआ होता है।

(५) **'याङ लुस'**—यह एक श्वेत रंग की ऊनी या पशमीनी चादर होती है, जिसे पुरुष चार तह करके कन्धे पर एक ओर रखते हैं।

(६) **'पौन'**—जूता, जिसका तला चाम का तथा खोल ऊन का बना हुआ होता है। इस पर कशीदे का काम किया होता है।

इस अवसर के लिए महिलाओं की विशेष वेष-भूषा में, पुरुषों के, पौन व 'पैदथैपिङ' तो होते ही हैं। लेकिन 'पैदथैपिङ; विशेष' टोपी के स्थान पर पुरुषों की तरह महिलाएँ भी बुशहरी टोपी ही पहनती हैं।

(७) **'याङलुस'** भी महिलाएँ रखती हैं, परन्तु इनका ढंग अलग है। महिलाएँ 'याङलुस' को दोहरी करके कन्धे के पीछे से लपेट कर, तह किए हुए इनके दोनों किनारों को आगे वक्षः स्थल पर 'पिन' कर लेती हैं। इसके अतिरिक्त नाक, कान, गला, कलाई, अँगुलियाँ, माथा आदि अंग आकर्षक प्रायः कई प्रकार के चाँदी के आभूषणों से सजे रहते हैं।

(८) **दोहरी**—यह हरे या काले रंग की ऊनी लोई (दोहड़ू) होती है, जिस पर बीच-बीच में और किनारों पर कसीदे का आकर्षक काम किया होता है। इसे महिलाएँ एक विशेष ढंग से कमर पर बांधती हैं। यह नीचे पाँव तक पहुँचती है। पहले पीली-काली-सफेद धारियों का 'छोलमा' भी बना होता था। महिलाएँ अब प्रायः एक जाकेट जैसा ऊनी वस्त्र भी पहनती हैं।

(९) 'कायङ' के कई प्रकार भी हैं जैसे—

'बाङपार कायङ'—यह वह कायङ है, जिसकी लय द्रुत होती है। दिन व रात के बाङपार कायङ में भी भेद है। दिन के बाङपार कायङ में लय के लिए केवल 'बाजगी' (वाद्यों) का प्रयोग होता है, गीत नहीं गाया जाता।

रात के बाङपार कायङ में लय के लिए केवल नगारा बजेगा और इस लय पर नृत्य के साथ लोक नर्तक गीत भी गाएँगे।

बाकायङ—इस कायङ में महिलाएँ ही नाचती हैं। महिलाएं आमने-सामने खड़ी होकर लय में आगे-पीछे जाकर नाचती हैं। दस-दस बारह-बारह महिलाओं की दो पंक्तियाँ आमने-सामने खड़ी हो जाती हैं। इन पंक्तियों के पीछे महिलाओं की और कई पंक्तियाँ बन जाती हैं। पंक्तिवद्ध महिलाओं ने एक-दूसरे के हाथ थामें हुए होते हैं। ये पंक्तियाँ फिर गीत की लय पर आगे-पीछे चलती हैं। एक ओर की पंक्तियाँ जितने पग आगे बढ़ती हैं, सामने की पंक्तियाँ उसी लय में उतने ही पग पीछे लौटती हैं। इस प्रकार बारी-बारी ये आमने-सामने गीत की लय में आगे व पीछे चलतो हैं। इस कायङ में आमने-सामने की ये पंक्तियाँ सारे नृत्य में आमने-सामने ही रहती है। यह हो सकता है कि नृत्य करते हुए इनकी स्थिति अथवा दिशा बदल जाए। इस कायङ में वाद्य कोई नहीं बजता। नृत्य की लय मध्य होती है।

सिंहा कायङ—'द्विआल' के समय का कायङ सिंहा-कायङ कहलाता है। यह नृत्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विशेष वृक्षों की शाखाओं के बने साँप 'बानस' का सिर काटने के बाद नाचा जाता है। इस कायङ में केवल पुरुष ही एक-दूसरे के हाथ पकड़कर नाचते हैं।

गैनो कायङ—यह कायङ 'सपनी' (साँप देवता) के लिए नाचा जाता है। इस कायङ में लय के लिए डमरु व मंजीरा बजते हैं।

'चाशमिक'—यह नृत्य प्रायः विवाह अवसर पर नाचा जाता है। इसके दो प्रकार हैं एक **'बाजगी'** (वाद्यों) के साथ नाचा जानं वाला तथा दूसरा 'गीथङ' (गीत) के साथ नाचा जाने वाला।

'बाजगी के साथ वाले 'चाशमिक' में प्रायः पुरुष ही नाचते हैं, परन्तु कभी-कभी महिलाएँ भी इसमें सम्मिलित हो जाती हैं। इस नृत्य में एक-दो या तीन या इससे अधिक पुरुष भी एक साथ नाचते हैं। नाचने वाले व्यक्ति अपने हाथ पाँव के संचालन में स्वतन्त्र होते हैं। शेष लोग किनारे खडे होकर नृत्य का आनन्द लेते हैं।

'बुड़ाछाङ'—यह 'बाजगी' के साथ वाले चाशमिक ही का एक प्रकार है, जो ज्येष्ठ में प्रायः पहले प्रविष्टे से १५ प्रविष्टे तक नाचा जाता है। यह नृत्य रात को होता है। इसमें भी पुरुष ही नाचते हैं। लोक नर्तकों ने बड़े-बड़े भयानक मुखौटे पहने हुए होते हैं।

मुखौटे पहने हुए ही ये व्यक्ति नाचते हैं। रात्रि को एक दल 'बुड़ाछाङ' बन कर साधु आदि का वेश बनाकर आ जाता है और नाचता है। नृत्य के लिए दो तीन पुरुष ही मिलकर हाथी, घोड़े आदि का-सा रूप बन जाते हैं और अपेक्षित अंग-संचालन से इन जानवरों जैसी चाल में चलकर नाचते हैं। जानवरों का-सा ढाँचा बने पुरुषों पर उपयुक्त मुखौटा व अन्य श्रृंगार पहना दिया जाता है, जिससे वह ठीक उस जानवर जैसा लगे। कभी-कभी इस नृत्य में लड़कों को ही (वेष भूषा, श्रृंगार से) लड़कियाँ बनाकर नचाया जाता है। इन बनावटी लड़कियों का मुँह ढका रहता है। नृत्य का आनन्द लेने के लिए महिलाएँ भी अपनी पूरी वेष-भूषा व श्रृंगार में सज-धज कर, चार-पाँच की जोड़ियाँ बनाकर आ जाती हैं। 'बुड़ाछाङ' कोई घण्टा-डेढ़ घण्टा नाचा जाता है। फिर यह आयोजन सम्पन्न होकर, 'कायङ' आरम्भ हो जाता है।

गीत के साथ का 'चाशमिक' सर्दियों में 'तोषमिक' नामक आयोजन व विवाह अवसर पर नाचा जाता है। विवाह अवसर पर महिला-पुरुष 'कायङ' नाचकर थक जाते हैं, तो फिर 'चाशमिक' नाचा जाता है। 'कायङ' से थक कर बैठे हुए महिलाओं-पुरुषों में से दो-एक महिलाएँ गीत गाती हैं तथा गीत की लय पर, दो-एक महिलाएँ तथा दो-एक पुरुष उठकर स्वतन्त्र नाचते हैं।

सर्दियों में तोषमिक का आयोजन युवक-युवतियों का एक विशिष्ट आयोजन है। 'तोषमिक में दस-बीस युवतियाँ अपने गाँव के युवकों के साथ मिलकर एक प्रकार का बाल-भोज (पिकनिक) करती हैं। तोषमिक के लिए गाँव में किसी का भी घर ले लिया जाता है। युवक-युवतियाँ इसी घर के अन्दर ६-७ दिन एक साथ खान-पान करेंगे-नाचेंगे। इस आयोजन में खान-पान की सामग्री के लिए युवक पैसे देते हैं तथा युवतियाँ खान-पान तैयार करती हैं। ६-७ दिन तक रात-दिन युवक-युवतियाँ, इसी घर में रहते हैं, खाते-पीते हैं, नाचते हैं। रात को गाँव के अन्य लोग, महिलाएँ व युवतियां भी भोजन आदि से निवृत होकर तोषमिक देखने के लिए घर-विशेष पर पहुँच जाते हैं। इस अवसर पर युवक-युवतियों की वेशभूषा सामान्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

होती है। प्रायः गीत के साथ का 'चाशमिक' नाचा जाता है। लयके लिए ढोल भी बजता है। 'चाशमिक' प्रायः रात को ही नाचा जाता है। दिन के समय 'तोषमिक'-दल कामधाम के लिए भी निकल जाता हे या फिर रात के उनींदे व थकान को मिटाने के लिए सोया भी रहता है।

ऊपरी महासू क्षेत्र में लोक नृत्य नाटी कहलाता है। इस क्षेत्र के लोक नृत्य प्रकार भी मुख्यता दो प्रकार के हैं। एक प्रकार में महिला-पुरुष मिलकर नाचते हैं। नाटी का यह प्रकार प्रायः दिन में बाहर खुले स्थान पर नाचा जाता है। दूसरे प्रकार में दो चार व्यक्ति ही नाचते हैं। शेष चारों ओर बैठकर नाटी गाते हैं। यह प्रकार शीतऋतु में रात को घर के अन्दर नाचा जाता है। बाहर की सामूहिक नाटी में विशेष वेशभूषा का बन्धन है, लेकिन अब यह बन्धन इतना कठोर नहीं है। नाटी नाचने के इच्छुक व्यक्ति सामान्य वेश-भूषा में भी नाटी में सम्मिलित हो जाते हैं। इस नाटी में, महिला-पुरुष एक-दूसरे के हाथ पकड़कर अथवा कमर में डालकर एक माला में बँध जाते हैं और गोलाकार घेरे में नाचते हैं। नाटी के लिए बँधी माला में कई बार तो महिलाएँ पुरुष अलग-अलग पंक्तिवद्ध, परन्तु कई बार, एक-दूसरे के बीच भी बँध जाते हैं। नाटी में जातिवंधन अब प्रायः नहीं है। कभी ऐसा बंधन भी होता था, और कुछ एक पौराणिक गाथाएँ, जैसे 'सिया' है, ब्राह्मण वर्ग ही गाता था और इस पर ब्राह्मण महिलाएँ ही नृत्य करती थीं।

नाटी में लय के लिए बजंतरी (वाद्य-वादक) बहुधा घेरे के बीच बैठे होते है। ठण्ड में व रात के समय, बीच में आग भी जली होती है। इसी लय पर नर्तक मण्डली नाटियाँ (गीत) भी गाती हैं। नृत्य के साथ गाई जाने वाली नाटियाँ अधिकतर शृंगार गीत हैं। कथा-गीत, नाटी के साथ बहुत कम गाए जाते हैं। नाटी के साथ 'प्रणय प्रश्नोत्तरी' ढंग के गीत भी गाए जाते हैं।

यह नाटी तीन लयो में नाची जाती है—

(१) ढीली (बिलम्बित लय)

(२) तावली (मध्य लय)

(३) द्यौली (द्रुत लय)

इस नाटी के लिए पुरुषों की वेश-भूषा है—

(१) बन्द गले का ऊनी कोट।

(२) नलीदार ऊनी पायजामा।

(३) पाँव में पाँठे (पोलड़े-चमड़े के बने हुए) अब बहुत कम दिखाई पड़ते हैं। अब सामान्य जूते पहने होते हैं।

कहीं-कहीं जहाँ नाटी मन्दिर आदि के अहाते में नाची जा रही हो, वहाँ नंगे पाँव भी नाचते हैं।

(४) गाची—प्रायः हाथ के बुने हुए मोटे कपड़े का कोई से भी रंग का कमर बन्द। पुरुष पहरावे में अब इसका प्रचलन उतना अधिक नहीं।

(५) किश्तीदार टोपी। पहले गोल टोपी पहनी जाती थी।

(६) हाथ में रूमाल।

देवताओं के साथ नाचने वालों का पहरावा और भी विशेष होता है। जिस प्रकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'डोम देवता' के साथ नाचने वालों की वेष-भूषा यह होती है—

(१) चूड़ीदार पायजामा ।
(२) शरीर पर 'चोलू' (अचकन जैसा)
(३) सिर पर पगड़ी ।
(४) कमर में गाची ।
(५) हाथ में रुमाल ।

नाटी की माला में सबसे आगे वाले व्यक्ति (अगुआ) के हाथ में देवते का 'ताला' (चाँदी-सोने की बनी हुई देव मन्दिर की ताली) होता है । यह वेशभूषा प्रायः स्वेत होती है ।

नाटी में महिलाओं की वेशभूषा होती है—

(१) चूड़ीदार प्रायः ऊनी पायजामा ।
(२) रेजटा-अचकन जैसा विशेष प्रायः ऊनी वस्त्र ।
(३) पाँव में पाँठे अथवा सामान्य जूते ।
(४) कमर में 'गाची' । हाथ के बुने हुए, किसी भी रंग के मोटे कपड़े की ।
(५) धाटू—सिर पर बाँधने के लिए चौड़ा-सा कपड़ा । धाटू पहले प्रायः काले रंग की इटालियन का बांधा जाता था । उसके बाद वसंती रंग के धाटू का प्रचलन हुआ । अब किसी भी रंग का धाटू बाँध लिया जाता है । वैसे अब प्रायः छींट का धाटू महिलाएं बाँधती हैं । इसके अतिरिक्त कान, नाक, गला, माथा, कलाई, अँगुलियाँ, पाँव आदि अंग, अनेक प्रकार के, प्रायः चाँदी के आभूषणों से शोभायमान होते हैं ।

नाटी के साथ बजने वाले लोक वाद्य हैं—

(१) ढोल
(२) नगारा
(३) शहनाई
(४) करनाल
(५) रणसिंगा
(६) ताशा —(मंजीरे के रूप का बड़े आकार का लोक वाद्य, जिसे लकड़ी की डंडी से बजाते हैं ।
(७) गुझू—(डमरू की तरह का वाद्य)
(८) बाह्‌णा—(थाली जैसा वाद्य, जिसे लकड़ी के डंडे से बजाते हैं)
(९) काह्‌वली—(करनाल का छोटा-सा रूप जिसका मुँह खुला होने के बजाय आगे से तंग होता है । इन वाद्यों में, 'गुझू' व 'काह्‌चली' का प्रचलन अब बहुत कम है । नाटी का दूसरा प्रकार, जो घर के अन्दर नाचा जाता है । बहुधा नाच कहलाला है । कुछेक स्थानों पर इसे 'नाट' भी कहा जाता है । इस प्रकार के नृत्य में जातीय बंधन प्रायः रहता है । इस नृत्य के साथ कथानक गाए जाते हैं, जिन्हें 'अँचली' कहा जाता है । अंचली में पहले 'ब्रह्मखाड़ा' गाया जाता है । इसमें देवी-देवताओं का, भगवान् का गुण-गान-स्तुति, पौराणिक गाथाएँ आदि गाई जाती हैं । फिर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसके बाद 'भारथ' अथवा 'बार' गाई जाती है। इसमें शौर्य कथानक गाए जाते हैं, जिनके नायक सामान्य व्यक्ति भी होते हैं। यह 'नाच' भी 'ढीली'-'तावली' तथा 'धीली' इन तीनों लयों में नाचा जाता है। इस नाच में दो चार पुरुष ही बहुधा नाचते हैं।

ब्राह्मण वर्ग, इस नाच में पहले (विलम्बित) लय में 'ब्रह्मखाड़ा' गाता है। नाचने वाले दो-एक पुरुष, इसी लय में स्वतन्त्र अंग संचालन कर नाचते हैं। फिर गायक मण्डली, 'ब्रह्मखाड़े' की लय को द्रुत कर देते हैं, और नर्तक फिर द्रुत लय में नाचते हैं। अब 'ब्रह्मखाड़े' के अतिरिक्त इस वर्ग की 'अंचली' में शौर्य-कथानक 'भारथ' अथवा 'बार' भी गाये जाने लगे हैं। 'बार' मध्य लय में गाई जाती है। और तब नर्तक इसी लय में नाचते हैं। इस नाच में प्रायः पुरुष नाचते हैं या फिर बच्चे बच्चियाँ भी नाचती हैं। कहीं-कहीं युवतियाँ भी नाचती हैं।

क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र वर्ग अंदर का नाच विलम्बित, मध्य व द्रुत, इन तीन लयों में नाचता है। बिलम्बित लय में 'ब्रह्मखाड़ा', मध्य लय में 'भारथ' अथवा 'बार' और द्रुत लय में 'भारथ' व 'ब्रह्मखाड़ा' गाया जाता है। जन-जातियों के, अंचली आयोजन में, "स्वांग" -(नाटिकाएँ) भी खेले जाते हैं। लय के लिए' बजंतरी', गायक मण्डली के साथ अथवा गोल दायरे में बैठे होते है।

अंदर के नाच में ये वाद्य प्रयुक्त होते हैं—

(१) ढोलक

(२) मंजीरा

(३) खंजरी

(४) डकोली (डमरू की तरह का वाद्य, जो बकरे या भेडे के आमाशय की खाल से मढ़ा होता है। सिरमौरी लोक-वाद्य 'हुलक' से, यह आकार में छोटा होता है। इसे, एक ओर से, 'हुलक' की तरह ही बजाया जाता है।

अंदर की नाटी में, पहरावे का बंधन नहीं है। रात को अगर मौसम ठीक हो, अधिक ठण्ड न हो तो, विवाह तथा मेलों आदि के अवसर पर रात को भी बाहर खुले में सामूहिक 'नाटी' नाची जाती हैं।

यह 'नाटी' सारी रात भर भी नाची जाती है। किसी विशेष आयोजन पर, समारोह के अनुसार, 'नाटी' का समय सीमित भी होता है।

रात को होने वाला एक 'मुजरा' नाम का आयोजन भी है। इसमें भी दो-चार व्यक्ति नाचते हैं 'मुजरे' में प्रायः शृंगार गीत व घटना-गीत गाये जाते हैं गीत की लय, और इसके साथ नृत्य की लय बहुधा द्रुत होती है मुजरे में भी वैसे प्रायः पुरुष नाचते हैं, परन्तु युवतियाँ भी नाचती हैं। लय के लिए, 'अंचली' वाले वाद्य ही प्रयुक्त होते हैं।

इस क्षेत्र में, भेड़-बकरियाँ पालने वाले लोगों (गद्दियों) का एक विशेष नृत्य है, जिसे 'फुआल नाच' कहा जाता है। यह जन-जाति, 'फुआल नाच' बहुधा तब नाचती हैं, जब पुरुष वर्ग, लम्बे समय (दो-एक माह) के बाद, अपना माल-(भेड़-बकरियां) लेकर ऊँचे पहाड़ों पर से घर लौटता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

फुआल नाच वैसे तो विलम्बित, मध्य, द्रुत सभी लयों में नाचा जाता है। परन्तु प्राय: इसकी लय द्रुत रहती है। यह 'नाच' केवल पुरुष वर्ग ही नाचता है। महिलाएँ, दूर से नृत्य का आनन्द लेती हैं। नाच गोल घेरे में नाचा जाता है। नर्तक (दो-एक) पहले नीचे बैठ कर गीत के बोल बोलता है, फिर नाचने लगता है। घेरे के व्यक्ति फिर गीत गाते रहते हैं, तालियों से लय देते रहते हैं, और नर्तक नाचता रहता है। इनका पहनावा होता है—

(१) चूड़ीदार ऊनी पायजामा।
(२) गोल टोपी प्राय: ऊनी।
(३) गाची-काली ऊन की मोटी लम्बी डोर, जिसे कमर में बाँधा हुआ होता है।
(४) लोइया (अचकन जैसा लम्बा ऊनी कोट)
(५) पांव में मोटा जूता।

इनके हाथ में प्राय: ऊन कातने की काष्ठ-तकली रहती है। ऊन रखने के लिए, टीन का एक डब्बा भी होता है, तथा पीठ पर रस्सियों की जाली अथवा कपड़े में लिपटी हुई गंदम की मोटी रोटी भी बंधी होती है।

इस क्षेत्र में दीवाली के अवसर पर जो रामचरित मानस गाया जाता है, उसके साथ भी नृत्य होता है। यह नृत्य पुरुष वर्ग ही करता है। पुरुष वर्ग, एक-दूसरे के कन्धे पर हाथ रख कर, युग्म बनाकर नाचता है। एक जोड़े के पीछे दूसरा, दूसरे के पीछे तीसरा, इस प्रकार नृत्य कर रहे, पुरुष युग्मों की एक पंक्ति सी बन जाती है। पंक्ति वद्ध ये नर्तक-युग्म गोल घेरे में आग के चारों ओर दाएं से बाएं नाचते हैं। यह आयोजन रात के समय होता है, इसलिए बीच में आग जली होती है, जिसके चारों ओर दर्शक बैठे होते हैं। दर्शकों के घेरे के अंदर की आग के चारों ओर यह नाच नाचा जाता है। इसमें नर्तक का मुँह घेरे में अंदर की ओर को, वादक की ओर को नहीं होता। लय के लिए ढोल बजता है। वादक घेरे के अंदर बैठा होता है। त्रिमात्रिक द्रुत लय-खण्डीय लय में यह नाच नाचा जाता है। इस लय में नर्तक युग्म एक दूसरे के पीछे मुक्त हाथों को नचाते हुए आगे बढ़ते जाते हैं, आग के चारों ओर चक्कर काटते हैं। इस नृत्य में पहरावा सामान्य ही होता है।

ऊपरी महासू की तरह की सिरमौर के ऊंचे क्षेत्रों में भी नृत्य को नाटी-नाच कहा जाता है। इसके मुख्य दो रूप हैं। एक बाहर, खुले में नाचा जाने वाला सामूहिक नृत्य, जिस में महिलाएं-पुरुष मिल कर नाचते हैं, या फिर जहाँ महिलाएं ही हों, वहाँ दो-एक महिलाएं नाचती हैं। यह नृत्य प्राय: रात को होता है।

सामूहिक नाटी में महिलाएँ-पुरुष अलग-अलग अथवा एक दूसरे के बीच 'माला' में बंध कर नाचते हैं। तीसरे व्यक्ति का हाथ पकड़कर बहुधा 'माला' वंधती है। माला में सबसे आगे के व्यक्ति (अगुआ) के हाथ में एक 'डांगरा' (छोटा परशु सा) होता है

नाटी गोल घेरे में बाएं से दाएं नाची जाती हैं। नाच में निश्चित अंग संचालन के अतिरिक्त पांव भी 'नाटी' की लय में एक निश्चित क्रम से रखे उठाये जाते हैं। लय अधिकतर मध्य व द्रुत रहती है। नाटी नें अधिकतर श्रृंगार गीत गाये जाते हैं। मस्ती में आकर बीच-बीच में नर्तक मण्डली 'हो-हो' की ध्वनि भी करती हैं कभी-कभी हाथ छोड़कर अलग-अलग खुला नृत्य भी करते हैं बैठकर, झुक कर, आकर्षक मुद्राएं बनाते हैं। लेकिन ये मुद्राएँ, यह अंग संचालन सबका एक जैसा होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस नाटी के लिए-महिलाओं-पुरुषों का पहरावा भी थोड़े बहुत अंतर के साथ ऊपरी महासू के पहरावे जैसी ही होता है। पुरुष अचकन जैसा ऊनी कोट पहनते हैं, जिसे 'लोइया' कहते हैं, और नलीदार-चूड़ीदार पायजामा पहनते हैं जिसे 'सुथण' कहते है। महिलाएँ भी चूड़ीदार पायजामा पहनती हैं। बहुत स्थानों पर 'धाटू' भी बाँधती हैं। कमर में 'गाची' बाँधी हुई होती है। हाथ में रूमाल भी होते हैं पुरुषों के सिर पर गोल टोपी होती। महिलाएँ चाँदी के अनेक आभूषणों से सजी रहती हैं। नृत्य में यहाँ भी विशेष पहनावे का कड़ा बंधन नहीं।

सामान्य वेश-भूषा में भी 'नाटी' नाची जाती है। लय देने के लिए वादक घेरे में बैठते हैं। ढोल-वादक प्रायः खड़ा होकर ढोल बजाता है। यह 'नाटी' मेलों, देवस्थानों तथा विवाह आदि में नाची जाती है। समय निश्चित नहीं होता। जब तक चाहें, 'नाटी' लगी हुई रहती है। नाटी में प्रयुक्त होने वाले वाद्य भी लगभग वही हैं, जो ऊपरी महासू क्षेत्र में बजाए जाते हैं, जैसे—

१. ढोल
२. नगारा
३. रणसिंगा
४. करनाल
५. शहनाई
६. दमाना (नगारे का छोटा रूप)
७. बाहणा
८. हुलक अथवा हुड़क—डमरू की तरह का बड़े आकार का वाद्य। प्रायः पौराणिक गाथाओं के गायन के साथ बजता है।

इस नाटी का एक स्थानीय नाम रासा भी है। लाम्ब का नाच भी इसे कहा जाता है। इसमें क्रम से १२-१२, १५-१५ महिलाएँ-पुरुष माला में बँध कर नाचते हैं। नाचने वाले पुरुषों ने 'चोल्टू' (स्वेत लम्बा चोला, जिसमें लम्बा डोरा भी होता है।) पहना होता है। इस 'चोल्टू' पर कशीदे का काम भी हुआ होता है। गोल स्वेत टोपी (जिस पर लाल धागे से कढ़ाई भी की होती है) पहनी जाती है। इसे चूहा टोपी भी कहते हैं। दीवाली, बिशु, हरयाल्टी आदि त्यौहारों तथा विवाह आदि अवसरों पर 'रासा' नाचा जाता है। 'रासे' में नतकों के कंधों पर द्वितीय नर्तक मण्डली तथा उनके कंधों पर तृतीय नर्तक मण्डली हाथ बाँध कर खड़ी होकर नृत्य करने जैसे करतब भी दिखाये जाते हैं। अंदर का नाच भी ऊपरी महासू की तरह 'मुजरा' कहलाता है। 'गुड़ाई' "गबराई", 'हैला' आदि खेतों के काम, जिसके लिए प्रायः बुआरा किया जाता है, मिल-जुल कर किए जाते हैं। इन कामों से निवृत होने के बाद तथा मेले, जातर व विवाह आदि अवसरों पर रात को 'मुजरा' गाया-नाचा जाता है। विवाह अवसर पर पहले 'महफिल' होती है, फिर 'मुजरा' होता है। विवाह आदि अवसरों पर महिलाओं में 'भड़ूँआँ' (गिद्धा) भी नाचा जाता है।

मुजरे में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति (प्रायः पुरुष) खुले से कमरे में गोल घेरा बनाकर बैठ जाते हैं। ठंड हो तो बीच में आग जला ली जाती है। 'मुजरे' में लय के लिए ये वाद्य प्रयुक्त होते हैं—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१. ढोलक
२. खंजरी
३. घड़ा
४. थाली

वादक 'मुजरा' मण्डली के साथ ही घेरे में अंदर की ओर बैठ जाते हैं। 'मुजरा' मण्डली फिर गीत गाती है और दो-एक व्यक्ति, बारी-बारी उठकर स्वतन्त्र नृत्य करते हैं। महिलाएँ 'मुजरा' नचती-गाती नहीं, केवल देखती-सुनती हैं। यह आयोजन आधीरात तक या इसमें भी लम्बी अवधि तक चलता है। सर्दियों में 'हरूल'-'भारथ' आदि नाटियों के साथ अंदर के नाच को 'गीह' कहते हैं। इसमें गायक घेरे में बैठ जाते हैं तथा एक को नर्तक बीच में मुक्त अंग संचालन कर नृत्य करते हैं। ठडईर, धखेणी, द्रौड़ी, इस क्षेत्र के कुछ और नृत्य विशेष है।

इस क्षेत्र में अनावृष्टि की अवस्था में साधटू का आयोजन भी होता है। इसे कुछ व्यक्ति एकत्र होकर रात को गाँव में घर-घर घूम कर नाचते गाते हैं। इस अवसर पर भजन, पौराणिक गाथाएँ आदि ही गाई जाती हैं। जन जीवन का विश्वास है कि इस आयोजन से वर्षा हो जाती है। घर-घर घूमती साधटू-मण्डली को अनाज भी प्राप्त होता है जिससे वर्षा हो जाने के बाद एक सामूहिक भोज कर दिया जाता है। मण्डली रात-रात गाती-नाचती है। पहरावा सामान्य से भी कम कुछ-कुछ संतों जैसा होता है। नाच में अंग संचालन मुक्त-रूप से होता है। लय के लिए ढोलकी, खंजरी, हुलक आदि लोक-वाद्य भी साथ होते हैं।

इस क्षेत्र में तथा निचले महासू क्षेत्र में (शिमला व सोलन के हिस्सों में) एक मनोरंजन लोक नाट्य का आयोजन होता है, जिसे 'करयाला' कहा जाता है। 'करयाला' बहुधा दशहरे से द्योठन (दिवाली के बाद एकादश) तक होता है। यह आयोजन बाहर खुले में होता है (जहाँ प्रायः देवस्थल भी होता है)। बीच में छोटी-छोटी समिधा जलाई जाती है और उसके आस पास 'करियाला' मण्डली अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। दर्शक चारों ओर खुले घेरे में बैठते हैं। करियाले में पहले चंद्रावली, फिर आरती और साथ मालण, जोगी-जोगन, गद्दी, मेम-साहब, आदि सामाजिक विशेष चरित्रों का 'स्वाँग' खेला जाता है। 'करयाले' में भी प्रसंग के अनुरूप 'स्वाँग' में स्वाभाविक लगने वाला, यथोचित समंजित गीत-कार्यक्रम होता है। यह मूलतः नाट्य आयोजन है, इसलिए कलाकार (केवल पुरुष) नाट्य अनुरूप बनाव-श्रृंगार किए होते हैं। नर्तक का बनाव-श्रृंगार नर्तकी जैसा किया होता है। पाँव में घुँगरू होते हैं। गीत की लय पर नृत्य होता है। कभी-कभी स्वाँग का हास्य कलाकार भी संग नाचता है। नृत्य प्रायः स्वतन्त्र होता है। लय के लिए ढोल-नगाड़ा आदि वाद्य होते हैं। इनके अतिरिक्त रणसिंगा, शहनाई-करनाल व हरमोनियम वाद्य भी होते हैं। यह आयोजन भी रात को बहुत समय तक प्रायः ३-४ बजे तक चलता है। प्रदेश के अन्य भागों में भी मनोरंजन के लिए भिन्न लयों में थोड़े बहुत अन्तर से ऐसे आयोजन होते हैं, जैसे मण्डी में 'बाँठड़ा', चम्बा में 'हरण्यातर' व 'स्वाँग' तथा विलासपुर-कांगड़ा आदि क्षेत्रों में भी 'स्वाँग'।

कुल्लू में भी नृत्य को नाटी कहते हैं। नाटी सामूहिक ही होती है और बाहर खुले में नाची जाती हैं। नाटी में सम्मिलित होने वालों की संख्या निश्चित नहीं होती। लोक-नर्तक एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर माला में बंधते हैं और प्रायः गोल घेरे में नाचते है। वाद्य बादक घेरे के बीच बैठे होते हैं। इस सामूहिक नृत्य में महिलाएँ प्रायः सम्मिलित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं होती, केवल पुरुष ही नाचते हैं। महिलाएँ दूर से नृत्य देखती हैं। परन्तु अब, कुछ विशेष सार्वजनिक समारोहों पर महिलाएँ भी 'नाटी' की माला में पुरुषों के बीच बंधकर नाचती हैं। 'नाटी' ऊपरी महासू सिरमौर की भाँति ही, मेलों, धार्मिक पर्वों, देवी-देवताओं से सम्बद्ध आयोजनों तथा विवाह आदि अन्य हर्षोल्लास के अवसरों पर नाची जाती है। नाटी के साथ वाद्यों की लय पर लोक गीत गाए जाते हैं, जो बहुधा शृंगार गीत होते हैं। इस लय पर एक निश्चित क्रम में पाँव उठाए-रखे जाते हैं, तथा अन्य यथोचित अंग संचालन होता है। इस सामूहिक नृत्य के लिए नर्तकों की निश्चित वेश-भूषा होती है, परन्तु सामान्य वेश-भूषा पहने भी नाटी में सम्मलित हो जाते हैं। पुरुषों का विशेष पहरावा है—

१. टोपा—सिर पर काले रंग की ऊनी टोपी। टोपी के किनारे चारों ओर एक चाँदी की अथवा पीले फूलों (वंसत मालती) की झालर-सी टंकी हुई होती है, जो कि नर्तक के सिर के आस-पास झूलती रहती है। सौंदर्य वृद्धि के लिए इस टोपी में मनाल पक्षी की कलगी (कलँगी) भी टंकी होती है।

२. चोला—श्वेत, ऊनी अचकन सी जिसका पर्याप्त घेरा होता है।

३. पटकू—रंगीन कमर-वन्द जिसे चोला पहन कर कमर में बाँधा जाता है और बाँधने के बाद इसके दोनों किनारे आगे की ओर को लटकाए जाते हैं।

४. चूड़ीदार प्रायः ऊनी पायजामा।

५. ऊनी चादर जिसे लम्बी तह कर के एक किनारा बाएँ कंधे पर लटकाया जाता है, तथा दूसरा किनारा दाईं ओर नीचे कमर में बाँध दिया जाता है।

६. पाँव में ऊनी खोल वाला या सामान्य जूता।

महिलाओं की विशेष वेष-भूषा है—

१. पौटू—ऊनी प्रायः चितकवरी चादर, जिसे एक विशेष ढंग से वाँधा हुआ होता है; और जो नीचे पाँव तक लटकता है।

२. चूड़ीदार पायजामा।

३. थीपटी, थीपटू थीपू-सिर पर बाँधने का रंगीन खुला कपड़ा।

४. पाँव में जूते और नाक, कान, सिर, गला, कलाई, अँगुलियाँ, पाँव अनेक आकर्षक चाँदी के आभूषणों से सुसज्जित।

लय के लिए वाद्य प्रयुक्त होते हैं—

१. नगारा

२. ढोल

३. काहल (करनाल)

४. नरसिंग (गण सिंगा)

५. शहनाई

नाटी, नगारा, ढोल, शहनाई बादन के साथ प्रारम्भ होती है। शहनाई पर लोक-धुन बजती है। ढोल-नगारे लय देते हैं।

नाटी विलम्बित व द्रुत लय में नाची जाती है। विलम्बित लय की नाटी ढीली व द्रुत (बढ़ी) लय की 'रूंझका' कहलाती है।

नाटी नाचते हुए नर्तक कभी हाथ छोड़कर अलग भी हो जाते हैं, कभी एक-दूसरे का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हाथ पकड़ कर नाचने लगते हैं। माला में बँधी नर्तक मण्डली कभी दो भागों में बँट कर आकर्षक आकृतियाँ बनाती हैं, एक-दूसरे के बीचों-बीच अलग-अलग दिशाओं में नाचती है। इसे 'दोहरी' नाटी कहा जाता है। लोक नर्तक नाचते हुए निश्चित क्रम में पग-संचालन के अतिरिक्त आगे-पीछे दाएँ-बाएँ भी क्रम में झुकते हैं। कमर झुका कर नाची गई नाटी 'फेटी नाटी' कहलाती है। नर्तक जो भी करतब दिखाएँ, उनमें एक निश्चित क्रम तथा साम्य रहता हैं।

नाटी नाचते हुए कभी-कभी माला से अलग होकर घेरे में कुछ दक्ष नर्तक तलवार घुमाने का करतब भी नाचते हुए दिखाते हैं। इस नाटी को 'खड़ायत' कहते हैं। ये नर्तक म्यान से तलवार को निकाल कर एक हाथ में तलवार और दूसरे में म्यान लेकर नाटी की सामान्य लय में नाचते हैं। जब लय पर्याप्त द्रुत हो जाती है, तो फिर नाटी थम जाती है और तलवार वाले नर्तक ही युग्यों में तीव्र गति के तलवार घुमाते हुए नाचते हैं।

नाटी को एक-दूसरे के बीच पर्याप्त अंतर छोड़ कर एक-दूसरे के फैलाये हुए हाथ पकड़ कर भी नाचा जाता है। इसे 'लाम्बर नाटी' कहते हैं।

दीपावली के अवसर पर महासू में जिस प्रकार का नाच नाचा जाता है, वैसा ही एक नाच कुल्लू में नाचते हैं। इसके नर्तकों का मुँह वादकों की ओर नहीं होता बल्कि वो आगे की ओर मुँह करके नाचते हैं। नर्तक, अपने दोनों हाथ, अपने आगे वाले दूसरे नर्तक के दोनों कंधों पर रख कर पंक्ति बद्ध होते हैं। इस पंक्ति में आगे के दो-चार नर्तक, वाद्यों की लय पर, गीत गाते हैं, और आकर्षक ढंग से लय पर झूमते हुए शरीर को लचकाते हुए मस्त (विलम्बित) चाल से गोल घेरे में आगे बढ़ते हैं। इसे 'घुघुती नाटी कहा जाता है। इसके अतिरिक्त, नाटियों के गाँवों के नाम पर निजी नाम भी होते हैं, जैसे 'कहाहिलू नाटी' 'बगोणु नाटी' आदि। सिरमौर के 'रासे' जैसा नृत्य करतब भी कुल्लू की 'नाटी' में देखने को मिलता है।

कुल्लू में भी किन्नौर के 'बुड़ाछाङ' की भाँति एक 'हरण नाच' नाचा जाता है। इसमें पुरुष वर्ग ही भाग लेता है। महिलाएँ केवल देखती हैं। इसमें दो नर्तकों को विशेष ढंग से झुका कर फिर इन पर काली धारियों वाली चादर ओढ़ा देते हैं। झुके हुए दोनों नर्तक इस प्रकार से झुके होते हैं एवं इस प्रकार एक-दूसरे को पकड़े हुए होते हैं कि उन पर चादर ओढ़ाने के बाद मृग जैसी आकृति बन जाती है। इस 'हरण' के सिर पर लकड़ी के सींग भी दिखाये जाते हैं। यह 'हरण' फिर वाद्यों की लय पर मृग जैसी चाल में झूमता हुआ नाचता है। इसके आस-पास दो नर्तक और नाचते हैं, जिनका मूल उद्देश्य नाचते 'हरण' का मार्ग दर्शन होता है। इन दो नर्तकों में एक 'महिला' बना हुआ होता है।

किन्नौर के 'बाकायङ' की ही भाँति 'लालड़ी' नाम का एक नृत्य कुल्लू में भी नाचा जाता है। इसमें भी केवल महिलाएँ ही नाचती है। नृत्य बाहर खुले में होता है। सुन्दर वेष-भूषा व आभूषणों से सुसज्जित महिलाएँ दो दलों में बँट कर एक-दूसरे के सामने पंक्ति बद्ध हो जाती हैं। फिर एक दल गीत गाना प्रारम्भ करता है। और कमर को थोड़ा झुकाकर एक साथ तालियाँ बजाता है, क्रम से पाँव उठा-रखकर गीत का एक चरण पूरा होने तक आगे बढ़ता है। महिलाओं की सामने वाली पंक्ति इसी क्रम से पीछे हटती हैं। गीत का चरण पूरा हो जाने पर आगे बढ़ रही व पीछे हट रही महिलाएँ थम जाती हैं। फिर महिलाओं की दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति की भाँति, गीत का दूसरा चरण गाती हुई आगे बढ़ती हैं और पहली पंक्ति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उसी क्रम से पीछे हटती है। इस प्रकार यह नृत्य पर्याप्त समय तक नाचा जाता है।

कुल्लू नगर में काँगड़ा की भाँति ही महिलाएँ विवाह, पुत्र जन्म तथा अन्य सुअवसर पर घर के अन्दर गिद्धा भी नाचती हैं।

किन्नौर के 'कायङ' व महासू सिरमौर तथा कुल्लू की नाटियों के साथ, गीतों की ही लय संरचना बजती है। बहुधा, गीत लय-संरचना के दो आवर्तनों में नाटी की गति में पग-संचालन के निश्चित क्रम का एक आवर्तन पूरा होता है।

चम्बा में दोनों तरह का नृत्य नाचा जाता है। एक सामूहिक नृत्य जिसे प्रायः बाहर खुले स्थान में नाचा जाता है। यह नृत्य दिन को नाचा जाता है। दूसरा अन्दर का नाच जिसे दो-एक व्यक्ति नाचते हैं और जो प्रायः रात को नाचा जाता है।

सामूहिक नृत्य एक-दूसरे के हाथ पकड़ कर और बिना हाथ पकड़े दोनों तरह से नाचा जाता है। नृत्य बहुधा गोल घेरे में बाएँ से दाएँ नाचा जाता है वाद्य वादक गोल घेरे के अन्दर बैठते हैं। एक-दूसरे के हाथ पकड़ कर बँधी 'माला' में सामूहिक नृत्य करते हुए नर्तक मण्डली का मुँह वादकों की ओर घेरे के अन्दर की तरफ रहता है और बिना हाथ पकड़े गोल घेरे में नाचते हुए पंक्ति वद्ध नर्तकों का मुँह घेरे के अन्दर की ओर न होकर दाएँ और बाएँ घूमता रहता है।

चम्बा नगर क्षेत्र में इस प्रकार का एक 'घुरई' नामक सामूहिक नृत्य नाचा जाता है। यह महिलाओं का ही नृत्य है। 'घुरई' मेलों, धार्मिक पर्वों और विवाह आदि विशेष अवसरों पर नाचा जाता है। नाच में गाने का बन्धन नहीं है। इस नृत्य के साथ अवसर से ही संबद्ध गीत भी गाया जाता है। यह गीत प्रकार भी घुरई कहलाता है। महिलाओं की वेशभूषा, अवसर के अनुरूप विशेष होती है। 'सूई' के मेले पर 'घुरई' नाचने वाली महिलाओं की यह वेशभूषा होती है।

१. पुसाज—कुरते-पायजामें के ऊपर पहनी जाने वाली ऊनी अथवा सूती एक विशेष महिला वस्त्र, जिसका कमर से नीचे पाँव तक का भाग पर्याप्त खुला व तहदार घेरे वाला होता है। प्रदेश में प्रायः हर स्थान पर विशेषतया निचले क्षेत्रों में 'पुसाज' महिलाओं का एक अनिवार्य वस्त्र होता था, जिसे घर से बाहर किसी कार्यवश जाने वाली प्रत्येक महिला अवश्य पहनती थी। अब यह वस्त्र लुप्तप्रायः है।
२. सिर पर गोटे-किनारी वाला दुपट्टा जिसे महिलाएँ नव-विवाहिताओं की तरह ओढ़ कर 'घुरई' नाचती है। पाँव नंगे होते हैं।

महिलाएँ एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर गोल दायरे में घूमते हुए बाएँ से दाएँ नाचती हैं। नाच में दायाँ-बायाँ पाँव बारी-बारी आगे-पीछे किया जाता है और माला में बंधी महिलाएँ गोल घेरे में आगे बढ़ती जाती हैं। पग-संचालन में, यदि दायाँ पाँव पीछे किया है, तो बायाँ पाँव भी पीछे ले जाया जाकर दाएँ के साथ मिला दिया जाता है। फिर जब बाँया पांव आगे बढ़ाया, तो दायाँ पाँव भी आगे लाकर बाएँ के साथ मिला दिया जाता है। पाँव को आगे पीछे लाने-रखने का यह क्रम हर बार, थोड़ा दाएँ बढ़ कर किया जाता है। इस प्रकार पग-संचालन के साथ महिलाएँ आगे-पीछे भी झुकती हैं। पग-संचालन और आगे-पीछे झुकना सबका एक जैसा व एक ही समय पर होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घुरई नृत्य चम्बा के चुराह, पाँगी आदि अन्य क्षेत्रों में भी नाचा जाता है।

पाँगी के 'घुरई' नचुण (नृत्य) का ढंग, चम्बा नगर क्षेत्र से थोड़ा-सा भिन्न है। इस क्षेत्र में घुरई नाचने से पहले देवी-देवता वंदना प्रयोज्य आग में (चूल्हे में, या कड़ाही में डाली आग पर) 'धूप' डालते हैं। फिर दस-दस बारह-बारह, या इससे कम महिलाओं के दो दल बन जाते हैं। दोनों दलों की महिलाएँ एक दूसरी के हाथ सीधे (दायाँ-बायाँ) पकड़ कर; आमने-सामने अण्डाकार आकृति में पंक्ति-बद्ध होकर, इस तरह खड़ी होती हैं कि पंक्तियों के दोनों छोर एक-दूसरे के पास तो होते हैं, परन्तु आपस में मिलते नहीं। इस प्रकार अण्डाकार आकृति में आमने-सामने खड़ी पंक्ति बद्ध महिलाएँ फिर पाँव को गीत की लय में विशेष क्रम से उठा-रख कर, एक साथ आगे व पीछे झुकती हुई बाएँ से दाएँ गोलाकार घूमती है। मुंह दोनों पंक्तियों का आमने-सामने रहता है, छोर मिलते नहीं, और यह अण्डाकार आकृति ही लय-बद्ध विशेष पग-संचालन से बाएँ से दाएँ गोलाकार घूमती है। लय के लिए ढनूस (ढोल) बजता है।

महिलाओं का विशेष पहरावा है —

१. **चलन**—पायजामा चूड़ीदार। पुरुषों की अपेक्षा अधिक तंग।

२. **कमरी**—लम्बा कुरता। सुवर्णों में घुटनों तक लम्बा व हरिजनों में घुटनों से नीचे तक लम्बा

३. **खेस**—सूती चादर, कुरते के ऊपर लपेटने के लिए। यह चादर, प्राय: ११-१२ फुट लम्बी और ३-४ फुट चौड़ी होती है। इस पर फूल भी काढ़े हुए होते हैं। चादर के दोनों पल्लू, दोनों कंधों पर 'डुमणू' (चाँदी अथवा लोहे के पिन विशेष) से टंके रहते हैं। कई महिलाओं के ये 'डुमणू' वक्ष: स्थल पर लटकी एक चाँदी की जंजीर से जुड़े होते हैं। चादर बाएँ कन्धे से बाई ओर नीचे ले जाकर फिर सामने दाएँ से ले जाई गई होती है। नीचे, दाएँ से फिर ऊपर बाएँ कन्धे पर ले जाकर पीठ पीछे यह चादर बाँधी होती हैं।

४. **जोजी**—प्राय: लाल रग के (साटिन) कपड़े का सिर के लिए विशेष पहरावा। यह दो-तीन अथवा चार-चार तहों की होती है। आकार इसका गोल होता है। ऊपरी, सिर को ढाँपने वाली तह पर पशमीने की आकर्षक कढ़ाई की ग: होती है। गोल तहें एक के ऊपरी दूसरी, थोड़ी बाहर निकली हुई होती हैं। 'जोजी' में पिछली ओर एक चोटी-सी भी बनी होती है जो मध्य भाग पे मोड़ी जाकर ऊपर फिर बालों में पिन से टंकी होती है। महिलाएँ एक ही पुंछण (गुत) करती हैं।

ये महिलाएँ अनेक आकर्षक आभूषणों से सुसज्जित होती हैं। आभूषण प्राय: ये होते हैं—

१. **कलाई में बँगें**—चाँदी की डेढ़-दो इंच चौड़ी चूड़ियाँ।

२. **हरऊ**—चाँदी के गजरे, जिनके किनारे जुड़े नहीं होते, एक-दूसरे के साथ लगे होते हैं। किनारे हाथी या सिंह के मुँह जैसे बनाए होते हैं।

२. **अँगुलियों में**—सोने अथवा चाँदी की अँगूठी जिसे 'अंगठ' कहा जाता है।

३. **तकमा**—गले का आभूषण। चाँदी की जंजीर, जिसके नीचे मध्य में चाँदी की चोकोर प्लेट-सी टंकी रहती है, जिस पर देवी आदि की प्रतिमा खुदी रहती है।

४. **बाड़ियाँ**—कान के बाह्य भाग में पिरोए हुए चाँदी के छल्ले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. थोपकी —चाँदी का काँटा, कान के निचले भाग में पहनने के लिए ।

६. मुरगी—सोने की मुर्की, नाक में एक ओर पहनने के लिए ।

७. फुल्ली—नाक के मध्य भाग से नीचे को लटकने वाला गहना (बुलाक) ।

८. टोका—नाक में दूसरी ओर पहना जाने वाला 'कोका' ।

पाँगी में 'उनैणी' के अवसर पर पुरुष वर्ग भी एक विशेष नृत्य नाचता है । 'उनैणी' सर्दियों का एक त्योहार है । इस त्योहार पर ३ दिन का मेला लगता है । 'उनैणी' त्योहार फूल यात्रा पर्व के १५ दिन बाद आता है 'फूल यात्रा' किन्नौर के 'फुलायच' से मिलता-जुलता उत्सव है, जो प्राय: उसी समय लगभग उसी ढंग मनाया जाता है ।

'उनैणी' नृत्य पहाड़ पर समतल स्थान पर नाचा जाता है । नृत्य में सौ-सौ व्यक्ति भी सम्मलित हो जाते हैं और नृत्य मण्डली का घेरा साठ-साठ फुट तक भी हो जाता है, जिसके हाथ में 'छैण' (एक गँडासा-सा) होता है । छैण का अग्र भाग किसी भी धातु का मध्य भाग चाँदी का व पृष्ठ भाग (जहाँ से पकड़ा जाता है) काष्ठ का अथवा चाँदी-मढ़े काष्ठ का बना होता है । नृत्य के लिए जो समतल स्थान चुना जाता है, उसे 'लाहल्' कहते हैं । 'लाहल्' के मध्य 'धूण' (देवी-देवता के नाम पर जलाई आग और उसमें ढाला गया धूप) होता है । नृत्य इस 'धूण' से प्रारम्भ होता है ।

नाच के लिए नर्तकों का जो घेरा बनता है, उसमें आगे की पंक्ति में सुवर्ण तथा पीछे की पंक्ति में हरिजन (चनाल) खडे होते हैं । यह घेरा 'धूण' से दाईं ओर को चलेगा, और फिर जैसे ही 'घेरे' का अन्तिम नर्तक धूण के पास पहुंचेगा, 'घेरा' समाप्त हो जायेगा । 'धूण' की यह एक प्रकार की परिक्रमा होती है । इसके बाद नाच आरम्भ होता है । पंक्ति बद्ध नर्तक, फिर हाथ पकड़कर बाएँ से दाएँ नाचते हैं । नृत्य की चाल वाद्य वादन की लय के अनुसार होती है । अगुआ, 'छैण' को कभी नीचे झुकायेगा, कभी खुद भी झुकेगा । तब 'घेरे' के कुल नर्तक भी उसी प्रकार झुकेंगे । इस नृत्य के साथ गीत नहीं गाया जाता । वाद्यों पर विशेष 'राग' (धुन) बजाईजाती है, जिसकी लय कभी धीमी कभी द्रुत होती है । इसी लय पर नर्तक धीमें तथा द्रुत नाचते हैं, वाद्य-वादक 'लाहल्' में 'धूण' के पीछे बैठेंगे । वाद्य प्राय: ये होते हैं—

१. ढनूंस (ढोल)

२. कनछेई (झाँझ)

३. वैंछ (बाँसुरी)

इस नाच के बाद, फिर बारी-बारी एक दिन स्वाँग व दूसरे दिन 'हरण' का आयोजन भी होता है । 'स्वाँग' में नर्तक एक डरावना सा मुखोटा पहन कर, फिर मोर पंखों अथवा 'जैचूर' (याक) की पूंछ के बालों का शृंगार करके स्वतंत्र नाचते हैं । 'हरण' नाच में कुल्लूई' आयोजन की तरह दो व्यक्तियों को झुकाकर उन पर चादर डालकर, मृग की सी चाल में फिर नाचते हैं । 'स्वाँग' व 'हरण' आयोजनों में विशेष नृत्य रूप-सज्जा के साथ दो-तीन चक्कर लगाने के बाद नर्तक अपने सामान्य पहरावे में आकर नाचेंगे । इस नृत्य के साथ गीत तो होता नहीं बस नाचते हुए नर्तक मण्डली बीच-बीच में एक साथ 'हो' करते रहते हैं । पुरुष वर्ग का विशेष पहरावा यह होता है—

१. चलन—ऊनी अथवा सूती, किसी भी रंग का पायजामा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२. कमरी—कुरता, सूती।
३. कोठ—बहुधा श्वेत (अथवा किसी भी रंग का) ऊनी कोट।
४. टोप—सफेद लट्ठे की विशेष टोपी।
५. मझिण—कमर में लपेटने के लिए चौड़ा ऊनी पटका।
६. पूल—गेहूँ अथवा राजसीन के पराल का बना जूता-विशेष।

चम्बा के चुराह क्षेत्र की महिलाएँ ऊपर कुछ खुला और नीचे से चूड़ीदार पायजामा पहन कर, सिर पर 'जोजी' लगा कर, बाहों में ऊपर तक चूड़ियां सजा कर, हाथ में रूमाल लेकर नाचती हैं।

पुरुष वर्ग तंग मोहरी का पायजामा ऊनी अथवा सूती कोट तथा रंगविरंगी पगड़ी पहन कर, हाथ में रूमाल लेकर नाचता है। चुराह में भी 'घुरई' के अतिरिक्त कई तरह के सामूहिक अथवा दो-एक व्यक्तियों द्वारा नाचे जाने वाले नाच होते हैं।

चम्बा में भरभौर वासियों के अपने नृत्य हैं। इस क्षेत्र में 'गद्दी' जन जाति बसती है। नृत्य को लोग नाच कहते हैं इनमें भी महिलाओं व पुरुषों के अलग-अलग नाच हैं।

इस क्षेत्र में महिलाएँ दो प्रकार का नाच नाचती हैं। एक नाच प्राय: विवाहित महिलाएँ ही नाचतीं हैं और दूसरा अविवाहित युवतियाँ नाचती हैं।

बहुधा विवाहित, अधेड़ तथा प्रौढ़ महिलाओं द्वारा नाचा जाने वाला नाच 'डंगी' कहलाता है। यह नृत्य महिलाएँ गोल दायरे में बाएँ से दाएँ नाचती हैं। गोल दायरे में नाचने के लिए पंक्तिबद्ध ये महिलाएँ हाथ नहीं पकड़ती, बल्कि हाथों को सामने थोड़ा ऊँचा उठाकर विशेष ढंग से एक-दूसरे की ओर मुँह करके नचाती हुई घेरे में बढ़ती हैं। इस नृत्य में महिलाओं का मुँह घेरे के अन्दर की ओर नहीं रहता, बल्कि बारी-बारी दाएँ व बाएँ होता रहता है। महिला जब दोनों हाथ ऊपर उठाए बायाँ पाँव दाईं ओर बढ़ाए दाईं ओर घूमती है, तो दाईं ओर वाली महिला उसी मुद्रा में उसी समय दायाँ पांव आगे बड़ा कर बाएँ घूमती हैं। जब महिला दायाँ पाँव बढ़ाकर बाएँ घूमती हैं, तो बाईं ओर वाली महिला उसी मुद्रा में उसी समय दायाँ पाँव आगे बड़ा कर बाएँ घूमती है। जब महिला दायाँ पाँव बढ़ाकर बाएँ घूमती है, तो बाएँ ओर वाली महिला, उसी समय उसी मुद्रा में बायाँ पाँव दाईं ओर बढ़ा कर दाएँ घूमती है। इस प्रकार हर बार दो-दो महिलाएँ एक साथ एक दूसरी की ओर घूमती हैं। महिला युग्मों में यह करतब एक साथ होता है। यही इस नृत्य का सौंदर्य है। लयबद्ध इस करतब में महिलाएँ थोड़ा-थोड़ा घेरे में दाएँ भी बढ़ती जाती है। 'डंगी' नाच के साथ वाद्यों की लय पर गीत भी गाए जाते हैं। ये गीत कोई से भी लोक गीत हो सकते हैं। गीत दो-दलों में बंट कर गाए जाते हैं। नृत्य करती हुई महिलाएँ ही दो दलों में बँट कर साथ-साथ गीत गाती हैं।

अविवाहित युवतियों द्वारा गाया जाने वाला नृत्य, 'गुड्डी' कहलाता है। गुड्डी नाच में युवतियाँ आठ-आठ दस-दस की पंक्तियां बनाकर पर्याप्त अन्तर से आमने-सामने खड़ी हो जाती हैं। फिर एक पंक्ति की युवतियाँ, 'डंगी' की तरह ही, दो-दो में हाथ उठाए एक दूसरी के सामने को घूमती, पंक्ति में ही एक साथ सामने वाली पंक्ति की ओर बढ़ती हैं, और पास पहुँच कर उस क्रम से पाँव उठाते-रखते उसी तरह दाएँ बाएँ घूमते, पीछे लौटती है। फिर दूसरी पंक्ति इसी प्रकार पहली पंक्ति की ओर बढ़ती है और पास जाकर पीछे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लौटती है। इसी तरह यह 'गुड्डी' नाच पर्याप्त समय तक युवतियाँ नाचती हैं।

महिलाएँ यह विशेष पहरावा पहनती हैं—

१. चोला—लम्बे कोट जैसा। कमर से ऊपर का इसका भाग रेशमी होता है और नीचे का भाग छींट का पर्याप्त घेरे वाला होता है।
२. डोरा—चोला पहन कर फिर कमर में बाँधने के लिए ऊनी लम्वा डोरा।
३. चूड़ीदार पायजामा।
४. चादरु—दुपट्टा।

महिलाएँ अनेक आभूषण भी पहने हुए होती हैं, जैसे—

१. बालू—नाक में, सोने का बना हुआ।
२. चक—सिर पर, चाँदी का बना हुआ।
३. चिड़ी—माथे पर, चाँदी का बना हुआ।
४. चन्द्रहार, जैमाला, कंठी आदि—गले में, चाँदी के वने हुए।
५. गजरे टोके—बाहों में चाँदी के वने हुए।
६. गूठी—अँगुली में, चाँदी की अँगूठी।
७. पजेब—पाँव में, चाँदी की बनी हुई।
८. गुथड़े—पाँव की अँगुलियों में, चाँदी के बने हुए।
९. मोचड़ियाँ—जूते।
१०. कानों में चाँदी की वालियाँ।

अविवाहित 'बालू' और 'चक' को छोड़ शेष सब गहने पहनती हैं।

गद्दी जनजाति का पुरुष वर्ग जो नृत्य करता है, उसे 'डंडारस' अथवा 'नाटी' ही कह देते हैं। जिस स्थान पर यह नृत्य किया जाता है, उस स्थान को 'मण्डल' कहते हैं। मण्डल में 'गद्दी' पँक्ति बद्ध हो जाएँगे, और फिर लोक-वाद्यों की लय पर बिना हाथ पकड़े 'डंगी' की तरह का अंग-संचालन करके, बाएँ से दाएँ गोलाकार घूमते हैं।

नाटी में बजाए जाने वाले वाद्य हैं—

१. ढोल।
२. सुन्हावा (शहनाई)।
३. थाली-घड़ा। एक खाली साबुत घड़ा रख कर, उसके मुँह पर, कुटु (भरथी) की थाली उल्टी करके रखी जाती है। इसे काष्ठ की डडी से बजाते हैं।

गद्दियों का विशेष पहरावा हैं—

१. चोलू—श्वेत ऊन का लम्बा कोट सा, कमर से नीचे का जिसका भाग अधिक घेरे वाला होता है। सजावट के लिए कभी-कभी इसमें, आगे पीछे, छोटे कई आइने भी टँके होते हैं।
२. डोरू—चोलू पहनने के बाद, कमर में लपेटने के लिए काला ऊनी डोरा।
३. व्यूंहली—मुरली। डोरे में खोंसी हुई।
४. खीसड़ू—बान्हणू: डोरे की सजावट के लिए लाल (काले अग्र भाग वाली) 'रत्तियों' का बना श्रृंगार विशेष।
५. चूड़ीदार, सूती पायजामा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६. जुट्टे —मोटे-मोटे जूते, जिनके नीचे लोहे के नाल लगे होते हैं (नृत्य प्रायः नंगे पाँव ही किया जाता है)
७. साफा—सिर पर सूती पगड़ी। जिसके अन्दर ऊन की टोपी भी पहनी होती है।
८. कानों में सोने की बड़ी-बड़ी बालियाँ।
९. गले में चाँदी की जंजीर।

गद्दियों के इस 'डंडारस' में गीत नहीं गाया जाता। केवल वाद्य-वादन की लय पर ही यह नाच नाचा जाता है। बीच-बीच में नर्तक १०-१५ मिनट बाद एक साथ, 'हो-हो करते हैं।

नगारा प्रायः देव स्थानों पर या विवाह अवसर पर ही बजाया जाता है। 'रणसिंगा' व छैणें भी प्रायः देव मन्दिरों में ही वजते हैं।

चम्बा नगर क्षेत्र में विवाह, पुत्र जन्म तथा 'जट्टू' (बाल उतारने) आदि अवसरों पर महिलाएँ 'गिद्धा' भी नाचती हैं।

लाहुल में नृत्य को 'गरफी' कहा जाता है। इस क्षेत्र में भी बाहर खुले में व अन्दर नाचे जाने वाले अलग-अलग नृत्य है। बाहर खुले में सामूहिक नृत्य नाचा जाता है, जिसे 'नाटी' की तरह ही गोल दायरे में, एक दूसरे के हाथ पकड़ कर या कभी बिना हाथ पकड़े एक निश्चित क्रम से पाँव बढ़ाते हुए, बाएँ से दाएँ नाचते हैं। अन्दर के 'गरफी' में दो-एक व्यक्ति ही, मुक्त अंग संचालन कर नाचते हैं। सामान्यतया 'गरफी' में पुरुष वर्ग ही सम्मिलित होता है, लेकिन अब युवनियाँ भी नाच में भाग लेने लगी हैं।

सामूहिक नृत्यों में एक 'दशांई' नामक नाच है, जिसे सर्दियों में (दिसम्बर, जनवरी में) महिला-पुरुष मिल कर नाचते हैं। यह नृत्य, सामान्य नाटी की तरह गोलाकार नाचा जाता है। नर्तक (महिला-पुरुष) अलग-अलग अथवा एक दूसरे के बीच ही हाथ पकड़ कर माला में बंध जाते हैं। दाईं ओर खड़े तीसरे व्यक्ति का बायाँ हाथ दाएँ हाथ से, और बाई ओर खड़े तीसरे व्यक्ति का दायाँ हाथ, बाएँ हाथ से पकड़ा जाता है। इस प्रकार एक लड़ी-सी बना कर गोल दायरे में एक निश्चित क्रम के पग-संचालन से नाचा जाता है। लय के लिए घेरे के अन्दर लोक वाद्यों पर धुन विशेष बजाई जाती है। यह नृत्य महिला-पुरुष विशेष पहरावे में नाचते हैं।

महिलाओं का विशेष पहरावा होता है—

१. कतर्—लम्बा चोड़ू। घुटनों तक लम्बा भूरे रंग की ऊनी पट्टी का चोला, कमर के नीचे जिसका पर्याप्त घेरा होता है।
२. कतर् के ऊपर पहने के लिए एक विशेष जाकेट सी।
३. छिरू्—गाची। कमर में बाँधने का पटका। यह चादर जैसी पतली, भूरे रंग की ऊनी पट्टी का अथवा मोटे रंगीन कपड़े का पटका सा होता है। आठ-दस इँच इसकी चौड़ाई होती है तथा अढ़ाई तीन गज यह लम्बा होता है।
४. सुंतणा—चूंडीदार पायजामा। यह प्रायः स्लेटी रंग की ऊनी पट्टी का बना होता है।
५. जरावाह्रे—ऊन की विशेष जुराबें।
६. पूलाह्—पाँव में घास की बनी 'पूलें' जिन पर कढ़ाई का आकर्षक काम भी किया होता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७. गोल टोपी, जिसका किनारा काले रंग का तथा मध्य भाग लाल रंग का होता है। फूल भी टँके होते हैं।
८. श्वेत ऊन का दुपट्टा, जो सिर को ढाँपता हुआ, गले के दोनों ओर, आगे को लटका रहता है।

इसके अतिरिक्त महिलाएँ परम्परागत आभूषणों से भी सजी रहती हैं।
आभूषण हैं—

१. बाड़ी—सिर से, नीचे की ओर कपोलों पर लटकने वाला चाँदी का विशेष आभूषण।
२. गले में मूंगों-मणियों के हार।
३. साह्‌री—कानों के बड़े-बड़े झुमके। चाँदी के बने हुए।
४. खुँडू—कानों के छोटे गहने, बालियाँ सी। चाँदी के बने हुए।
५. बुमणी—वक्षस्थल को दाईं ओर ढाँपने के लिए चाँदी का आभूषण विशेष।
६. गोऊ—चोटी बंधने वाला विशेष आभूषण जो पीछे पीठ पर लटका रहता है। यह सोने तथा चाँदी का बना होता है।
७. गुहीथब—सोने या चाँदी की अँगूठी जिसमें 'फ्राह' (नग) भी जड़ा रहता है।
८. नङ—चाँदी के बने मोटे-मोटे कँगन।

पुरुष वर्ग का विशेष पहरावा है—

१. पोहदू—टोबड़ू: किन्नौरी टोपी जैसी ऊनी पट्टी की टोपी। पहले इस टोपी के लिए ऊनी पट्टी विशेष तिब्बत से आती थी, और इसकी बनावट कुल्लूई टोपी जैसी, बीच में कुछ ऊँची पतली सी होती थी। अब ऐसी टोपी प्रायः 'गुर' (देवता के पुजारी) ही पहनते हैं।
२. चोड़ू—श्वेत ऊनी पट्टी का लम्बा चोला। इसका प्रचलन अब कम ही है। अब प्रायः ऊनी कोट ही पहना जाता है।
३. चूड़ीदार रंगीन, ऊनी पायजामा, महिलाओं की अपेक्षा, जिसकी मोहरी कुछ ढीली होती है।

कमर में बाँधने के लिए 'गाची' तथा जुराबें, पूलें, महिलाओं की जैसी होती है।

पुरुष वर्ग भी कानों में 'खुँडू' 'बीरवली', 'मुड़की' आदि नामक सोने की बालियाँ-सी पहनते हैं।

नृत्य के लिए, जो लोक वाद्य प्रयुक्त होते हैं, वे हैं—

१. निशां, निशान-नगारा।
२. ढोलकी-ढोल।
३. वैंज-बांसुरी।

इसके अतिरिक्त 'थाली' भी कभी-कभी साथ बजती है। कभी-कभी 'पवन' भी बजाया जाता है। 'पवन' एक डमरू जैसा वाद्य है, जो डमरू से पर्याप्त बड़ा होता है और जिसका पतला मध्य भाग डमरू की अपेक्षा अधिक लम्बा होता है। इसके दाईं ओर के मढ़े भाग के साथ लगती हुई, पर बीचों-बीच सीधी, दोहरी, आंत की डोरी कसी होती है, जिसे विशेष ढंग से छेड़कर, वादक कलाकार, इस वाद्य से ध्वनि विशेष उत्पन्न करता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इसके अतिरिक्त शहनाई भी इस क्षेत्र का लोक वाद्य है, जिसे स्थानीय भाषा में 'सुरनई' कहा जाता है।

इस क्षेत्र में कुल्लूई जैसी नाटियाँ भी नाची जाती हैं, जिनमें पग-संचालन का निश्चित क्रम आगे-पीछे झुकने का काम सब उसी प्रकार होता है।

पाँगी के से नाच भी इस क्षेत्र में नाचे जाते हैं।

एक 'बालती' नामक नाच भी इस क्षेत्र में नाचा जाता है, जिसमें एक महिला खड़ी होकर ढोलकी को सिर के साथ सटाए एक हाथ से पकड़ रखती हैं और दूसरे हाथ से इसे बजाती है। इस लय पर दो-चार पुरुष व महिलाएँ गीत गाते हैं और साथ-साथ स्वतन्त्र अंग-संचालन के साथ नाचते भी हैं।

नाच में समय का बन्धन नही है।

विवाह आदि अन्य अवसरों पर प्रायः स्वतन्त्र नृत्य होता है 'माला' में बंधकर नहीं। ऐसे नृत्य प्रायः पुरुष ही नाचते हैं। गोल घेरा बनाकर सब व्यक्ति नीचे बैठ जाते हैं। वाद्य वादक घेरे में एक ओर बैठते हैं। इन्हीं के आस-पास महिलाएँ भी बैठकर गीत गाती हैं और पुरुष दो-दो, तीन-तीन घेरे में उठकर गीत की लय पर स्वतन्त्र नाचते हैं। गीत की लय पर तालियाँ भी बजाई जाती हैं।

सीमावर्ती क्षेत्र स्पीति में मुख्यता तीन प्रकार के नाच नाचे जाते हैं।

एक देव-लीला नृत्य है जिसे केवल 'लामा' लोग ही नाचते हैं। इस नृत्य का आयोजन प्रायः गोन्पाओं (विहारों) में, इनके खुले प्रांगणों में होता है। इसे 'छाम' कहा जाता है।

कई बार 'छाम' का प्रस्तुतीकरण गोन्पाओं के प्रांगण से बाहर भी होता है। लाहुल के अधिक ऊँचे, केलंग से ऊपर-ऊपर के क्षेत्रों और स्पीति में, वैसाख पूर्णिमा, अष्टमी, अमावस आदि विशेष दिनों में 'छेचु' नामक एक विशेष धार्मिक व सांस्कृतिक पर्व मनाया जाता है। अलग-अलग स्थानों पर 'छेचु' मनाने की विधि, स्थानीय विशेष सांप्रदायिक मान्यताओं के अनुरूप होती है।

'छेचु' का आयोजन गोन्पाओं (विहारों) में ही होता है। इस आयोजन में पहले 'लामा' लोग तान्त्रिक विधि से पूजा-पाठ करते हैं, भक्ति-गीत गाए जाते हैं, पूजा के वाद्य-विशेष बजाए जाते हैं। पूजा के बाद, देव-लीला नृत्य-नाट्य 'छाम' का आयोजन होता है। लामा-लोग विशेष वेशभूषा में इसे निभाते हैं। इस देव-लीला नृत्य-नाट्य 'छाम' में पाँव को दाएँ-बाएँ घुमाना, पग आगे-पीछे रखना, हाथों में अपेक्षित मुद्रा-निर्माण—ये सब कुछ एक निश्चित विधि से ही होता है: जिसमें तनिक-सी भूल सारे किए पर पानी फेर देती है। इसलिए 'छाम' निभाने के लिए लामाओं को कठिन पूर्वाभ्यास करना पड़ता है, ताकि किसी प्रकार की भूल-चूक न हो। यह नृत्य-नाट्य मुखौटे पहनकर पिशाच-भूत-प्रेत आदि के रूप भी बनकर नाचा जाता है।

'गेमूर गोन्पा का 'छाम'—

पहरावा

ऊपर का पहरावा 'दौर गोङ' तथा नीचे का पहरावा 'पाङ-खेम' कहलाता है। यह सबका प्रायः एक जैसा ही होता है। घुटनों से नीचे तक प्रायः पाँव तक पहुँचा हुआ लम्बा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रंगीन 'चोला, और उसके ऊपर लम्बी-खुली बाहों वाला एक लम्बा-खुला चोगा-सा।

मुखिया 'लामा' जिसे 'छम्पोन' कहा जाता है, उसने सिर पर एक विशेष मुकुट जैसा लम्बा 'टोप' पहना होता है, जिसे 'चीज़ा' या 'ज़ाना' कहते हैं।

भाग लेने वाले शेष लामाओं ने मुखौटे पहने हुए होते हैं। एक ने 'कौवे' के मुंह का सा और एक ने 'उल्लु' के मुँह का-सा मुखौटा पहना होता है।

ये सब लामा 'छामा' के लिए विशेष वेश-भूषा में सजकर 'गोन्पा' से एक निश्चित क्रम में बाहर निकलकर बाहर प्रांगण में आकर अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभाते हैं।

पहले 'छम्पोन' (मुखिया) गोन्पा से बाहर निकलकर प्रांगण में आता है फिर मुखौटे पहने हुए चार 'लामा' बाहर आते हैं, जिन्हें 'गोमाज़ी' कहा जाता है। इनकी टाँगे लम्बी होती हैं तथा अन्य वस्त्र-सज्जा अलग-अलग श्वेत, पीला, लाल व हरा इन चार रंगों की होती है। ये चार रंग, चार दिशाओं के सूचक माने जाते हैं और ये चारों लामा, एक प्रकार से दिक्पाल। श्वेत पूर्व दिशा का, लाल पश्चिम दिशा का, हरा उत्तर दिशा का तथा पीला दक्षिण दिशा का सूचक होता है।

श्वेत रंग वाले लामा के हाथ में अंकुश, पीले वाले के हाथ में रस्सा, लाल रंग वाले लामा के हाथ में लोहे की सांकल, तथा हरे रंग वाले लामा के हाथ में घण्टा होता है।

'गोमाज़ी' के बाद दो लामा निकलते हैं, जिन्होंने 'कौवे' व 'उल्लू' के मुखौटे पहने होते हैं। इन दोनों के हाथ में तीर होते हैं।

इनके बाद फिर एक साथ आठ लामा निकलते हैं। इन्हें 'धेगैत्' कहते हैं। इन्होंने पूरा पहरावा पहना होता है और इनका मुंह ढका हुआ होता है।

'छाम' में सम्मिलित होने वाले वाद्य-वादकों का अलग-अलग पहरावा होता है। इनमें पहले नगारे वाला, फिर धूंएँ वाला (एक पात्र विशेष में आग डाली हुई होती है, जिसमें देवदार की पत्तियाँ डालकर धूंआ पैदा किया होता है) फिर तीन मुँह वाली केटली में 'छाङ' (स्थानीय मादक पेय) लिए हुए, फिर 'करनाल' वाला और फिर शहनाई वाला प्रांगण में आकर बैठते हैं।

प्रांगण के बीच में एक झण्डा होता है। पहले अगुआ आएगा, और इसके चारों ओर नाचेगा। फिर शेष सम्मिलित लामा इस झण्डे के चारों ओर नाचते हैं। नृत्य, देव गान की धुन-लय पर किया जाता है, जो, चार-पाँच बैठे हुए लामा धर्म ग्रंथ में से गाते हैं। साथ, वाद्य भी बजते हैं।

वाद्य हैं—

१. दामन—नगारा।
२. ज्ञालिङ—एक बड़ी लम्बी शहनाई।
३. सुरना—सामान्य शहनाई।
४. दुङ—करनाल की तरह के दो लम्बे-लम्बे विशेष वाद्य।
५. दरु-डमरू। लेकिन यह डमरू सामान्य डमरू से बिलकुल भिन्न होता है। यह खंजरी के आकार का कुछ बड़ा, दोनों तरफ से मढ़ा वाद्य विशेष है, जिसमें नीचे एक लम्बा हत्था होता है, जहाँ से पकड़कर इसे दाएँ-बाएँ घुमाते हैं, जिससे दोनों मढ़े भाग, धागे से लटकी दो छोटी गोल गांठों से बजते हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६. लिङ्बू—बांसुरी ।
७. दाक़ा—ढोलक ।
८. दप—डफ ।
९. डव—एक गोलाकार ड्रम की तरह का धातु वाद्य जो घड़याल की तरह लटकाया हुआ होता है । इसे रणसिंगे की तरह के टेढ़े वादन उपकरण से बजाया जाता है ।
१०. रोल्मों अथवा बुग्झल—झांझ ।
११. ड्रमज़न (या) कौपो—रबाब जैसा तार वाद्य ।

दिन के 'छाम' के बाद, सायं 'ज़ोर' (बलि) के लिए फाफरा (अन्न विशेष) का लगभग एक हाथ ऊँचा बनाया गया पिशाच का मुँह शोभा यात्रा के रूप में 'गोन्पा' से बाहर ले जाया जाता है । इस बलि को कांटो की आग पर जलाया जाता है और तब इसके साथ 'छेचु' पर्व संपन्न होता है । फिर रात को 'छाङ' पीकर टोलियों में नृत्य होता है ।

स्पीति का दूसरा प्रसिद्ध सामूहिक नृत्य है—'जैंपड़ो', 'ज़बरो', 'यबरो', जो प्रायः मेलों आदि सार्वजनिक समारोहों तथा विवाह आदि अवसरों पर नाचा जाता है । यह नृत्य अत्यन्त मनोरंजक व विविधता लिए है । आकर्षक वेश-भूषा में सम्मिलित महिला-पुरुष खड़ी समानान्तर पंक्तियों में एक-दूसरे के बीच खड़े हो जाते हैं । फिर इस नृत्य के अनुरूप गीत गाया जाता है । दामन, ज्ञालिङ आदि वाद्य बजते हैं और इनकी लय पर नृत्य किया जाता है—नृत्य मध्य द्रुत लय में नाचा जाता है । इस नृत्य में गीत की लय पर नर्तक युग्मों का समांग विविध व आकर्षक अंग-संचालन, मनोरंजक कृत्य व मुद्राएँ देखते ही बनती हैं ।

तीसरा सामूहिक नृत्य नाटी जैसा ही है, जिसमें महिला-पुरुष, अलग-अलग अथवा एक दूसरे के बीच भी' हाथ पकड़कर, माला में बंधकर, गोल दायरे में पग-संचालन के निश्चित क्रम के साथ, तथा अन्य एक जैसी मुद्राओं के साथ बाएँ से दाएँ नाचते हैं । इस नृत्य को 'शोन्' कहा जाता है । नृत्य के साथ यथोचित गीत गया जाता है तथा लय के लिए लोक वाद्य भी बजाते हैं । नृत्य की लय मध्य-द्रुत रहती है ।

लाहुल-स्पीति में 'नङरा' नामक नाच भी नाचा जाता है । इसे केवल पुरुष ही नाचते हैं। 'नङरा' के साथ गीत-विशेष गाए जाते हैं। ये प्रायः भक्ति रस के गीत होते हैं। यह नृत्य गोल दायरे में नाचा जाता है। नर्तक मुँह अन्दर की ओर किए होते हैं। नृत्य में पग संचालन का एक निश्चित क्रम होता है। गीत समाप्त होने पर नर्तक चारों ओर घूमकर नाचते हैं। मुद्रा सबकी एक जैसी होती हैं। नर्तकों के पहरावे विशेष में इनके गले की चादर होती है ।

बाद में, जब इस नृत्य की लय बढ़ती है, चंचल हो जाती है, तो मुद्राओं में, अंग संचालन में परिवर्तन के साथ, यह एक अन्य नृत्य बन जाता है, जिसे 'बलतीरा' कहते हैं ।

लाहुल के एक नृत्य में, महिलाएँ, स्याह-मखमली एक विशेष वेषभूषा में एक-दूसरे के पीछे पंक्तिबद्ध, अपने से आगे की महिला के कन्धों पर हाथ रखे, एक निश्चित क्रम से पग संचालन कर गाती हुई आगे बढ़ती जाती हैं। इसे 'पँगवाली नाच' कहा जाता है । त्योहारों व अन्य पर्वों पर 'शाबू' नामक नृत्य नाचा जाता है।

मण्डी के कुल्लू से लगते भागों में कुल्लू की ही तरह के नृत्य 'नाटियाँ' तथा महासू के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

साथ लगते भागों में, महासूई नृत्य-नाटियाँ, नाचे जाते हैं इसके अतिरिक्त मण्डी में भरमौर (चम्बा) के 'डंगी' नृत्य से मिलता-जुलता नृत्य नाचा जाता है, जिसका स्थानीय नाम है 'लुड्डी'। 'लुड्डी' नृत्य नाच ने को 'लुड्डी पाणा' कहा जाता है। 'लुड्डी' प्रायः महिलाएँ ही नाचती हैं। कभी-कभी पुरुष भी नाच लेते हैं। परन्तु नाटी की तरह दोनों मिलकर नहीं नाचते। 'लुड्डी' में पक्तिबद्ध महिलाएँ 'डंगी' नृत्य की भाँति घेरे में बाएँ से दाएँ स्वतन्त्र नाचती हैं। हाथ ऊपर उठाकर नाचती हुई दाएँ-बाएँ घूमती हैं और धीरे-धीरे घेरे में आगे बढ़ती जाती हैं। घूमने का क्रम प्रायः 'डंगी' नृत्य की तरह होता है और हर बार दाएँ-बाएँ घूमते हुए दो-दो महिलाओं का मुँह आमने-सामने आता रहता है। इस नृत्य में समरूपता होती है और यही 'लुड्डी' का सौन्दर्य है। यह नृत्य विवाह आदि अवसरों पर नाचा जाता है।

'लुड्डी' में सम्मिलित होने वाली महिलाओं का पहरावा प्रायः विशेष होता है। विशेष-पहरावा है—

१. पुसाजड़ू—लम्बा बड़े घेरे वाला चोला।
२. स्थानीय परम्परा के अनुसार सिर पर कहीं रंगीन धाटू, कहीं दुपट्टा।
३. पांव प्रायः नंगे।
४. और अनेक आकर्षक आभूषण,

जैसे—

१. सिर पर सोने अथवा चाँदी के चक। प्रायः एक कई बार दो-तीन भी।
२. गले में चाँदी का हार।
३. कानों में सोने के 'बालू' और कान के बाहरी किनारे में पिरोई चाँदी की डंडियाँ।
४. नाक में सोने के 'बेसर', 'बुलाक', 'लौंग', 'बालू'।
५. माथे पर चाँदी अथवा सोने की 'टीक'।
६. बहों में चाँदी के कंगन।
७. अंगुलियों में 'मूंदडी' 'छाप' सोने अथवा चाँदी की।
८. पाँव में चाँदी की 'पाजेबें'।
९. पाँव की अंगुलियों में चाँदी के 'फूल'।

नृत्य वाद्य-वादन की लय पर किया जाता है। प्रयुक्त होने वाले वाद्य हैं—

१. ढोल
२. नगारा
३. पींपी (शहनाई)

तथा कहीं-कहीं, रणसिंगा, गुझू आदि वाद्य भी।

इसके अतिरिक्त मण्डी में विवाह, पुत्र जन्म तथा अन्य समारोहों पर 'गिद्धा' भी नाचा जाता है।

निचले महासू क्षेत्र और सोलन के, ऊपरी महासू तथा सिरमौर के साथ लगते भागों में, उन्हीं क्षेत्रों के से नृत्य-नाटियाँ नीचे जाते हैं। दीपावली और उसके बाद कुछ पर्वों पर होने वाले 'बरलाज' के आयोजन का तृतीय भाग 'छोकड़ा' नृत्य के साथ गाया जाता है।

ये नृत्य दो-दो के 'युग्मों' में होता है। 'बरलाज' गाने वाले चार मुख्य कलाकारों के दो युग्मों के अतिरिक्त श्रोताओं में से भी उठकर लोग (पुरुष) दो-दो के युग्मों में मुख्य कलाकारों

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

के साथ नाचते हैं। नर्तक युग्म एक हाथ से (प्रायः बाएँ हाथ से) एक-दूसरे का कोट आदि वस्त्र सामने से थामकर आमने-सामने दाएँ-हाथ में 'रुमाल' 'झाड़न'-'परना' गुलबन्द अथवा लाठी लेकर इसे नाचते हुए, ढोल की लय पर मुक्त पग-संचालन के साथ नृत्य करते हुए बीच में जली आग के चारों ओर चक्कर काटते हैं या एक-दूसरे के कन्धों पर हाथ रखकर मुक्त हाथों को नचाते हुए तथा स्वतन्त्र अंग-संचालन कर नाचते हुए, ये नर्तक-युग्म एक-दूसरे के पीछे, पंक्तिबद्ध होकर बीच में जली आग के चारों ओर गोल घेरे में आगे बढ़ते हैं। इसमें मुख्य गायक कलाकारों की तो विशेष वेश-भूषा होती है, परन्तु श्रोताओं में से सम्मिलित होने वाले व्यक्तियों की अलल-अलग सामान्य वेश-भूषा होती है। मुख्य गायक कलाकारों ने बंद गले का ऊनी कोट, चूड़ीदार पायजामा, तथा पगड़ी पहनी होती है। इनके हाथ में लम्बी बल्लम भी होती है। नृत्य, गीत की लय पर होता है। 'छोकड़ा' गीत भाग, मध्य लय में गाना प्रारम्भ किया जाता है। इसी लय में नर्तक-युग्म नाचते भी हैं। फिर धीरे-धीरे लय बढ़ती जाती है और पर्याप्त द्रुत हो जाती है। नृत्य की लय भी साथ-साथ बढ़ती जाती है और द्रुत हो जाती है। 'गीत' भाग सम्पन्न होने पर नृत्य भी थम जाता है।

लय के लिए ढोल, नगारा बजता है, तथा बीच-बीच में रणसिंगा, करनाल आदि लोक वाद्य भी बजाए जाते हैं।

इन क्षेत्रों में इसके अतिरिक्त विवाह आदि अवसरों तथा अन्य मेलों-उत्सवों पर 'गिद्धा' भी नाचा जाता है।

ऊँचे क्षेत्रों को छोड़कर (जहाँ के लोक नृत्य साथ लगते अन्य क्षेत्रों जैसे ही हैं) कांगड़ा, ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, नालागढ़ तथा अन्य क्षेत्रों के निचले भागों का 'गिद्धा' ही लोकप्रिय नृत्य है, जिसे हर्षोल्लास के अवसर पर नाचा जाता है। नाम-भेद तथा कतिपय प्रस्तुतीकरण-भेद का छोड़कर इसका रूप हर स्थान पर प्रायः एक सा ही दृष्टिगोचर होताहै।

'गिद्धा' वस्तुतः महिलाओं का नृत्य है। विवाह आदि उत्सवों पर प्रायः महिलाएँ ही यह नाच नाचती हैं, परन्तु मेलों, जातरों आदि सार्वजनिक समारोहों पर विशेष वर्गीय महिलाएँ तथा पुरुष भी नाचते हैं। विवाह, पुत्र जन्म आदि अवसरों पर बहुधा पुरुषों को विनोद के लिए भी गिद्धे में नचा दिया जाता है।

इस नृत्य में प्रायः एक या दो व्यक्ति नाचते हैं। नृत्यकार महिला अथवा पुरुष सामान्य पहरावे अथवा उत्सव के अनुरूप वेष-भूषा में होते हैं। नृत्य करने के लिए, महिला, अपना दुपट्टा, गाची की तरह कमर में बाँधकर (सामान्य ढंग से अथवा कंधे पर से लाकर) हाथ में रुमाल ले लेती हैं। पुरुष नर्तक भी अपना 'परना' अथवा 'गुलबंद' गाची बना कर कमर में बाँध लेते हैं और हाथ में रुमाल लेकर नाचते हैं। कुछ मनचले पुरुष-नर्तक गले में रुमाल बांधकर तथा दोनों हाथों में रुमाल लेकर नाचते हैं। प्रायः नर्तक नंगे पाँव नाचते हैं।

नृत्य के लिए बहुधा गोल घेरा बना लिया जाता है, जिसमें गिद्धा' गाने वाले व दर्शक बैठ जाते हैं। सार्वजनिक समारोहों पर दर्शक गोल घेरे में खड़े भी हो जाते हैं। कभी-कभी गोल घेरे में बैठे हुए गायकों व दर्शकों के पीछे भी अन्य दर्शक गोल दायरे में खड़े हो जाते हैं। घेरे के बीच नर्तक स्वतन्त्र अंग-संचालन कर नाचता है।

'गिद्धा' गीत के साथ नाचा जाता है। इस नृत्य के साथ गाया जाने वाला गीत प्रकार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विशेष होता है, जिसकी स्वर तथा लय-संरचना नृत्य अनुरूप होती है। नृत्य, मध्य-द्रुत लय में नाचा जाता है।

नृत्य शुरू करने से पहले प्रायः नर्तक खड़ा होकर गीत अंतरे की एक पंक्ति मुक्त-लय में गाता है। यह कृत्य 'वोली-पाणा' कहा जाता है। फिर नर्तक, गीत स्थाई की पंक्ति गाकर उपयुक्त सम स्थान से नाचना शुरू कर देता है। इसी के साथ वाद्य-वादन तथा तालियाँ भी आरम्भ हो जाती है। गीत चरण की ये दूसरी पंक्ति बैठे हुए गायक-दर्शक अनेक बार दोहराते हैं और नर्तक, वाद्य तथा तालियों की लय पर नाचता है। फिर नर्तक गीत के दूसरे चरण की पहली पंक्ति पूर्ववत मुक्त लय में गाता है और दूसरी पक्ति को पहले की तरह ही गाकर सम स्थान से नाचना आरम्भ कर देता है। इस प्रकार का यह नृत्य आयोजन लम्बी अवधि तक चलता है। नृत्य के लिए एक से अधिक 'गिद्धे' भी गाए जाते हैं। नृत्य की अवधि निश्चित नहीं होती।

घर के अंदर नाचे जाने वाले गिद्धे में प्रायः बैठी हुई गायक-दर्शक दक्ष महिलाएँ ही गीत आरम्भ करती हैं और फिर बैठी हुई मण्डली गीत गाती है। नाचने वाली महिलाएँ, गीत लय पर केवल नाचती हैं। घर के अंदर नाचे जाने वाले गिद्धे में लय के लिए बहुधा तालियाँ ही बजाई जाती हैं। कई बार ढोलकी अथवा थाली अथवा घड़ा भी बजाया जाता है। मेलों आदि सार्वजनिक समारोहों पर कई बार पुरुष व महिला मण्डलियों में स्पर्धात्मक 'गिद्धे' भी नाचे जाते हैं। इन अवसरों पर भी लय के लिए बहुधा तालियाँ ही गीत लय पर बजती हैं। कई बार ढोलकी भी होती है। लय-संरचना प्रायः चार मात्रिक लय खण्डीय (कहरवा जैसी) होती है।

विवाह आदि अवसरों पर घर से बाहर के नृत्य में लय के लिए प्रायः वाद्य भी होते हैं। वाद्य प्रायः ढोलकी होती है, जिसे वादक गोल घेरे में एक ओर खड़ा होकर अथवा बैठ कर बजाता है। कई बार शहनाई भी बजती है, जो गीत की धुन ही बजाती है। ऐसे अवसरों पर विनोद के लिए नचाए गए परिवार के पुरुष वर्ग के सिर पर से कुछ पैसे भी घुमा कर वर्ग विशेष के नर्तक अथवा वादक को दिए जाते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में 'वारंडा' आदि कहा जाता है।

नृत्य में महिलाओं का सामान्य पहरावा होता है :—

१. सलवार अथवा चूड़ीदार पाजामा (सुत्थण)
२. घुटनों तक लम्बा कुरता (कमीज़)
३. दुपट्टा (चादरू)

यह पहरावा प्रायः सूती होता है।

इन्होंने सामान्य आभूषण पहने हुए होते हैं। जैसे—

१. नाक में 'तीली' 'कोका'।
२. कोनों में 'काँटे', 'फुलियाँ'।
३. गले में 'हार' 'जंजीर'।
४. अंगुलियों में अंगूठी (गुठ्ठी, छाप)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५. हाथों में चूड़ियाँ (बंगां)।

ये आभूषण, सोने अथवा चाँदी के होते हैं। चूड़ियाँ बहुधा काँच की होती हैं। इनके अतिरिक्त पाँव में चाँदी की 'जंजीर' तथा पाँव की अंगुलियों में चाँदी की 'सूती' (आभूषण विशेष) भी पहनी होती हैं।

वैसे महिलाओं की वेषभूषा में 'रीढ़ा' (गोटा-किनारी लगा विशेष बहुमूल्य दुपट्टा), 'पुसाज', बास्केट (जाकेट), आदि वस्त्र, तथा आभूषणों में 'पाजेबें', 'झांझरे', 'गजरे', 'कंगन', परम्परागत हार, 'कंठी', 'लौकट', 'नत्थ', 'बुलाक', 'लौंग', 'मुर्की', 'बालियाँ', 'डंडियाँ, 'टीक', 'चक' आदि हर स्थान पर पहने जाने वाले गहने भी पहने जाते हैं, कुछ सामान्यतया, कुछ अवसर विशेष पर।

पुरुषों का सामान्य पहरावा होता है :—

१. कुरता (कमीज़, झग्गू) घुटनों से ऊपर जाँघ के प्राय: मध्य भाग तक लम्बा।
२. पाजामा, चूड़ीदार अथवा तंग मुहरी का आसन वाला (सूथणू)।
३. टोपी (गोल अथवा किश्तीदार) अथवा पगड़ी (साफा)
४. पाँव में स्थानीय जूता अथवा बूट।
५. कंधे पर सूती, ऊनी अथवा पशमीनी चादर या सूती परना।

पुरुष वर्ग कानों में सोने की बालियाँ अथवा फुल्लियाँ तथा हाथों में सोने अथवा चाँदी की 'छाप' पहनता है।

वैसे पुरुषों के पहरावे में 'धोती', 'पड़तणी', 'बास्केट', 'कोट', आदि वस्त्र तथा आभूषणों में 'नाम' (काले धागों की डोर में पिरोया सोने का छोटा सा आभूषण विशेष जिसे गले में पहना जाता है) भी पहने जाते हैं।

इन क्षेत्रों के लोक वाद्य भी प्राय: वही हैं :—

१. शहनाई (पींपी, नपीरी)।
२. ढोल (ढोलकी)।
३. नगारा (नगाड़ा)। मेलों के अवसर पर बड़े आकार का, जिसे 'टम्मक' कहते हैं।
४. रणसिंगा (नरसिंगा)।
५. करनाल।
६. झांझ।
७. मंजीरा-इकतारा।
८. बाँसुरी (बंसरी)।
९. डमरू (डौरू)।
१०. छैणे ताशा, चिमटा, खरताल, खंजरी, आदि।
११. डफ (डफली)।

नृत्य हेतु पंक्तिबद्ध होने, माला में बंधने के कई ढंग हैं जैसे :—

१. बाएँ व्यक्ति के दाएँ हाथ को बाएँ हाथ से और दाएँ व्यक्ति के बाएँ हाथ को दाएँ हाथ से थामना।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२. बाएँ व्यक्ति के बाएँ हाथ को दाएँ हाथ से और दाएँ व्यक्ति के दाएँ हाथ को बाएं हाथ से थामना ।

३. बाएँ, तीसरे व्यक्ति के दाएँ हाथ को (जो दूसरे व्यक्ति के बाएँ बाजू के नीचे से आया है) दूसरे व्यक्ति के दाएँ बाजू के ऊपर से ले जाते हुए, बाएँ हाथ से थामना और दाएँ, तीसरे व्यक्ति के बाएँ हाथ को (जो दूसरे व्यक्ति के दाएँ बाजू के ऊपर से आया है) दूसरे व्यक्ति के बाएँ बाजू के नीचे से ले जाते हुए, दाएँ हाथ थामना ।

४. बाएँ, तीसरे व्यक्ति के दाएँ हाथ को (जो दूसरे व्यक्ति के बाएँ बाजू के नीचे से आया है) दूसरे व्यक्ति के दाएँ बाजू के नीचे से ले जाते हुए, बाएँ हाथ से थामना और दाएँ, तीसरे व्यक्ति के बाएँ हाथ को (जो दूसरे व्यक्ति के दाएँ बाजू के ऊपर से आया है) दूसरे व्यक्ति के बाएँ बाजू के ऊपर से ले जाते हुए, दाएँ हाथ से थामना, आदि ।

नृत्य में पग-संचालन, अन्य अंग-प्रत्यंग मुद्राओं के भी अनेक आकर्षक प्रकार है, जो देखते ही बनते हैं ।

लोक-वाद्य व ताल

हिमाचल प्रदेश के लोक-वाद्यों में तत्, सुषिर, अबनद्ध तथा घन सभी प्रकार के वाद्य हैं । कुछ विशेष वाद्यों को छोड़कर शेष लोक-वाद्य प्रदेश भर में एक जैसे ही हैं ।

विशेष वाद्यों में :—

१. 'गुझू' (डमरू की तरह का वाद्य) ऊपरी महासू तथा साथ लगते मण्डी क्षेत्र में ।
२. 'काह्वली' (करनाल का सा तंग मुँह वाला वाद्य) ।
३. 'डकोली' (डमरू जैसा) 'गुझू' से छोटा ।
४. 'कंसाल'—ऊपरी महासू क्षेत्र में ।
५. 'बान'—किन्नौर में (थाली के से वाद्य) ।
६. 'हुलंक'—(डमरू जैसा, परन्तु डमरू से बड़ा) सिरमौर में ।
७. 'पवन'—(डमरू जैसा पर आकार में बड़ा, बीच का पतला भाग लम्बा) लाहुल में ।
८. 'दामाना'—(नगारे का छोटा रूप) कुल्लू, महासू, सिरमौर में ।
६. काली-बुखरी—(करनाल जैसे वाद्य) किन्नौर में । 'काह्वली' के से आकार के । 'काली' छोटा व 'बुखरी' बड़ा वाद्य ।
१०. 'ज्ञालिङ'—(लम्बी शहनाई जैसा वाद्य) ।
११. 'दुङ'—(करनाल के से दो लम्बे वाद्य) ।
१२. 'चिचि'—धनुष आकार के गज से बजने वाला 'गोवो' सा तार वाद्य) ।
१३. 'ङा'—(लटकाया हुआ, गोलाकार धातु-वाद्य) ।
१४. 'दरू'—(डमरू विशेष) ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

. CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१५. 'ड्रमञन'-'गोबो'—('रबाब' का सा तार वाद्य जिसे तारें छेड़कर बजाया जाता है।) लाहुल के प्राय: केलंग के ऊपर-ऊपर, स्पीति में तथा साथ लगते किन्नौर के क्षेत्र में।

१६. 'रबान'—रबाब की तरह का, परन्तु कुछ छोटा तार वाद्य, जिसे 'मुसादा' भी कह देते हैं, चम्बा में।

'टम्मक'—प्रदेश के निचले इलाक़ो में।

शेष लोक-वाद्य नाम-भेद प्रयोग-भेद, (स्थान, अवसर व परिमाण) से समस्त प्रदेश में बजाए जाते हैं। ये वाद्य हैं :—

१. ढोल
२. नगारा
३. ताशा
४. झाँझ
५. मजीरा
६. छैणा
७. रणसिंगा
८. डफली
९. करनाल
१०. खंज़री
११. बाँसुरी
१२. शंख-घंटी, घड़याल।
१३. शहनाई,
१४. इकतारा
१५. करताल
१६. चिमटा
१७. थाली
१८. घड़ा

वर्ग-विशेष सारंगी भी बजाता है।

लोक वाद्यों के स्थानीय नाम लोक नृत्य प्रकरण में दिए गए हैं। गीत-नृत्य के साथ की लय-संरचना व उसकी बोल-बाँट-रूपरेखा गीत प्रकरण में गीत स्वर संरचना के अंतर्गत दी गई है। इसके अतिरिक्त विवाह, पुत्र जन्म, मेलों, जातरा आदि अवसरों तथा देवस्थलों पर वर्ग-विशेष द्वारा बजाई जाने वाली धुनें बहुधा शास्त्र सम्मत रागों में होती है और इनकी स्वर व लय-संरचना अवसर के अनुकूल होती है। लय-संरचना, नाम तथा बोल-बाँट भेद के साथ शास्त्र सम्मत तालों से मिलती जुलती है। वर्ग-विशेषीय कुछ ताल तथा उनकी बोल बाँट यहाँ दी जा रही हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१. वधाई ताल (२८ मात्रा)

(नगारे की वधाई)

झां ऽ घीना तां ऽत णना तां | तांऽऽकड़ तिगनता द्रिगधिना
× | ०

ऽगिनाऽ धाऽणधा गिनधाऽ णधागिन | तिगनता द्रिगधिना
| ३

ऽगिनाऽ धाऽणधा ऽणधाऽ णधांऽऽ गिनाऽण | झांऽऽकड़
| ४

तनाऽतां ऽगझांऽ गेनांऽकड़ तनाऽतां ऽगझांऽ गेनाऽकड़ |

झां······

(ढोल की वधाई)

झां ऽधा गिना तां ऽत णना ता | ता धिंऽनधा त्रिकिटधिंऽ
× | २

नधात्रिकिट झां,कड़ धिंधा नझां | तागिनता त्रिकिटधिंऽ
| ३

नधात्रिकिट झां,कड़ धिंधा नधा गिना | झां ताऽणना
| ४

त्रिकिटधाऽ गेनांऽ,कड़ ताऽणना त्रिकिटधाऽ गेनांऽ,कड़ | झां......

कहीं-कहीं लय को बहुत विल्म्बित कर, एक मात्रा को दो मात्रा काल में निभाते हुए बधाई '५६' मात्रा की भी मानी जाती है।

सारा ठेका (१६ मात्रा) [वधांई के बाद वजाया जाने वाला]

ऽ तणाऽ ऽ,कड़ तणाऽ | ऽऽ तड़ाघेनां ऽगतड़ा घेनांऽग |
० | ३

झां धागें ऽ,गड़धा गें,गड़ | झां धागें ऽगड़धा गेनांऽग |
× | २

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झां तणना ऽ त्रिकिट तणा ऽ | ऽ ऽकड़ तड़ा घें ऽकड़ धाण
० | ३

गेनां ऽकड़ | झां धा गेंन ऽ गड़ धा गेंन ऽगड़ | झां धागें
| × | २

ऽगड़धा तणां ऽग | झां ना तां ऽन णा ता तणा ऽ |
| ०

ना धागें ऽगड़धा तणां ऽग | झां……
३ | ×

[वधाई ताल देवस्थलों पर व मंगल कार्यों के आरम्भ में बजाया जाता है। इसके साथ शहनाई पर एक धुन विशेष बजती है।]

३. अद्धा ठेका : (८ मात्रा)

धण | धण नाटी | तण नाटी | धण | नझां तिरकिट
× | २ | ० | ३ | ४

४. दादरा : (६ मात्रा)

झां तिरकिट झांना झांना | तां तिरकिट झांना झांना
× | ०

५. देवते को धूप देने के वक्त का ताल : (८ मात्रा)

झण | झांझां गिना | तागे ना तिरकिट | धण | धा धण
× | २ | ० | ३ | ४

धांधां | गिना गिना | तिरकिट धां धां | तिरकिट | धांधां गिनः

धण | धाधा गिना | तागे ना तिरकिट | धण | धा गिन

झांझां | गिना गिना | तिरकिट झांझां | तिरकिट | झांझां नझां
× | २ | ० | ३ | ४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

६. आरती (८ मात्रा)

नाऽतणा ऽधिंऽगड़ झांऽनाऽ तणाऽगड़
०
झांऽऽना ऽऽधिंऽ ऽननाऽ ताऽऽ कड़
×
तांऽतांऽ धिंऽनझा ऽऽधाऽ गेनांऽग
०

७. मुकलावा (१६ मात्रा) [विवाह अवसर पर विदाई के समय]

तणा ऽत णाता | तेघे नां ऽग धिन धिन |
० ३
झां ऽऽ ऽत्रिकिट | झां नण झां ना |
× २

८. लांवां (७ मात्र) [विवाह अवसर पर सप्तपदी के समय]

तण नाति नाति | घिन नधा | घिन धाधा |
तण ताण ऽता तण | झांन णधा | घिन ना
तण नाटी नाटी | घिन नधा | घिन धाधा |
तण नाटी ना,कड़ | झांन णधा | घिन नाटी |
× २ ३

[चैत्र मास में महीने के गीत के साथ भी यही ताल बजता है।]

९. बारात (४ मात्रा) [विवाह अवसर पर बारात चढ़ने के समय]

(*नगारे की बारात*)

तणा नाना नाना नाना नाना नाना घिनां ऽगड़ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धि धि धि धि धि ऽ तड़ा घे |

ऽ ऽ तना ऽकड़ तना धाण नधा णना |

झां त्रिकिट तना ऽकड़ तना धाण नधा णना |

झां त्रिकिट तना ऽकड़ तना धाण नाधा णना | झां…
× ० ×

(ढोल की बारात)

टांयं टांयं टांयं टांयं | झांग धागे ना झांग
० ×

टांय टांयं टांयं त्रिकिट | झां धागे ना झां
० ×

१०. ढोल

० ×
तण नाटि तण नाटि तागे नागे झण झण | तागे नागे झण नाटि

०
ताग नाके झण नाटि | तण नाटि तण नाटि तागे नाके झण झण |

× •
तागे नाके झण झण तागे नाके झण झण | तण नाटि तण नाटि

तागे नाके झण झण |

नगारा

ऽ तणा ऽकड़ तणा ऽ तड़ा घें गड़ धागे नांऽ गड़ |
०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झां धागें ऽगड़ धा गेंऽ गड़ झां तागें ऽगड़धा गेंऽ गड़

×

झां तण नाटि तण नाटि धागें ऽगड़ धा गे नां ऽग |

०

झां धागें ऽगड़धा गें ऽगड़ झां तागें ऽगड़ धा गें ऽगड़

×

झां तण नाटि तण नाटि धागें ऽगड़धा गेनां ऽग |

०

झां धागें ऽगड़धा गें ऽगड़ झां तागें ऽगड़ धा तनां ऽगड़

×

झां तण नाटि तण नाटि धागें ऽगड़ धा गेनां ऽगड़ | झां·····

० ×

११. जब देवता कोठी से निकलता है, तब का ताल (८ मात्रा)

तां,क तिना गिना धिना | धां,क नाना धिना तिरकिट

० ×

१२. करयाला : (७ मात्र)

धां तेगे नाना धां ऽ,कड़ धि धिना

तां गेना ऽन धां तिरकिट धिन गिन

धां ता गिन ता धिन ता ता

ता गिन ना ना गिन गिन ता

ता गिन ता धिन नता धिन तागे |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तक तता तिरकिट धागेन ऽगेन धिन तागे

तक तता त्रिकिट धागें ऽन ऽगेन धिन तागे

तक तता त्रिकिट धागेन ऽगेन धिन तागे
× २ ३

१३. लुड्डी : (२ मात्रा) [करयाले में स्वांग (साह्ब आदि का) के साथ]

धा, धा गेना धा, धा गेना | धा, धा गेना धा, धा तिरकिट

तां, ता गेना तां, ता गेना | तां, ता गेना तां, ता नरकट
× ×

१४. निरतकारी (करयाले में बजने वाला) : [८ मात्रा]

तां, ता गेना धिना तां ण | ताण तागे ताता गिना

तां, ता गेना धिना तां त्रिकिट | ताण तागे ताता गिना
× ०

१५. गुडाई : (२ मात्रा) [खेतों में निराई-गोडाई के साथ का]

तां, ता गेना | तां, ता गेना | तां, ता गेना | तां, ता गेना

तां, ता गेना | तां, ता गेना | तां, ता गेना | तां, ता गेत्रिकिट
× × × ×

१६. जंग : (२ मात्रा)

[शादी खत्म होने पर, बारात डेरे में पहुंचने पर, बारात के वापिस घर आने पर, बारात जब बीच रास्ते में हो तब, तथा देवते के खेलने के समय बजने वाला]

धि नाटि | धि नाटि | धि नाटि | धि नाटि
× × × ×

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यह वर्ग विशेष नगारे के बोलों में 'धा' के लिए 'झां', तथा ढोलक में 'धा' के लिए 'तां', व 'ना' के लिए 'णा' और 'ते, ति' के लिए 'टि' की संज्ञा देता है।

भविष्य

हिमाचल का लोक कलाकार सामयिक व तत्संबन्धित सांगीतिक अभिव्यक्ति में जिस प्रकार सजग रहा है और सजग है, उसी प्रकार भविष्य में भी वह पूर्णतया सजग रहेगा, इसमें कतिपय संदेह नहीं। लोक संगीत रचना-क्रम, जिस प्रकार निरन्तर अविराम रहा है और है, उसी प्रकार भविष्य में भी बना रहेगा, यह निश्चित-प्राय है, लेकिन लोक रचयिता की यह सांगीतिक अभिव्यक्ति स्वाभाविक, सरल व उन्मुक्त ही रहे, वर्तमान तथाकथित सभ्यता व विकास के प्रसार के संदर्भ में यह अवश्य ही विचारणीय विषय है।

यातायात के बढ़ते व सुधरते साधनों की कृपा से, भौतिक विकास की अनेक उपलब्धियाँ, दूर-पार के, अब तक अछूते, अप्रभावित ग्राम्य जीवन में प्रवेश पा रही हैं, लोक मानस पर जिनकी दमक का प्रभाव अनिवार्य है। भौतिक विकास की इन उपब्धियों में, लोक संगीत रचयिता को सीधे प्रभावित करता है—रेडियो व सिनेमा।

जगह-जगह हाट-हाट पर रेडियो की उच्चध्वनि, बल्कि अधिकाधिक व्यापकता के लिए ऊँचे-ऊँचे लटके भोंपू, दूर-पास अपने काम में व्यस्त लोक कलाकार की उन्मुक्त, सरल, स्वाभाविक सांगीतिक अभिव्यक्ति में बिघ्न पैदा किए बिना नहीं रहते। सिनेमा व सिनेसंगीत का लावण्य, चकाचौंध भी लोकमानस पर अपनी अमिट छाप छोड़ती है।

आस-पास की इस सांगीतिक चकाचौंध के कारण लोक संगीत रचयिता में संभावित हीनता के दो अवांछित रूप सामने आते हैं। एक रूप में, लोकमानस की सांगीतिक अभिव्यक्ति कुंद हो जाती है, बल्कि बहुधा बुझ जाती है। दूसरे रूप में लोकमानस की सांगीतिक अभिव्यक्ति भ्रष्ठ हो जाती है, स्वाभाविक, सरल व उन्मुक्त नहीं रहती। लोक कलाकारों में जो अधिक संकोची व सवेदनशील होते हैं, उनकी प्रतिभा तो धीरे-धीरे बुझ सकती है। लेकिन जो संकोची व अधिक सवेदनशील नहीं होते, जो समय के साथ, चल निकलते है, उनकी सांगीतिक अभिव्यक्ति में रेडियो व सिने-सगीत की घुसपैठ रहती है। इस प्रकार लोक मानस की सरल, स्वाभाविक, और उन्मुक्त सांगीतिक अभिव्यक्ति लुप्त हो सकती है।

लोकमानस की सांगीतिक, सरल, स्वाभाविक व उन्मुक्त अभिव्यक्ति में एक अन्य बाधा हो सकती है, मंच प्रदर्शन। निजी व सरकारी स्तर पर होने वाले लोक संगीत आयोजनों में, आधुनिकता, कर्णप्रियता तथा जनता जनार्दन की पसंद के नाम पर, आयोजक व तथाकथित विषय-विज्ञ, कुछ ऐसे अवांछित प्रयोग कर सकते हैं, जिनसे लोक कलाकार के उन्मुक्त, सरल, स्वाभाविक रचयिता को घुटन का अनुभव हो, और वह कुंद हो जाए या दिशा भ्रष्ट हो जाए। आधुनिकता के संदर्भ में, लोक-संगीत में कुछ नए वाद्यों का प्रचलन, तथा प्रस्तुतिकरण के कुछ नए प्रयोग, किसी सीमा तक ही रुचिकर हो सकते हैं अथवा इनसे विकृति ही आएगी।

इसी ओर एक अन्य बाधा उपस्थित हो सकती है, उस तथाकथित शिक्षित वर्ग द्वारा, जिसमें योग्यता के स्थान पर दम्भ का बोलबाला है। यह तथाकथित शिक्षित वर्ग अपनी आधुनिक वेशभूषा, साजसज्जा, व वाचालता से सरल, सौम्य, धर्मभीरू, संकोची तथा चमक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दमक व दम्भ से अछूते लोकमानस को इस प्रकार अवांछनीय ढंग से प्रभावित कर सकता है कि या तो लोक कलाकार हतोत्साहित हो जाए, या इस वर्ग के संकेतों पर चल कर दिशा-भ्रष्ट हो जाए। पूर्णतया विषय अनभिज्ञ होने पर भी यह तथाकथित शिक्षित वर्ग अपनी वाक-पटुता, दम्भ तथा आरोपित बड़प्पन से निश्छल लोक कलाकार के सरल-स्वाभाविक, संगीत रचयिता को भ्रष्ट करने या उसे हतोत्साहित करने में सक्षम है, इसमें कोई संदेह नहीं। निजी व सरकारी संबंधित संस्थाओं में विषय ज्ञान शून्य अधिकारियों, संस्थापकों, संचालकों व अध्यक्षों से इसी अवांछित प्रवृत्ति तथा इसी तथाकथित शिक्षित वर्ग को प्रोत्साहन मिल सकता है, जिसमें, लोक संगीत का, हर प्रकार से अहित ही निहित है।

लोक संगीत का प्रवाह निर्बाध सरल, स्वाभाविक व उन्मुक्त रहे, इसके लिए यह अत्यावश्यक है कि रेडियो व सिने-संगीत के लावण्य व चकाचौंध को निश्छल, सरल लोक संगीत रचयिता में विघ्न पैदा करने या उसे हतोत्साहित करने के अवसर न दिए जाएँ। ये तथा अन्य आधुनिक साधन व संबंधित संस्थाएँ, लोक संगीत के वास्तविक मूल रूप को महत्व दें, इसे प्रदर्शित करें और इसके संरक्षण के हर संभव प्रयास करें। संबंधित संस्थाओं में सच्चे विद्वान, विषय ज्ञान सम्पन्न, मननशील, अधिकारी व्यक्ति उच्च पदासीन हों तभी संभव है कि तथाकथित शिक्षित दम्भी वर्ग का दुराग्रह समाप्त हो जाय और लोक कलाकार के संगीत रचयिता व गायक को वास्तविक प्रोत्साहन मिले, जो उसकी सरलता, स्वाभाविकता व उन्मुक्तता को संभाले रखे, उसे सबल-सार्थक बनाए रखे।

पृष्ठ ३६ पर होती गीत में 'दोमण' शब्द के स्थान पर जोबण शब्द पढ़ा जाए।
पृष्ठ १०१ पर 'ब्राह्मणा राबोरू' के स्थान पर ब्राह्मणा रा छोहरू पढ़ा जाए।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi